आर्य संगीत रामायण

सम्पूर्ण चारों भाग

*

लेखक

सरदार यशवन्तसिंह वर्मा टोहाना निवासी

प्रकाशक

लाला देवीदयाल गुप्ता एण्ड सन्स

मालिकान

गुप्ता एण्ड कम्पनी, टोहाना

(उत्तर रेलवे)

चवालीसवीं बार ६०००]   [मूल्य सचित्र ६) चित्र रहित ५)

मिलने का पता :
लाला देवीदयाल गुप्ता एण्ड सन्स
मालिकान :
गुप्ता एण्ड कम्पनी, टोहाना ।

मुद्रक—
गुप्ता प्रिंटिंग वर्क्स,
४७२, एस्प्लेनेड रोड,
दिल्ली-६

★

उपहार

★

सेवा में :—

____

____

____

—०—

यह पुस्तक डायरेक्टर पब्लिक इंस्ट्रक्शन पंजाब द्वारा हाई स्कूलों की लाइब्रेरियों के लिए स्वीकृत हो चुकी है।

रामायण

और

उसकी भूमिका

कहने को तो रामायण साधारण दो शब्द हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति बड़ी सुगमता से वाणी द्वारा प्रकट कर सकता है, परन्तु मैं सोचता हूं कि इस जगह क्या लिखूँ। रामायण की समालोचना करना मेरे जैसे मनुष्य के लिये कठिन ही नहीं वरन् एक असम्भव बात है। इसीलिए इसके सम्बन्ध में लेखनी उठाना तो एक तरफ ख्याल करना भी व्यर्थ, क्योंकि मै इस विषय में अपने आपको असमर्थ देखता हूं। बाकी रही बात यह कि वर्तमान समय की बहुत सी प्रचलित रामायणों मे नियम-विरुद्ध गड़बड़ की वास्तविकता का :जिस वर्तमान समय के विद्वान ही नहीं किन्तु पुराने विचारों के मनुष्य भी मानते हुए कतराते हैं)प्रगट किया जावे अर्थात बाली, हनुमान आदि की सृष्टि-नियम-विरुद्ध उत्पत्ति, हनुमान का समुन्द्र फांदना पहाड़ को उठाना, सूर्य को मुँह में डाल लेना, सीता का जलती हुई चिता से जीवित निकल आना, मेघनाथ के कटे हुए सिर का उसकी स्त्री सुलोचना से बात करना, हनुमान आदि वानरों की वास्तविकता, रावण के ग्यारह भिन्न-भिन्न सिरों की हकीकत इत्यादि। इनके सम्बन्ध में कुछ लिखना केवल समय व्यर्थ खोना और पिसे हुए का पीसना है,। क्योंकि इन सब झगड़ों का फैसला ठाकुर सुखराम दास जी चौहान व ठाकुर इच्छरचन्द जी अपनी-अपनी रचित पुस्तकों —'हनुमान जी का जीवन-चरित' व

'रामायण बतर्ज नाविल'—में बड़े अच्छे और युक्ति-युक्त रीति से प्रकट कर चुके हैं। ऐसी विद्वत्तापूर्ण बहस को पढ़कर भी किसी के दिल में शंका रहती है तो मेरा प्रयत्न भी व्यर्थ है क्योंकि ऐसी सूली लकड़ियां तो आग में ही सीधी होंगी परन्तु एक विषय है जिसको वर्तमान रामायण के रचियताओं ने भी बिल्कुल छोड़ दिया है अर्थात् सीता जी के जन्म के बारे में। अब भी लोगों का यह ख्याल है कि देश में दुर्भिक्ष पड़ जाने से राजा जनक को ज्योतिषियों ने बतलाया कि यदि आप अपने हाथ से हल चलायें तो यह विपत्ति दूर हो सकती है। अतः राजा ने एसा ही किया और हल चलाते समय सीता जी पृथ्वी से उत्पन्न हुईं। इस बात के परखने के लिए हमारे पास दो कसोटियां हैं :—प्रथम बुद्धि, दूसरी बाल्मीकि रामायण। परन्तु यह दोनों ही इसके विरुद्ध गवाही देती हैं। प्रथम बुद्धि इस बात को मान नहीं सकती कि कोई मनुष्य इस तरह पृथ्वी के अन्दर अथाह बोझ के नीचे वायु के बगैर एक क्षण भी जीवित रह सके। यह एक माना हुआ सिद्धान्त है, जिसको एक साधारण मनुष्य भी जानता है। इसलिए इस बात पर ज्यादा विवाद की जरूरत नहीं। बाल्मीकि रामारायण में सीता और धरणी दो ऐसे शब्द हैं जिनके असली अर्थों को न मानते हुए कुछ लोगों ने यह अर्थ निकाल लिया कि सीता धरणी से पैदा हुई।

सीता का अर्थ संस्कृत में हल से डाली हुई लकीर *के भी हैं, सीता के अर्थ नियम में बंधी हुए हैं। धरणी का अर्थ असोम के भी हैं और सीता की माता का नाम भी धरणी था। इसलिए साधारण

*देखो गोपाले गृह्यसूत्र प्रपाठक ४ काण्ड ४ सूत्र ३०

लोगों ने अपने घरेलू कोष से इसका मतलब यह निकाल लिया कि सीता के अर्थ हल की लकीर और धरणी का अर्थ जमीन, अतएव जमीन में हल चलाते हुए सीता जी उसमें से पैदा हुईं, वरना सारी वाल्मीकि रामायण में इस बात का कहीं भी जिकर नहीं कि सीता जी इस प्रकार जमीन से पैदा हुईं प्रत्युत इसके विरुद्ध वाल्मीकि रामायण में स्थान-स्थान पर इस बात की पुष्टि होती है कि सिता जी राजा जनक की उत्पन्न की हुई पुत्री थीं, अस्तु जनक ने हर जगह सीता को आत्मजा या सुता कहा है जिसका अर्थ अपनी पैदा की हुई कन्या है।

जिस समय सीता जी पैदा हुईं तो राजा जनक ने कहा कि जनकों* के कुल में यह मेरी सुता यश को बढ़ावेगी, वहां यह नहीं लिखा कि यह जमीन से पैदा हुई लड़की मेरे यश को बढ़ावेगी, बल्कि स्पष्ट शब्दों में सीता को सुता आत्मजा लिखा हुआ है। (देखो वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड सर्ग ६६ श्लोक २२)।

राजा जनक स्वयंवर के समय कहते हैं कि—"यह मेरी सुता बल से जीती जायेगी—यह मेरी प्रतिज्ञा है।" (वाल्मीकि रामायण बाल-काण्ड सर्ग ८ श्लोक ७)

जिस समय अनुसूइया ने सीता जी को वनवास के समय उपदेश किया है तो सीता उसके उत्तर में कहती हैं कि—"मेरी जननी ने विवाह के समय जो उपदेश मुझको दिया था वह मैंने धारण किया हुआ है।"

---

*राजा जनक का कुल 'जनकों का कुल' नाम से प्रसिद्ध था और यह एक पदवी थी, अतः उनके कुल में पहिले कई जनक हो चुके हैं।

सोचने की बात यह है कि जननी अर्थ जनने वाली अर्थात् जन्म देने वाली माता के हैं न कि पालने वाली दाया के। यह थोड़े से पृष्ठ हम को इस विषय में कोई लम्बा-चौड़ा विवाद करने की आज्ञा नहीं देते। इस वास्ते विषय दीर्घ होने के भय से इसको यहीं समाप्त किया जाता है। यदि आवश्यकता हुई तो फिर कभी इस पर विस्तार-पूर्वक विवाद किया जा सकता है, इस समय अपने विषय में कुछ बातें पाठकों से निवेदन करना चाहता हूं।

रामायण के सम्बन्ध में थियेट्रिकल कम्पनियों के असभ्य ड्रामे और गैर जिम्मेवार लोगों के सिद्धान्त विरुद्ध गाने साधारण जनता पर बहुत बुरा प्रभाव डाल रहे थे और लोग बेबसी से उनकी ओर खिंचते जा रहे थे, यहां तक कि यह रोग बढ़ते-बढ़ते आर्य्यसमाज जैसी नुक्ताचीन सोसायटी में भी फैलने लगा। अस्तु एक दो बार मुझे अपने कानों से सुनने का अवसर मिला कि आर्य्यसमाज के प्लेटफार्म पर एक मनुष्य रावण का वकील बनकर सीता को सम्बोधन करके कह रहा है, "अरी पागल अब तू रामचन्द्र का ध्यान दिल से निकाल दे, रावण पर उसकी तलवार काम नहीं दे सकती, क्योंकि मैंने एक अवसर पर अपने ग्यारह सिर काट कर शिव को भेंट चढ़ा दिये थे, उस वक्त मुझको यह वरदान मिला कि जिस समय इन सिरों के साथ कोई शस्त्र लगेगी तो यह सिर लोहे के और शस्त्र मोम का बन जायेगा। इसके अतिरिक्त वह मेरे कौन-कौन से सिर काटेगा, दो काटेगा, आखिर ग्यारह में से कोई न कोई सिर बाकी रहेगा, सो रावण जीवित का जीवित इत्यादि"। इन हालात को देखकर और सुनकर आर्य्य जनता इस बात को अनुभव कर रही थी कि एक ऐसी

तैयार की जावे, जिसमें उपरोक्त बुराइयां बिल्कुल न हों। अतः मेरे बहुत से मित्रों ने मुझे प्रेरित किया कि तुम इस काम को अपने हाथ मे लो तो आशा है कि यह काम भी पूरा हो जावे। अस्तु कई एक ने लेखनी द्वारा सहायता देने की प्रतिज्ञा भी की परन्तु मुझे अपने बल का भली भांति ज्ञान था और यह आशा थी कि जरूरत के समय मुझको सहायता भी मिल जावेगी। साथ ही मैं इससे भी बेखबर न था कि सहायता भी उन मनुष्यों को लाभकारी हो सकती है जो अपने मे कुछ शक्ति रखते हों। जो स्वयं ही एक बोझ उठाने मे असमर्थ है उसको किसी की सहायता क्या सहारा दे सकती है। यदि पांच-दस आदमियों ने मिलकर एक बड़े भारी बोझ को उसके सिर पर रख भी दिया तो सिवाय गर्दन तुड़वाने के और क्या परिणाम हो सकता है। इन कारणों से मै प्रायः टालमटोल करता रहा, परन्तु भाइयों की बडी हठ ने मुझे विवश कर दिया, आखिर मैंने परमात्मा का आश्रय लेकर तथास्तु कह दिया।

परन्तु अपनी सफलता की बहुत कम आशा थी इस ख्याल से भी मैंने रामायण के दो-चार सीन अपनी बनाई हुई भजन पुस्तक "आर्य्य भजन दीपिका" मे इसी आशय से निकाल दिये कि इससे मुझको जनता की दिलचस्पी और हार्दिक भावना का अच्छी तरह पता लग जावे। इसी भजन पुस्तक में इस रामायण का एक विज्ञापन भी निकाला, अस्तु परमात्मा की कृपा से इस पुस्तक का एक हजार का एडीशन प्रायः दो महीने में समाप्त हो गया और सम्पूर्ण रामायण के बारे में बहुत सारे आर्डर आने आरम्भ हुए। जनता

के इस प्रकार साहस बढ़ाने से मेरी हिम्मत बढ़ गई। निराशापूर्ण हृदय में आशा की चमक दिखाई देने लगी और मैंने ईश्वर का नाम लेकर इसको आरम्भ कर दिया।

मेरा दावा

न कभी था न अब है कि मैं भी कोई कवि हूँ बल्कि यदि सत्य पूछा जावे तो कवियों के नाम के साथ मुझको बजाय एक नुक्ते के प्रयोग करना भी इस पवित्र नाम के महत्व को घटाना है। यह मैं कपट और छल के तौर पर नहीं कहता बल्कि अपने हार्दिक भावों को प्रगट करता हूँ। हां इतनी बात जरूर है कि मुझको आरम्भ से ही ऐसी बातों का शौक था और मेरी रुचि अन्य कार्यों की अपेक्षा इस ओर अधिक झुकी रहती थी।

शतरंज, चौसर, गंजफ़ा आदि खेलों से मुझको कुदरती नफरत थी, यहां तक कि इनमें से सिवाय एक आध के बाकियों के केवल मुझको नाम भी नहीं आते हैं। मैं बजाय इन खेल कटारियों के अपना बहुत समय कविता सुनने और कभी-कभी कविता करने में खर्च किया करता था, और ऐसे पुरुषों की संगति से मुझको विशेष प्रेम था, यह उसी संगति का फल है, जो आज इस तरीके पर अपने पाठकों से दो-चार बातें करने का अवसर मिला।

सारांस यह है कि मैंने इस काम को आरम्भ कर दिया और अहने उन सहायकों को जिन्होंने मुझको लेखनी द्वारा सहायता देने की प्रतिज्ञा की थी, पत्र द्वारा या जबानी याद दिलाया कि अपनी प्रतिज्ञा का पालन करो। उनकी ओर से बड़ी श्रद्धा और प्रेम से भरा हुआ धुला-धुलाया उत्तर मिला कि आज कल तो—

मारने की भी फुरसत नहीं

यह उत्तर सुनकर मैंने इनको धन्यवाद दिया और लिख दिया कि परमेश्वर न करे, आपको इस नामुराद काम के लिए (मरने के वास्ते) फुरसत हो, इस फुरसत से तो आपको बे-फुरसती लाख गुणा भली, इस काम से जिस तरह होगा मैं आप निपट लूंगा चुनांचे अपनी हिम्मत को नहीं छोड़ा और काम को बराबर जारी रक्खा।

पहिले विचार था कि रामायण के खास खास दृश्यों को ही भजनों के सांचे में ढाला जावे, सिलसिले वार लिखने की जरूरत नहीं, इसलिये इसका विज्ञापन भी—"आर्य्य रामायण भजनावली" के नाम से निकाला था परन्तु पीछे से इस इरादे को छोड़ना पड़ा, क्योंकि मेरे कई स्थानीय मित्र मेरे साथ सहमत नहीं हुये और फरमाया कि—"लिखते हो तो पूरी सिलसिलेवार लिखो जिससे पढ़ने वालों को कुछ लाभ भी हो अन्यथा इस तरह लिखने से—हाथ छोड़ा नाक पकड़ लिया—नाक छोड़ी टांग जा पकड़ी—कुछ फायदा नहीं" आखिर मुझको इनका कथन स्वीकार करना पड़ा और सिलसिलेवार लिखना आरम्भ कर दिया और आर्य्य रामायण भजनावली की जगह इसका नाम—

आर्य्य संगीत रामायण

रक्खा गया। इस कदर गहरे सागर में गोते लगाना मेरे लिए बहुत कठिन था। किसी प्रसिद्ध तैराक या गोते लगाने वाले के वास्ते चाहे यह काम मामूली हो, परन्तु मेरे जैसे मनुष्य को—कीड़ी के लिए प्याली ही दरिया है—यह महा कठिन था। तो भी जहां तक मेरा दम था मैंने गोता लगाया और जो कुछ मोती आदि इससे

निकले, उनको कीचड़ मिट्टी से साफ करके सामने रख दिया, इनको परखना अब आपका काम है।

जहां तक मुझसे हो सका मैंने उर्दू-भाषा के शब्दों को बहुत कम बरता है, हिन्दी का अधिक ध्यान रक्खा है, परन्तु जहां कठिन उर्दू शब्दों को छोड़ा हैं वहां गूढ भाषा से भी मुख मोड़ा है, इतना यत्न करने पर भी बहुत से ऐसे शब्द बीच में आ ही गये हैं, जिनके लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ।

अन्तिम निवेदन

जो मैं आपसे करना चाहता हूँ वह यह है कि जिन-जिन सज्जनों की सेवा में यह क्षुद्र रचना पहुंचे यह कृपा करके अपनी बहुमूल्य सम्मति रचयिता के पास भेजकर कृतार्थ करें। इससे मेरा यह प्रयोजन नहीं कि आप इसके बारे में कोई प्रसंशनीय रिव्यू (Review) करें, वरन् जो कुछ आपकी बुरी-भली सम्मति इसके बारे में हो उसी को प्रकट करना धन्यवाद का कारण होगा, बल्कि उन सज्जनों का विशेष अभारी होऊँगा जो इस पुस्तक के दोषों को प्रकट करेंगे, ताकि दूसरे ऐडीशन में उनको दूर करने का प्रयत्न किया जाय।

आपका शुभ चिन्तक
यशवन्तसिह वर्मा
टोहाना।

❀ ओ३म् ❀

आर्य्य संगीत रामायण

प्रथम दृश्य

—*—

ईश्वर स्तुति

गाना (धुरपद श्याम कल्याण या भीम पलासी चार ताल)

दीनाबन्धु ! दीनानाथ ! शरण आये हम अनाथ,
तुम हमरे परमदेव, हमरी लाज तुमरे हाथ ।
दीनाबन्धू...

पूर्ण ब्रम परमानन्द, काटो नाथ जन के फन्द,
हम हैं दीन मतिमन्द, तुमही तात तुमही भ्रात ।
दीनाबन्धू...

निराकार, निर्विकार, सर्व ईश, सर्व आधार,
आये नाथ तुमरे द्वार, तुमही पिता तुमही मात ।

आन लगे तुमरे चरण, लीजो नाथ हमको शरण,
नाम तेरो दुःख हरण, तुमही दिवस तुमही रात ।
दीनाबन्धू...

तुमही आदि तुमही अन्त, महादेव परम सन्त,
शरण तेरी है 'यशवन्त' जन्म मरण तेरे हाथ ।
दीनाबन्धू...

महाराजा दशरथ की ख़्वाहिशे औलाद में बेकरारी

गाना (रागनी कौसिया तीन ताल)

पल पल ढल ढल गई सारी,
दुनियां से महरूम चले हैं,
धन दौलत और माल खज़ाना,
कुछ दिन में सब होवे बेमाना।
दो दिन जग में झूम चले हैं,
पल पल ढल ढल ढल० ॥१॥
सियाही गई सफेदी आई,
कुछ उम्मीद न देत दिखाई,
यौवन के दिन घूम चले हैं,
पल पल ढल ढल ढल० ॥२॥
जिन स्वारथ में उमर गुजारी,
दान पुन्य की रीति बिसारी।
हम से तो वही सूम भले हैं,
पल पल ढल ढल ढल० ॥३॥
वाह वाह तेरी गति विधाता,
दशरथ जग से निराश जाता।
रोते निज मकसूम चले हैं,
पल पल ढल ढल ढल० ॥४॥

हा देव! क्या मेरे भाग्य में यही लिखा था कि मैं संसार से इस तरह निराश जाऊँ? शोक इक्ष्वाकु वंश की समाप्ति के कलंक का टीका मेरे ही मनहूस माथे पर लगना था? नाथ! आपके भण्डार में तो किसी चीज की कमी नहीं, परन्तु यह मेरी प्रारब्ध...!

वशिष्ठ जी का गाना

बता दो मुझको भी ऐ राजन्,
तुम्हारे दिल पै मलाल क्या है।
हुआ यह चेहरा उदास क्यों है,
कहो तबियत का हाल क्या है।
तुम्हारी यह देख कर के हालत,
हुए हैं छोटे बड़े हिरासां।
तुम्हारे दिल में यकायक ऐसा,
बताओ आया ख्याल क्या है।
अमन से बस्ती है प्रजा सारी,
ग़नीम का कुछ नहीं है खटका।
जो आंख भर कर इधर को देखे,
भला किसी की मजाल क्या है।
दया है ईश्वर की हर तरह से,
मगर नहीं कुछ समझ में आता।

यह बैठे बैठे न जाने दिल पर,
बंधा भ्रम का जंजाल क्या है।
पड़ी किस उलझन में है तबियत,
जो इतना घबरा रहे हो राजन।
नहीं जो 'यशवन्तसिंह' से सुलझे,
भला वो ऐसा सवाल क्या है॥

नाटक

महाराज! आपकी यह हालत देख कर तमाम सभा के दिल बैठे जाते हैं, हर एक अपने अपने ख्याल के घोड़े दौड़ाता है, परन्तु यह पहेली समझ में नहीं आती कि आज आपके चेहरे पर यह असाधारण उतार चढ़ाव कैसे हुआ, कृपा करके शीघ्र ही इस पहेली को हल कीजिये ताकि सब के दिल को धैर्य हो।

महाराजा दशरथ (गाना बहरे तवील)

क्या कहूं ऐ गुरू जी मैं अपनी व्यथा,
मुझको औलाद का ग़म सताता रहा।
हर तरह से हुई ना-उम्मीदी मुझे,
अब जमाना जवानी का जाता रहा।
जो जवानी थी ढल ढल के जाने लगी,
अब अवस्था बुढ़ापे की आने लगी।

ना उम्मीदी मुझे मुँह दिखाने लगी,
यह फिकर रात दिन मुझको खाता रहा।
क्या कहूं ऐ गुरूजी ॥१॥

यदि हो जाता घर में मेरे इक पिसर,
तो उजड़ता न यूँ मेरा आबाद घर।
किस तरह से करूँ जिन्दगी को बसर
मुझे सारी उम्र ग़म जलाता रहा॥
क्या कहूं ऐ गुरू जी ॥२॥

अब तो आखीर दिन निकट आता दिखे,
और दशरथ निपूता कहलाता दिखे॥
राज ग़ैरों के हाथों में जाता दिखे,
जिस पै खून और पसीना बहाता रहा।
क्या कहूं ऐ गुरू जी ॥६॥

हाय लावल्दी का दाग़ लेकर चला,
जो होना था आखिर वह होकर टला।
रात दिन इस फिकर में रहूं मुबतिला,
नाम संसार से मेरा जाता रहा।
क्या कहूं ऐ गुरू जी ॥४॥

क्या जिगर जबकि लख़्ते जिगर ही नहीं,

क्या नज़र जबकि नूरे नज़र ही नहीं ।

क्या शजर वह जिसपे समर ही नहीं,

बे-पिसर का जहां में क्या नाता रहा ।

क्या कहू ऐ गुरू जी ॥५॥

यही ठानी है दिल में कि योगी बनूँ,

छोड़कर राज अब तो फकीरी करूँ ।

क्यों न जीते जी 'यशवन्तसिंह' त्याग दूँ,

वृथा इस से प्रीति बढ़ाता रहा ॥

क्या कहूं ऐ गुरू जी ॥६॥

नाटक

मुनि जी ! यूँ तो हर प्रकार से ईश्वर की कृपा है, प्रजा खुशहाल और वैरी पायमाल है, परन्तु एक ख़्याल है जो हर समय मुझको तड़पाता है, कि अब आयु का आखीर भाग भी व्यतीत होता जाता है, परन्तु आज तक मैं अपनी असली दौलत से खाली रहा । यदि एक पुत्र भी हो जाता तो हमारा हृदय शीतल हो जाता । यह तमाम ऐश्वर्य अब मुझे सांप बन कर काटने को आता है, आखिर कौनसी आशा पर अपने आप को तसल्ली दूँ किसी ने सच कहा है—

॥ दोहा ॥

चांद चढ़े सूरज भवें, दीपक जलें हजार ।

जिस घर में बालक नहीं, वह घर निपट अँधियार ॥

(ठण्ठी सांस भर कर) शोक ! इस राज्य के अब ग़ैर ही मालिक होंगे । ईश्वर तेरी लीला !

वशिष्ठ जी (गाना बहरे तवील)

हे महाराज ग़म है बजा आपका.
बिना दीपक मकां में उजाला नहीं ।
घर नहीं है वह श्मशान के तुल्य है,
यदि घर में कोई लड़का बाला नहीं ।
कोई पुत्र-सा जग में पदार्थ नहीं,
बिना बुनयाद रहती इमारत नहीं ।
अन्धी आंखें हैं जिनमें बसारत नहीं
आये जग में मगर देखा भाला नहीं।
हे महाराज ग़म है बजा० ॥१॥
जिस चमन में हमेशा खिज़ां ही रहे,
और *बादे मुखालिफ़ रवां ही रहे ।
हर घड़ी एक जैसा समां ही रहे,
ऐसे गुन्चे का खिलना मुहाला नहीं ॥
हे महाराज ग़म है बजा० ॥२॥
आहें भरते ही भरते गुजारी उमर,

* प्रतिकूल वायु चलती रहे ।

तोड़ दी ना-उम्मीदी ने सब की कमर।
आज तक ना हुआ एक भी तो कुँवर,
कभी अरमान दिल का निकाला नहीं।
हे महाराज ग़म है बजा० ॥३॥
मगर निर-आश होना नहीं चाहिये,
आप शृंगी ऋषि जी को बुलवाइये।
कर्म इससे कोई और आला नहीं,
हे महाराज ग़म है बजा० ॥४॥
क्या तआज्जुब जो अब भी बर आये मुराद,
इस बुढ़ापा में दे देवे ईश्वर औलाद।
हम करें उसका 'यशवन्तसिंह' धन्यवाद,
उसने किस २ को राजन् सम्भाला नहीं।
हे महाराज ग़म है बजा० ॥५॥

नाटक

महाराज ! सचमुच आपका रञ्जोग़म बजा है, वह घर, घर नहीं है बल्कि एक तरह शमशान है, जिसमें कोई बच्चा खेलता दिखाई न दे। औलाद जिन्दगी का सहारा और आंखों का उजाला है। बे-औलाद का ग़म कोई मामूली ग़म नहीं है। आह ! एक कुँवर भी हो जाता तो सारे कष्ट निवारण हो जाते।

दिल खोलकर अपने दिल के अरमान निकाल लेते, परन्तु इस तरह निराश नहीं होना चाहिये, उस दयालु को दया करते देर नहीं लगती। क्या आश्चर्य जो अब भी मन की मुराद मिले और दिल की कली खिले। आप शीघ्र ही शृङ्गी ऋषी जी को बुलवाइये और यज्ञ की सामग्री तैयार करवाइये। आशा है कि ईश्वर आपके मन की मुरादें भरपूर करेंगे और सब क्लेश दूर करेंगे।

तमाम दरबारी

(गाना रेखता भैरवी ताल तीन दादरा)

महाराज आप यज्ञ का सामान कीजिए,

नाहक न अपने दिल को परेशान कीजिये।

शृङ्गी जी हैं वाकई इक माहिरे जमां,

उनको बुला कर यज्ञ का प्रधान कीजिए॥

उनके इलावा और भी जो हैं ऋषि मुनि,

उनको बुलाकर अपने घर मेहमान कीजिए।

शुभ कर्म दान पुण्य से बढ़कर नहीं कोई,

दिल खोलकर धन दीजिए और दान कीजिये॥

राजे व महाराजे हैं जो आपके आधीन,

उन सबके नाम जारी यह फरमान कीजिए॥

उस सर्व शक्तिमान दयालु जगत पति,

परमात्मा का अपने दिल में ध्यान कीजिये।
अशा है पूर्ण होगी आशा यह आपकी,
बस आज ही इस बात का ऐलान कीजिये।
पूर्ण हो यज्ञ होवेंगे ईश्वर दयालु जब,
जो दिल में है वह पूरे सब अरमान कीजिये।

नाटक

महाराज ! वशिष्ठ जी का फरमाना बिल्कुल सत्य है, आप बहुत जल्द यज्ञ का सामान कीजिये और प्रत्येक स्थान पर इस बात का ऐलान कीजिये। निस्सन्देह शृङ्गी जी विद्या के भानु हैं, यदि वह पधार जायें तो सम्भव नहीं कि आप अपनी मुराद को न पायें, इसलिये आप शृङ्गी जी को बुलवाइये और अपनी किस्मत आजमाइये। उस परमात्मा से कभी निराश न होना चाहिये, उसका कोई काम भलाई से खाली नहीं, सम्भव है कि इसमें भी कोई भेद हो।

महाराज दशरथ का गाना

आपका कहना मुझे मंजूर है,
हो गया कुछ कुछ मेरा गम दूर है।
मैंने भी अक्सर सुना है शृङ्गी जी,
इल्म वैदिक में बहुत मशहूर हैं।
लायें गर तशरीफ वह इक बार भी,

फिर मेरा बस दर्दो ग़म काफ़ूर है।
मेहरबानी जो करें मुझ पर ऋषी,
दशरथ उनका हर तरह मशकूर है।
जिस तरह हो जल्द उनको लाइये,
हो रहा दशरथ बहुत मजबूर है।
मन्त्री जो आज हों इस काम पर,
कर दिया मैंने तुम्हें माम्र है।
अपनी हिम्मत छोड़ मत 'यशवन्तसिंह',
नुक्ताचीनी दुनियां का दस्तूर है।

नाटक

उसकी शोहरत् की चर्चा तो अक्सर मैंने भी सुनी है, आप लोगों के कहने से और भी तसदीक़ हो गई। बेहतर मुबारिक कदाचित परमात्मा को यही मंजूर है कि शृङ्गी जी को यश मिले और उन्हीं के अनुग्रह से मेरे दिल की कली खिले। मन्त्री जी! आप जाइये और जिस तरह हो सके शृङ्गी जी को साथ लाइये, आशा है कि ऋषि जी पधार कर हमेशा के लिए मुझको मशकूर फरमायेंगे और मेरा क्लेश दूर फरमायेंगे अब ज्यादा देर न लगाओ, बस आज ही रवाना हो जाओ;

मन्त्री

आपका जो हुक्म लाऊँ बजा,
उजर करने की किसे मक़दूर ।

महाराज की आज्ञा सर्वथा शिरोधार्य है। आज ही जाता हूं और शृङ्गी जी को साथ लेकर आता हूं, आप यज्ञ की सामग्री तैयार करवाइये।

—o—

दूसरा दृश्य

(महाराज दशरथ का दरबार और शृङ्गी जी का इन्तजार)

दशरथ का गाना (बहरे कव्वाली)

बहुत दिन हो गये लेकिन नहीं कुछ खबर आई है,
न दिन को चैन पड़ता है न शब को नींद आई है।
हमेशा घड़ियां गिनता हूं शृङ्गी जी के आने की,
नहीं मालूम क्या कारण जो इतनी लगाई देर है।
हुए हैं मन्त्री जी बेफिक्र ऐसे वहाँ जाकर,
यहां इस इन्तजारी में हुआ दशरथ सौदाई है।
मेरे अनुमान मुजिब तो उन्हें कल आना चाहिये था,
मगर दिन आज का भी खाली जाता दे दिखाई है।
न जाने शृङ्गी जी का कुछ पता भी उनको पाया है,

मेरी इस इन्तजारी ने बुरी हालत बनाई है।
असल में तो वाजिब था कि मैं खुद ही चला जाता,
जो भेजा मन्त्र को बहुत ही गल्ती खाई है।
उधर वह भटकते होंगे पता पाया कि न पाया,
इधर मैंने भी जां अपनी मुसीबत में फँसाई है।
पुरोहित जी तुम्हीं जाओ पता लेकर शीघ्र आओ,
मुझे पल-पल हुई भारी अजब मुश्किल बन आई है
पड़ी है कशमकश में जां अजब 'यशवन्तसिंह' मेरी,
मुझे इस रोज के झगड़े से न मिलती रिहाई है।

नाटक

मन्त्री जी को गये हुए बहुत दिन हो गये, परन्तु अब तक लौट कर नहीं आये और न कुछ खबर ही दी। मेरे हिसाब में तो उनको कल लौट कर आ जाना चाहिये था। वरना आज आ जाने में तो कुछ सन्देह ही न था। किन्तु मुझे तो आज का दिन भी खाली जाता प्रतीत होता है। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या कारण है! मालूम नहीं कि भृंगी जी उनको मिले भी हैं या नहीं। यदि मिल गये तो उन्होंने आना भी स्वीकार किया है या नहीं। असल में तो मुझे खुद ही जाना चाहिए था, मैंने बड़ी गलती का और सख्त गलती की जो मन्त्री जी को भेजा, खैर अब भी

मुनासिब है कि खुद चलने की तैयारी करूँ। इससे दो लाभ होंगे, एक तो सफ़र में दिल लगा रहेगा और इस हर घडी के इन्तजार से छुटकारा होगा, दूसरे शृंगी जी की यह शिकायत न रहेगी कि खुद न आया और मन्त्री जी को भेज दिया। (कुछ सोचकर) यदि मैं उस तरफ चल दिया और वह यहां आ गये तो और भी खराबी होगी। एक गलती को तो अब तक पछता रहा हूं, यह और गलती पर गलती करने लगा हूं। सम्भव है शृंगी जी मुझको यहाँ न पाकर वापिस लौट जाय और सारा बना बनाया काम बिगड़ जाये। वह सन्यासी हैं, किसी की उन्हें परवाह ही क्या है? (वशिष्ठ जी से) पुरोहित जी आप ही जाइये और जल्दी......

द्वारपाल का गाना

महाराज मन्त्री जी तशरीफ ला रहे हैं।
शृंगी ऋषि संग में रौनक बढ़ा रहे हैं।
ड्योढ़ी पै छोड़ उनको हाजिर यहां हुआ हूं।
जो हुक्म हो तो कहदूं अन्दरबुला रहे हैं।
या जैसी आज्ञा होवे इरशाद कीजे भगवन,
हम खानाजाद हरदम खिदमत बजा रहे हैं।
वह मुन्तजिर हैं राजन् बस आपके हुक्म के,
'यशवन्तसिंह' उनके दिलको बहला रहे हैं।

पृथ्वीनाथ! मन्त्री जी शृंगी जी सहित पधारे हुए हैं और ड्योढ़ी पर विराजमान हैं। दास को खबर देने के लिये भेजा है, क्योंकि बगैर सूचना दिये दरबार में आना राज नियम के सर्वथा विरुद्ध है, हुक्म हो तो अन्दर भेज दूँ या या जैसा इरशाद हो बजा लाऊँ।

महाराज दशरथ–क्या शृंगी जी तशरीफ ले आये हैं?

द्वारपाल—हां महाराज, ड्योढ़ी पर विराजमान हैं।

महाराज दशरथ—बहुत अच्छा, मैं खुद उनके स्वागत को चलता हूं, पुरोहित जी आप भी चलिये!

वशिष्ठ जी–हां महाराज! तैयार हूं।

सब दरबारी–हां महाराज हम भी आपके साथ ऋषि जी के स्वागत के लिए चलते हैं।

महाराज दशरथ-हां हां, बड़ी खुशी से।

दशरथ का गाना।

दोहा

बहुत दिनों से ऋषि जी, लगी हुई थी आस।
दर्शन करके आपके, मिटा सकल दुःख त्रास॥

(चौबोला)

मिटा सकल दुःख त्रास मुनि जी धन धन भाग्य हमारे।
दशरथ का घर हुआ पवित्र जब से आप पधारे॥
दो कर जोड़, नमस्ते करता चरणों पड़ूं तुम्हारे।
हुई बहुत तकलीफ आपको कष्ट उठाये भारे॥

चलो दरबार पधारो, सफर का थकान उतारो, वहां पर आराम कीजे, हुई है जो तकलीफ मुआफी उसकी मुझको दीजे।

नाटक

महाराज नमस्ते करता हूं, आपने बड़ी दया की जो इस स्थान को पवित्र किया। कई दिनों से आपके दर्शनों की अभिलाषा थी और मुझको पूर्ण आशा थी कि आप मेरी प्रार्थना को मंजूर फरमायेंगे। और हमेशा के लिये मशकूर फरमायेंगे। खुद न हाजिर होने से सख्त शर्मसार हूं और इसके लिए मुआफी का ख्वास्तगार हूं। चलिये दरबार को सुशोभित कीजिये और सारे दरबारियों को दर्शन दीजिये। कुछ देर आराम करने से सफर की थकान दूर होगी और आपके दर्शनों से हमारा दिल प्रसन्न होगा।

रचियता (छन्द)

ले ऋषि को संग राजन रंग राग मना रहा।
मन में अपने मग्न हो दिल में बहुत हर्षा रहा॥
मन्त्री व वशिष्ठ जी भी साथ उनके जा रहे।
द्वारपाल और कर्मचारी पीछे पीछे आ रहे॥
पहुँच कर दरबार में सिंहासन एक बिछा दिया।
आदर और सत्कार से वहां शृंगीजी को बिठा दिया।
राजा के चेहरे पैं झट ऐसी नूरानी आ गई।

पल में बुढ़ापा उड़ गया गोया जवानी छा गई।
राजे महाराजे जो राजा के यहां महमान थे।
और ऋषि पण्डित ब्राह्मण जिस कदर विद्वान थे।
खबर सुनते ही सभी एकदम वहां पर आ गये।
वारी वारी से वह सब दर्शन ऋषि के पा गये।
था अगर्चे बहुत मुश्किल पहुँचना सरकार में।
जा हुए हाज़िर मगर 'यशवन्तसिंह' दरबार में॥

श्रृंगी जी का गाना

क्यों इतनी तकलीफ की, क्या है असल मुराद।
किस कारण हमको किया, राजन तुमने याद॥

चौबोला

राजन तुमने याद किया, क्या अटका काम तुम्हारा।
विपत पड़ी तुम पर भारी यह कहे अनुमान हमारा॥
हम सन्यासी बनवासी क्या देवें तुम्हें सहारा।
मेरे लायक काम जो होवे कीजे जरा इशारा॥
पहले वह काम करूँगा पीछे आराम करूँगा प्रण यह दिलमें कीना,
वचन आज 'यशवन्तसिंह' यह मैंने तुमको दीना॥

नाटक

राजन्! प्रसन्न और आनन्द रहो, कहो क्या कारण है, जो हमको याद किया। अपना असली प्रयोजन बतलाओ

जो बात कहनी हो शीघ्र सुनाओ। वह क्या काम है जो हमारे बगैर अपूर्ण है? चेहरे पर बहुत उदासी छाई है और हमारे अनुभव में यह बात आई है कि आप पर कोई कड़ी भीड़ पड़ी है, जिसको देख कर मेरी तबियत भी जरा डरी है। मगर खैर मेरी सामर्थ्य में हुआ तो पहले आपका काम करूँगा, पीछे आराम करूँगा। आप जल्दी बताइये।

राजा दशरथ का गाना (रागनी भैरव)

ऐ मुनीराज महाराज आज मम काज सँवारो जी,
मेरी पड़ी भँवर में नाव दया कर पार उतारो जी।
हो रहा हूं दुखिया अति भारी, चहुँ ओर छारही अँधियारी,
मेरी राखो जग में लाज राज का यत्न विचारो जी।
ऐ मुनिराज० ॥१॥

चहूं ओर से निराश होकर, शरण पड़ा हूं उदास होकर,
मेरा डूबा जात जहाज आज तुम इसे उबारो जी।
ऐ मुनिराज० ॥२॥

लगी जिगर में है चोट भारी, ली है केवल ओट तुम्हारी,
हूं दया का अब मोहताज, ताज की ओर निहारो जी।
ऐ मुनिराज० ॥३॥

कर कर हारा यत्न बहुतेरे, दया करो अब हाल पै मेरे,

अब आपके हाथ इलाज, मेरा यह कष्ट निवारो जी।
ऐ मुनिराज० ॥४॥

नाटक

ऋषिवर! दशरथ बहुत दुखिया और लाचार है बल्कि जिन्दगी तक से बेजार है। चारों तरफ से निराशा छाई है, केवल आपके दर्शनों ने कुछ धीर बँधाई है। तकदीर के फेर से सताया हूं, और दुखी होकर आपकी शरण आया हूं, न जाने क़िस्मत क्यों पेश पड़ी है, जो इस कदर सताने पर अड़ी है। यदि हो सकता है तो कुछ इमदाद कीजिये, वरना मुझको अपने हाथों से सन्यास दीजिये। दशरथ सब कुछ छोड़ने को तैयार है, केवल आपकी आज्ञा का इन्तजार है।

शृंगी जी का गाना (रागनी भैरवी)

कहो राजन् क्या है कष्ट तुझे, कुछ हाल सुनाओ तो।
किस कारण दुखिया हुए मुझे वह बात बताओ तो॥
उलटे सीधे फ़िकरे तेरे, नहीं समझ में आते मेरे।
जो है मतलब की बात जरा उस तरफ़ भी आओ तो॥
कहो राजन० ॥१॥

क्यों डूबे हो इतने गम में, पड़े हुए हो किस मातम में।
कुछ तो करो होश से बात तबियत जरा टिकाओ तो॥
कहो राजन्० ॥२॥

जिस कारण से मुझे बुलाया, अब तक न वह काम बताया।
करो रंजो अलम ग़म दूर चित्त इस तरफ़ लगाओ तो॥
कहो राजन० ॥३॥
धैर्य अपने मन में धारो, धर्म का पहला अंग विचारो।
कुछ तो करो ध्यान इधर, 'यशवन्तसिंह' आओ तो॥
कहो राजन० ॥४॥

नाटक

राजन! यह कैसी बात करते हो, तुम्हारे यह उलटे सीधे फ़िकरे मेरी समझ में नहीं आते। ये पहेलियां किसी और समय के लिए रक्खो, व्यर्थ समय खोने से क्या लाभ? इतनी देर से बातें कर रहे हो, परन्तु सत्य कहता हूं कि मेरे हाथ पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा। आखिर समझदार और दाना हो, जरा तबियत को ठीक करो और चित्त को टिकाओ। यद्यपि आप पर कोई मुसीबत सख्त है, परन्तु यही तो परीक्षा का वक्त है। जो ऐसे समय में डगमगायेगा, वह दुनियां में कभी सफलता नहीं पायेगा, इसलिए पहले बात को तोलो और फिर मुँह से बोलो।

राजा दशरथ का गाना (बहरे तवील)

ऐ ऋषि जी गई उमर सारी गुजर,
आज तक मेरे घर में पिसर न हुआ।
यही रहती है चिन्ता मुझे रात दिन,

है जिगर मगर लख्ते जिगर न हुआ।

कोई इसके बराबर बीमारी नहीं,

पेश चलती मगर कुछ हमारी नहीं।

हाय विधना ने बिगड़ी संवारी नहीं,

मेरी आहों का कुछ भी असर न हुआ।

ऐ ऋषि जी० ॥१॥

राज का कोई वारिस व वाली नहीं,

कोई मुझसा जमाने में खाली नहीं।

कोई दशरथ से बढ़कर सवाली नहीं,

ध्यान दयालु का लेकिन इधर न हुआ।

ऐ ऋषि जी० ॥२॥

हर तरह से मुसीबत ने घेरा किया,

मेरे घर में नहूसत ने डेरा किया;

मैंने अपना यत्न तो बहुतेरा किया,

एक दिन दूर मेरा फिकर न हुआ।

ऐ ऋषि जी० ॥३॥

यज्ञ पूर्ण ऋषि जी हमारा करो,

आप तकलीफ इतनी गवारा करो।

मेरे जीने का कोई सहारा करो,

गम मुझे आज तक इस कदर न हुआ।

ऐ ऋषि जी० ॥४॥

यज्ञ का सारा सामान तैयार है,

आपका ही हुक्म फक्त दरकार है।

अगर ईश्वर हमारा मददगार है,

कौन सा काम है जो कि सर न हुआ।

ऐ ऋषि जी० ॥५॥

इस बुढ़ापे का कोई सहारा नहीं,

ऐसी हालत में जीना गवारा नहीं।

भूलूँ अहसान हरगिज तुम्हारा नहीं,

यों तो मुनकिर कभी पेश्तर न हुआ।

ऐ ऋषि जी० ॥६॥

हो रहा आज गुल मेरे कुल का दिया,

मिलगया खाकमें सब दिया और लिया।

जो करना था 'यशवन्तसिंह' ने किया,

वह भी मेरे लिये कारगर न हुआ।

ऐ ऋषि जी० ॥७॥

नाटक

ऋषि जी ! उमर का बहुत सा मुफीद हिस्सा गुजर चुका, जवानी के दिन एक-एक करके खत्म हो गये, बुढ़ापा आने लगा परन्तु आज तक औलाद से खाली हूं। अपने तमाम उपाय कर चुका, यहां तक कि वेदों की आज्ञा के विरुद्ध लगातार तीन शादियां करके दुनियां में बदनाम भी

हुआ, परन्तु सिवाय निराश होने के कोई लाभदायक परिणाम न निकला। शोक! रघुकुल की समाप्ति के दिन नजदीक आ रहे हैं, इस हरे भरे घर की रौनक अब थोड़े दिन की मेहमान है। भाट लोग जब इस कुल की वन्शावली पढ़ा करेंगे, तो दशरथ के नाम के साथ नपूता शब्द लगाकर मुझ भाग्यहीन को ही कुल का अंत करने वाला कहा करेंगे। ये विचार हैं जो हर समय मुझको जल-हीन मीन की तरह तड़पाते रहते हैं। एक दिन दरबार में बैठे-बैठे इन्हीं विचारों ने दिल से दिमाग और दिमाग से दिल पर उतार चढ़ाव शुरू करके मेरी हालत को बदल दिया। गुरु वशिष्ठजी तत्वदर्शी थे, तुरन्त भांप गये और मुझसे उदासी का कारण पूछा। मैंने असली हाल कह सुनाया। बातों-बातों में आपका शुभ जिक्र भी आ गया, आखिर सबकी सलाह हुई कि आपको तकलीफ दी जाये और एक यज्ञ रचाया जाये। मेरा सौभाग्य है कि आप आ पधारे हैं। कृपा करके पुत्रेष्टि यज्ञ कर मुझे कृतज्ञ कीजिये।

श्रृंगी जी का गाना (बहरे तवील)

यूँ न आहें भरो धीर दिल में धरो,

यज्ञ पूरण मैं राजन् तुम्हारा करूँ।
आगे जो कुछ प्रारब्ध होवे तेरी,
जो है अपना यत्न आज सारा करूँ।
उस दयालु का भण्डार भरपूर है,
अगर करने लगे उससे क्या दूर है।
अगर ईश्वर को यह बात मंजूर है,
तो मैं इस काम से क्यों किनारा करूँ।
यूँ न आहें भरो० ॥१॥

यज्ञ आरंभ जल्दी से करवाइये,
जो है सामान सारा ही मंगवाइये।
और वेदी वहां ऐसी बनवाइये,
वेद मंत्र मैं बैठा उचारा करूँ।
यूँ न आहें भरो० ॥२॥

यज्ञ में जो हमारे मददगार हों,
वेदपाठी हों, पण्डित हों, होशियार हों।
वह विधि करने के लिए तैयार हों
जैसा जैसा मैं उनसे इशारा करूँ।
यूँ न आहें भरो० ॥३॥

इत तरफ वेद वाणी से गूंजे गगन,

इक तरफ़ हों हवन से सुगंधित पवन ।

यज्ञ पूर्ण हुआ ज़िस घड़ी निर-विघ्न,

कुछ चिकित्सा का भी चमत्कारा करूँ ।

यूँ न आहें भरो० ॥४॥

हो सके जिस कदर पुण्य दान करो,

विद्वानों का हर तौर मान करो ।

कोई 'यशवन्तसिंह' पर अहसान करो,

यही ताकीद तुमको दोबारा करूं ।

यूं न आहें भरो० ॥५॥

नाटक

जो कुछ वृतांत आपने कहा मैंने सुन लिया । इस तरह आहें न भरो, बल्कि बहुत जल्द यज्ञ की तैयारी करो । यदि ईश्वर को यह बात मंजूर है, तो उसको करने लगे क्या दूर है । मैं हर तरह तुम्हारा मददगार हूं, अपनी ओर से सारा जोर लगाऊंगा, और कुछ चिकित्सा का भी चमत्कार दिखाऊँगा । यज्ञ में जो जो हमारे सहायक हों, वह पूर्ण वेदपाठी हों और लायक हों । मैं कभी कभी उनके काम को देखता भालता रहूंगा, यदि कोई दोष होगा तो निकालता रहूंगा । इसके अतिरिक्त आप कुछ दान भी करो, परन्तु पात्र कुपात्र की पहचान भी करो । क्योंकि जहां पात्र को दान दिया हुआ सुखदाई होता है, वहां कुपात्र को इसका हजारवाँ हिस्सा

दिया हुआ इससे हजार गुणा दुखदाई होता है। यदि इस तरह नियम-पूर्वक काम होगा, तो आशा है इसका अच्छा परिणाम हो गा।

राजा दशरथ का गाना (लावणी बहरे शिकस्त)

महाराज फक्त थी देरी एक तुम्हारी,
कर ली है मैंने यज्ञ की सब तैयारी।
महाराज और जो कुछ होवे दरकार,
हुक्म करो मैं करदूं हाजिर पलकी लगे न बार
हैं विद्वान पण्डित भी सब ही पधारे,
कई साल तक जिन्होंने वेद विचारे।
महाराज और भी ऋषि मुनि गुणवान,
दूर-दूर से आये हुए हैं दशरथ के महमान
सब राजे और महाराजे मित्र हमारे,
यह बैठे हैं जो सन्मुख ऋषि तुम्हारे।
महाराज हुआ जब इनको यह मालूम,
तशरीफ आपके लाने की मचगई दुनियां में धूम
अब चलो यज्ञ मण्डप में जल्द पधारो,
वेदी पर बैठ कर मंत्र वेद उचारो।
महाराज लेना जिससे जो जो काम,
हुक्म उन्हें देदो वह फौरन दें उसको अंजाम।

जो हुक्म दिया मैं खुशी से सिर धरता हूं,
तुम यज्ञ करो मैं दान पुण्य करता हूं।
महाराज मुझे यह है पूर्ण विश्वास,
कि ईश्वर मदद मेरी अब हो गई पूर्ण आस।
है दिल में जो अरमान वह सब ही निकालूँ,
जो एक बार गोदी में लाल खिलालूँ।
महाराज सभी दुःख जाऊँ पल में भूल,
कहना मैं "यशवन्तसिंह" का दिल से करूँ कबूल

नाटक

यज्ञ का कुल सामान पहले से ही तैयार था, केवल आपका इन्तजार था। बहुत से विद्वान पण्डित भी मैंने बुलाए हुए हैं और यहां तशरीफ लाए हुए हैं। उनके सिवाय और जो ऋषि, मुनि, महात्मा और विद्वान हैं, वे भी इस गरीब खाने के महमान हैं। आप मण्डप में पधार कर यज्ञ प्रारम्भ कीजिए और जिस जिस से जो जो काम लेना हो हुक्म दीजिए। कुल काम आपके जेरे फ़मान होगा, और हरएक पुरुष आपके ताबे फरमान होगा। आपकी आज्ञा अनुसार पुण्य-दान होगा, जिससे आशा है कि मेरा कल्याण होगा।

रचियता [लावणी जिला]

ले शृंगी संग सब ऋषियों को मण्डप बीच पधारे हैं,

गुरु वशिष्ठ और राजा दशरथ संग में राजे सारे हैं।
मण्डप की शोभा जो थी उसको कौन बयान करे,
नजर पड़े जिस चीज पै जाकर वहीं अकल हैरान करे।
हर एक की क्या ताकत जो पैदा इतना समान करे,
कितना खर्च हुआ धन दौलत कौन इसकी मीजान करे।
जो देखे सो करे अचम्भा काबिल दीद नजारे हैं।
ले शृंगी संग सब ऋषियों को मण्डप बीच पधारे हैं।
देख भाल मण्डप की करके पण्डित सभी बुलाए हैं,
करनी थी जो विधि उन्हें वह कायदे सब बतलाये हैं।
जो जो काम जरूरी थे वे सब इनको समझाये हैं,
सर्व सम्मति से वशिष्ठ जी नेता करार पाये हैं।
जो जो जिसका काम था उसको कर रहे न्यारे-न्यारे हैं,
ले शृंगी संग सब ऋषियों को मण्डप बीच पधारे हैं।
शृङ्गी जी वेदी पर बैठे मन्त्र वेद उच्चार रहे।
यज्ञ कर्म की रीति को भी बैठे वहीं निहार रहे,
साथ-साथ कुछ चिकित्सा की भी पुस्तक आप विचार रहे,
पढ़कर मन्त्र हवन कुण्ड में पण्डित आहुति डार रहे।
अजब तरह का समां बंधा था हो रहे जय जय कारे हैं।
ले शृङ्गी संग सब ऋषियों को मण्डप बीच पधारे हैं।
रक्षा यज्ञ निर्विघ्न समाप्त फिर इतना सामान किया,

ऐसी दी एक औषधि जिसमें राजा ने स्नान किया।
विद्वान और पण्डित जो थे सब का आदर मान किया,
छोटे बड़े जो अफसर थे सब ने ईश्वर का ध्यान किया।
करो कामना पूर्ण दयालु! आये तेरे द्वारे हैं,
ले शृङ्गी संग सब ऋषियों को मण्डप बीच पधारे हैं।
यज्ञ कर्म से फारिग होकर दान की नौबत आई है,
जो जो था जिस चीज के लायक वही उसे दिलवाई है।
जो मामूली जुर्म के मुजरिम सब को मिली रिहाई है,
कमी नहीं 'यशवन्तसिंह' कुछ हो रहे वारे न्यारे हैं।
ले शृंगी संग सब ऋषियों को मण्डप बीच पधारे हैं।

शृंगी जी का गाना (लावणी बहरे शिकस्त)

यह* यज्ञ शेष महलों में जल्द ले जाओ,
थोड़ा थोड़ा सब रानियां को पिलवाओ।
राजन्! जब होंगे ईश्वर आप दयालू,
करते देर न लगे उसको पल में करे निहाल।

*हवन के घी और दूध में कुछ दवाई मिला कर राजा को दी कि रानियों को पिलावें! अतः इस वेनजोर दवाई के लेने के थोड़े ही दिन पश्चात् रानियां गर्भवती हुईं। इन हालात की मौजूदगी में भी यदि कोई मनुष्य आंखों पर पत्थर बांध कर यह कहने का साहस करे कि प्राचीन आर्य लोग हर प्रकार की शिक्षा तथा गुणों से कोरे थे तो सिवाय इसके और क्या कहा जा सकता है—

जिस मतलब की खातिर यज्ञ रचाया,
सब कष्ट सहे और दुःख सुख सभी उठाया
राजन रख अपने दिल में इतमीनान,
पूरी होगी मुराद मन की बिल्कुल निश्चय जान।
ग़मगीन कभी मत हरगिज दिल में रहना,
और यही बात सब रानियों से कहना।
राजन जो तुमने किया विधि से काम,
पूर्ण आशा है मुझको होगा अच्छा परिणाम।
यह सदाव्रत भी रहे सदा ही जारी,
जहाँ दीन अपाहिज की हो खातिरदारी।
लेकिन इस बात का रखना खूब ख़्याल,
सदावर्त में पलें न हरगिज़ मुश्टन्डे चण्डाल।
नित्य हवन भी घर में होता रहे हमेशा,
बस देता हूं यह जाति दफा संदेशा।

"लखे न उल्लू दिवस में दिनकर का क्या दोष"

हाय भारतवर्ष! तेरे वे सपूत कहां अलोप हो गये, जिनका न होना तेरे लिये हर प्रकार के दुःखों का कारण हो रहा है। यह कहावत केवल कहावत ही रह गई है कि प्रत्येक अधोगति के पश्चात् सद्गति प्राप्त होती है। अधोगति में तो किसी प्रकार की कमी नहीं रही परन्तु सद गति के अभी एक कोई लक्षण नजर नहीं आते।

राजन ! मत करना हरगिज इसमें भूल,
जो विधि बताई है करना इसके अनुकूल।
मैं जाता हूं अब रुखसत मुझको दीजे,
आशीर्वाद आख़िरी हमारा लीजे।
राजन ! जब हो तेरी पूर्ण मुराद,
कभी कभी 'यशवन्तसिंह को करते रहना याद।

:o:-*-:o:

तीसरा दृश्य

महाराजा दशरथ का दरबार

बांदी का आना, राजकुमारों के जन्म की खुशखबरें सुनाना
(गाना—बतर्ज कव्वाली)

ऐ राजन् आपको दरबार शाहाना मुबारिक हो,
हकूमत हुक्म हशमत ताजदाराना मुबारिक हो।
म लाई हूं वह खुशखबरी थे शायक जिसके मुद्दत से,
दयालु की दया का आज हो जाना मुबारिक हो।
कुँवर पैदा हुए हैं आपके महलों में ऐ राजन् !
मुबारिक ही मुबारिक को सदा अपना मुबारिक हो।
मुबारिक यह घड़ी है और मुबारिक आज का दिन है,
तेरे कर्मों का मुद्दत बाद फल लाना मुबारिक हो।
मुनव्वर हो रही है सारी दुनियां एक सूरज से,

तेरे महलों में सूरज चार चढ़ जाना मुबारिक हो।
किया है सफल पुरुषार्थ सभी का आज ईश्वर ने,
शृंगी जी ऋषि का यज्ञ करवाना मुबारिक हो।
करो मन की मुरादें और दिल के चाव सब पूरे,
तेरा भी इस जगह 'यशवन्तसिंह' गाना मुबारिक हो।

नाटक

महाराज मुबारिक हो, बांदी अभी महलों से आई है और ऐसी खुशखबरी लाई है जिसके सुनते ही आपका दिल मसरूर होगा और सब शोक संताप दूर होगा, अर्थात् आपके महलों में कुँवर पैदा हुए हैं, खुशी के आसार हवैदा हुए हैं। चन्दे आफताब चन्दे महताब है, शकल व सूरत में लाजवाब हैं। ईश्वर ने बाद मुद्दत के यह दिन दिखाया है और आपके दिल की कली को खिलाया है। जिसने सुना धन्यबाद किया और ईश्वर की महिमा को याद किया। महलों में चारों तरफ से मुबारिक की ध्वनि आ रही है, हर एक छोटी बड़ी खुशी से चहचहा रही है।

नोट—यद्यपि चारों राजकुमारों का जन्म भिन्न-भिन्न समय तथा दिनों में हुआ था, जिसमें केवल दिनों का ही अन्तर है किन्तु विस्तार भय से यहां संक्षेप से काम लिया गया है। (लेखक)

राजा दशरथ का गाना (बतर्ज कव्वाली)

शुक्र ईश्वर का है जिसने मुझे यह दिन दिखाया है,
मेरे उजड़े हुए घर को नए सिर से बसाया है।
नहीं था मुस्तहक गर्चे मैं इस नियामत का हरगिज भी,
तेरे दरबार से लेकिन न खाली कोई आया है।
न जाने बेहतरी क्या थी रहा खाली था जो अब तक,
तेरी कुदरत का ईश्वर न किसी ने भेद पाया है।
नहीं था गर्चे दुनियाँ में मेरा सानी कोई दुखिया,
मगर थोड़े दिनों में कुछ का कुछ नक्शा बनाया है।
न ताकत है जबां में जो बजा लाऊं शुक्र तेरा,
पड़ा था भँवर में बेड़ा किनारे पर लगाया है।
शृङ्गी जी उमर भर आपका उपकार न भूलूँ,
तेरी कृपा से मैंने आज सारा दुख भुलाया है।
है अपरम्पार महिमा पार पा सकता नहीं कोई,
गति 'यशवन्तसिंह' की क्या कलम नाहक उठाया है।

नाटक

ईश्वर! तुम धन्य हो, तुम्हारी कुदरत का कौन भेद पा सकता है? प्रभो! ऐसा कोई सवाली ही नहीं जिसने आपका आश्रय लिया हो और आपने उसकी मंगल कामनाओं को पूरा न किया हो। दयासागर! दशरथ के मुख में जिह्वा नहीं

जो आपका धन्यवाद कर सके। दीनानाथ ! जो खुशी मुझको इस समय प्राप्त है, उसका ज़बान से तो क्या, यदि मेरे एक-एक रोम की जगह सो सो ज़बानें भी हों, तो भी मैं आपका धन्यवाद नहीं कर सकता। प्रभो ! मैं कदाचित इस योग्य नहीं था, यह आपकी दया और कृपा है जो इस उजड़े हुए चमन को एक नजर से हरा कर दिया। आज तक जो देर हुई इसमें भी न जाने क्या भेद था ? परमात्मा ! तुम धन्य हो, तुम्हारी महिमा······

खवासों का आना (गाना वतर्ज़ जैसी करनी)

मंगल गावें शगुन मनावें जगदीश्वर,
तुम धन्य धन्य धन्य ।
परमसहायक मंगल दायक परमेश्वर,
तुम धन्य धन्य धन्य ।
जग के स्वामी अन्तर्यामी, हे ईश्वर,
तुम धन्य धन्य धन्य ।
दीना बन्धु करुणा सिन्धु सर्व ईश्वर,
तुम धन्य धन्य धन्य ।
विनती करें तेरी दिन और रात्री,
हम पर दया करी सारी विपत हरी ।
सब पुरुष स्त्री प्रधान मन्त्री,

आज की घड़ी 'यशवन्तसिंह' मगन
धन्य ! धन्य !! धन्य !!!

गाना वशिष्ठ जी का (सवैया)

धन्य धन्य उस ईश्वर को जिन,
आज को दिवस हमें दिखलायो ।
कष्ट हुए सब नष्ट भ्रष्ट,
स्पष्ट वशिष्ठ ने खोल सुनायो ।
जो क्लेश विशेष हमेश सहे,
सो सन्देश सुनाय के दूर भगायो ।
महिमा अनन्त न अन्त कोई,
'यशवन्त' किसी ने भी भेद न पायो ।

सर्व उपस्थित गण (बतर्ज-थियेटर)

तोरे पुत्र हमेशा रहें शादमां
आंखों के तारे हैं, राज दुलारे हैं ।
प्रजा के प्यारे हैं, चारों कुँवर,
देत बधाई लोग लुगाई ।
खुशी सुनाई वाह ! वाह !! वाह !!!
घड़ी शुभ आई है सुखदाई ।
मुराद पाई वाह ! वाह !! वाह !!!
शादमां...॥१॥

खुशी घर बार में शहर बाजार में,
राज दरबार में गावें शकुन ।
शुभ दिन है, शुभ घड़ी लग्न है,
चित्त मग्न है, अहा ! हा !! हा !!!
धन्य धन्य 'यशवन्तसिंह' यह,
आजका दिन है अहा ! हा !! हा !!!
शादमां...॥२॥

वशिष्ठ जी का गाना (पीलो जिला ठेका ताल तलवाड़ा)

जाओ महलों में महाराज,
अपने दिल की तपिश बुझालो ।
सुन ली ईश्वर ने फरियाद,
मन की पूरी हुई मुराद ।
कर के पूर्ण कुल मर्याद,
दिल के अरमां सभी निकालो ॥
जाओ महलों में ॥१॥
दिल के धुल गये सारे दाग,
कुल का रोशन हुआ चिराग ।
पल में खिल गया दिल का बाग,
मिल मिल कुल आनन्द मना लो ।
जाओ महलों में न२॥

हो गया रंजो अलम ग़म दूर,
दामन मुराद से भरपूर ।
सब की विनय हुई मंजूर,
निशदिन खुशी के मंगल गा लो ।
जाइये महलों में० ॥३॥

करो विसर्जन अब दरबार,
जाइये महलों में सरकार ।
कर के पुत्रों का दीदार,
अपना सीना सर्द बना लो ।
जाइये महलों में० ॥४॥

पिछले दुःख सब जाओ भूल,
आपकी हो गई दुआ कबूल ।
जो जो विधि वेद अनुकूल,
जा के संस्कार करवा लो ।
जाइये महलों में० ॥५॥

उसकी कुदरत के कुरबान,
कर दिये कुछ के कुछ सामान ।
हो रहा क्यों 'यशवन्तसिंह' हैरान,
अपनी करनी का फल पालो ।
जाइये महलों में० ॥६॥

नाटक

महाराज ! मुबारिक हो, धन्यवाद है जो ईश्वर ने यह दिन दिखाया है और आपके दिल की कली को खिलाया है। आप जल्दी महलों में तशरीफ ले जाइये और अपने सुपुत्रों के दीदार से दिल की तपिश बुझाइये, वहां आपका सख्त इन्तजार होगा और आपके जाने से ही राजकुमारों का पहला* संस्कार होगा। इसलिये आपका वहां जाना

---

*वेदों और शास्त्रों की आज्ञा है कि जब बच्चा पैदा हो उसी समय उसका पिता सोने की सलाई शहद में भरकर उसके साथ बालक की जबान पर ओ३म शब्द लिखे और उसके कान में 'वेदोसि' कहे।

इसकी विस्तार पूर्वक व्याख्या तो बहुत भारी है, विस्तार के भय से हम यहां नहीं लिख सकते और न इसका इस विषय से कोई सम्पर्क ही है। सारांश यह है कि बालक के उत्पन्न होते ही पहला शब्द जो उसके कान में जावे वह वेदों के नाम का हो अर्थात तेरा सारा जीवन वेदों के अनुसार हो। जबान पर ओ३म शब्द लिखने का यह अभिप्राय है कि बच्चे की जबान पर जो पहला शब्द आवे वह परमात्मा का पवित्र नाम ओ३म हो। शहद के साथ लिखने का यह मतलब है कि जिस तरह से शहद मीठा है उसी तरह तेरी जिव्हा के अन्दर मिठास हो, अर्थात् किसी से कठोर न बोले। इसके अतिरिक्त जिव्हा में अक्सर तीन प्रकार के रोग होते हैं, पहला हकलापन, दूसरा तुतलापन, तीसरा गूंगापन, अस्तु आयुर्वेद के अनुसार शहद इन तीनों प्रकार के रोगों के लिए अति उत्तम और लाभकारी है और बालक के पेट का मैल निकालने के लिए उत्तम है।

अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि आपके बगैर सब क्रिया अधूरी है। यह समय भी स्त्रियों के लिए बड़ा नाजुक होता है और उन्हें इस समय बड़ा दुःख होता है। सम्भव है वहां कुछ और सूरत हो और किसी विशेष वस्तु की जरूरत हो, यूं तो इन्तजाम पहले ही माकूल है परन्तु आपका यहां ठहरना भी फिजूल है। अब दरबार बरखास्त कीजिये और शीघ्र ही महलों की राह लीजिये। मै हवन की सामग्री तैयार करवाता हूं और आपके पीछे ही पीछे महलों में आता हूं।

राजा दशरथ का गाना

मैं अब जाता हूं महलों में बांदी आई मुझे बुलाने,
होवे बरखास्त दरबार, सवारी जल्दी हो तैयार।
करके पुत्रों का दीदार, होगी तबियत आज ठिकाने॥
अब मैं जाता हूं० ॥१॥
जिनकी खातिर था बेचैन, तड़पता था निशदिन दिन रैन।
शीतल आज हुए हैं नैन, भूल गया दुखड़े सभी पुराने॥
अब मैं जाता हूं० ॥२॥
मुझ पर ईश्वर हुए दयाल, मैं प्रजा को करूँ निहाल।
सबको करूँगा मालामाल, करदूँ खाली आज खजाने॥
अब मैं जाता हूं० ॥३॥
पूरे करूँगा सब अरमान, आई आज जान में जान।
तेरा शृङ्गी जी अहसान, कैसे दशरथ भला न माने॥

अब मैं जाता हूं० ॥४॥
जैसे मुझे किया आबाद, ईश्वर सबको दे औलाद ।
दे 'यशवन्त' मुबारिकबाद, यह दिन बार-बार नहीं आने ।
अब मैं जाता हूं० ॥५॥

नाटक

मैं महलों में जाता हूं और सबको विज्ञप्ति सुनाता हूं कि इस खुशी में सप्ताह भर सब कार्यालय बन्द हों, घर घर मंगलाचार और आनन्द हों, इसी समय मनादी कर दी जाये कि तमाम शहर भर में रोशनी कर दी जाये, जो हकदार आये उसको इनाम दो, मन्त्री जी यह काम आप अंजाम दो, जो कोई सवाली आये वह हरगिज खाली न जाये, एक सप्ताह के बाद दरबार अजीम करूँगा और खास इनाम उस समय में खुद तकसीम करूँगा। गुरु जी! आप हवन की सामग्री लेकर जल्दी आना, ज्यादा इन्तजार न दिखलाना ।

महाराज दशरथ का रनिवास में आना, अपने सुपुत्रों को देखकर ईश्वर का धन्यवाद करना

गाना (बहरे कव्वाली)

शुकर है आज जो औलाद का दीदार देखा है,
बहुत दिन बाद अपने बख्त को बेदार देखा है।
नहीं दिल सैर होता है तबियत भी नहीं भरती,
अगर्चे मैंने मुखड़ा इनका सौ सौ बार देखा है।
यही घर है जहां पर बोलते थे रात दिन उल्लू,

तेरी कृपा से ईश्वर आज इसे गुलजार देखा है।
पलों में पलट दी काया मेरे घर बार की तूने,
तमाशा तेरी क़ुदरत का सरे बाजार देखा है।
मुसीबत में भी राहत है व राहत में मुसीबत है,
जहां होते हैं गुल अक्सर वहीं पर खार देखा है।
शृंगी जी करूं क्या सिफ्त तेरी काबलियत की,
तेरा सानी न दुनियां में कोई जिनहार देखा है।
फ़र्क आया नहीं बिलकुल तेरी पेशीनगोई में,
कहा था जिस तरह से उसके ही अनुसार देखा है।
वह क्या जाने कि दुःख क्या है मुसीबत किसको कहते हैं,
कि जिसने कोई दुनिया में नहीं आजार देखा है।
कहां थे क्या शुग़ल था कौनसे धन्धे में ऊलझे थे,
बहुत दिन में तुम्हें 'यशवन्तसिंह' सरदार देखा है।

वशिष्ठ जी का हवन से फारिग होकर ईश्वर की स्तुति करना
(गाना बतज बहरे तवील)

तेरी क़ुदरत के क़ुरबान मालिक मेरे,
भेद तेरा किसी ने भी पाया नहीं।
कौन सी है दशा कौन सी है जगह,
तेरा जलवा जहां नजर आया नहीं।
भेद तेरे तू ही जाने परमात्मा,
हम मनुष्यों से जाता बताया नहीं।

ताक़त इतनी कहां जो करें हम बयां,
और जबां से भी जाता सुनाया नहीं।
तेरे दर का सवाली न खाली रहा,
कोई निर-आस तुमने लौटाया नहीं।
ध्यान जिसने किया दान उसको दिया,
तुमने भक्तों को अपने भुलाया नहीं।
एक रक्षक तुम्हीं सारे संसार के,
कष्ट किस-किस का तुम ने मिटाया नहीं।
जिसने केवल तुम्हारा सहारा लिया,
कौन है जिसको तुमने उठाया नहीं।
तेरे भण्डार में कुछ कमी ही नहीं,
कोई हमसे पदारथ छिपाया नहीं।
तुमने इतना दिया हमको परमात्मा,
जाता 'यशवन्तसिंह' से गिनाया नहीं।

नाटक

महाराजा दशरथ—गुरु जी! राजकुमारों का नामकरण *संस्कार कीजिए।

वेदों में १६ संस्कारों की आज्ञा है उसमें से एक नामकरण संस्कार भी है। प्राचीन आर्य्य लोग अपने बालकों का नाम अपने वर्ण के अनुसार अति उत्तम और श्रेष्ठ रखते थे। गोया नाम से ही पता लगता था कि यह मनुष्य किस वर्ण का है। यथा ब्राह्मणों के नाम ज्ञान और विद्या को लिए हुए होते थे।

वशिष्ठ जी—(नामकरण की रीति करके) कौशल्या नन्दन का नाम रामचन्द्र और रानी सुमित्रा के पुत्रों का नाम लक्ष्मण और शत्रुघ्न और कैकेई के पुत्र का नाम भरत रक्खा है।

जैसे विद्याधर, देवदत्त, यज्ञदत्त, ब्रह्मदत्त, सत्यदेव, धर्मदेव, वशिष्ठ, विश्वामित्र इत्यादि परन्तु वर्तमान समय के ब्राह्मणों के नाम छज्जू, बुद्धू, सुक्खू, टट्टू, निक्कू, जित्तू, मून्छू, छतरू, मिट्ठू, आदि कैसे घृणित और वाहियात नाम हैं। जरा आगे बढ़े और प्रेम में आये तो बड़े मीठे और प्यारे नाम रख दिये जैसे पेड़ाराम, मिश्रीलाल पदार्थचन्द इत्यादि। जिनसे यह भी पता नहीं कि मनुष्य है या खाने की वस्तु। इसी तरह क्षत्रियों के नाम भी ऐसे होते थे जिनसे यश कीर्ति और वीरता प्रकट होती थी जैसे रामचन्द्र, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, भीम, अर्जुन, सहदेव, यशपाल, यशवन्त, बलभद्र, बलदेव, बलराज, वीरबल, धर्मवीर रणधीर इत्यादि। परन्तु आजकल के क्षत्रियों के नाम इनके बिलकुल उल्टे और अशुद्ध हो गये हैं। जैसे कायरसिंह, रणछोड़सिंह, भागसिंह, नत्थूसिंह (आदमी के आदमी ऊंट के ऊंट) जरा जोश में आए तो जालिमसिंह और जाबरसिंह बन गये।

अब रहे वैश्य इस जाति का तो कहना ही क्या है, सारे संसार का कूड़ा कर्कट इनके यहां देख लो। यह एक छोटी सी पहचान हो गई है कि जिनके नाम के साथ मल (गंदगी) लगा हुआ हो तो समझ लो कि वैश्य है। नाम चाहे कुछ अच्छा भी रखलें लेकिन मल उसके साथ जरूर लगाना. नाम चाहे तीन गज लम्बा क्यों न हो जाय जैसे रामजोदासमल, हरकिशनदासमल इत्यादि, जहाँ वैश्यों के

रचियता (लावणी जिला)

घड़ी घड़ी में दिन गये, दिन दिन गुजरे मास।
मास मास बीते वर्ष, वर्ष रहे न पास ॥
सात साल की हुई अवस्था, जिस दिन राजकुमारों की।
विद्याध्ययन लगी थी होने उसी रोज से चारों की ॥

वेदोक्त नाम धनपत, धनराज, धनवीर, धनदेव आदि थे। वहां इसका उल्टा लीजिये, जैसे कूड़ामल, दरिद्रमल, मंगतूमल, दिवालियादास, टोटामल, घाटामल, साधूमल, फकीरियामल, भीकूमल, भिकारीलाल इत्यादि। जब द्विजों की यह दशा है को शुद्र विचारों का तो जिक्र करना ही व्यर्थ है। इसके अतिरिक्त साधारणतः भी यदि हिन्दू वंशावली देखी जाये, तो न कोई शहर छोड़ा, न दरिया छोड़ा, जिनके नाम पर उन्होंने अपने बालकों के नाम न रक्खे हों। प्रथम शहरों को लीजिये लाहौरीमल, हरद्वारीलाल, सरहदीमल, सुनामीमल अमृतसरियामल, कांशीमल, बनारसीदास, बटालियाराम, यह तो एक शहर के मालिक बने थे बहुत से इनके भी गुरु पहुंचे और सारे पंजाब पर अधिकार जमा बैठे अर्थात् पंजाबराय, पंजाबसिंह बन गये और कई एक उन सब के बावा पहुंचे और कुल विलायत पर ही अपना शासन कर लिया और विलायतीराम बन गये। इसी तरह दरियाओं के नाम गंगाराम, जमनादास, सरस्वतोमल, गोमतीमल और बर्तनों के नाम पर लोटामल, सागरमल, सरदारमल, कोलीमल इत्यादि। कोई कहां तक गिनती करे, यदि इन ऊटपटांग नामों की केवल एक सूची लिखी जाये तो एक अच्छी खासी पुस्तक तैयार हो सकती है।

पहले तो मिलकर सबने उस ईश्वर का धन्यवाद किया।
वेद आरम्भ की रीति का फिर राजा ने इरशाद किया॥
जो जो पण्डित विद्वान थे, एकदम सबको याद किया।
जो जो जिस गुण का ज्ञाता वह उनका उस्ताद किया॥
देख शक्ल हैरान अक्ल हो बड़े बड़े हुशियारों की॥
विद्याध्ययन लगी थी होने…

एक सामाजिक महाशय जिनसे वाकफियत तो नहीं परन्तु पत्रों में कई वार उनके लेख देखने का अवसर मिला है, आप बड़े अच्छे लेखक हैं। और आपका नाम है कूड़ामल और आपने अपना उपमान भी 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार, बीमार, रक्खा है। परन्तु एक दो बार आपके नाम के आगे बीमार की जगह आनन्द शब्द देखने में आया है, शायद मित्रों ने तंग किया होगा कि प्रथम तो ईश्वर की दया से आपका नाम ही बहुत उत्तम है इस पर यह उपमान लगाकर आपने और भी चार चांद लगा दिये, इसलिए मित्रों के कहने सुनने से केवल अपना उपनाम बदल कर बीमार की जगह 'आनन्द' रख लिया परन्तु कहने सुनने वालों ने शायद इस बात को नहीं सोचा कि उन्होंने अपना उपनाम बिल्कुल ठीक और मुनासिब रक्खा है क्योंकि कूड़े और मल का कुदरती परिणाम बीमारी है जो बगैर किसी के कहे सुने अपनी असली जगह पर आ गई। कूड़े और मल के साथ आनन्द लगा कर उन्होंने और भी हंसी कर ली, गोया उनके विचार के अनुसार आनन्द केवल कूड़े और मल में ही है और बाकी आनन्द सब फीके आनन्द हैं।

सारांश यह है कि आर्य जाति की इस ओर से भी दुर्दशा है।

धार्मिक और सांसारिक विद्या पंडित लोग पढ़ाते हैं।
राजनीति और शस्त्र विद्या वशिष्ठ जी सिखलाते हैं।
दिन दूनी और रात चौगनी उन्नति करते जाते हैं।
राजा दशरथ खुशी के मारे फूले नहीं समाते हैं॥
पल पल हो बलिहार देख सूरत फरमां बरदारों की।
विद्याध्ययन लगी थी होने...

यों तो चारों हर एक गुण में लाजवाब लासानी थे।
रामचन्द्र जी में लेकिन सारे जौहर इन्सानी थे॥
सूरत सीरत अधिक शास्त्र शस्त्र याद जबानी थे।
बड़े बड़े योद्धाओं के दिल होते पानी पानी थे॥
थोड़े दिन में पूरी करली विद्या सब हथियारों की।
विद्याध्ययन लगी थी होने...

अक्ल शक्ल में बेनजीर जो है वस्फ निराला है।
श्याम रंग और सर्व कद गोया सांचे में ढाला है॥
धर्म धुरन्धर धीर धनुष धारी धुन का मतवाला है।
प्रजा पर दे प्राण प्राण पर जान लड़ाने वाला है॥
युद्ध बीच, 'यशवन्तसिंह' नहीं हिम्मत पड़े हजारों की।
विद्याध्ययन लगी थी होने...

चौथा दृश्य

जंगल

राक्षसों की खरमस्तियां (गाना)

अजब यह वन सुहाना है अहा, हा हा ओहो हो हो।

यह क्या अच्छा ठिकाना है, आहा हा हा ओहो हो हो।
यहां डेरे लगायेंगे व गुलछर्रें उड़ायेंगे।
न फिर ये वक़्त पाना है, अहा हा हा ओहो हो हो॥
यहां जो कोई आयेगा, न जीवित जाने पायेगा।
यही खाना कमाना है, अहा हा हा ओहो हो हो॥
न राजा का धराते हैं, दिया उसका न खाते हैं।
डरे हमसे जमाना है, अहा हा हा ओहो हो हो॥
किसी में यदि ताक़त है, भुजाबल की हिमाकत है।
उसे भी आजामाना है, अहा हा हा ओहो हो हो॥
मैं ऐसा तीर मारूंगा, शीश धड़ से उड़ारूंगा।
मेरा ऐसा निशाना है, अहा हा हा ओहो हो हो॥
न कुछ 'यशवन्तसिंह' डर है, न कोई खौफ दिल पर हैं।
न कोई राजा राना है, अहा हा हा ओहो हो हो॥

मारीच—(राक्षसों का सरदार) अरे नालायको! कुछ आगे पीछे की भी देख भाल है या सारे दिन खेल कूद का ही ख़्याल है। वह देखो, सामने से शिकार निकला जाता है और तुम्हें कुछ भी नजर नहीं आता है। बस शराब पी और अण्टा चित्त।

एक राक्षस—हैं क्या कहा, श···रा···ब (प्याला आगे करके) पहले थोड़ी सी इसमें डाल दो ताकि मेरा नशा तेज हो जाये। इन बेईमानों ने मुझे बिलकुल नहीं दी,

सारी आप पी गये।

दूसरा—(घूंसा लगाकर) धत्त तेरा सत्यानाश जाये, बराबर से ज्यादा हिस्सा लेता रहा और फिर हमारी शिकायत करता है।

मारीच—अरे तुम्हारा बेड़ा गर्क, कुछ मेरी भी सुनते हो, या शराब का ही स्यापा करते रहोगे।

सब राक्षस—हां, हां, हां, कहिये कहिये।

मारीच—पूछते हो या मुझे खाते हो ?

दूसरा—तो कुछ बात भी बताते हो ?

मारीच—अरे अन्धो! वह देखो सामने से शिकार निकला जाता है।

सब राक्षस—(उछल कर) अरे रे रे रे शिकार! वस हो जाओ तैयार, सम्भालो अपने अपने हथियार।

सुबाहु—(एक राक्षस का नाम) मगर खबरदार ऐसी होशियारी से हमला करो कि किसी को निकल भागने का मौका न मिले।

मारीच—हर एक अपनी अपनी जगह पर घात लगाये और मौके की इन्तजार करे।

एक यात्री—ओहो कैसा घना जंगल है कि दिन में रात है।

दूसरा—अगर इस जंगल से कुशल पूर्वक निकल जायें तो अच्छा है, क्योंकि बदमाश लोगों के अड्डे प्रायः ऐसे ही जंगलों में होते हैं और लूट मार की घटनायें ऐसे

स्थानों पर ही अधिकता से सुनने में आते हैं।

तीसरा–अरे पागल हुआ है, यह भी मालूम है कि यहां राज किसका है? यह इलाका महाराज दशरथ की राजधानी में शामिल है, जिनके नाम से ही दुष्ट लोग गर्भ में ही नष्ट हो जाते हैं।

चौथा–हां यदि यह बात सत्य है तो हमें किसी प्रकार का भय नहीं करना चाहिये, क्योंकि महाराजा दशरथ के राज में डाकाजनी तो एक बड़ी बात है साधारण चोरी चकारी भी आज तक सुनने में नहीं आई।

पांचवां–बेशक, इनके राज में ऐसी वैसी घटनाओं का होना असम्भव है।

पहला–हाय हाय मर गया, आहा, हो, हां बड़ा भारी घाव लगा, अरे जरा पानी का घूंट...

सब यात्री–(हैरान होकर) हैं, हैं यह क्या माजरा है? अरे तीर किसने मारा?

बन से एक जोरदार आवाज़–खबरदार आगे कदम न बढ़ाना वरना सब का यही हाल होगा।

एक यात्री–(अपने साथियों से) अरे यह तो डाकू हैं, देखा मेरा ख़्याल आखिर दुरुस्त निकला।

मारोच–(एक यात्री की गर्दन पकड़ कर) रखदे जो कुछ तेरे पास है।

शेष राक्षस—(एक-एक यात्री को पकड़ कर) अगर अपनी जानकी खैर चाहते हो तो जो कुछ माल असबाब तुम्हारे पास है बिना हील हुज्जत के हमारे सुपुर्द कर दो।

सब यात्री—महाराजा दशरथ तेरी दुहाई है, हाय, हाय, हम गरीब तेरे राज्य में इस तरह बेरहमी से लूटे जाते हैं।

एक राक्षस—अरे दशरथ क्या चीज है? क्या कोई खाने की चीज है?

दूसरा राक्षस—यदि दशरथ कोई नमकीन चीज है तो ले लेना, शराब के साथ उसका खूब मजा आयेगा।

मारीच—अरे दशरथ वह है न अयोध्या का रहने वाला जिसको लोग राजा भी कहते हैं।

सुबाहु—अच्छा तो उसको यह लोग अपनी सहायता के लिए पुकारते हैं। जिसके मुँह में दांत न पेट में आंत, वह बुड्ढा खुर्राट हमारा मुकाबला करेगा? ऐसे तरबूज तो दिन में बीस-बीस खा जाता हूं और डकार भी नहीं लेता।

मारीच—(सब यात्रियों की गरदन पकड़ कर) जो कुछ तुम्हारे पास है पहले यहां रख दो फिर अपने हिमायती को भी बुला लाना।

सब यात्री—परमेश्वर के वास्ते हमारी दशा पर रहम करो।

मारीच—हिश्त, नामाकूल! हम स्त्रियां नहीं हैं। खबरदार

जो ऐसी बात का नाम लिया ।

यात्री—कुछ तो तरस खाओ ।

मारीच—हम ऐसी गली सड़ी चीज नहीं खाते ।

सुबाहु—लातों के भूत बातों से नहीं मानते, व्यर्थ झक झक बक बक में क्यों अपना कीमती वक्त खराब करते हो । तुम भिक्षुक हो जो इस तरह मांग रहे हो. अभी दो चार जड़ दो, देखो सब कुछ कदमों पर रखते हैं या नहीं ।

सब राक्षस—हां, हां, बिल्कुल दुरुस्त है (यात्रियों को पीटकर) निकालो हरामजादो अपनी-अपनी पूंजी ।

यात्री—(अपनी पूंजी आदि उनके हवाले करके) अच्छा हमारा सबर है ।

एक राक्षस—हम तो आनन्द अपना मनायेंगे ।

पियेंगे यहां बैठकर प्याले शराब के,
और भून-भून खायेंगे टुकड़े कबाब के ।
सब को चुल्लू में उल्लू बनायेंगे,
हम तो आनन्द अपना मनायेंगे ।

दूसरा—जब तक कि मेरे हाथ में तीरो कमान है,
सारे जमाने की मेरी मुट्ठी में जान है ।
सब को रास्ता अदम का दिखायेंगे,
हम तो आनन्द अपना मनायेंगे ।

तीसरा—राजा के राज का न कुछ हमको ख्याल है,
आये मुकाबले पै यह किसकी मजाल है।
टुकड़े एक एक के दो दो बनायेंगे,
हम तो आनन्द अपना मनायेंगे।
चौथा—राही मुसाफिर इस जगह जो जो भी आयेगा,
पंजे से मेरे छूट कर हरगिज न जायेगा।
उसे मारेंगे और लूट खायेंगे,
हम तो आनन्द अपना मनायेंगे।
पांचवां-दुनियां है कांपती मेरे ही नाम से,
राजा तलक को बैठने न दूँ आराम से।
कुल जमाने में हलचल मचायेंगे,
हम तो आनन्द अपना मनायेंगे।
छठा-रोजी कमाके खाने की हमको भी कसम है,
अव्वल से चली आई बुजुर्गों की रस्म है।
इस रस्म को न हरगिज मिटायेंगे,
हम तो आनन्द अपना मनायेंगे।
सातवां-यही कमाई है और यही रोजगार है,
सारे हैं नकद दाम न बिल्कुल उधार है।
माँगने हम किसी से न जायेंगे,
हम तो आनन्द अपना मनायेंगे।
आठवां-'यशवन्तसिंह' काम यह मेरा मुदाम है,

हलाल करके खाना हमें भी हराम है।
सारी दुनियां को यह ही सिखायेंगे,
हम तो आनन्द अपना मनायेंगे।

नाटक

मारीच—शाबाश बहादुरो! खूब काम किया, अब मौज उड़ाओ और बे-फिक्र होकर प्याले चढ़ाओ।

एक राक्षस—देखा उस्ताद जी कैसा निशाना लगाया।

दूसरा—और मैंने क्या कम जोर लगाया!

तीसरा—मेरी फुरती कैसी!

चौथा—तेरी ऐसी की तैसी।

पांचवां—अरे अब अपनी अपनी शेखी बघारते हो, ज़रा इधर की भी सुनिए कि जब तुम लोग मारधाड़ में लगे हुए थे, मैं अपनी जगह बिल्कुल चुपचाप बैठा रहा। जब देखा कि मैदान बिल्कुल साफ हो गया तो बन्दा धड़ाम से कूदा और धड़ाम से मैदान में आ डटा। बस फिर किसकी ताक़त थी, जो इस शेर बबर के सामने आता, वाह रे मैं!

मारीच—अच्छा अब इस फ़िज़ूल बात-चीत को छोड़ो चलो ज़रा जंगल की सैर करेंगे, सम्भव है कि कोई और शिकार हाथ लग जाय।

सब राक्षस—वाह! नेक सलाह का क्या पूछना, चलिये यहां क्या देर है।

सुबाहु—वाकई यह जङ्गल हमारे लिए बड़ा मुफ़ीद मतलब है, अब तक तो अन्धेरे में ही रहे।

मारीच—वह सामने से धुआं कैसा नजर आ रहा है।

सुबाहु-हां कुछ है तो सही।

मारीच—चलो तो आज इधर ही मौज मेला करेंगे।

[मुनि विश्वामित्र का यज्ञ करते नजर आना]

एक राक्षस—अरे यह देखा नया तमाशा, पागल घी को आग में डाल कर व्यर्थ खो रहा है।

दूसरा—दर असल है तो कोई दीवाना।

तीसरा—हमें क्या चाहिए बनी बनाई आग मिल गई, मजे से मांस भून-भून कर खायेंगे।

[शराब का दौर चलने लगा]

चौथा—अरे एक प्याला इस बुड्ढे को भी दे दो बिचारा ग़म ग़लत कर लेगा।

पांचवां-ले बुड्ढे पी ले शराब। विश्वामित्र—चुप।
छटा—ले बाबा खा ले कबाब। विश्वामित्र—चुप।

सातवां—अरे तेरा खाना खराब, कुछ तो दे जवाब।
विश्वामित्र-चुप। आठवां—न बोलता है न आँखें खोलता है।
नवां-जहरी सांप की तरह अन्दर ही अन्दर विष घोलता है।
दसवां—कोई पुराना ज़माना साज है।
ग्यारहवां—हां, हां, बड़ा धोके बाज है।
मारीच—अरे बुड्ढे! हमारे से ऐसी बेरुखी क्यों है, हम

तुम तो भाई भाई हैं, तुम बनवासी हम भी बनवासी,
तुम सन्यासी हम सत्यानासी ।

सुबाहु—ले अब तो पीले शराब जरासी, हो जाय ग़म से तेरी खलासी ।

विश्वामित्र जी [गाना बहरे कव्वाली]

अरे दुष्टो ! यहां तुमको तुम्हारी मौत लाई है ।
कजा ने मार कर थप्पड़ किया तुमको सौदाई है ॥
बढ़े हैं हौसले इतने तुम्हारे अय महा दुष्टो ।
फिरी है चर्बी आंखों में न कुछ देता दिखाई है ॥
मसल मशहूर है हो जायें जब चिऊँटी के पर पैदा ।
तो निश्चय ही समझलो कि कजा अब उसकी आई है ॥
फकीरों को सताकर सुख न हरगिज तुम भी पाओगे ।
चले जाओ यहां से बस इसी में ही भलाई है ॥
अगर है युद्ध की ख्वाहिश किसी राजा को जा ढूँढो ।
फकीरों से झगड़ने में कहां की वीरताई है ॥
जो धन दौलत के लालच से इरादा करके आये हो ।
यहां रक्खा ही क्या है वस्त्रों तक की सफाई है ॥
तुम्हारा क्या किसीका भी न हमने कुछ बिगाड़ा है ।
न जाने फिर यहां आकर यह क्यों आफत मचाई है ॥
करें हम मन वचन और कर्म से उपकार दुनिया का ।
नतीजा मिल रहा हमको भलाई का बुराई है ॥
तुम्हारे दिन बुरे आये मुझे यह नजर आता है ।

जो इतनी बे-वजा मस्ती तुम्हारे सिर पै छाई है ॥
नहीं बिगड़ा अभी कुछ भी संभल जाओ संभल जाओ।
कहे 'यशवन्तसिंह' तुमने अक्ल क्यों बेच खाई है ॥

नाटक

अरे मलेच्छो! हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो हमारा बना बनाया यज्ञ का सामान उजाड़ा है। मांस आदि डालकर तमाम यज्ञ को भ्रष्ट कर दिया और हमारा सब पुरुषार्थ नष्ट कर दिया। मालूम होता है कि जिन्दगी से बेजार हो जो हमारे दर पय आजार हो। सच है जब चिऊँटा की मौत के दिन आते हैं तो उसके पर उत्पन्न हो जाते हैं। कायरो! यदि लड़ाई का इरादा है, तो फकीरों से झगड़ने में क्या फायदा है? किसी राजा से माथा लगालो और अपने दिल के अरमान निकालो। धन दौलत की चाहना है तो हमारे पास कौनसा खजाना है, इसलिए यह तुम्हारी वृथा कामना है, क्योंकि यहां स्वयं ही दरिद्रता का सामना है। बेहतर है कि यहां से चले जाओ और हम फकीरों को अधिक न सताओ! अन्यथा समझ लो तुम्हारी जिन्दगी का प्याला लबरेज हो चुका है और सूर्य-वंशी खानदान का खंजर तेज हो चुका है। अधर्मियो! कुछ ईश्वर का भय करो और पाप कर्मों से डरो, जिनके लिए यह सब पापड़ बेलते हो और सब तरह की

विपत्तियां झेलते हो, वह सब भली-भली के यारा हैं. न कि अन्त समय के मददगार हैं। उस वक्त भाई होगा न बाप होगा, केवल अपना ही पुण्य और पाप होगा। सँभल जाओ, सँभल जाओ, इस मनुष्य जीवन को अकार्थ न गँवाओ और अपनी शरारतों से बाज आओ, अगर पिछले किये पर पश्चाताप करोगे और न आइन्दा ऐसे पाप करोगे तो तुम्हारा आगामी जीवन सफल होगा, अन्यथा फिर सम्भलना मुश्किल होगा।

मारीच का गाना (बतर्ज़ कव्वाली)

ज़रा चुप रह अरे बुड्ढे यह क्या बक लगाई है।
डराता मौत से हमको वह कब्र से बेच खाई है॥
तू जिसका जोम करता है वह हम भी समझे बैठे हैं।
भला उस बुड्ढे दशरथ की यहां तक क्या रसाई है॥
हमारे से बिगड़ना कोई खाला जी का बाड़ा है?
अकल से बात कर पागल हवा यह क्या समाई है॥
नहीं विद्यार्थी हम पाठशाला के अरे मूरख।
जो तू दाढ़ी हिलाकर दे रहा हमको पढ़ाई है॥
जटा सिर पर बढ़ा ली और दाढ़ी कर लई लम्बी।
हमें मालूम है जो कुछ तुम्हारी पारसाई है॥
न जाने उमर भर में किस कदर कौतुक किये होंगे।
अखीरी वक्त में धूनी यहां आकर रमाई है॥

हमें चिऊंटी बताता आप हाथी बनना चाहता है।
मगर चिऊंटी की ताकत से तुझे क्या आशनाई है॥
अभी चाहूं तो करदूं एक से टुकडे तेरे दो दो।
मगर मैं सोचता हूं इसमें क्या मेरी बड़ाई है॥
नहीं मालूम है शायद तुझे क्या नाम है मेरा।
मुझे मारीच कहते हैं जमाना दे दुहाई है॥
सुवाहु है सिपहसालार मेरा एक लासानी।
मेरा यह दायां बाजू और मादर-जाद भाई है॥
है बाकी फोज भी इतनी नहीं है इन्तहा जिसकी।
अभी दे दूं हुक्म तो चीज क्या सारी खुदाई है॥
नहीं है खोफ कुछ 'यशवन्तसिंह' का हमको हरगिज भी।
बुला ला जा चला जा देर क्यों इतनी लगाई है॥

नाटक

वाहरे बुड्ढे तेरी गुल अफ़शनियां, खूब सुनाई बेतुकी कहानियां! तेरे जैसे लमदाढ़िये न मालूम कितने देखे भाले हैं, मगर तेरे शुतर गमजे सब से निराले हैं। अरे भौंदू! तू किसको पढ़ा रहा है? किस पर यह रंग चढ़ा रहा है? यहां पहले ही हर रंग में रंगीले हैं, न कि तेरी तरह हाथ पांव ढीले हैं। मौत का खरीदार है, हर तरह से आजिज़ और लाचार है, मगर ऐंठ देखो तो छः घोड़ों का सवार है। न मालूम किस बिरते पर इतना अकड़ता है और म्यान से निकला पड़ता है, अभी अगर

हाथ हिला दूं, तो एक के दो बना दूं। मगर मैं यह किस तरह गवारा करूं कि अपने खंजर आबदार को तेरे जैसे बुड्ढे के खून से नापाक करूं। हां जिसका तू जोम करता है और नाम ले ले कर अकड़ता है उन चन्द्रवंशी, सूर्यवंशी, यह वंशी और वह वंशो का भी आजमाऊंगा और उनकी ऐसी वंशी बजाऊंगा कि उनका वंश दुनियां से मिट जायेगा, कोई नाम लेवा और पानी देवा नज़र न आयेगा। जितनी हम नरमी पकड़ते गये, उतना ही आप सिर पर चढ़ते गये। जा अपने उस हिमायती को बुला ला, मैं भी मारीच नहीं अगर उसका कचूमर न निकाला।

:o:-*-:o:

पाँचवाँ दृश्य

महाराजा दशरथ का दरबार

दशरथ—सब अहलकार आयें और अपनी रिपोट सुनायें।

मन्त्री—महाराज के इकबाल से तमाम प्रजा खुशहाल और दुश्मन पायेमाल हैं। तमाम अफसर अपना-अपना काम बड़ी दयानतदारी से करते हैं और महाराज की खैरख्वाही का दम भरते हैं।

सेनापति—महाराज का एक-एक सिपाही पूरा जां निसार है,

और तख्त अयोध्या के लिए सिर देने को तैयार है।

कोषाध्यक्ष—खजाने की हालत क़ाबिले इतमीनान है, जमा-खर्च कि बिल्कुल सही मीज़ान है। तमाम मुलाज़िम पूरे दयानतदार हैं और अपने आपने काम में खूब होशियार हैं।

मन्त्री—तमाम ज़मीदार हर प्रकार की विपत्ति से रहित हैं और आनन्द सहित हैं। न किसी को किसी प्रकार की शिकायत है, बल्कि हर एक की ज़बान पर महाराज के इन्साफ़ की हिकायत है लगान बिल्कुल वाजबी वसूल किया जाता है और मतालबा भी बाज़ वक्त उनकी मरजी के अनुकूल लिया जाता है, दुर्भिक्ष का कहीं नामों निशान नहीं, राज्य की ओर से कोई मनुष्य बदगुमान नहीं, क्योंकि जरूरत के समय उनको सहायता दी जाती है और हर प्रकार से उनकी मदद की जाती है।

कोतवाल—शहर में हर तरफ़ से अमनो-अमान रहा, दास अन्य कर्मचारियों सहित प्रजा का निगहबान रहा। तमाम राज्य में दुराचारी मनुष्य का निशान नहीं और यहां उनकी दाल गलना आसान नहीं, क्योंकि पहरे चौकी का पूरा ख्याल है और ऐसे लोगों की विशेष तौर पर जांच पड़ताल है।

दशरथ–यूँ तो मुझको अपने मन्त्रियों पर पूरा-पूरा विश्वास है, क्योंकि आप लोगों के प्रबन्ध से ही इस राज्य में हर तरह प्रकाश है परन्तु मैं पूछता हूं कि आप में से कोई मनुष्य खुशामद और चापलूसी से तो काम नहीं लेता और मुझसे डरता हुआ मेरी किसी गलती का नाम नहीं लेता।

सौमित्र (मन्त्री)–महाराज को किस तरह हमारी नेकनियती पर शक हुआ, जिसको सुनकर मेरा चेहरा भी फक हुआ ?

दशरथ–रात से मेरी तबियत पर कुछ मलाल है।

सौमित्र–किस बात का ख्याल है ?

दशरथ–बात भी मामूली थी, परन्तु मेरे लिए तो रात काटनी सूली थी।

सौमित्र–महाराज ! अब अधिक बेताब न कीजिए और इस कदर जवाब न दीजिये। ऐसी क्या बात थी जिसकी वजह से आपके लिए सूली की रात थी।

दशरथ–कल रात को एक सुपना परेशान देखा।

सौमित्र–उसमें क्या सामान देखा ?

दशरथ (गाना)

अनोखा सपना देखा रात,

मुझे भ्रम है मम प्रजा पर पड़ा कोई उत्पात*

*यह एक प्रसिद्ध बात है कि राजा और प्रजा का सम्बन्ध

अनोखा सपना देखा रात ॥१॥
एक जगह पर बन के भीतर गोऐं चुगने जात ।
उसी जगह पर एक सिंह ने आन लगाई घात ॥
अनोखा० ॥२॥
जब गौवें उस बन में पहुँची ले बछड़ों को साथ

पिता और पुत्र के तुल्य होता है। इस सच्चाई के मानने में किसी को इन्कार नहीं हो सकता। यदि सत्य पूछा जाय तो इस सम्बन्ध का दरजा कई अवस्थाओं में पिता और पुत्र के सम्बन्ध की जगह माता और पुत्र का सम्बन्ध कहा जाय तो और भी उचित है क्योंकि पुत्र की आत्मा का पिता की आत्मा की अपेक्षा माता की आत्मा के साथ विशेष सम्पर्क होता है, जिसके प्रमाण को इतनी जरुरत नहीं; क्योंकि हर एक मनुष्य इस भेद से भली भांति परिचित है। यदि पुत्रों को जरा भी कष्ट होता है तो माता की आत्मा पर उसका तत्काल ही प्रभाव पड़ता है और प्रकृति ने जो तारबकी दोनों आत्माओं के बीच लगाई हुई है तुरन्त हरकत में आ जाती है, चाहे दोनों की दूरी कितनी ही अधिक क्यों न हो। यह एक अलग बात है कि वह हालत जो उसके बच्चे के कष्ट का कारण हो, साक्षात सामने आये या न आये परन्तु इसमें जरा भी सन्देह नहीं है कि उसको बेवसी और व्याकुलता का चित्र किसी न किसी सूरत में हू बहू उसकी आंखों के सामने खिंच जाता है। अस्तु जिस रोज डाकुओं ने गरीब यात्रियों को लूटा तो उस घोर अत्याचार की तसवीर महाराज दशरथ की आंखों के सामने उक्त प्रकार से आ खड़ी हुई।

सिंह उछल कर सारी गौवें पकड़ा हाथों हाथ।
अनोखा० ॥४॥
गौवें देत दुहाई बछड़े अलग खड़े कुरलात।
लेकिन पंजे से जालिम के नहीं रिहाई पात॥
अनोखा० ॥४॥
एक तरफ बछड़े रोते हैं एक तरफ को मात।
रहा गया न देख के मुझ से यूँ गौवों का घात॥
अनोखा० ॥५॥
चला छुड़ाने समझ के उनको दुखिया और अनाथ।
खुल गई आँख उसी दम इतने में हो गई प्रभात॥
अनोखा० ॥६।
जब से मैंने देखा है यह सपना वाहियात।
तब से ही 'यशवन्तसिंह' मम् कांपत सारा गात॥
अनोखा० ॥७॥

हर एक मनुष्य प्रतिदिन स्वप्न देखता है। सम्भव नहीं महाराजा दशरथ ने इससे पहले कभी स्वप्न देखा न हो. परन्तु आज का स्वप्न स्वप्न नहीं वरन सच्ची घटना का प्रतिबिम्ब है, जो उनका चित्त अपने लाख प्रयत्न करने और मन्त्रियों के समझाने पर भी समझने की जगह परेशान हो रहा है और उनको निश्चय होता है कि मेरी प्रजा पर जरूर अत्याचार हुआ है अन्यथा पहले क्या कभी स्वप्न न देखे थे।

हमारा इरादा इस विषय पर कोई लम्बा चौड़ा विवाद करने का नहीं और न यह बातें हमारे विषय से सम्बन्ध रखती हैं हां इतना

मन्त्री जी ! जब से यह स्वप्न देखा है, तबीयत बुरी तरह बेकरार है, चित्त पर अनेक प्रकार के ख्यालात का तूमार है। हरचन्द सोचता हूं परन्तु समझ में नहीं आता, तो अपने आप को नोचता हूं। यद्यपि स्वप्न की बातें जैसी कुछ होती हैं, सब पर जाहिर हैं, परन्तु न जाने आ तबीयत खुद-बखुद क्यों अख्त्यार से बाहिर है। बहुत कुछ इसे बहलाता हूं परन्तु इसमें अपना तमाम प्रयत्न

अवश्य निवेदन किये देते हैं कि जब तक यह पवित्र सम्बन्ध राजा और प्रजा में बने रहते हैं, और दोनों ओर की इस कुदरती तार बर्की में कोई खराबी पैदा नहीं होती तो वहां हमेंशा सुख शांति का राज्य रहता है। प्रजा सुखी तो राजा सुखी, प्रजा दुःखी तो राजा महा दुःखी क्योंकि प्रजा ही राज की जड़ होती है, वृक्ष की जड़ मजबूत है तो उसको दुनियां की कोई शक्ति अपनी जगह से नहीं हिला सकती, यदि जड़ ही खोखली है तो साधारण हरकत उसको उखाड़ देने को काफी है। जड़ों की दीमक एक मशहूर कहावत है, जिस वृक्ष को नष्ट करना होता है तो उसकी जड़ों को किसी न किसी प्रकार से सुखा दिया जाता है और बड़े देवदार वृक्ष जिनकी चोटियां आसमान से बातें करती हैं क्षण भर में बगैर चूं चिरा किये जमीन पर आ गिरते हैं जिनका फिर प्रलय तक उठना असम्भव है। सारांश यह है कि राजा और प्रजा के सम्बन्ध उस वक्त तक स्थिर हैं, जब तक दोनों फरीक अपने-अपने कर्त्तव्यों को समझते हैं अर्थात राजा प्रजा की उन्नति को अपनी समझे और प्रजा पर जान तक न्योछावर कर देने में अपना कर्त्तव्य जाने, इसके विरुद्ध यदि राजा को प्रजा की ओर से बदगुमानी है और प्रजा को राजा की तरफ से परेशानी है, तो वहां सुख और शान्ति को तलाश करना केवल नादानी है।

इसके विपरीत पाता हूं। इसलिए मैंने यह परिणाम निकाला है, कि जरूर कुछ दाल में काला है। वह स्वप्न किसी कारण से खाली नहीं और मेरी परेशानी पास-पास जाने वाली नहीं। इसमें जरूर कुछ न कुछ भेद है, जो मेरे चित्त को इस प्रकार खेद है। मालूम होता है कि राज्य प्रबन्ध में जरूर कुछ न कुछ खराबी हुई है, जो मेरे चित्त को इस कदर बेताबी हुई है। इसलिए मेरे कहने पर विश्वास करो और जो खराबी है उसकी शीघ्र तलाश करो।

मन्त्री जी का गाना

अय राजन् क्या सुपने की बात।

ऐसे सुपने सारी दुनियां देखत है दिन रात ॥ अय रा०

सुपने में कई राजा हो गये ठाट बाट के साथ।

आंख खुली तब वही अवस्था रोवें मल-मल हाथ॥ अय रा०

राजा कङ्गला, कङ्गला राजा, सुपने में हो जात।

सुपने में पल में हो जाते सब उल्टे हालात॥ अय रा०

सुपने में धन दौलत पाया, देख-देख गरभात।

पल्ले पड़ी न फूटी कौड़ी यों ही मन भटकात॥ अय रा०

सुपने में इन्सान पै पड़ती नई नई आफत।

पल में रोता पल में हंसता यह इनकी औकात॥ अय रा०

दिल को मत दलगीर करो तुम सुनो अय पृथ्वीनाथ!

सुपना है 'यशवन्तसिंह' दुनियां में विख्यात ॥ अय रा०

पृथ्वीनाथ ! व्यर्थ अपने दिल को परेशान न कीजिए, और इस मामूली सी बात पर इतनी खैंचतान न कीजिए। अगर स्वप्न की बातों में जरा भी सच्चाई हो, तो तमाम दुनियां की एकदम सफाई हो। स्वप्न में मनुष्य एक पल में अमीर हो जाता है और एक पल के बाद दरिद्री और फकीर हो जाता है। यदि समस्त संसार को स्वप्न की बातों पर इस तरह ऐतबार हो तो एक दिन तो क्या एक दम गुजारना भी सख्त दुश्वार हो। इन बे बुनियाद ख्यालों को दिल से निकालिए और अपने आपको सम्भालिए, यदि उचित हो तो कुछ दान......

द्वारपाल का गाना (रागनी पीलो ताल झप)

मुनि विश्वामित्र जी आये हुए हैं,
वह द्वारे पै आसन लगाये हुए हैं।
न रौनक है मुख पर न आंखों में लाली,
वह पजमुरदा सूरत बनाये हुए हैं।
यह प्रतीत होता है चेहरे से उनके,
कि गोया किसी के सताये हुए हैं।
मुनि विश्वामित्र जी० ॥१॥
अनुमान से मैंने की है परीक्षा,
कि दिल मे बहुत तलमलाये हुए हैं।

न जाने कि कारण है क्या बेकली का,

जो सुध बुध भी अपनी भुलाये हुए हैं।

मुनि विश्वामित्र जी० ॥२॥

बहुत की है कोशिश उन्हाने अगर्चे,

कि गुस्से को अपने छिपाये हुए हैं।

मगर उनकी बातों से होता है जाहिर,

किसी बेरहम के सताये हुए हैं।

मुनि विश्वामित्र जी० ॥३॥

हुक्म होवे कुछ बजा लायें उसको,

सिर अपना हम हरदम झुकाए हुए हैं।

संदेशा मुनि जी का 'यशवन्तसिंह' हम,

महाराज के पास लाये हुए हैं।

मुनि विश्वामित्र जी० ॥४॥

नाटक

राजन् पति सरताज, रघुकुल भूषण अयोध्या पति महाराज की जय हो! मुनि विश्वामित्र जी ड्योढ़ा पर विराजमान हैं, यह द्वारपाल इसलिए उपस्थित हुआ है कि मुनि जी के पधारने का समाचार महाराज तक पहुँचाऊं और जो महाराज की आज्ञा हो मुनि जी को सुनाऊं।

दशरथ—क्या कहा? मुनि विश्वामित्र जी पधारे हैं?

द्वारपाल—हां पृथ्वीनाथ।

दशरथ–मंत्री जी ! आप मुनि जी के स्वागत के लिए जाइये
और उनको आदर सत्कार से अपने साथ लाइये ।

मंत्री–महाराज का हुक्म सिर माथे पर, अभी जाता हूं और
मुनि जी को आपका संदेश सुनाता हूं ।

मंत्री (विश्वामित्र जी से गाना रागनी पीलो)

कहो मुनि जी कहां से पधारे हैं, कहो मुनि जी...
करूं नमस्ते अय मेरे भगवान् ! हाथ जोड़कर पड़ता चरणन,
सेवक सदा तुम्हारे हैं । कहो मुनि जी० ॥१॥
हम पर की अनुग्रह अति भारी, कृतार्थ की नगरी सारी,
धन धन भाग हमारे हैं । कहो मुनि जी० ॥२॥
चलकर आए मुनि विश्वामित्र, राज सभा को करो पवित्र,
अभिलाषी वहां सारे हैं । कहो मुनि जी० ॥३॥
महाराज ने सुना है जब से, दर्शन को व्याकुल हैं तब से,
चरणों पर बलिहारे हैं । कहो मुनि जी० ॥४॥
दया करो, दरबार पधारो, कर विश्राम थकान उतारो,
हम दर्शन के मतवारे हैं । कहो मुनि जी० ॥५॥

नाटक

मंत्री–मुनिवर ! नमस्ते निवेदन करता हूं और अपना सर आपके पवित्र चरणों में धरता हूं, चलिए दरबार को सुशोभित कीजिये और सब हाज़रीन दरबार को दर्शन दीजिए । हरएक छोटा बड़ा आपके दर्शन को बेकरार है और वहाँ आपका सख्त इंतज़ार

है, महाराज की आज्ञा के अनुसार आपके स्वागत के लिये आया हूं और उनका सँदेशा आप तक लाया हूं, इसलिये मेरी प्रार्थना मंजूर किजीये और दरबार में पधार कर मशकूर कीजिये।

विश्वामित्र—मन्त्री जी आनन्द, रहो यहां तक आने में जो आपको कष्ट हुआ है इसके लिये क्षमा मांगता हुँ और आपको आशीर्वाद देता हूँ क्योंकि हम फकीरों के पास सिवाय आशीर्वाद के और रक्खा ही क्या है।

मन्त्री—महाराज! आप नाहक शर्मिन्दा न कीजिये, हमारी ऐसी प्रारब्ध कहाँ जो आप इस तरफ तशरीफ लावें। न जाने किस तरह भूल कर आना हो गया, अब अधिक समय न गुजारिये और जल्दी से दरबार में पधारिये।

विश्वामित्र—बहुत अच्छा चलिये।

(मन्त्री का विश्वामित्र सहित दरबार में पहुँचना)

दशरथ का गाना

कहो मुनि जी आपका किस तरफ आना हो गया,
आपके दर्शन किये भी इक जमाना हो गया।
मेरे उत्तम भाग थे जो इस तरफ आप आ गये,
जब से आप आये पवित्र यह घराना हो गया।
लीजिये आसन पवित्र कीजिये दरबार को,
किस, जगह पर आजकल कहिये ठिकाना हो गया।
हर तरह ममनून और मशकूर हूं ऋषियों का मैं,

जिनकी कृपा से यह रोशन आशियाना हो गया।
मेरे लायक गर कोई सेवा हो तो फरमाइये,
किस तरह से भूल कर तशरीफ़ लाना हो गया।
आप के कामों में कोई विघ्न तो पड़ता नहीं,
इस तरफ आने का कहिये क्या बहाना हो गया।
बाद मुद्दत के दिये दर्शन मुनि जी आपने,
जोरावर ही इस जगह का आबोदाना हो गया।
पूछ लेता था कुशल 'यशवन्तसिंह' से आपकी,
उसका मसकन भी मगर अब तो 'टोहाना' हो गया।

नाटक

मेरे धन्य भाग हैं जो आपने पवित्र अपने चरणों से इस स्थान को शोभा दी, आपके दर्शन से चित्त गद्-गद् प्रसन्न हुआ। आइये, विराजिये, आसन ग्रहण कीजिये, कहिये चित्त तो प्रसन्न है! चेहरे पर उदासी सी प्रतीत होती है, आंखों का रुख कुछ पलटा हुआ नज़र आता है, एक-एक अंग फरफरा रहा है। यह स्वभाव-विरुद्ध परिवर्तन सफ़र की थकान से है या कोई खास कारण है! (दिल ही दिल में) ईश्वर खैर करे, मुनि जी का हुलिया तो कुछ बिगड़ा नज़र आता है।

विश्वामित्र का गाना (बहरे तवील)

अय महाराज दशरथ दुहाई तेरी,
हम फकीरों का अब यां गुज़ारा नहीं,

कष्ट मिलता हमें रात दिन इस कद्र,
कि हमारे से जाता सहारा नहीं।
कोई अपराध न हमने तेरा किया,
त्याग बस्ती को जंगल में डेरा किया।
इक किनारे पै जाके बसेरा किया,
रहना वां भी हमारा गवारा नहीं।
अय महारज दशरथ० ॥१॥
हम किसी प्राणी तक को सताते नहीं,
रहते जंगल में बस्ती में आते नहीं।
उस जगह भी मगर रहने पाते नहीं,
कोई रत्तक रहा अब हमारा नहीं।
अय महाराज दशरथ० ॥२॥
रात्तस आ हमें तंग करने लगे,
यज्ञ ऋषियों का भंग करने लगे।
मुफ़्त में छेड़ हम सँग करने लगे,
हमने उनका कभी कुछ बिगाड़ा नहीं।
अय महाराज दशरथ० ॥३॥
वेद जंगल में बैठे उचारा करें
खायें फल फूल अपना गुज़ारा करें।
फिर भी नाहक हमें दुष्ट मारा करें,
खेत बाबा का उनके उजाड़ा नहीं।

अय महाराज दशरथ० ॥४॥

क्षत्री वंश का अँश जाता रहा,
इसलिये हमको हर इक सताता रहा।
आपको ऐशो इशरत सुहाता रहा,
मगर कर्त्तव्य अपना विचारा नहीं।

अय महाराज दशरथ० ॥५॥

उस महानीच मारीच का हो बुरा,
हर तरफ उसने रक्खी है आफत मचा।
जो वहां इस घड़ी है जुलम हो रहा,
देखा 'यशवन्तसिंह' ने नज़ारा नहीं।

अय महाराज दशरथ० ॥६॥

नाटक

ग़जब! ग़जब!! सितम! सितम!! अन्धेर! महा अन्धेर!! प्रजा पड़ी लुटा करे और आपको कानों कान खबर न हो! राजन् आपके गंगा पार के इलाकों में राक्षसों ने वह आफत मचाई है कि दुहाई है, दुहाई है। जो यात्री आता है बड़ी क्रूरता के साथ लूटा और वध किया जाता है। अभी कल की घटना है कि यात्रियों का एक समूह स्त्री और बच्चों सहित लूटा कई बेचारों की जानें गई, कईयों का सिर फूटा। तमाम इलाक़ा मारीच के हाथों दुःखी हो रहा है, और हर एक छोटा बड़ा उस कमबख़्त की जान को रो रहा है। अब उनके साहस

इतने बढ़े हैं कि साधुओं से भी छेड़ करने लग पड़े हैं। हम लोग जंगल में बैठे ईश्वर का भजन करते हैं और कन्द मूल खाकर अपना पेट भरते हैं, न किसी को सताते हैं, न किसी से कुछ मांगने जाते हैं, केवल अपनी तपस्या से सरोकार है, मगर इन पापियो को यह भी नागवार है। अस्तु हमने एक यज्ञ रचाया था, बड़ी कठिनता से उसे सारी आपत्तियों से बचाया था, किन्तु न जाने वह बेईमान कहां से आ मरे कि हमारा सब किया कराया पुरुषार्थ नष्ट कर दिया और समस्त यज्ञ भ्रष्ट कर दिया। यहां आकर आफत मचाने लगे, यहां तक कि हवन कुण्ड में भी मांस आदि भून भून कर खाने लगे। जब हम फकीरों के साथ यह बद-ऐतदाली है, तो दुनियांदारों का तो परमेश्वर ही वाली है।

राजा दशरथ का गाना (बहरे तबील)

ऐ मुनि जी सुनाई यह क्या दास्तां,
राक्षसों को रहा भय हमारा नहीं।
क्षत्री वंश का अंश जाता रहा,
लफ्ज़ जाता यह मुझ से सहारा नहीं।
खून सुनते ही मेरा उबलने लगा,
और कलेजा भी हाथों उछलने लगा।
हाथ ऋषियों पै दुष्टों का चलने लगा,

राजा का भय जरा भी विचारा नहीं।
ऐ मुनि जी सुनाई यह क्या दास्तां ॥१॥
मेरी प्रजा पै ये सितमरानी करें,
यों कहो कि हमारी ही हानि करें।
खाक फिर हम यहां हुक्मरानी करें,
शीश धड़ से जो उनका उतारा नहीं।
ऐ मुनि जी सुनाई यह क्या दास्तां ॥२॥
लग गये करने इतनी जर्बदस्तियां
लूटने लग गये जंगलो बस्तियाँ।
है उस वक्त तक उनकी खरमस्तियां,
जब तलक देखा मेरा दुधारा नहीं
ऐ मुनि जी सुनाई यह क्या दास्तां ॥३॥
मैंने देखा था सुपना वह सच्चा हुआ,
राक्षसों से दुखी बच्चा बच्चा हुआ।
आ गये मुनि जी यह भी अच्छा हुआ,
उनको खुद ही इन्होंने सुधारा नहीं।
ऐ मुनि जी सुनाई यह क्या दास्तां ॥४॥
देर क्या है यहां बस चढ़ाई करूँ,
पापियों की पलक में सफाई करूँ।
बेईमानों की ऐसी मँजाई करूँ,
नाम लेंगे इधर का दुबारा नहीं।

ऐ मुनि जी सुनाई यह क्या दास्तां ॥५॥
मेरी प्रजा का है मेरा जानो जिसम,
है रघुवंश की आदि से यह रसम।
मुझे 'यशवन्तसिंह' तेरे सर की कसम,
मैंने चुन चुन के उनको जो मारा नहीं।
ऐ मुनि जी सुनाई यह क्या दास्तां ॥६॥

नाटक

हैं! हैं!! मेरे राज्य में यह अंधेर, चोरी नहीं बल्कि सीनाज़ोरी! जब मेरी प्रजा को इस कदर आज़ार है, तो मेरे राज्य करने पर धिक्कार है। अभी चढ़ाई करता हूं और आपके देखते-देखते एक-एक की सफ़ाई करता हूं। विश्वास जानिये कि इनकी मृत्यु समीप आई है, जो इनके दिल में ऐसी धृष्टता समाई है कि साधु संन्यासियों को भी आकर सताने लगे हैं और ख़्वाहमख़्वाह उनके मुंह आने लगे हैं। यही कारण था जो कल से मेरा दिल उदास था और मुझको यह पूरा विश्वास था कि जरूर कुछ न कुछ खराबी हुई है। (मन्त्री से) मंत्री जी! अब भी आपको मेरे स्वप्न को सत्यता में भ्रम है, जबकि इस कदर जुलम और सितम का बाजार गर्म है। (सेनापति से) इसी समय सेना तैयार करो और मेरी दूसरी आज्ञा का इन्तज़ार करो।

जब तक इन मूज़ियों का काम तमाम न करूंगा, उस वक्त तक आराम न करूंगा।

विश्वामित्र जी का गाना (बहरे तवील)

इस अवस्था में राजन् मुझे आपको,
कोई तकलीफ़ देना गवारा नहीं।
राम लच्मण ही काफी हैं उनके लिये,
फौज लश्कर का चाहिये सहारा नहीं।
आप बैठे रहो बेफ़िक्र इस जगह,
वक्त लड़ने का यह अब तुम्हारा नहीं।
तेरे दोनों कुंवर अब जवाँ हो गये,
किस लिए करते इनको इशारा नहीं॥ इस अवस्था॥१॥
राम ने रुख किया उस तरफ तो उन्हें,
भागने के सिवा कोई चारा नहीं।
या तो पीछे हटें या वहीं पर कटें,
और सूझेगा उनको किनारा नहीं॥ इस अवस्था॥२॥
तेरे दोनों दिलावर जवांमर्द हैं,
उनके बल का कोई वारापारा नहीं।
अगर ऐसी ही सूरत हुई उस जगह,
तो कोई मैं भी मुर्दा नाकारा नहीं॥ इस अवस्था॥३॥
साथ कर दो आप जल्दी इन्हें,
और कहना अधिक कुछ हमारा नहीं।

मान लोगे तो है कीर्ति आपका,
वरना 'यशवन्तसिंह' का इजारा नहीं ॥ इस अवस्था ॥४॥

नाटक

राजन् ! आपको कष्ट करने की क्या जरूरत है और न ही वहां कुछ ऐसी खतरनाक सूरत है । आप केवल राम लक्ष्मण को मेरे साथ किजिये और मेरे हाथ में उनका हाथ दीजिये । मैं इस अवस्था में आपको कष्ट नहीं देना चाहता और फौज लश्कर भी आप से लेना नहीं चाहता । ईश्वर की कृपा से आप के दोनों कुंवर जवान हैं और हर एक विद्या में दोनों पूर्ण विद्वान् हैं । राक्षसों का मलियामेट करना इनके लिए साधारण बात है और निश्चय ही उनकी मौत राम और लक्ष्मण के हाथ है । प्रथम तो आशा नहीं कि मुकाबले पर आयें और इनकी शकल देखते ही पीठ न दिखायें, यदि मुकावला करेंगे तो निःसन्देह कुत्तों की मौत मरेंगे । आप राजकुमारों का बिल्कुल ख्याल न करें और इनके भेजने में लैतोलाल न करें । ईश्वर ने चाहा तो बहुत जल्द कुशलपूर्वक आपके पास पहुंच जायेंगे और आपके वंश के यश और कीर्ति को चार चांद लगायेंगे ।

राजा दशरथ का गाना (बहरे कव्वाली)

मुनि जी आपको इस जिद से फायदा हो नहीं सकता,

यह नामुमकिन अमर है मुझसे वायदा हो नहीं सकता।
मैं खुद चलने को हाजिर हूं तो फिर इसरार नाहक है,
क्यों उल्टी बात करते हो यह कायदा हो नहीं सकता।
रहूं मैं घर बैठा बालकों को युद्ध में भेजूं,
मुनि जी मुझ से जीते जी तो ऐसा हो नहीं सकता।
जो अपनी आंख से औलाद अपनी को दुःखी देखें,
किसी मां बाप का ऐसा कलेजा हो नहीं सकता।
इसी औलाद की खातिर भटकती फिरती है दुनिया,
रत्न यह वह है जो हर वक्त पैदा हो नहीं सकता।
वह बच्चे हैं भला क्या जानते हैं युद्ध में लड़ना,
मेरे अनुभव में तो अच्छा नतीजा हो नहीं सकता।
तरीके जङ्ग का उनको तजुर्बा ही अभी क्या है,
वह जीतें राक्षसों को मुझको निश्चय हो नहीं सकता।
मुझे मालूम है अच्छी तरह मारीच की खसलत,
बिना मारे मरे बदजात सीधा हो नहीं सकता।
तुम्हें मतलब है केवल राक्षसों को दण्ड देने से,
सो यह मतलब तुम्हारा इन से पूरा हो नहीं सकता।
न दिल में समझ लेना कि मैं टालमटोल करता हूं,
मेरे कहने का हरगिज भी यह मुद्आ हो नहीं सकता।
जो क्षत्री है भला वह युद्ध को सुन करके घबराये,
कभी 'यशवन्तसिंह' का यह अकीदा हो नहीं सकता।

नाटक

आपका कहना मुझे हर तरह कबूल है, मगर यह हठ आपकी बिल्कुल फिजूल है। भला मैं किस तरह गवारा करूं, कि बच्चों को तो युद्ध में भेजूं और मैं यहां मौजें मारा करूं। कुछ तो परमेश्वर लगती कहो, यूं तो हठ न करते रहो। आप मानें या न मानें, किन्तु यह विचारे अभी तरीके जंग को क्या जानें। राक्षसों से मुकाबला करना कोई खेल तमाशा है? और मारीच ऐसा कहां का बताशा है, जो जाते ही उसे मुँह में डालेंगे और एक दम चबा लेंगे। आखिर वह भी तो इन्सान है, अगर सच पूछो तो परले सिरे का चालबाज और बेईमान है। उससे मुकाबला करना मामूली बात नहीं, फिर इन बच्चों की तो कुछ भी बिसात नहीं, जो जमाने की चालबाजियों से बिल्कुल बेखबर हैं, चाहे अपने घर में कितने ही शेर बबर हैं। घर के योद्धा और रण के योद्धा में बड़ा फर्क है, जिसका प्रमाण इतिहास का एक एक वर्क है। आप इन तमाम घटनाओं को सामने रख कर विचार ले और उसके ऊँच नीच पर भी अच्छी तरह दृष्टि मार लें।

विश्वामित्र जी का गाना (रागनी पीलो)

राजन् मुझे तेरी बातों से कायरपन की बू आती है,
तुमको पड़ी है क्या सरकार, मौज से लूटो ऐश बहार।

करते हुए साफ इन्कार, तेरी जबान तुतलाती है ॥
राजन् मुझे तेरी बातों से० ॥१॥
हो रहे अजब तेरे हालात, माचे तोड़ भी कर दिये मात।
प्रजा लुटा करे दिन रात, तुमको ऐश खूब भाती है ॥
राजन् मुझे तेरी बातों से० ॥२॥
क्षत्रीपन का तजो घमंड, देखा तेरा तेज प्रचंड।
क्या तुम दोगे उसको दण्ड, मुझको समझ नहीं आती है ॥
राजन् मुझे तेरी बातों से० ॥३॥
होकर दलीप की औलाद, छोड़ी कुल की सब मर्याद।
सुन कर प्रजा की फरियाद, तेरी फटे नहीं छाती है ॥
राजन् मुझे तेरी बातों से० ॥४॥
डुबोया रघुवंश का नाम जिसको रहे सुबह और शाम।
अपने ऐश इशरत से काम, प्रजा निश दिन दुख पाती है ॥
राजन् मुझे तेरी बातों से० ॥५॥
पैदा हुए हैं अज* के लाल, कीनी प्रजा की प्रतिपाल।
कुल का कुल कर दिया निहाल, दुनिया तेरे यश गाती है ॥
राजन् मुझे तेरी बातों से० ॥६॥
लेकिन समझ लो ऐ महाराज, है यह चन्द रोज का राज।
मैं यह कह जाता हूं आज, तेरी नियत बतलाती है ॥

*महाराज दशरथके पिता का नाम

राजन् मुझे तेरी बातों से० ॥७॥
सुख से रहे तेरी सन्तान, हम तो आकर हुए हैरान।
सारे खानदान की आन, आज 'यशवन्तसिंह' जाती है॥
राजन् मुझे तेरी बातों से० ॥८॥

नाटक

आश्चर्य है कि रघुकुल में ऐसे कायर कहां से पैदा हुए और तेरे जैसों के पास आकर हैरान अलहदा हुये। तेरे पूर्वजों में से आज तक किसी ने ऋषियों की सहायता से इन्कार नहीं किया और अपनी प्रजा की रक्षा के लिये क्या कुछ निसार नहीं किया? जबान का कौल सिर के साथ था, इस लिए उनके सिर पर हर समय परमेश्वर का हाथ था जो वचन ज़बान से निकाला उसको पूरा करने के लिये अपनी जान को खतरे में डाला क्या रोहितास हरिश्चन्द्र का पुत्र नहीं था और अगर वह तेरी तरह टाल मटोल करना चाहता तो क्या उसके पास कोई उत्तर नहीं था? तुमने तो राजा दलीप की इज्जत और नाम को भी खाक में मिला दिया, जिन्होंने भूखे जानवरों को अपने बदन का मांस काट कर खिला दिया। राजा रघु के यश और कीर्ति का भी खात्मा हो गया, जब कि उसकी औलाद का ऐसा मलीन आत्मा हो गया, हाय हाय, राजा अज यदि आज जीवित होते तो ऐसी

औलाद की सूरत देख कर अत्यन्त लज्जित होते । मालूम होता है कि परमात्मा को अब यह राज अधिक समय तक रखना मंजूर नहीं और वह दिन दूर नहीं जब कि दशरथ के माथे पर कलंक का टीका होगा, उस वक्त आपका तमाम मजा फीका होगा। बहुत अच्छा आराम कीजिये और मेरा अन्तिम प्रमाण लीजिये। न मुझे आपकी फौज दरर है न आपसे और आपके पुत्रों से सरोकार है, जैसे बनेगी बनाऊँगा परन्तु तेरे जैसे कायरों के पास सहायता के लिये कदापि न आऊँगा।

वशिष्ठ जी का गाना

हाय ! मैं क्या करूँ,
इधर सन्यासी उधर है राजा दोनों की हठ से डरूँ।
हाय मैं क्या करूँ ॥
किसे मनाऊँ किसे हटाऊँ वह जिद्दी वह रूठा है,
यह भी सच्चा वह भी सच्चा किसको कह दूँ झूठा है।
दोष मैं किस पै धरूं, हाय मैं क्या करूँ ।
एक तरफ हठ राजा का एक तरफ सन्यासी का,
बात बात में बना बतंगड़ यूँ ही बात ज़रासी का ।
मैं किस कुवें में पड़ूँ, हाय मैं क्या करूँ ॥
इन दोनों की हठ-धर्मी से सारे कुल की आन गई,
किस को कह दूँ हटजा हठ से कुछ नहीं तेरी शान गई।

कैसे ये चिन्ता हरूँ, हाय मैं क्या करूँ ॥
लोग कहेंगे राज सभा में कोई भी इन्सान नहीं,
इस उलझन का खुलना भी 'यशवन्तसिंह' आसान नहीं।
मैं इसी फिक्र में मरूँ, हाय मैं करूँ ॥

(दिल ही दिल में) मैं क्या करूँ किस कुवें में पड़ूँ, यह दोनों बुरी तरह अपनी हठ पर अड़े हैं और दोनों के एक दूसरे के विरुद्ध तेवर चढ़े हैं। इधर यह रामचन्द्र व लक्ष्मण को भेजने पर रजामन्द नहीं, उधर उन्हें खाली जाना पसन्द नहीं। क्या बनाऊँ, किसको समझाऊँ, इधर यह वात्सल्य प्रेम से मजबूर है, उधर उनका सीना राक्षसों की सीनाजोरी से चूर है, यद्यपि राजकुमारों के चले जाने से राजा को बे-आरामी होगी, लेकिन विश्वामित्र खाली चले गये तो सख्त बदनामी होगी। अगर न्याय से देखा जाय तो विश्वामित्र की कोई ज़बरदस्ती नहीं और राजकुमारों के मुकाबले में राक्षसों की कुछ भी हस्ती नहीं, क्योंकि अब वे जवान हैं और फिर विश्वामित्र जी उनके हर तरह निगहवान हैं। यूँ तो ये खुद भी पूरे जरी सिपहसालार हैं, मगर अपने सन्यास धर्म से मजबूर और लाचार हैं, अन्यथा पल में उनकी हवा बिगाड़ दें और दम के दम में उनका गुल्शने हस्ती उजाड़ दें। (कुछ सोचकर) हां हां यही दुरुस्त है, राजा को समझाता हूं, जिस तरह हो सीधे मार्ग

पर लाता हूं।

वशिष्ठ जी का गाना (राजा दशरथ से) बतर्ज कव्वाली

ऐ राजन् आपका इस बात में इसरार नाहक है।
मुनी जी रास्ती पर हैं तेरा इन्कार नाहक है।
हो खुद ही आप दानिशमन्द सब बातों वाक़िफ हो।
किसी का कहना सुनना आपको हर बार नाहक है।
कुंवर दोनों जवां हैं जङ्ग के हर फन में माहिर हैं।
समाया वहम क्या दिल में फ़िक्र अफ़कार नाहक है।
नहीं मंजूर है इनको अगर यह बात थोड़ी सी।
तो फिर इनसे जबानी आपका सत्कार नाहक है।
समझ लो सोच लो अच्छी तरह हर एक पहलू को।
अगर पछताओगे पीछे से तो वह इजहार नाहक है॥
मुनासिब तो यही है भेज दो दोनों कुमारो को।
नहीं तो आपकी मर्जी मेरी गुफ़्तार नाहक है॥
हर इक नेकी बदी के खुद वह ज़िम्मेवार बनते हैं।
तुम्हारा फिर फ़िकर करना अजी सरकार नाहक है।
अगर तुमको नहीं मंजूर है तो साफ ही कहदो।
तो फिर 'यशवन्तसिह' की आपसे तकरार नाहक है।

नाटक

महाराज ! आप ज़्यादा इसरार न कीजिये और

राजकुमारों के भेजने से इन्कार न कीजिये। आप स्वयं बुद्धिमान और समझदार हैं, हर एक बात से अच्छी तरह वाकिफकार हैं। यदि मुनि जी खाली गये तो बहुत रुसवाई होगी और तमाम संसार में मुफ्त की हंसाई होगी। यदि आपका ऐसा ही ख्याल होगा तो लोगों का तरूत अयोध्या की निस्बत क्या ख्याल होगा? आपका अब जमाना पीरी है और आपकी यह अवस्था अखीरी है। आखिर एक दिन मरना है फिर राज तो इन्हीं को करना है। आप कब तक इन्हें छुपा कर रक्खेंगे, आखिर एक दिन तो लड़ाई का मजा चक्खेंगे। बेहतर है कि आपकी मौजूदगी में सब काम सम्भाल लें और आप भी अपनी आंखों से देख भाल लें। मैंने जो कुछ सिखाया है उसका भी इम्तिहान हो जायेगा और आपको इतमीनान हो जायगा, अन्यथा इसमें मेरी बदनामी है, लोग कहेंगे कि वशिष्ठ की विद्या की खामी है। इस के अतिरिक्त विश्वामित्र भी कोई दूध पीता बच्चा नहीं और लड़ाई के फन में ऐसा कच्चा नहीं। यदि जरूरत पड़ी तो वह हाथ दिखायेगा कि राक्षसों को छटी का दूध याद आ जायेगा। इसलिए आप इनके भेजने में हरगिस किसी प्रकार का ऐतराज न करें और इस मामूली सी बात के लिये विश्वामित्र जी को नाराज न करें।

महाराज दशरथ का गाना (बतर्ज थियेटर ताल दादरा)

कैसा ग़जब है ज़िद् बे सबब है।
आफ़त में आई है जान ॥
बातें तुम्हारी बेढब हैं सारी।
कांपे जमीन आसमान ॥
या मैं ही पागल हुआ या सब पी गये भंग।
भला ये बच्चे किस तरह करेंगे उनसे जंग ॥
क्या यह उमर है कैसा ज़बर है,
अकल है मेरी हैरान।
कैसा ग़जब है० ॥१॥
भला गुरुजी किस तरह आवे मुझे यकीन।
यों मरजी है आपकी लो मेरा सुख छीन ॥
होगा यह कल को मेरी अकल को,
रोवेगा सारा जहान।
कैसा ग़जब है० ॥२॥
मैं बिल्कुल निर्दोष हूं बिगड़ गई जो बात।
मुनि जी अपने हाथ में पकड़ो इनका हाथ ॥
दिल के दुलारे आंखों के तारे।
कुल का सकल निशान।
कैसा ग़जब है० ॥३॥

जैसे बने बनाइये है तुम को अधिकार ।
साथ तुम्हारे कर दिये दोनों राजकुमार ॥
और जो चाहिये जल्दी बताइये,
वह भी लेजाइये सामान ।
कैसा ग़ज़ब है ० ॥४॥
काम बने जब आपका दीजो जल्द लौटाय ।
जैसे इनको ले चले दीजो यहां पहुँचाय ॥
'यशवन्तसिंह' का एक एक दिन का,
कटना नहीं है आसान ।
कैसा ग़ज़ब है० ॥५॥

नाटक

हां दुरुस्त है, आपतो इन्हीं की तरफदारी करेंगे और इन्हीं की हिमायत का दम भरेंगे। हमारा कहना सुनना बिल्कुल फ़िज़ूल है, इनकी हर बात मुनासिब और माक़ूल है। इनको अपनी हठ छोड़ने पर क्यों मायल करोगे, आपतो मुझे ही हर तरह से कायल करोगे । परमेश्वर न करे अगर लड़ाई में कुछ उलट पलट पाला हो गया तो मेरा मुंह तो काला हो गया। लोग क्या कहेंगे कि लड़ाई के भय से अपना आप तो बचा लिया और इन बच्चों को नाहक मरवा दिया। जो बोलेगा वही मेरी जान पर पत्थर तोलेगा, किस किस का मुंह पकड़ूँगा किस किस की ज़बान जकड़ूँगा, दुनिया की ज़बान

लाख तीर कमान । इधर दुनियां मेरी अकल पर हँसेगी, उधर मेरी जान तरह-तरह के झमेलों में फंसेगी। सच तो यह है कि मेरी प्रारब्ध में औलाद का सुख नहीं और इसके बराबर कोई महादुःख नहीं। जब नही थी तो वैसे बेकरार, हुए अब हुए तो आप दरपय आजार हुए। खैर जो कुछ होना है वह होकर रहेगा और जिसे कहना है वह जरूर कहेगा। अगर आप सबके नजदीक इसी में भलाई की सूरत है, तो मुझको इन्कार करने की क्या जरूरत है। जाइये लेजाइये और अपना काम बनाइये। मगर इतनी मेहरबानी फरमाना कि जब आपका काम बन जाये तो इन्हें जल्दी वापिस लौटाना, क्योंकि मुझ को इनका सख्त इन्तजार रहेगा और जब तक इनकी शकल न देख लूंगा दिल बेकरार रहेगा।

—※—

छठा दृश्य

राक्षसों का सफाया

रामचन्द्र जी—मुनि जी यह कौनसा मुकाम है ?

विश्वामित्र जी—मारीच और सुबाहु की माता ताड़का का इसी जंगल में क़याम है।

रामचन्द्र जी—क्या वह भी अपने बेटों की तरह बदकार है ?

विश्वामित्र जी—आला दर्जे की जालिम और जफाकार है ?

रामचन्द्र जी— चलो आगे कदम बढ़ाओ।

विश्वामित्र जी—नहीं पहले इसकी मिट्टी ठिकाने लगाओ।

रामचन्द्र जी—स्त्री पर हाथ उठाना महापाप है।

विश्वामित्र जी—यह आप का वृथा पश्चाताप है।

रामचन्द्र जी—और खास कर क्षत्री धर्म के तो बिल्कुल बर-
खिलाफ है।

विश्वामित्र जी—नहीं पापी को दण्ड देना ऐन इन्साफ है।

रामचन्द्र जी—खैर पहले···

विश्वामित्र जी—वह देखो बदकार कैसी बेतहाशा भागी हुई
आ रही है।

लक्ष्मण जी—तो इसकी मौत इसको हमारे सामने ला रही है।

ताड़का—हाऊँ···हाऊँ··हप···हप।

रामचन्द्र जी—आदमियों की तरह बात कर,, अगर हिम्मत है
तो दो हाथ कर।

ताड़का—मालूम होता है कि जिन्दगी से बेजार हो, इसलिये
इतने तेज तर्रार हो।

रामचन्द्र जी—ओ बदकार ! होशियार हो, और मरने के लिए
तैय्यार हो।

(तीर छोड़ दिया)

ताड़का–हाय रे मैं मर गई!

लक्ष्मण जी–बस एक ही वार में लंबी पड़ गई।

ताड़का–हाय दर्द की तेजी से मेरा दम निकल रहा है।

रामचन्द्र जी–तुझको अपनी करनी का फल मिल रहा।

ताड़का–खैर कुछ मुजायका नहीं, मेरे पुत्र तुम्हें खाक में मिलायेंगे।

रामचन्द्र जी–अगर मिल गये तो उन्हें भी तेरी तरह जमीन पर सुलायेंगे।

ताड़का–अरे कोई ··पा ··नी ··(मर गई)

विश्वामित्र जी–शकुन तो संतोष-जनक हुआ।

रामचन्द्र जी—मगर क्षत्री धर्म के तो विरुद्ध हुआ।

विश्वमित्र जी—यह तुम्हारे दिल का भ्रम है, हर एक पापी को दण्ड देना क्षत्री का धर्म है।

लक्ष्मण जी—गुरु जी यह बन तो बड़ा सुहाना है?

विश्वामित्र जी–हां, किन्तु आजकल तो राक्षसों का ठिकाना है।

लक्ष्मण जी–क्या मारीच की भी इसी जगह बूदोबाश है।

विश्वामित्र जी—हां यह तमाम जंगल उसी की मीरास है।

लक्ष्मण जी—आखिर कोई खास मुकाम?

विश्वामित्र जी—जहां मिल जाय माल हराम।

रामचन्द्र जी–तो यूँ उसका पता किस तरह पायेगा?

विश्वामित्र जी—वह खुद ही भागा-भागा आयेगा।

रामचन्द्र जी—बहुत मगरूर है।

विश्वामित्र जी—यह तो सारी दुनिया में मशहूर है।

रामचन्द्र जी—अच्छा तो थोड़ी देर यहीं आराम कर लें।

विश्वामित्र जी—क्या हरज है हम भी विश्राम...(उंगली से इशारा करके) लो सम्भल जाओ, वह देखो बेईमान सामने से मेंह आंधी की तरह आ रहा है, गोया जमीन आसमान सिर पर उठा रहा है।

रामचन्द्र जी—अभी सामने गर्दोगुबार छा रहा है।

लक्ष्मण जी—भ्राता जी! धनुष बाण सम्भाल लो।

रामचन्द्र जी—हां, तुम भी अपने शस्त्र निकाल लो।

मारीच का गाना (दोहा)

एक औरत को कतल कर, उछल रहा रण बीच।
बच कर जायेगा कहां, आ पहुँचा मारीच॥

॥चौबोला॥

आ पहुँचा मारीच सम्भल कर आगे कदम बढ़ाना।
खबर नहीं है शायद तुझको जाने मुझे जमाना॥
नामुमकीन है आज तुम्हारा यहां से जिंदा जाना।
मिलले जुलले जिससे मिलना खाले जो कुछ खाना॥

दौड़

कज़ा है सिर पर छाई, हिमाकत तभी समाई, जहन्नुम
तुझे पहुँचाऊँ,
लूँ बदला 'यशवन्तसिंह' मैं तब मारीच कहाऊँ ॥

गाना रामचंद्र जी (दोहा)

क्यों ज्यादा बक बक करे, रख जबान को बन्द ।
मां तो तीर चला चुकी, अब आये फरजन्द ॥

॥ चौबोला ॥

अब आये फरजन्द बहुत कुछ शेखी जतलाता है ।
बेईमान बद जबान क्यों सिर पर चढ़ता आता है ॥
हट पीछे मरदूद मुफ्त क्यों बदबू फैलाता है ।
अब भी आजा बाज़ जान की खैर अगर चाहता है ॥
ज़माने भर के गुण्डे चला जा ठण्डे ठण्डे, आजा गर बदला
लेना, फलको फिर 'यशवन्तसिंह' को नाहक दोष न देना ॥

नाटक

रामचन्द्र जी—क्यों मियान से निकला पड़ता है ।
मारीच—औरत को मार कर इतना अकड़ता है ।
रामचन्द्र जी—उसने अपनी करनी का फल पा लिया ।
मारीच—तू भी मां के पास जिंदा जा लिया ।
रामचन्द्र जी—अरे बदकार, क्यों इतना मुंह फाड़ फाड़ कर
चिल्लाता है, और हमें गुस्सा दिलाता है ।

सुबाहु—जरा जबान की लपालपी छोड़ दे ।

लक्ष्मण–अगर जान की खैर चाहता है तो अब भी हाथ जोड़ दे ।

सुबाहु–चुप रह नादान ।

लक्ष्मण–पीछे हट जा बेईमान ।

सुबाहु–तेरे सर पर कजा सवार है ।

लक्ष्मण जी–तू खुद मौत का तलबगार है ।

सुबाहु [गाना बतर्ज—वेवफा तू कैसा यार मार है]

तेरे सर पर कजा ही सवार है,
खैर चाहता है तो पीठ जल्दी दिखा ।
गर्दन मरोड़ूं, अंग अंग तोड़ूं,
पल में रुला दूँ भुला दूँ हवा ।
तेरे दिल में समाया तकब्बुर यह क्या,
अरे ओ बदजबान अभी खींचूं कृपान ।
तेरी रूह इस जिस्म से फरार है,
तेरे सिर पर कजा ही सवार है ।

लक्ष्मण जी

तू तो जीने से दिखता बेजार है,
क्यों बनाता है बातें अरे बे-हया ।
तू तो जीने से०

ऐसा निचोड़ूं जिन्दा न छोड़ूं,
ढूंढ़े न पायेगा तेरा पता ।
अभी कर दूंगा सारा मजा किरकरा,
बाज़ आजा शैतान, खैंच लूँगा जबान ।
क्यों कज़ा का हुआ तलबगार है,
तू तो जीने से दिखता बेज़ार है ।

सुबाहु

तेरे सिर पर कज़ा ही सवार है,
खैर चाहता है तो पीठ जल्दी दिखा, ।
तेरे सिर पर कज़ा०
पल में तुम्हारी, मायें विचारी,
रोयेंगी दोनों की लाशों पर आ ।
कोई देगा न उनको दिलासा जरा,
कौन पूछे मरम, फूटे उनके करम !
यह बुड्ढा अपने मतलब का यार है,
तेरे सिर पर कज़ा ही सवार है ।

लक्ष्मण जी

तू तो जीने से दिखता बेज़ार है,
क्यों बनाता है बातें अरे बेहया ।
तू तो जीने से०
माता तुम्हारी, रुलती विचारी,

उसकी तो मिट्टी ठिकाने लगा।

बेहया तो हुआ नाखलफ़ क्यों हुआ,

अरे ओ बेशर्म, क्या यही था धर्म।

तेरी मैया कुत्तों का शिकार है।

तू तो जीने से दिखता बेज़ार है।

नाटक

सुबाहु—मुंह से कच्ची बात न निकाल।

लक्ष्मण जी—तू भी ज़बान को सम्भाल।

सुबाहु—अरे कम्बख़्त, अभी तो तेरे मुँह से दूध की बू आ रही है।

लक्ष्मण जी—तैयार होजा, तेरी कज़ा तुझको बुला रही है।

सुबाहु—अभी तो तेरे दूध के दांत भी नहीं टूटे, भाग जा अन्यथा नीबू की तरह निचोड़ दूँगा।

लक्ष्मण जी—मेरे दांत तो नहीं टूटे लेकिन तेरे जरूर तोड़ दूंगा।

सुबाहु—शरारत से बाज नहीं आता उल्लू।

लक्ष्मण जी का गाना (दोहा)

बस बस मै सुन चुका, बहुत तेरी बकवास।

अब ज्यादा बोला अगर, लूँगा ज़बाँ तराश॥

लूँगा ज़बाँ तराश अगर कुछ मुँह से बात निकाली।

बेईमान बदकार भला तू अब के दे तो गाली।

खबरदार हो वार हमारा न जावेगा खाली ।
यूँ न कहना धोके में लच्मण ने जान निकाली ॥

दौड़

फिरे है बहुत अकड़ता, गया ज्यादा सिर चढ़ता, कसर नहीं शैतानी में, जानता हूं 'यशवन्तसिंह' तू है कितने पानी में ।

रचियता (दोहा)

चिल्ला चढ़ा कमान पर मारा कस कर बाण ।
तजे सुबाहु ने वहीं तड़प तड़प कर प्राण ॥

छन्द

तज कर प्राण इक बाण में शैतान ठंडा हो गया,
तीर खाकर एक ही बस चित्त अण्डा हो गया ।
जो सहायक थे नालायक उनके पायक हो रहे,
हो गये सारे खतम न इक रहा न दो रहे ।
मारीच पापी नीच रण के बीच अकेला रह गया,
हाय मेरी जान पर सारा झमेला रह गया ।
अब बड़ी मुश्किल पड़ी कौन इस घड़ी में साथ दे,
कौन अब बाकी है जो मरते हुए को हाथ दे ।
देख मरता वीर को बे पीर भागा नोकदम,
न गम किया न दम लिया बस रख लिए सिर पर कदम।
तत्काल बाण संभाल लच्मण काल काल पुकारता,
पीछे पीछे हो लिया 'यशवन्तसिंह' ललकारता ।

लक्ष्मण का आना [दोहा]

ओ कायर अब भाग कर नहीं बचेगी जान ।
अब जीने दूँगा नहीं, बुजदिल बेईमान ॥

चौबोला

बुज़दिल बेईमान कहां जायेगा जान बचाकर ।
छुपजा कहां छुटेगा मैं भी आया तीर उठाकर ॥
लानत है जीना तेरा भाई को कतल कराकर ।
अरे नीच मारीच ठहर जा जाना हाथ दिखाकर ॥

दौड़

पहले मरवाई भय्या, कत्ल करवाया भय्या, नाक डुबोकर
मरजा, ठहर-ठहर 'यशवन्तसिंह' से दो बातें तो करजा ॥

रामचन्द्रजी [दोहा]

भागे पीछे भागना नामरदों का काम ।
भाग गया जो युद्ध से मर गया मौत हराम ॥

चौबोला

मर गया मौत हराम युद्ध से जिसने पीठ दिखाई ।
ऐसे कायर को मारा तो इसमें कौन बड़ाई ॥
या तो इतना उछले था या भागते ही बन आई ।
क्या मारोगे मरे हुए को लक्ष्मण करो समाई ॥

दौड़

पीठ दिखला गया दुश्मन, आफरीं तुझको लक्ष्मण ।

खोल दो शस्त्र भाई, क्योंकि वह 'यशवन्तसिंह' की देकर गया दुहाई।

नाटक

विश्वामित्र—(पीठ ठोंक कर) शाबाश बहादुरो! खूब काम किया, जो मलेच्छों का काम तमाम किया।

रामचन्द्र जी—यह सब आप का ही अशीर्वाद है, अन्यथा हमारी क्या बुनियाद है।

विश्वामित्र जी—(छाती से लगाकर) नहीं-नहीं तुम सूर्य वंश के चिराग हो, चांद में दाग है किन्तु तुम बेदाग हो।

रामचन्द्र जी—(हाथ जोड़ कर) गुरू जी! आप बड़े आला दिमाग़ हो।

लक्ष्मण जी—गुरु जी आप धन्य हैं।

विश्वामित्र जी–बेटा! हम तुम्हें देख कर बड़े प्रसन्न हैं।

रामचन्द्र जी–और कुछ ईर्शाद कीजिये।

विश्वामित्र जी–इस आश्रम में कुछ दिन ठहर कर मेरा दिल शाद कीजिये।

रामचन्द्र जी–(गर्दन झुका कर) जैसी आपकी आज्ञा हो।

विश्वामित्र जी–इस वन का भ्रमण...

एक आगुन्तक–क्या मुनि विश्वामित्र का यही स्थान है?

विश्वामित्र जी–कहिये आपको क्या काम है?

वही आगुन्तक–उनके नाम एक पैग़ाम है।

विश्वामित्र–हां मेरा इसी जगह पर क़याम है।

आगुन्तक–क्या आपका ही नाम विश्वामित्र है ?

विश्वामित्र–हां लाइये वह कौनसा पत्र है ?

आगुन्तक—(पत्र आगे करके) लीजिये महाराज, मुझे और भी बहुत जगह जाना है और यह समाचार पहूंचाना है।

विश्वामित्र—(पत्र को पढ़कर) वाह वाह, यह पत्र भी खूब मौके पर आया।

रामचन्द्र जी–पत्र कहां से आया है ?

विश्वामित्र–बेटा ! मिथिलापुरी के राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता का स्वयंवर रचाया है और हमें उसमें शामिल होने के लिए बुलाया है और भी दूर-दूर से राजकुमार आयेंगे और अपनी वीरता का जौहर दिखायेंगे। राजा के यहां एक बड़ी कमान है और उनका यह ऐलान है कि जो क्षत्री उस धनुष का चिल्ला चढ़ायेगा, वही सीता का पति कहलायेगा।

रामचन्द्र जी—यदि कुछ हरज न हो तो हमें भी साथ चलने की आज्ञा दीजिये।

विश्वामित्र—हां, हां, बड़ी खुशी से तैयारी कीजिये ! आप ही लोगों के लिये तो स्वयम्बर रचाया है, हमें तो केवल देखने के लिये ही बुलाया है।

सातवां दृश्य

स्थान मिथिलापुरी

(१)

राजा जनक—(मन्त्री से) देखो जो महमान आयें उनके आराम और आसायश का काफी इन्तजाम किया जाये, किसी को किसी किस्म की शिकायत का मौक़ा न दिया जाये।

मन्त्री–महाराज के इकबाल से सब इन्तज़ाम माकूल है, इसका ज़िकर करना फिज़ूल है।

जनक–क्या सब महमान आ गये, या अभी आ रहे हैं।

मन्त्री–हां बहुत से तो आ गये बाकी अभी तशरीफ ला रहे हैं।

जनक–तारीख स्वयम्वर में तो कल का रोज़...

दारोगा कैम्प–महाराज ! अयोध्या के कुमार श्री रामचन्द्र जी, लछमण और मुनि विश्वामित्र जी तशरीफ लाये हैं।

जनक—बहुत मुबारिक, कौन से कैम्प में ठहराये हैं।

दारोगा—उनकी रिहायश का खातिरख्वाह इन्तजाम कर दिया है और कैम्प न० ७ में उन्होंने कयाम कर लिया है।

जनक–यद्यपि हरएक की खातिर मदारात के लिए मुख्तलिफ़ अहलकारों की मामूरी है, ताहम मेरा उनकी मुलाकात के लिये जाना ज़रूरी है।

मन्त्री–बेशक यह आपकी दानिशमन्दी है और न जाने में

एक तरह की खुद पसन्दी है ।

जनक—मैं जाता हूं और मिजाजपुरसी के बाद अभी वापिस आता हूं ।

राजा जनक का गाना (लावणी बिहाग ताल तलवाड़ी)

हैं धन्य भाग इस मिथलापुरी नगर के,
जो आप पधारे यहां पै कृपा करके ।
मेरे गरीबखाने को किया पवित्र,
यह और खुशी कि साथ आये विश्वामित्र ।
जिन आंखों में खिंच गया तुम्हारा चित्र,
हैं धन्य धन्य श्री दशरथ जी के नेत्र ।
हमको दर्शन हो गये नूर नजर के,
जो आप पधारे०

विश्वामित्र जी

अय राजन् ! यह सब तेरी मेहरबानी है,
इनकी तुमने इतनी इज्जत मानी है।
इख़लाक आपका वाकई लासानी है,
इस अधीनता से लेकिन हैरानी है ।
जैसे दशरथ के वैसे आपके लड़के,
जो आप पधारे०

श्री रामचन्द्र जी

महाराज मुझे क्यों शर्मसार करते हो,
क्यों ऐसी गुफ्तगू बार बार करते हो ।

बेटों के साथ यह क्या व्यवहार करते हो,
क्यों नहीं बुजुर्गों वाला प्यार करते हो।
हैं बड़े ही उत्तम भाग रामचन्द्र के,
जो आप पधारे०

लक्ष्मण

कर जोड़ के दोनों करूँ नमस्ते भगवन्,
आशीर्वाद का अभिलाषी है लक्ष्मण।
हो गया अचानक इत्तिफ़ाक अय राजन,
आ गये इधर हम करते करते भ्रमण।
महमान हुए 'यशवन्तसिंह' इस घर के,
जो आप पधारे०

नाटक

जनक—आपको यहां तक आने में जो तकलीफ हुई है, उसके लिए माफी का ख़्वास्तगार हूं।

रामचन्द्र—मैं आपका एक तुच्छ फरमांबरदार हूं और इस अनुग्रह के लिए आपके अहसान का जेरबार हूं।

लक्ष्मण—आपकी इस मुसाफिर-नवाज़ी की दाद देता हूं।

जनक—(गले से लगाकर) बेटा सदा खुश रहो, मैं तुमको आशीर्वाद देता हूं।

विश्वामित्र—महमानों की आमद की वजह से आपको बहुत काम करना होगा।

जनक–हां, मुझे आज्ञा दीजिये, क्योंकि आपको भी आराम करना होगा।

(राजा जनक का वापिस चले जाना)

लक्ष्मण–(कुछ देर आराम करके) भ्राता जी! मिथिलापुरी भी एक मशहूर मुकाम है।

रामचन्द्र जी–हां मगर इससे तुम्हारा क्या प्रयोजन है?

लक्ष्मण–यही कि आज इस नगरी की सैर से ही दिल बहलायें।

रामचन्द्र जी–बहुत अच्छा, चलो तो तुम्हें आज मिथिलापुरी दिखलायें।

२—बाजार

नगर वासियों का गाना (रागनी झंझोटी)

(बतर्ज—बेवफा तू कैसा यारमार है)

वाह वाह क्या खूबसूरत जवान हैं,
ऐसी सूरत भी देखी है पहले भला।
क्या सोहनी सूरत क्या मोहनी मूरत,
हर एक की आंखों को लेती लुभा।
धन्य माता वह जिसने जन्म है दिया,
कैसे हैं खुशकलाम, न तकब्बुर का नाम।
यूँ भी आते नजर विद्वान हैं॥ वाह······

एक पुरुष दूसरे से

अय भाई जाना, बुला के लाना,

पूछेंगे इनका मुफ़स्सिल पता।
हमें उम्मेद है कि ये देंगे बता,
ज़रा पूछो तो नाम, कहां इनका मुक़ाम।
किसी उत्तम ही कुल की सन्तान हैं। वाह वाह......

दूसरा

अय राजकुमारो! इधर पधारो,
हम को भी दे जाओ दर्शन जरा।
सारी नगरी की है इस तरफ़ ही निगाह,
खड़े हैं खासो आम, छोटे बड़े तमाम।
आपके मुन्तज़िर मेहरबान हैं। वाह वाह......

रामचन्द्र जी

अयोध्या वासी, आये यहां सी,
दशरथ हमारे व इनके पिता।
आज नगरी तुम्हारी में पहुँचे हैं आ,
इनका लक्ष्मण है नाम, मुझे कहते हैं राम।
आये राजा जनक के मेहमान हैं। वाह वाह......

नगर निवासी

अब समझ में आई यह दोनों भाई,
आये स्वयम्बर का करके मता।
राम जीतेंगे 'यशवन्तसिंह' बेशुबहा,

जाओ करो आराम, लो हमारा प्रणाम।

रामचन्द्र स्वयम्वर की जान है। वाह वाह...

नाटक

एक पुरुष–वाह वाह! कैसे बांके जवान हैं!

दूसरा–किसी उत्तम कुल की सन्तान हैं।

तीसरा–शकल सूरत में भी लाजवाब हैं।

चौथा–सच पूछो तो सारे जमाने का इन्तखाब हैं।

पांचवां–इनका हसब नसब तो दरियाफ्त करना चाहिये।

छठा–तो आप ही मेहरबानी करके यहां बुला लाइये।

सातवां–हां, हां, मुझे कब इन्कार है।

आठवां–जाओ तो फिर किस बात का इन्तज़ार है।

वही पहला पुरुष–(पास जाकर) कुंवर जी! तमाम नगरी आपके दर्शन की अभिलाषी है।

रामचन्द्र जी—यह आपकी कदर शिनासी है।

वही पहला पुरुष—वह देखिये, तमाम शहर आपका मुन्तज़िर खड़ा है।

रामचन्द्र जी—आप साहिबान ने एक एक कदम हमारे सिर पर धरा है।

वही पुरुष—यह आपका हुस्ने अखलाक है।

राम०—मुझे आप लोगों से मिलने का बड़ा इश्तियाक़ है। (नगर वासियों के पास जाकर) कहिये क्या इर्शाद है?

तमाम लोग–आपका अत्यन्त धन्यवाद है।

एक पुरुष–कुँवर जी, आप कहां से पधारे हैं?

राम०—अयोध्यावासी और महाराजा दशरथ के दुलारे हैं।

वही पुरुष–आपका शुभ नाम क्या उच्चारते हैं।

राम०—इनका नाम लक्ष्मण और मुझे रामचन्द्र के नाम से पुकारते हैं।

वही पुरुष–यहां किस जगह विराजमान हैं?

राम०–महाराज जनक के महमान हैं।

वही पुरुष–अहा! तो यूँ कहो कि स्वयम्बर में शामिल होने के लिये तशरीफ लाये हैं।

राम०–हां सिर्फ देखने के इरादे से आये हैं।

सब नगरवासी–बहुत अच्छा, आराम कीजिये।

राम०—हमारा प्रणाम लीजिये।

[रामचन्द्र जी का लक्ष्मण सहित तशरीफ ले जाना]

एक पुरुष–(दूसरे से) आपका इनकी निस्वत क्या क़यास है?

दूसरा—रामचन्द्र जी की सफलता का विश्वास है।

पहला–आशा तो मुझे भी पूरी है।

दूसरा–नहीं, इनकी फतह जरूरी है।

तीसरा—अरे भाई वह धनुष बड़ा भारी है!

वही पहला—क्या हुआ, रामचन्द्र भी पूर्ण ब्रह्मचारी है!

सब नगर निवासी—आओ इनकी सफलता के लिए परमात्मा से प्रार्थना करें ।

सब का गाना

हे ईश्वर दीजिये सामर्थ इतनी रामचन्द्र को,
हमारी यह दुआ है राम जीतें इस स्वयम्बर को ।
करो पूरी हमारी आरजू, हे जगत के स्वामी,
हमेशा के लिए दें राम रौनक जनक के घर को ।
इधर हैं राम लायक उस तरफ सीता भी लासानी,
मिलादो आज हीरे की कनी से संगमरमर को ।
महाराज जनक की भी दिली ख्वाहिश यही होगी,
करो मशकूर अब अपनी दया से कुल शहर भर को ।
अगर्चे कठिन है जो शर्त राजा ने लगाई है,
वले मुश्किल नहीं कुछ भी जो है मंजूर ईश्वर को ।
अगर मंजूर हो जाये हमारी इलतजा इतनी,
मुबारिकबाद दें 'यशवन्तसिंह' हम उस प्रियवर को ।

[३] वाटिका

लच्मणजी—भाई साहब यह सामने बाग नजर आता है ।
रामचन्द्र जी—हां इसके देखने को तो मेरा भी दिल चाहता है।
लच्मण जी—वाकई बाग तो बे नजीर है ।
रामचन्द्र जी—इसकी बनावट बड़ी दिल-पजीर है ।
लच्मण जी—राजा जनक ने इसे बड़े ही शौक से लगाया है ।

रामचन्द्र जी—सच पूछो तो सैर का आनन्द ही अब आया है।

लक्ष्मण जी—बाग भी तो दुनिया की अजायबात का एक नमूना है।

रामचन्द्र जी—बेशक ऐसा बाग जमाने की नज़रों...

लक्ष्मण जी—(बात काटकर) वह देखिये गुलाब और सेवती की क्यारियां कैसी लहरा रही हैं और उन पर बुलबुलें कैसी मस्त होकर चहचहा रही हैं।

रामचन्द्र जी—ओ हो. यह तो गालबन राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ बाग की सैर को आ रही हैं।

लक्ष्मण जी—अब हमारा यहां ठहरना नामुनासिब है।

रामचन्द्र जी—अब हमें यहां से किनारा करना वाजिब है क्योंकि हमारी मौजूदगी इनकी आजादी में खलल-अन्दाज होगी, जिससे इनकी तबियत नाराज होगी। आओ हम तुम उस मौलसरी के दरख्त के नीचे कयाम करेंगे और वहीं थोड़ी देर आराम करेंगे।

[सीता का अपनी सहेलियों सहित प्रवेश]

एक सहेली—आहा ! आज तो बाग पर अजब रंगत आरही है।

दूसरी—हां बहिन ! ऋतु अपना जोबन दिखा रही है।

तीसरी—हर एक टहनी किस अन्दाज से लहरा रही है।

चौथी—वह देखो कुमरी कैसी मस्त होकर गा रही है।

पांचवीं—अपने समय पर हर एक चीज पर जोबन आता है

छठी—हां बहन ! सच है, लेकिन चतुर इसकी कदर करता है और मूर्ख वृथा ही जन्म गँवाता है ।

सातवीं—इस ज्ञान गुदड़ी को थोड़ी देर के लिए बन्द करो ।

वही पहली—अच्छा जो तुम पसन्द करो ।

सातवीं—आओ कोई झूला गायें और अपना दिल बहलायें ।

सब सखियों का मिलकर गाना

झूला [वतर्ज—मोको सांवरे ने गारी दई]

फूल रही फुलवार सखी आओ रिल मिल खेलें,
फूल रही है क्या हरियाली, झूला झूलें आ मोरी आली ।
गायेंगी मेघ मल्हार सखी आओ रिल मिल खेलें ॥१॥
पक्षीगण भी हो मतवारे, खेल रहे हैं पंख पसारे ।
कोयल करत पुकार, सखी आओ रिल मिल खेलें ॥२॥
फिर यहां किसका आना होगा, अपना-अपना ठिकाना होगा ।
होगा नया घर वार, सखी आओ रिल मिल खेलें ॥३॥
पल में होंगे अपने बिगाने, क्या-क्या सहने होंगे ताने ।
कौन करेगा प्यार, सखी आओ रिल मिल खेलें ॥४॥
होगा पिता न होगी माता, साथ छोड़दे सगा भ्राता ।
छोड़ दें इनका द्वार, सखी आओ रिल मिल खेलें ॥५॥
सास बिगानी नन्द बिगानी, कौन सुनेगा अपनी कहानी ।
रोयेंगे हाथ पसार, सखी आओ रिल मिल खेलें ॥६॥
कौन सुनेगा वार्ता गम की, बात-बात पर मिलेगी धमकी ।

ताने मिलेंगे हजार, सखी आओ रिल मिल खेलें ॥७॥
याद आयेंगे जिस दम घर के, रोयेंगी आंसू भर-भर के।
और न कुछ अख्तियार, सखी आओ रिल मिल खेलें ॥८॥
किसने आना किसने बुलाना, कौन दिखावे हमें 'टोहाना'।
लाख करें तकरार, सखी आओ रिल मिल खेलें ॥९॥

नाटक

एक सहेली–प्यारी सखी ! विवाह भी लड़कियों की जिन्दगी में एक बड़ा भारी इनकिलाब* है।

दूसरी–बहन सच है, अगर पति अच्छा मिल गया तो खैर, नहीं तो सारी उमर के लिये मिट्टी खराब है।

तीसरी—यह तुम्दारी एक तरफा बात है वरना बहुत सा दुःख सुख हमारे अपने हाथ है।

चौथी—हां हम ही सब कसूर करती हैं।

तीसरी—बेशक, बाज नादान लड़कियां अपनी ज़िद से पति को मजबूर करती हैं।

चौथी—(चुटकी भरकर) तुम तो मजबूर न करोगी ?

तीसरी—(थप्पा लगाकर) हट मसखरी कहीं की।

सीता–तुम्हारी इस छेड़-छाड़ से क्या फायदा है ?

पहली–हां सच है इस समय यह बार्ता बिल्कुल बे-फायदा है।

---

*परिवर्तन

दूसरी–कोई ऐसी बात करो जो सीता को पसन्द हो।

तीसरी–हाँ नई बात सुनो, कल को सीता की किस्मत का फैसला होगा, लो अब तो आनन्द हो ?

सीता–सीधी तरह बात करते तुम्हारे मुंह टूटते हैं।

चौथी–मुँह से कुछ कहो, दिल में तुम्हारे भी लड्डू फूटते हैं।

पांचवीं–लड्डू फूटेगा तो हमारा भी मुँह मीठा कराओगी ?

सीता–मालूम होता है कि तुम मार खाओगी।

पांचवीं–खैर कुछ तो खायेंगी, लड्डू न सही मार ही सही।

छटी–क्यों मार खायेंगी मिठाई खायेंगी मिठाई।

सातवीं–मुँह भी धो आई।

सीता–हमें यहां आये बहुत देर हो गई अब वापिस चलना चाहिये।

सहेली–नहीं. अभी बहुत समय है, कुछ देर तो और दिल बहलाइये।

सीता–अच्छा तो आओ थोड़ी और सैर कर लें।

सहेली–और क्या, आज तो अच्छी तरह दिल भर लें।

सीता—ओहो, इन मौलसिरी के दरख्तों पर कैसी बहार है।

सहेली–आज तो बाग के एक-एक पत्ते पर···

दूसरी सहेली–(दौड़ कर) प्यारी सीता ! ज़रा इधर मेरे साथ आओ !

सीता—कुछ बात भी बताओ।

सहेली—ज़रा जल्दी कदम उठाओ।

सीता—तेरी तो वही मसखरी की आदत है।

सहेली—नहीं, नहीं, आंखों देखे की शहादत है।

सीता—(साथ जाकर) कहो क्या है।

सहेली—(अँगुली का इशारा करके) वह देखो वृक्षों में कौन छिपा है।

सीता—तू बड़ी चालाक है।

दूसरी सहेली—(मसखरी से) बहिन! चालाक नहीं बल्कि बेबाक है।

तीसरी—(ध्यान से देखकर) ओहो! यह तो वही अयोध्या-कुमार हैं।

चौथी— ओहो, नींद में कैसे सरशार हैं।

पांचवीं—शकल सूरत तो इन्हीं के हिस्से में आई है।

छठी—मानो परमेश्वर ने अवकाश के समय बनाई है।

सातवीं—(सीता के गले में हाथ डालकर) परमेश्वर करे प्यारी सीता इनके गले में जयमाला पहनाये!

आठवीं—हां हमारी मनोकामना तब ही बर आयें।

सीता—तुम मुझे ज्यादा तंग मत करो।

वही सहेली—हां, सच तो कहती है तुम इस समय इनके रंग में भंग न करो।

सीता—जल्दी सुखपाल मंगवाओ (उठ कर बैठ गई) ओ हो

मेरे सिर में चक्कर आ गया।

सहेली—बस एक ही चक्कर में दिमाग चक्कर खा गया।

सीत—आज तो तुम मेरे नाम पर उधार खाये बैठी हो।

दूसरी सहेली—(ताने से) चलो तो फिर यहां क्यों धूनी रमाये बैठी हो।

तीसरी—(आंखों में आंसू भरकर) लो बहिन! यह अन्तिम वार का मिलाप था—

फिर न आयेंगी इकट्ठी हम कभी इस बाग में।
विधना विछोड़ा लिख दिया हाय हमारे भाग में॥

(४) स्वयम्बर

राजा जनक—हमारी प्रतिज्ञा उच्च स्वर से सब को सुना दी जाय।

भाट का गाना (कवित्त)

आये हैं अनूप, देश-देश के यह भूप, धार-धार के स्वरूप,
आज यहां पर पधारे हैं।
योद्धा बलकारी, वीर पुरुष धनुपधारी, आये करके तैयारी,
राजा जनक के द्वारे हैं।
पड़ी है कमान, जिसे होवे अभिमान, उठो क्षत्री जवान,
बल देखने तुम्हारे हैं।
सीता को व्याहे आज. आये वह मैदान बीच, जो जो
'यशवन्तसिंह' क्षत्री के दुलारे हैं॥

अय राज सभा में पधारे हुए क्षत्री वीरो ! आज आप के बल और पराक्रम की परीक्षा का समय है। जिस किसी को अपनी वीरता पर भरोसा हो, वह मैदान में आये और इस धनुष का चिल्ला चढ़ाये। जो क्षत्री कुमार इस धनुष का चिल्ला चढ़ायेगा, वही सीता का पति कहलायेगा। इसलिए आओ और अपनी बहादुरी के जौहर दिखाओ।

एक राजकुमार

बोदे पुराने धनुष पर इतना गुमान है,
भारी है तो क्या होगया आखिर कमान है।
चाहूं तो एक हाथ से ही तोड़ दूँ इसे,
किस बात पर उठाया सिर पै आसमान है।

(धनुप को छूकर)

अरे बाप रे ! यह कमान है या किसी गरीब घर का शहतीर !

दूसरा

चिल्ला चढ़ा दूँ एक दम ही पांच सात कम,
करतब है यह तो फ़क्त मेरे बांए हाथ का।
मुश्किल ही क्या है काम यह हैरानी है मुझे,
लकड़ी का है यह न कि किसी और धात का।

(हाथ से टटोल कर) ओहो ! यह तो कोई धोखा है, वास्तव में धनुष तो है ही नहीं।

तीसरा

बस बस जनाब सबकी ही ताकत खतम हुई,
बैठे हो सिर झुकाये शुजाअत खतम हुई।
अब देखिये कि चढ़ता है चिल्ला कमान का,
लो देख,लो कि सबकी हिमाकत खतम हुई।

(लज्जित होकर) नहीं, मैंने तो केवल इसको देखना था, चिल्ला चढ़ाने का तो विचार ही न था।

चौथा

सबने लगाया जोर पर लाचार हो गये,
न उठ सकी कमान शर्मसार हो गये।
उठने की मेरे देर है बस एक आन में,
देखोगे इसके टुकड़े तीन चार हो गये।

(पसीने से तर बतर होकर) इसे धनुष कहता कौन बेवकूफ है, यह तो जनक ने हमारे साथ हँसी करने का ज़रिया बनाया है।

रावण (मूंछों पर ताव देकर)

कर लेंगे अगर छोकरे हर एक काम को,
दुनियां में कौन जानेगा रावण के नाम को।
मेरे बिना यह काम कर सकता नहीं कोई,
दिल से निकाल दीजिये ख्याले खाम को।

(निराश होकर मन ही मन में) तूने बड़ी भूल की जो अपनी जगह से उठा और अपना बना बनाया भ्रम खो बैठा।

(जल्दी से) ओहो... मुझे तो एक जरूरी काम याद आ गया, इसलिए वहां जाता हूं।

[रावण का रफूचक्कर हो जाना]

राजा जनक का गाना (बतर्ज बहरे तवील)

हाय अफसोस दुनिया में कोई बशर,
अब बहादुर मुझे नजर आता नहीं।
होता मालूम पहले से मुझको अगर,
मैं कभी भी स्वयम्बर रचाता नहीं॥
क्षत्री वंश का हो गया खात्मा,
न तो योद्धा रहे न धर्मात्मा।
लाज रक्खेगा तू ही परमात्मा,
और बिगड़ी को कोई बनाता नहीं।
हाय अफसोस०

रह गये हैं बहादुर फक़त नाम के,
देखने के मगर न किसी काम के।
हैं ये दुनिया में जिन्दा सुबह शाम के,
मेरा अनुभव कभी खाली जाता नहीं।
हाय अफसोस०

मैंने यों ही किया इस क़दर धन सरफ,
है निदामत अगर हो जाऊँ मुनहरफ़।
अरे चिल्ला चढ़ाना रहा एक तरफ,

कोई इसको जगह से हिलाता नहीं।

हाय अफसोस०

शोक! सीता उमर भर कुँवारी रही,

आरजू दिल की दिल में हमारी रही।

बात बेशक बिगड़ आज सारी गई,

मगर बट्टा जबां को लगाता नहीं॥

हाय अफसोस०

जो किया था प्रण अब निभाना पड़ा,

साथ अफसोस के यह बताना पड़ा।

मुझे सीता को घर में बिठाना पड़ा,

इन गँवारों से मैं भी ब्याहता नहीं।

हाय अफसोस०

जाओ घर में ही जोर आजमाई करो,

यूँ ही 'यशवन्तसिंह' से लड़ाई करो।

हीजड़ों पर तो बेशक चढ़ाई करो,

मर्द तो तुमको खातिर में लाता नहीं।

हाय अफसोस०

नाटक

अफसोस! पृथ्वी बहादुरों से खाली हो गई, क्षत्री वंश का प्रायः अन्त हो गया, अन्यथा यह मामूली सी कमान है जिसके लिए सारा क्षत्री मंडल हैरान है। अब तो

क्षत्री केवल इस योग्य रह गये हैं कि इनको किसी नुमायश में केवल दिखावे के तौर पर बिठाया जाये और अपनी जगह से न हिलाया जाये। इनसे बहादुरी की आशा रखना बिल्कुल बेसूद है, क्योंकि इनसे बल और वीरता ही नाबूद है। अगर मैं पहले से जानता, तो हरगिज स्वयम्बर का इरादा न ठानता। मगर अब क्या हो सकता है जो प्रण कर चुका, उसको निभाना पड़ा अर्थात सीता को तमाम उमर घर ही बिठाना पड़ा। इन कायरों के गले मढ़ने से तो कुँवारी रहना ही उत्तम है। स्वयम्बर बरखास्त, मेहरबानी करके अपने घरों को तशरीफ ले जाइये और औरतों में बैठकर अपनी शेखी जताइये।

लक्ष्मण जी का गाना (बहरे तवील)

कुछ करो होश से बात राजा जनक,
ऐसी बातें बनाना मुनासिब नहीं।
इस तरह से हतक करनी हर एक की,
सब को कायर बताना मुनासिब नहीं।
क्षत्री वंश का हो गया खात्मा,
यह जबां पर भी लाना मुनासिब नहीं।
कर लिया फैसला घर में ही बैठ कर,
ऐसी शेखी जताना मुनासिब नहीं।
कुछ करो होश०

अगर इन से न उठ सका यह धनुष,
ऐसी आफत मचाना मुनासिब नहीं।
एक लकड़ी से हांको हो सब को,
तुम्हें ऐसी त्योरी चढ़ाना मुनासिब नहीं।
कुछ करो होश०
यूँ बुला करके घर पर किसी शख्स को,
हतक उसकी कराना मुनासिब नहीं।
बन्द रक्खो ज़बां अब जरा मेहरबाँ,
और ज्यादा चलाना मुनासिब नहीं।
कुछ करो होश०
मैं बहा देता नदियां अभी खून की,
ज्यादा गुस्सा दिलाना मुनासिब नहीं।
क्या करूँ बड़े भाई की आज्ञा बिना,
हाथ मुझको उठाना मुनासिब नहीं॥ कुछ०
चीज क्या है यह बोदा पुराना धनुष,
इस कदर तनतनाना मुनासिब नहीं।
तोड़ूं जब तक न 'यशवन्तसिंह' मैं इसे,
मुँह किसी को दिखाना मुनासिब नहीं॥ कुछ०

नाटक

अय राजा! जबान को सम्भाल और ऐसे असभ्य शब्द मुँह से न निकाल। यूँ घर पर बुला कर किसी का

अपमान करना कहां की अकलमन्दी है, वरना आलादर्जे की खुद पसन्दी है। सबको एक लकड़ी से हांकना सख्त नादानी है और यह तुम्हारी अजीब हिमादानी है। यदि कुछ राजाओं ने धनुष का चिल्ला नहीं चढ़ाया तो आपने सबको कायर ठहराया। सोचते हो न विचारते हो, जो कुछ दिल में आता है, वह मुँह से निकालते हो। इस बदजबानी का मज़ा तो इसी वक्त चखा देता और एक पल में खून की नदियां बहा देता, किन्तु क्या करूँ बड़े भाई की आज्ञा न मिलने से लक्ष्मण मजबूर है, अन्यथा तुम्हारी क्या मकदूर है जो ऐसे शब्द ज़बान से निकालते और हर एक को इस तरह मुँह में डालते। जब तक सूर्यवंशी खानदान का एक बच्चा भी दुनियां में बहाल है, क्षत्री वंश पर धब्बा लगाने की किसकी मजाल है। खैर जो कुछ कहा सो कहा, अब आइन्दा के लिए जबान को लगाम दीजिए, और जरा मुँह सम्भाल कर कलाम कीजिए अन्यथा घड़ी में घड़ियाल हो जायगा और स्वयम्बर का मैदान बहादुरों के खून से लाल हो जायेगा।

विश्वामित्र का गाना (बहरे तवील ताल चंचल)

बेटा लक्ष्मण तुम्हें थोड़ी सी बात पर,
ऐसी तेजी में आना मुनासिब नहीं।
रामचन्द्र की मौजूदगी में तुम्हें,

इस कदर जोश लाना मुनासिब नहीं ।
कुछ तहम्मुल से भी काम लो, हर जगह,
यह लड़कपन दिखाना मुनासिब नहीं ।
तुम बहादुर हो बेशक मगर इस समय,
हाथ हरगिज़ उठाना मुनासिब नहीं ।
बेटा लच्छमण०
देखने को स्वयम्बर तुम आये हुए,
यहां लड़ना लड़ाना मुनासिब नहीं ।
है यह अवसर खुशी का जनक के लिये,
तुम्हें झगड़ा बढ़ाना मुनासिब नहीं ।
बेटा लच्छमण०
जनक ने तो तुम्हें कुछ कहा ही नहीं,
यूँ ही करना बहाना मुनासिब नहीं ।
खैर कह भी दिया तो भी क्या हो गया,
इन के कहने पै जाना मुनासिब नहीं ।
बेटा लच्छमण०
वह तुम्हारे बुजुर्गों के मानिन्द हैं,
सामने आंख उठाना मुनासिब नहीं ।
इस वक्त तो वह खुद ही दुखी हो रहे,
और ज्यादा सताना मुनासिब नहीं ।
बेटा लच्छमण०

काम ऐसा करो यश तुम्हारा बढ़े,
गौरव अपना घटाना मुनासिब नहीं।
कहना 'यशवन्तसिंह' का है आखिर यही,
शोर नाहक मचाना मुनासिब नहीं।

बेटा लक्ष्मण०

नाटक

बेटा ज़रा धैर्य से काम लो और थोड़ी देर के लिये गुस्से को थाम लो। इस समय तुम्हारा तेजी में आना उचित नहीं और यह लड़ने भिड़ने का वक्त नहीं। जनक ने स्वयम्वर का सामान किया है न कि जंग का ऐलान किया है। इस समय तो वह विचारा खुद ही निराश हो रहा है, क्योंकि उसकी सब कामनाओं का नाश हो रहा है। इस पर तुम्हारी बे-मौका तेजी नामालूम कब का इन्तक़ाम ले रही है, और इसके जख्मी दिल पर नमक का काम दे रही है, यद्यपि तुम्हारी बहादुरी में कोई शक नहीं, किन्तु रामचन्द्र की मौजूदगी में तुम्हें बोलने का कोई हक नहीं। इन का अदब करना तुम्हारा पहला फर्ज है और तुम्हें अभी इन झमेलों में पड़ने की क्या गर्ज है। वह खुद समझदार हैं, हर तरह से मालिक और मुख्त्यार हैं, इसलिए तुमको तो उनके हुक्म की तामील करना मुनासिब है और जो कुछ वह कहें वही करना वाजिब है।

लक्ष्मण जी (रामचन्द्र जी से) गाना (बह्रे तवील ताल चंचल)

दीजिये अब हुक्म अय भ्राता मुझे,
ज्यादा सुनने सुनाने की ताकत नहीं।
जिस धनुष का यह अभिमानी इतना है,
क्या मुझ में चिल्ला चढ़ाने की ताकत नहीं।
जा रही क्षत्री वंश की आन है,
हो रहा सारा मण्डल ही बेजान है।
सिर झुकाये हुए हर एक हैरान है,
टुक जवाँ तक हिलाने की ताक़त नहीं।
दीजिये अब हुक्म०
शब्द राजा जनक के गजब ढा रहे,
क्षत्री बैठे खूने जिगर खा रहे।
वाकई यह किसी काम के न रहे,
गोया उठकर भी जाने की ताकत नहीं।
दीजिये अब हुक्म०
बैठे मुर्दों की सूरत बनाये हुए,
सारी इज्जतो हुरमत गँवाये हुए।
आन और शान अपनी मिटाये हुए,
जान तक भी बचाने की ताक़त नहीं।
दीजिये अब हुक्म०

बन रहे तीर राजा जनक के बचन,
किस तरह से सहूं मैं भला यह सखुन।
आज होगा जरूरी यहां पर विघन,
अब तबियत टिकाने की ताकत नहीं।
दीजिये अब हुक्म०
यहाँ नदी खून की आती बहती नज़र,
खोफ़ होता न मुझ को तुम्हारा अगर।
जान दे दूंगा 'यशवन्तसिंह' मैं मगर,
ऐसे नखरे उठाने की ताक़त नहीं।
दीजिये अब हुक्म०

नाटक

भ्राता जी ! देखते हो, किस तरह कैंची की तरह ज़बान चला रहा हैं और हर एक की इज्जत और हुरमत को खाक में मिला रहा है। मगर यह सब के सब ऐसे लाकलाम हैं गोया इसके जरखरीद गुलाम हैं, न बात करने की लियाकत है न ज़बान हिलाने की ताकत है। हाय हाय, क़ोमी आन पर मर जाने वाले और आन के बदले जान गँवाने वाले किस बेहयाई से क्षत्री कुल को धब्बा लगा रहे हैं और शर्म के बदले सिर नीचा किए गालियाँ खा रहे हैं। जनक की बदज़बानी बहुत बढ़ती जा रही है, यह समझो कि मौत इसके सिर पर छा रही है। सूर्यवंशी तलवार

अब जरूर मैदान में आयेगी और इसको बदज़बानी का मज़ा चखायेगी। लछमण में बिल्कुल बरदाश्त नहीं और ऐसे शब्द सुनने की ताक़त नहीं। सिर्फ आपके हुक्म का इन्तज़ार है, फिर जनक है और मेरी तलवार है। पहले इस पुरानी कमान को चकनाचूर करूँगा, फिर जनक का सिर धड़ से दूर करूँगा।

रामचन्द्र गाना [बतर्ज—दिये दुःख यह फलक ने सारे]

लड़ना अच्छा नहीं भाई, टुक लछमण करो समाई।
बे-मौका तेजी करना, और बिना बात ही लड़ना।
नहीं इसमें कोई बड़ाई, टुक लछमण करो० ॥
जो करोगे तुम नादानी, तो कुल की होगी हानि।
दुनियां में होत हँसाई, टुक लछमण करो० ॥
जिस बात को मुँह से बोलो, पहले मुँह में ही तोलो।
है इसमें ही दानाई, टुक लछमण करो० ॥
गर पिता जी सुन पावेंगे, हम तुमको धमकावेंगे।
हो दोनों की रुसवाई, टुक लछमण करो० ॥
तुम कुछ तो सोचो लछमण, नहीं जनक हमारे दुश्मन।
क्यों इनसे करो लड़ाई, टुक लछमण करो० ॥
कायर उनको बतलाया, जिन चिल्ला नहीं चढ़ाया।
कर चुके जोर अज़माई, टुक लछमण करो० ॥
जो कायर तुम्हें बतावे, फिर राम चुप रह जावे।

मैं खुद हा करूँ सफाई, टुक लक्ष्मण करो० ॥
नहीं खुशी से हम आये हैं, मुनि विश्वामित्र लाये हैं।
रहो इनके ही अनुयायी, टुक लक्ष्मण करो० ॥
तुम कर लो यह प्रतिज्ञा जो गुरू जी देवें आज्ञा।
है काम वही सुखदाई, टुक लक्ष्मण करो० ॥
वह काम करो अय भ्राता, 'यशवन्त' रहे यश गाता।
अच्छी नहीं मूर्खताई, टुक लक्ष्मण करो०

नाटक

मेरे बहादुर भाई ! यह तुम्हारा केवल ख्याल है, अन्यथा तुम्हें कायर अथवा बुजदिल कहने की किसकी मजाल है ! कोई मनुष्य तुम्हें ऐसे शब्द कहे और रामचन्द्र सुनता रहे ! जब तुमने धनुष को हाथ तक नहीं लगाया तो तुम्हारी बहादुरी में फर्क कैसे आया ? अलबत्ता जो धनुष को जगह से नहीं हिला सके हैं वह इस गणना में आ सकते हैं और कायर कहला सकते हैं इसलिए तुमको हरगिज़ कोई ख्याल नहीं करना चाहिए और दिल पर किसी किस्म का मलाल नहीं करना चाहिए। इस वक्त तुम्हारा झगड़ा करना केवल नादानी है और इसमें हमारे कुल की सख़्त हानी है। अगर पिता जी सुन लेंगे तो दोनों को सख़्त सजा देंगे इसके अलावा हम अपनी मर्ज़ी से नहीं आये हैं, बल्कि मुनि विश्वामित्र जी लाये हैं, इसमें उनकी बदनामी है,

क्योंकि वह इस वक्त हम दोनों के स्वामी हैं। जो कुछ यह हुक्म दें वही करना चाहिए और इनकी आज्ञा से बाहर कदम न धरना चाहिये।

विश्वामित्र जी—(मन ही मन) तमाम राजा अपना अपना जोर लगा चुके और अपना सारा बल आज़मा चुके किन्तु कोई भी इस धनुष का चिल्ला न चढ़ा सका, यहां तक कि इस को जगह से भी न हिला सका। उधर जनक निराश होता जाता है और उसका चेहरा दम बदम सफेद होता जाता है। इधर लक्ष्मण का गुस्सा दम बदम बढ़ता जाता है और उसे क्षत्रीपन का जोश चढ़ता जाता है। ऐसा न हो कि शिताबी कर बैठे और जोश ग़जब में कुछ खराबी कर बैठे। फिर इसका सम्भालना दुश्वार हो जायगा और बातों ही बातों में बिगाड़ हो जायगा बिगड़े पीछे इसके सामने जाने की किसकी मजाल है, यह तो साक्षात काल है पल में खून की नदियाँ बहा देगा और इस यज्ञ मण्डप को युद्ध भूमि बना देगा। इसलिए अब स्वयम्बर का फैसला कर देना ही दानाई है और इसी में दोनों ओर की भलाई है।

विश्वामित्र जी का गाना (दादरा कांगड़ा)

राम उठो मत देर करो तुम ही यह धनुष उठाओगे।
और किसी की नहीं है ताकत चिल्ला तुम ही चढ़ाओगे॥

सब ज़ोर लगा कर हारे हैं, बैठे मन मार विचारे हैं।
इस इन्तज़ार में सारे हैं, कुछ तुम ही बल दिखलाओगे॥
राम उठो मत देर करो०
यह धनुष यद्यपि भारी है, पर तुमको क्या दुश्वारी है।
निश्चय ही विजय तुम्हारी है, तुम सीता को परनाओगे॥
राम उठो मत देर करो०
अब उठो न ज़्यादा शाम करो, इस कामको तुम अंजाम करो।
रघुकुल का रोशन नाम करो, दशरथ का यश फैलाओगे॥
राम उठो मत देर करो०
इनसे तो बल नापैद हुआ, सब का ही खून सफेद हुआ।
अब जनक भी नाउम्मेद हुआ, तुम इसकी धीर बँधाओगे॥
राम उठो मत देर करो०
सारी नगरी हैरान हुई, यह कमान आफत जान हुई।
सबकी 'यशवन्त' पहचान हुई, अब ज़्यादा क्या अजमाओगे॥
राम उठो मत देर करो०

नाटक

रघुकुलभूषण! उठो, अब किस बात का इन्तज़ार है, और तो सब अपना ज़ोर लगा चुके अब आखिरी तुम्हारा बार है। यद्यपि यह कमान बड़ी सख्त है मगर तुम्हारी परीक्षा का भी यही वक्त है। जाओ अपनी वीरता के जौहर दिखाओ। निःसन्देह तुम्हारी जय होगी और स्वयम्बर की शर्त तुम्हरे नाम तय होगी।

रामचन्द्र जी का गाना

गुरु जी आज्ञा आपकी सिर माथे मंजूर।
अब तक जो चुपका रहा था मैं भी मजबूर॥
आशीर्वाद है आपका अगर राम के साथ।
मुश्किल यह कुछ भी नहीं है मामूली बात॥
लेकर तेरा आश्रय चला यह करने काज।
हे ईश्वर रखियो मेरी आज सभा में लाज॥

नाटक

(धनुष को एक हाथ से खड़ा करके) क्या यह वही कमान है, जिसके वास्ते राजा जनक को इतना अभिमान है? जिसको हाथ लगाते हुए हर एक मनुष्य डरता है, देखिये इस कमान का अब चिल्ला चढ़ता है।

(एक जोरदार आवाज)

तड़ाख! तड़ाख!! तड़ाख!!!

सर्व उपस्थितगण—जय हो! जय हो!! श्री दशरथ कुमार की जय हो!!!

(सीता जी का रामचन्द्र जी के गले में जयमाला डालकर एक तरफ बैठ जाना)

रामचन्द्र जी—(विश्वामित्र जी के चरण छूकर) गुरु जी! अब तो आपके मन की मुराद बर आई।

विश्वामित्र जी—(गले लगा कर) बेटा तुमने क्षत्री वंश की लाज रख दिखाई।

राजा जनक का गाना (टोड़ी तीन ताल)

आज मग्न हुआ मन मेरा, भवसागर में पड़ी थी नैया
पार हुआ अब बेड़ा
निशदिन थी यह चिन्ता मुझको,
सता रहा था यह ऋण मुझको।
वर्ष वर्ष का दिन था मुझको, था यह फिकर घनेरा।
आज मग्न हुआ०

पूर्ण हो गई आशा सारी, रह गई कुल की लाज हमारी।
दशरथ से कर रिश्तेदारी, हो गया जनक उचेरा॥
आज मग्न हुआ०

पूरे अब अरमान करूँगा, शादी का सामान करूँगा।
प्रजा को धनवान करूँगा, दूंगा दान घनेरा॥
आज मग्न हुआ०

धन्य प्रभु तेरी प्रभुताई, कठिन समय में हुआ सहाई।
मुझ निर्बल की धीर बँधाई, हूं चरनन का चेरा॥
आज मग्न हुआ०

नाटक

परमात्मा! तेरा धन्यवाद है जो तुमने मेरा उद्धार किया और मुझको इस मँझधार से पार किया। यह फिकर मुझको दम बदम सता रहा था क्योंकि इन राजाओं का तर्ज अमल साफ

बता रहा था कि इनको हरगिज इस धनुष का चिल्ला चढ़ाने में कामयाबी न होगी और इस सूरत में मेरे लिए क्या कुछ खराबी न होगी। एक तरफ अपनी जबान का ख्याल था, दूसरी तरफ इसका पूरा होना सख्त मुहाल था। अगर अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ता हूं तो हमेशा के लिए इस बदनामी की जेरबारी रही, अगर उसका पालन करता हूं तो सीता तमाम उमर के लिए कुँवारी रही। परन्तु आपने जहां मेरी तमाम मुश्किल को हल कर दिया वहां मेरी प्रतिज्ञा को भी अटल कर दिया। प्रभु आप धन्य हैं! धन्य हैं!! (मंत्री से) इसी समय दूत को अयोध्या की तरफ रवाना कर दिया जाये, ताकि महाराज दशरथ को यह शुभ समाचार सुनाये।

मन्त्री—बहुत अच्छा महाराज।

जनक—(सर्व उपस्थित-गणों से) स्वयम्बर की शर्त पूरी हो गई। अब आप लोग अपने-अपने घरों को तशरीफ ले जायें।

सर्व उपस्थित गण—(ऊँचे स्वर से) बोलो सियापति रामचन्द्र की जय!

:o:—*—:o:

आठवां दृश्य

आयोध्यापुरी

[१] रनवास (कौशल्या का गाना)

हो गई मुद्दत खबर कुछ राम की आई नहीं।
है त आज्जुब आपने भी खबर मँगवाई नहीं॥
कर गये थे वादा कितने रोज का वह आप से।
क्या मुनि जी ने कोई तारीख बतलाई नहीं॥
स्वामीजी उनका फिकर रहता है मुझको रात दिन।
क़सम है दो रोज से रोटी तलक खाई नहीं॥
चैन है दिन को न मुझको रात को आराम है।
इस कदर तकलीफ तो मैंने कभी पाई नहीं॥
क्या अजब इस रंजोगम में ही निकल जायें प्राण।
कुछ दिनों तक जो उन्होंने शक्ल दिखलाई नहीं॥
क्या खबर किस हाल में हैं वह मेरे लख्ते जिगर।
कोई दुःख सुख की खबर तक भी पहुँचाई नहीं॥
हाय परमेश्वर! मुझे औलाद का सुख क्यों नहीं।
आपके दरबार में क्या मेरी सुनवाई नहीं॥

नाटक

स्वामी जी! रामचन्द्र और लक्ष्मण को गये इतने दिन हो गये; न मालूम कहां जाकर सो गये, मुझे पल पल भारी हो रही है और दो रोज से तो सख्त लाचारी हो रही है।

दिन को चैन है न रात को आराम है, यहां तक कि खाना पीना भी हराम है। जब आपने उनके भेजने का विचार किया था, तो मुनि जी ने कितने दिन का इकरार किया था? अव्वल तो आपने भेजने में ग़लती खाई है, खैर अगर भेज ही दिया था तो यह अजब लापरवाही है, कि इतने दिन गुजर जाने पर भी कुछ फ़िक्र ही नहीं, गोया वह आपके लख्ते जिगर ही नहीं। परमेश्वर जाने मेरे बच्चों का क्या हाल है, मेरा तो आठों पहर उधर ही ख्याल है। आपका ऐसी लापरवाही नहीं चाहिये। (आंखों में आंसू भर कर) परमेश्वर! मेरे बच्चे बिल्कुल नादान हैं। इस हालत में आप ही उनके निगहबान हैं।

राजा दशरथ [गाना]

प्रिय जी! यह हर घड़ी का रंज वाहियात है।
आ जायेंगे जल्द ही दो चार दिन की बात है।
क्षत्री की होकर सुता कुछ हौसला भी चाहिये।
कर दिया तुमने तो लेकिन शूद्रों को मात है॥
किस तरह से यह निदामत मैं गवारा कर सकूँ।
लोग यूँ कल को कहें दशरथ बड़ा कुल घात है।
जो हुआ अच्छा हुआ अब रंजो गम बेसूद है।
न मेरे इख्त्यार है और न तुम्हारे हाथ है॥

हां मगर इस बात का पूरा मुझे विश्वास है ;
ले गया है साथ जो वह भी जगत विख्यात है ॥
विश्वामित्र पर भरोसा है मुझे हर तौर से ।
फिर तुम्हारी आहो जारी किस लिए दिन रात है ॥
वह मेरे दोनों दिलावर भी किसी से कम नहीं ।
क्या हुआ जो उस तरफ इक राक्षस बदजात है ॥
बदशगुनी हर घड़ी की आपकी अच्छी नहीं ।
फिक्र क्या है आपको 'यशवन्तसिंह' जब साथ है ॥

नाटक

प्रिय जी ! तुम्हारा हर वक्त का रंजो-ग़म अच्छा नहीं । रामचन्द्र कोई दूध पीता बच्चा नहीं । ईश्वर की कृपा से वह हर तरह लायक है, फिर मुनि विश्वामित्र जी उनके सहायक हैं । माना कि राक्षसों की बहुत तादाद है, मगर राम और लक्ष्मण के सामने उनकी क्या बुनियाद है । मुझे उनकी तरफ से इसलिए ग़म नही कि मेरे दिलावर किसी अंश में भी उनसे कम नहीं । लेकिन फिर भी शेरों के शेर बल्कि शेर बबर हैं । युद्ध तो क्षत्री का शृंगार है मगर मालूम नहीं तुम्हारे सिर पर क्या वहम सवार है, जो इस प्रकार की बातें करती हो, और हर समय ठण्डी आहें भरती हो । क्षत्राणी होकर ऐसी बुजदिली न मालूम तुम को किसके

विरसे से मिली ! जरा अपना आप सँभालो और यह निकम्मे ख्यालात दिल से निकालो । मेरे कुल भूषण शीघ्र ही सकुशल आयेंगे और अपनी बहादुरी का डंका बजायेंगे ।

चांदी–महाराज ! मंत्री जी सेवा में उपस्थित होना चाहते हैं।

दशरथ–हां बुला लाओ ।

चांदी–(मंत्री से) महाराज ने आपको याद किया है और वहीं हाज़िर होने के लिए इरशाद किया है।

मन्त्री–(दशरथ से) महाराज मिथिलापुरी से दूत आया है।

दशरथ—क्या काम है ?

मन्त्री–कोई खास पैगाम है और महाराजा के ही नाम है।

दशरथ—दरयाफ्त करें कि क्या मामला है ?

नकीब–राज सभा के कर्मचारी सावधान हो जायें, श्री महाराज तशरीफ ला रहे हैं।

दशरथ–(सिंहासन पर बैठकर) मिथिलापुरी से कौन सा दूत आया है ?

दूत–यह चरण-सेवक महाराज के नाम एक पैगाम लाया है ।

दशरथ–महाराज जनक तो आनन्द हैं ?

दूत–महाराज की कृपा से हर तरह प्रसन्न हैं।

दशरथ–दिखलाओ वह कौन सा पत्र है ?

दूत-(पत्र पेश करके) लीजिये महाराज ।

दशरथ—मन्त्री जी ! यह पत्र पढ़कर हमें सुनाओ।

मन्त्री का पत्र पढ़कर सुनाना—[पत्र का विषय]

महाराज दशरथ शहनशाहे आली,
रघुकुल शिरोमणि अयोध्या के वाली।
मेरी लाज जाती थी तुमने बचाली,
तेरे लाल ने मेरी रख ली है लाली।
हुआ बहुत मुश्किल से उद्धार मेरा,
पड़ा था भँवर में किया पार बेड़ा।

दशरथ—कुछ समझ में नहीं आता कि क्या माजरा है, यह पत्र है या गोरखधन्धा।

मन्त्री—महाराज ! अभी तक तो कुछ पता नहीं चला शायद आगे चलकर कुछ मतलब हल हो।

दशरथ—अच्छा आगे पढ़िये।

मन्त्री (आगे पढ़ता है)

मेरे घर में था एक धनुष बहुत भारी,
जिसे देख डरते सभी धनुषधारी।
हुई बहुत योद्धाओं को शर्मसारी,
रहा मैं भी उसका उमर भर पुजारी।
मगर मुझको इस बात की थी हैरानी,
उठा लेती सीता उसे ब-आसानी।
उसी रोज प्रतिज्ञा अपनी सुना दी,

करी जा बजा इस अमर की मना दी।
कि जिस क्षत्री ने धनुष यह उठा दी,
करूँगा उसी से मैं सीता की शादी।
इसी वास्ते इक स्वयम्बर रचाया,
लिखे जा बजा खत सभी को बुलाया।
किया मुझ पै अहसान सारे पधारे,
लगा जोर अपना वह हारे विचारे।
बहुत कुछ दिखाये तरारे शरारे,
रहे देखते मुँह पसारे विचारे।
सभी ने बहुत जोर अपना लगाया,
किसी ने जगह से न उसको हिलाया।
हुई थी मुझे हर तरह ना उम्मेदी,
मेरे मुँह पै छाई हुई थी सफेदी।
जो देखी वहां वीरता की नापैदी,
सभा में उसी वक्त यह बात कहदी।
हुई क्षत्री वंश की अब सफाई,
जो इतनी भी जुरअत किसी में न आई।
मगर एक युवक ने कहा मुँह संभालो·
जबां से न ऐसे वचन तुम निकालो।
न सोचो विचारो न देखो न भालो,
करो होश मुँह में न हर एक डालो।

यह थे भाग्य अच्छे हमारे तुम्हारे,
उपस्थित वहीं थे दुलारे तुम्हारे।
नज़र ज्यों ही मैंने उधर को उठाई,
कि बैठे हुए थे जहां दोनों भाई।
मेरे दिल में कुछ कुछ तसल्ली सी आई,
करें मेरी शायद यह मुश्किल कुशाई।
मुनि विश्वामित्र का पाकर इशारा,
उठा रामचन्द्र दुलारा तुम्हारा।
वह इक हाथ से उस धनुष को उठाकर,
जो बैठे हुए थे सभी को दिखाकर।
ब आवाज सब को कहा यह सुनाकर,
जिसे होवे भ्रम देख लेवे वह आकर।
पकड़ कर वह चिल्ला बराबर जो लाया,
उसी दम हुआ उस धनुष का सफाया।
हुई मेरे मन की मुराद आज पूरी,
बना आज से ही मैं सेवक हजूरी।
है तशरीफ लाना तुम्हारा जरूरी,
कि बिन आपके है यह क्रिया अधूरी।
मिले जिस घड़ी खत उसी वक्त आना,
मगर साथ 'यशवन्तसिंह' को भी लाना।
उपस्थित गण—महाराज ! मुबारिक हो ! मुबारिक हो !

दशरथ–आहा ! परमेश्वर ने मुझे एक ऋण से और मुक्त कर दिया सच है :–

"होता है दयालु जब देता है बुलाय के"

परमात्मन ! तेरा शुक्र है। (मन्त्री से) दूत को खातिर ख्वाह इनाम देकर वापिस किया जाये।

वशिष्ठ जी–महलों में भी यह शुभ समाचार पहुँचाइये और जल्दी बारात की तैयारी कराइये।

दशरथ–(भरत और शत्रुघ्न को इशारा करके) बेटा जाओ अपनी माताओं को यह शुभ समाचार सुनाओ।

[भरत और शत्रुघ्न का भाग जाना]

कौशल्या–(सुमित्रा से) मिथिलापुरी से एक दूत आया है, न मालूम क्या पैगाम लाया है ?

सुमित्रा–तुमको कैसे मालूम हुआ ?

कौशल्या–अभी मन्त्री जी स्वामी जी को बुलाने आये थे उन की ज़बानी मालूम हुआ था, शायद रामचन्द्र और लक्ष्मण की कुछ खबर लाया हो।

सुमित्रा–बावली हुई हो, राज काज सम्बन्धी कोई बात होगी उनका मिथिलापुरी में क्या काम था।

कौशल्या—मुझे तो रात दिन उन्हीं के स्वप्न आते हैं।

सुमित्रा—हां सच है मगर……

भरत और शत्रुघ्न—माता जी बधाई !

कौशल्या—अरे कैसी बधाई ?

भरत—घर में एक बहू आई '

कौशल्या—हट सौदाई, न मंगनी न सगाई, बहू पहले ही घर आई, मसखरी करने को भी हम ही पाई ।

शत्रुघ्न—मिठाई खिलाओ मिठाई !

कौशल्या—(प्यार से धप्पा लगाकर) अरे तुमने मेरी जान खाई ।

शत्रुघ्न—वाह अच्छी खुशखबरी सुनाने आये, मिठाई के बदले उल्टे थप्पड़ खाये, आजा भाई भरत तू भी ले ले हिस्सा ।

भरत—माता जी ! आपने हमारी बात को मखौल जाना है ?

सुमित्रा—तुम्हारी बातों का भी कुछ ठिमाना है, एक बात सुनाते हो बीस छलांगें लगाते हो । हमें तो खाना पीना हराम है, तुम्हें अपनी दंगा मस्ती से काम है । जाओ बेटा बाहर जाकर खेलो ।

भरत—(कौशल्या से) माता जी सावधान होकर मेरी बात सुनो ।

कौशल्या—हाँ सुनाओ क्या सुनाते हो ?

भरत—आज पिता जी को आपने यहां बुलाया था ?

कौशल्या—हां बुलाया था ।

भरत—आपने उनसे भाई रामचन्द्र और लक्ष्मण की

बाबत दरयाफ़्त किया ?

कौशल्या—हां किया था ?

भरत—उसी समय मन्त्री जी आये थे ?

कौशल्या—हां आये थे। भरत—उन्होंने क्या कहा था ?

कौशल्या—यही कि मिथिलापुरी से एक दूत आया है।

भरत—बस वही दूत यह खुशखबरी लाया है !

कौशल्या—अब तो मुझे भी कुछ कुछ यकीन आया है, हां बेटा उसने क्या हाल सुनाया है।

भरत—मिथिलापुरी के राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता का स्वयंवर रचाया था और दूर-दूर से राजकुमारों को बुलाया था। अस्तु उसमें भाई रामचन्द्र की जय हुई और स्वयंवर की शर्त उनके नाम पर तय हुई ! राजा जनक का यही पैगाम आया है और पिताजी को बारात समेत बुलाया है।

सुमित्रा—बहिन ! यह तो इनका कहना ठीक निकला, हम तो अब तक मखौल ही समझी थीं।

कौशल्या—(दोनों का हाथ पकड़ पर) आओ बेटा तुम्हें मिठाई खिलाऊँ।

भरत और शत्रुघ्न—हां अब मिठाई खिलाने लगी हो, (मुँह बनाकर) पहले मार मार कर मुँह लाल कर दिया। अब तो हम जाते हैं क्योंकि वहां बरात की तैयारी हो रही है।

मिथिलापुरी नगर वासियों का गाना (काफी भैरवी)

चलो देखें चल के बारात को, महाराज दशरथ आ रहे।
क्या ठाट बाट बना हुआ, क्या शान अपनी दिखा रहे॥
कहीं हाथियों की कतार है, नहीं जिनका कोई शुमार है।
पैदल कोई असवार है, रंग अपना अपना जमा रहे॥
चलो देखें चल के०

कही रथ हैं कही मझोलियां, कहीं पालकी कहीं डोलियां।
कहीं बालकों की टोलियां, वह धूम अलग मचा रहे॥
कहीं राग है कहीं रंग है, बाजों की अलग तरंग है।
सबके दिलों में उमंग है, क्या मस्त होके गा रहे॥
घोड़े सजे हैं साज से, सरशार नखरे नाज से।
चलते हैं किस अन्दाज से, गिन गिन के कदम उठा रहे॥
अहो! किस क़दर हजूम है, हर तरफ मच रही धूम है।
तादाद क्या मालूम है, फौजों के बादल छा रहे॥
एक दूसरे से मिल रहे, अरमान दिल के निकल रहे।
किस तरज से सिर हिल रहे, किस तौर हाथ मिला रहे॥
राजा जनक भी आनकर, मिलते भुजाएं तान कर।
'यशवन्तसिंह' भी जानकर, उन्हीं की जानिब जा रहे॥
चलो देखे चल के०

—*—

* पहला भाग समाप्त *

❀ ओ३म् ❀

आर्य्य संगीत रामायण

दूसरा भाग

आठवें दृश्य का शेषांश

(प्रकरण के लिये देखो प्रथम-भाग)

विश्वामित्र–(राम और लच्मण को आगे करके) राजन्! लीजिये आपके दोनों नेत्रों के तारे उपस्थित हैं, इनको गले लगाइये, विवाह का प्रबन्ध कीजिये और मुझे अब आज्ञा दीजिये।

दशरथ–वाह वाह! खूब यह अवसर भी आपने जाने के लिये खूब छांट कर निकाला है। अभी तक तो मैंने अपनी अमानत को भी नहीं संभरला है। अगर आपको यों ही जाना था तो मुझे काहे को बुलाना था। इस यज्ञ के आप जिम्मेवार हैं, हम तो केवल पहरेदार हैं।

विश्वामित्र–खैर आपका कहना स्वीकार करता हूं और विवाह की समाप्ति तक और ठहरने का इकरार करता हूं।

रामचन्द्र व लच्मण–(हाथ जोड कर) पिता जी! नमस्ते।

दशरथ–(दोनों को गले लगा कर) बेटा चिरंजीव रहो।

राम०–पिताजी! आपको सफर की तकलीफ तो ज़रूर हुई।

दशरथ–बेटा, तुम्हें देखते ही सब थकान दूर हुई।

रामचन्द्र–हमारी माताओं का क्या हाल है?

दशरथ—वैसे तो आनन्द हैं, परन्तु तुम्हारी तरफ़ का हर वक़्त ख़्याल है।

राजा जनक का पंडित सत्यानन्द व कर्मचारियों सहित स्वागत को आना

जनक—(महाराज दशरथ से बग़लगीर होकर) मेरे धन्य भाग्य हैं, जो आपने दास के गृह को अपने चरण कमलों से सुशोभित किया।

दशरथ—आपकी इस अतिथि सेवा ने मेरे दिल को मोहित किया।

जनक—परमेश्वर की कृपा हुई जो मेरा आपके चरणों में निवास हुआ।

दशरथ—यह आपका अनुग्रह है बल्कि दशरथ आज से आपका दास हुआ।

जनक—महाराज! आप मुझे वृथा लज्जित करते हैं आपके सामने मेरी क्या हस्ती है?

दशरथ—मैं आपको लज्जित नहीं करता, बल्कि यह आपकी जबरदस्ती है।

पंडित सत्यानंद—तमाम बराती मार्ग की थकान से चूर हो रहे हैं, परन्तु आप अपनी बातों में मग्न हो रहे हैं। इस वार्ता को बन्द कीजिये, बरात को चलने की आज्ञा दीजिये।

दशरथ—मन्त्री जी बरातियों से कह दो कि तय्यार हो जायें और अपनी-अपनी सवारियों पर सवार हो जायें।

मन्त्री—प्रत्येक बाराती बिल्कुल तैयार है, केवल महाराज की आज्ञा का इन्तज़ार है।

दशरथ—नक्कारची को आज्ञा दो कि नक्कारे पर चोट लगाये।

नक्कारची—किड़धुम किड़धुम किड़किड़ किड़धुम किड़धुम...

बारात का मिथिलापुरी के बाजारों और कूचों से गुज़रना, नगर की स्त्रियों का गाना (बतर्ज़ तू कैसा यारमार है)

आहा शादी की क्या धूम धाम है,
कैसे झण्डे रहे हर तरफ़ लहलहा।
आहा! शादी० ॥

पहली—बारात आती, सारे बाराती, कैसे खुशी से रहे चहचहा, सारे पोशाक पहने हुए बेबहा, कैसा आला जलूस, गोया जलते फानूस, शान शौकत में किस को कलाम है। आहा! शादी० ॥

दूसरी—बाजे बजाते, घोड़े नचाते, हाथी पै आता है कोई चढ़ा, कोई पीछे हटा, कोई आगे बढ़ा, कोई खींचे लगाम, रहा घोड़े को थाम, कोई आता चला गाम गाम है।

आहा! शादी० ॥

तीसरी—कैसा सलीका, कैसा तरीका फौजों का आता है तांता बँधा, एका एकी तो होता है यह ही शुबाह, मानो बादल चढ़े आ रहे हैं बढ़े। सुबह से हो गई शाम है

आहा! शादी० ॥

चौथी–खुशी का दिन है, हर एक मग्न है, राजा जनक भी मग्न हो रहा, नहीं इसकी खुशी की कोई इन्तहा। दिये हाथों में हाथ, बैठा दशरथ के साथ, आहा कैसा खुशी का मुकाम है। आहा! शादी० ॥

पांचवां–कतार चांधे, मिलाए कांधे, घोड़ों को रखा है कैसा सधा, नहीं होता है एक दूसरे से जुदा, एक जैसी है चाल, हरतरफ देखभाल, कैसा 'यशवन्तसिंह' का इन्तजाम है।

आहा शादी की क्या धूम धाम है।

—:※:—

नवां दृश्य

(१) शादी

दासियों का गाना नृत्य सहित तीन ताल (तर्ज थियेटर)

[अगर डंडों का खेल भी साथ किया जाय तो अति उत्तम है]

गाओ गाओ मुबारिक बधाई बहिन।
खुशी का दिन है, हर एक मग्न है,
गाओ री सारी लुगाई बहिन।
गाओ गाओ० ॥

धन्य धन्य दिन आज का घर घर हुआ आनन्द,
वर सीता के वास्ते मिल गया हस्ब पसन्द।
जाये ईश्वर की महिमा न गाई बहिन।

गाओ गाओ० ॥

पढ़ पढ़ मन्त्र वेद के यज्ञ किया आरम्भ,
बैठ गये हैं आन कर दोनों धर्म स्तम्भ ।
आहा आहा क्या वेदी सजाई बहिन,
गाओ गाओ० ॥

पंडित बैठे भवन में पढ़ रहे मंगलाचार,
सीता और श्रीराम के हो रहे कौल करार ।
देखो देखो वह रानी भी आई बहिन,
गाओ गाओ० ॥

सकल सभा ने दोऊ को दीना आशीर्वाद,
खुशी रहो फूलो फलो सदा रहो आबाद ।
बारी 'यशवन्तसिंह' की भी आई बहिन,
गाओ गाओ० ॥

नाटक

पंडित सत्यानन्द—महाराज ! कन्यादान का समय आ गया है, आप यहां तशरीफ ले आइये ।

जनक—हे दशरथ कुमार ! मैं अपनी कन्या तुम्हें देता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि दोनों नियमानुसार गृहस्थ के सुखों को भोगते हुए संसार के अन्दर फूलो फलो और कभी एक दूसरे को न भूलो । मैं आशा करता हूं कि जो प्रण तुम दोनों ने

इस सभा में किये हैं और एक दूसरे से कौलोकरार लिए हैं, इन्हें कभी न भुलाओगे, और अपने अपने प्रण का पालन करते हुए संसार के अन्दर अपने कुल का यश और कीर्ति फैलाओगे।

पंडित सत्यानन्द–सकल उपस्थित जन इस महान् यज्ञ की सफलता और इस शुभ जोड़े की आयु वृद्धि के लिए परमात्मा से प्रार्थना करें।

उपस्थित जन–हे सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मन्! हम सब बड़ी नम्रता से आपके चरणों में प्रार्थना करते हैं कि यह जोड़ा चिरायु हो, सब सुखों से भरपूर रहे और अपने धर्म पर आरूढ़ रहे।

(२) विदा

सीता जी की माता का गाना [लावणी बह्रे शिकास्त]

ऐ बेटी होगी जुदा आज तू हम से,
फट रही सीता छाती मेरी ग़म से।

उसी दिन लक्ष्मण की शादी राजा जनक की छोटी लड़की उर्मिला से, भरत और शत्रुघ्न की शादी जनक के छोटे भाई कुशध्वज की कन्याओं मांडवी और श्रुतिकीर्ति से हो गई, इस विषय को अप्रकरणिक समझ कर विस्तार भय से छोड़ दिया गया। (लेखक)

पेश नहीं कुछ चलती मेरी मैं भी हूं मजबूर।
जिसको खूने जिगर पिला कर पाला,
अब दे दे धक्के घर से बाहर निकाला।
मेरी बेटी! कन्या जोबन बड़ा मुहाल,
सच कहा है किसी ने लड़की है बेगाना माल।
जिस घर में बेटी इतनी उमर गुजारी,
इक पल में होई खतम मुहब्बत सारी।
मेरी बेटी अब तू घण्टों की महमान,
सहूंगी कैसे जुदाई तेरी निकल जायेंगे प्राण।
जब याद तेरी आ मुझको कल्पावेगी,
तो मेरी आत्मा कैसे कल पावेगी।
मेरी बेटी! यह घर दीखेगा सुनसान,
तेरे साथ ही विदा हो गये खुशी के सब सामान।
जब हुआ मुझे कोई भी रंज जरा सा,
तू देती थी झट आकर मुझे दिलासा।
मेरी बेटी! मेरी कौन बंधावे धीर,
विदा हो चली आज मेरे से मेरी खास मुशीर।
देती हूं तुझको जाती दफा संदेशा,
यह मेरी बातें रखना याद हमेशा।
मेरी बेटी तेरे हाथ हमारी लाज,

रोज रोज न कहना मैंने कह देती हूं आज।
निज सास ससुर को मस्तक रोज नवाना,
तन मन से बेटी उनका हुक्म बजाना।
मेरी बेटी! ऐसा तीर्थ और न मूल,
सास ससुर जो रहें दुखी उनके जीवन पर धूल।
तुम 'साया बन कर साथ पति के रहना,
हे बेटी सबसे उत्तम है यह गहना।
मेरी बेटी तू जिस्म पति है जान,
बिना जान के जिस्म नकारा मिट्टी धूल समान।
मत कभी सामने उनके आँख उठाना,
हों गुस्से भी तो दिल में मैल न लाना।
मेरी बेटी रहना दुःख सुख में तुम साथ,
करना तुम विश्राम वहीं पर जहां पै हों रघुनाथ।
हों देवर जेठ और जितनी ननद जिठानी,
उन सब का करना आदर मेरी सयानी।
मेरी बेटी घर पर जितने बाल जवान,
मीठे बोलो वचन सभी को समझो एक समान।
जो लौंडी बांदी खिदमतगार तुम्हारी,
उनकी भी रखना खूब तरह दिलदारी।
मेरी बेटी उनसे होवे कोई कसूर,

क्षमा करो तुम एका एकी मत करना मजबूर।
जो पास पड़ौसन तुमसे मिलने आवे,
न तेरी शिकायत कभी जबां पर लावे।
मेरी बेटी करना उनका भी सत्कार,
इसी लिए यह कहा स्त्री है कुल का शृंगार।
मत करना ऐसा काम ऐ मेरी बेटी,
हो जिससे सारे खानदान की हेटी।
मेरी बेटी रखना इन बातों का ध्यान,
और कहूं क्या ज्यादा तुझको! तू खुद बुद्धिमान।
हे बेटी अब तू आंसू मती बहावे,
बस कर सीता मत ज्यादा मुझे रुलावे।
मेरी बेटी अब ले मेरा आशीर्वाद,
कभी कभी अपनी माता को करती रहना याद।

सीता जी का गाना (लावणी पूर्ववत)

हे माता मुझको अभी से लगी भुलाने,
क्यों ऐसी बातें अभी से लगी सुनाने।
मेरी माता मैं हूं घन्टों की महमान,
सुन सुन तेरी बातें मेरे निकसे जात प्राण।
क्या इस घर में अब न रहने पाऊंगी,
मै छोड़ तुझे न किसी जगह जाऊँगी।

मेरी माता मेरे से हो गया कौन क़सूर,
जो तुम मुझको आंखोंसे यूँ लगीहो करने दूर।
क्या तुमने मुझको इसी लिए पाला था,
अपने को सौ-सौ विपदा में डाला था।
मेरी माता करो तुम उस दिन को याद,
हे जननी क्या सीता तेरी नहीं रहा औलाद।
जिस प्रेम भरी वाणी से मुझे बुलातीं,
बेटी कहकर तुम मुझको गले लगातीं।
मेरी माता प्यार से लेती थी मुख चूम,
लोग दिखावा करती थी अब हुआमुझे मालूम।
अब मुझको घर से करने लगी रवाना,
मेरी नजरों में हुआ अन्धेर जमाना।
मेरी माता साथ न कोई महरम कार,
पैदा होते ही क्यों तुमने दिया न मुझको मार।
न साथ मेरे अब कोई संग सहेली,
रोती [धोती इस घर से चली अकेली।
मेरी मात करूँ मैं अब किससे फ़रियाद,
वही बने दुश्मन सीता के थी जिनकी औलाद।
हे जननी सीता हो गई आज बेगानी,
इस घर से मेरा उठ गया दाना पानी।

मेरी माता भूल गई पिछले सभी आनन्द,
करो न मुझको दूर नजर से तुम्हें मेरी सौगन्द।
देखे है सारी दुनियां खड़ी तमाशा,
नहीं किसी को भी आता रहम जरा सा।
मेरी माता तुम्हें जब तरस न आया मूल,
और किसीसे शिकवा मेरा करना महज फिजूल।
अच्छा माता न कोई जोर हमारा,
अब वृथा ही है करना शोर हमारा।
मेरी माता हुई मैं जिस दिन जरा उदास,
भेजूँगी 'यशवन्तसिंह' को फौरन तेरे पास।

नाटक

माता जी! क्या सीता का तुम्हारे साथ कोई सम्बन्ध नहीं रहा या आपके घर में मेरे रहने का कोई प्रबन्ध नहीं रहा। मैंने ऐसा कौनसा कसूर कर दिया जो आपने मुझको अपनी आंखों से दूर कर दिया। हाय हाय, आपका ऐसा कठोर आत्मा हो गया और एक दम से हमारी सारी मुहब्बतका खात्मा हो गया। क्या आज तक जो प्यार मुझसे करती थीं वह एक छलावा था और केवल लोग दिखावा था। माता जी! क्या मैं सचमुच विश्वास करलूं कि आपकी मुहब्बत मेरे साथ फर्जी थी और इसमें आपकी कोई खुदगरजी थी? नहीं नहीं ऐसा कहना महा पाप है और इसलिए मुझे अत्यन्त

पश्चाताप है। ऐ ज़बान ! जल जा, जो मेरी माता के बारे में ऐसे वाक्य इस्तेमाल कर रही है, ऐ अपवित्र आत्मा ! तू निकल जा जो इस प्रकार के दुष्ट ख्याल कर रही है। माता जी ! परमेश्वर के वास्ते मुझको कदापि अपने नेत्रों से दूर न कीजिये, और किसी जगह जाने को मजबूर न कीजिये। आपका वियोग मैं क्षण भर भी न सह सकूँगी और बिना आपके दम भर भी जीवित न रह सकूँगी। इस ग़म गुस्से की अवस्था में कोई ऐसा वैसा शब्द मुँह से निकल गया हो तो उसके लिए अति लज्जित हूं और आपके चरणों में पड़कर क्षमा प्रार्थी हूं।

सीता की माता का गाना [बहरे तवील]

मेरी बेटी न ज्यादा रुला अब मुझे,
मेरी आंखों का पानी खतम हो गया।
तेरा सुनके रुदन ऐ मेरी लाडली,
आज मेरा कलेजा भस्म हो गया।
क्या करूँ मेरी बेटी मैं लाचार हूं,
हर तरह से मैं तुझ से शर्मसार हूं।
हो गई आज तेरी गुनहगार हूं,
हाय तुझको भी ऐसा भरम हो गया।
मेरी बेटी० ॥

किस तरह चीर कर दिल दिखाऊँ तुझे,
किस तरह हाल अपना बताऊँ तुझे।
मेरी बेटी मैं निश्चय दिलाऊँ तुझे,
आज आराम मुझ पै कसम हो गया।
मेरी बेटी० ॥
मेरी आंखों का सीता तू ही नूर है,
कब जुदाई मुझे तेरी मन्जूर है।
क्या करूँ सारी दुनिया का दस्तूर है,
क्या मेरे से अनोखा सितम हो गया।
मेरी बेटी० ॥
दुःख सुख अपना अब किसे सुनाऊँगी मैं,
बेटी कह कर किसे अब बुलाऊँगी मैं।
भेद दिल का किसे अब बताऊँगी मैं,
एक हाथ आज मेरा कलम हो गया।
मेरी बेटी० ॥
रख तसल्ली न ज्यादा मुझे अब रुला,
मैं तुझे बहुत जल्दी ही लूँगी बुला।
देख कर रंजो ग़म में तुझे मुबतिला,
मुझे मुश्किल उठाना कदम हो गया।
मेरी बेटी० ॥

नाटक

बे ` ' बस कर, अब तो मुझ में रोने की भी सामर्थ

नहीं रही, तेरा रुदन सुनकर मेरा दिल पिघला जाता है और कलेजा सीने से निकला जाता है। मगर क्या करूँ शास्त्रों की आज्ञा और दुनियां का दस्तूर है जिसके कारण तेरी माता बिल्कुल मजबूर है। वर्ना तेरी जुदाई मेरे लिए क्या कम अज़ाब है, वास्तव में तो मेरी ही मिट्टी खराब है क्योंकि तुझ को तो कौशल्या जैसी सुशील और धर्मात्मा सास मिल जायगी और उसके साथ ऐसी हिल जायगी कि उसी के प्रेम का दम भरेगी और मुझको भूले से भी याद न करेगी। मगर मैं तुझसी योग्य पुत्री कहां से पाऊँगी और किससे अपना दिल बहलाऊँगी? मेरी अच्छी बेटी रोना तो मेरे पल्ले पड़ गया, जिसका सारा बना बनाया खेल बिगड़ गया। अच्छा अपनी जान पर जबर करूँगी और जिस तरह होगा सबर करूँगी।

सीता जनक के गले लग कर (गाना बहरे तवील)

ऐ पिता जी तुम्हारी दुलारी सुता,
आज रो रो के तुमसे जुदा हो रही।
आओ मिल लो ऐ मेरे प्यारे पिता,
आज सीता यहां से विदा हो रही।
इस जगह चन्द घन्टों की महमान हूं,
हर तरफ़ देखती हूं परेशान हूं।
पेश चलती नहीं कोई हैरान हूं,

आज किस्मत को अपनी खड़ी रो रही।
हे पिता जी० ॥
आज सबने ही दिल से बिसारा मुझे,
कोई आता नजर न सहारा मुझे।
बेगुनाह किस लिये आज मारा मुझे,
जान रो रो के बेटी तेरी खो रही।
हे पिता जी० ॥
हर तरह जिसकी दिलजोई मंजूर थी,
तेरी आंखों का जो हे पिता नूर थी।
जो नजर से न होती कभी दूर थी,
आज तुमको न उसकी ज़रा मोह रही।
हे पिता जी० ॥
हाय यह घर मुझे अब बेगाना हुआ,
आबोदाना यहां से रवाना हुआ।
वैरी 'यशवन्तसिंह' सब जमाना हुआ,
मेरी किस्मत न जाने कहां सो रही।
हे पिता जी० ॥

नाटक

पिता जी! हाय, आपने भी मुझको बिसार दिया और एक दम दिल से उतार दिया। हाय हाय! आज मैं सब की आखों में खार हो गई और सारी सृष्टि मेरी सूरत से

बेजार हो गई। शोक! जिस घर में इतने दिन पालन पोषण हुआ, आज उसको कैसी बेकसी के साथ छोड़ रही हूं, और उसकी दिवारों से अपना सिर फोड़ रही हूं। आह, आज मेरे लिये हर एक अपना बेगाना हो गया, और यहां से हमेशा के लिए मेरा आबोदाना रवाना हो गया, पिता जी! क्या वह आज ही का कुदिन था जिसका जिक्र आप बार बार करते थे और बड़ी बेसबरी से इन्तज़ार करते थे। यदि शुभ दिन इसी का नाम है तो मेरा इसे दूर से ही प्रणाम है। क्या करूँ धर्म मुझको इस बात की आज्ञा नहीं देता कि आपके विरूद्ध जबान खोलूँ, या मुख से कुछ बोलूँ, वरना जो कुछ इस समय मेरे साथ गुजर रही है, उसको न केवल मेरा दिल जानता है, बल्कि एक कठोर से कठोर हृदय भी इस बात को मानता है कि यह वर्ताव न केवल न्याय के विरूद्ध है किन्तु मनुष्यता के भी प्रतिकूल है, परन्तु बलवान के लिये सब कुछ क्षमा है। अच्छा पिता जी यदि परमेश्वर को इसी तरह मन्जूर है तो इसमें किसी का क्या कसूर है।

जनक का गाना [छन्द]

बेटी मेरी रख धीर मत दलगीर हो दिल में जरा,
सीता तेरे इस रुदन से जाता मेरा हृदय फटा।
दिल जान से देह प्राण से तेरे पर जान निसार हूं,

संसार के व्यवहार से बेटी मगर लाचार हूं।
ऐ मेरी नूरे नज़र लख़्ते ज़िगर रोवे मती,
मुझको रुलावे मुफ़्त अपनी जान तू खोवे मती।
मत हो निराश उदास तुझको देखकर हैरान हूं,
सुनकर रुदन बेटी तेरा मैं हो रहा बेजान हूं।
कौशल्या तेरी मात, बेटी! बात उसकी मानना,
दशरथ तुम्हारे पिता हैं तुम जनक उनको जानना।
तुम हर तरह मुख्तार यह घर बार है किसका भला,
मत इस तरह की गुफ्तगू करके मेरी छाती जला।
मुझको है खुद मुश्किल कि मैं दिल किस तरह बहलाऊँगा,
बेटी तसल्ली रख तुझे मैं जल्द ही बुलवाऊँगा।

नाटक

सीता! अब मैं सच कहता हूं कि भारी से भारी लड़ाइयों में भी जहां असंख्य खून मेरी आंखों के सामने हो गये और हजारों योद्धा मेरे देखते २ बिस्तरे मर्ग पर सो गये, मेरा दिल कभी नहीं घबराया था और नाम मात्र मैल भी मन पर न लाया था लेकिन तेरे रुदन ने मेरा कलेजा हिला दिया और सब धैर्य खाक में मिला दिया। मेरा दिल खुद ब खुद घबरा रहा है, दम बदम घुटा जा रहा है, हालांकि मैं बखूबी जानता हूं और इस बात को मानता हूं कि ब वक्त रवानगी लड़कियों के रोने धोने

का अकसर आम क़ायदा है जिसके लिए तेरा इस कदर रंज करना बे-फ़ायदा है, मगर न मालूम परमेश्वर ने तेरी जबान में क्या जादू भर दिया है कि मुझको बिल्कुल पागल कर-दिया है। बाहर की चोट तो बहुत सहते हैं मगर जिगर की लगी इसी को कहते हैं। बेटी! परमेश्वर के वास्ते मेरे हाल पर दया कर, निश्चय जान कि तेरा रुदन कलेजे में नासूर डाल रहा है, और मेरे खून को बुरी तरह उबाल रहा है। जान निकलने को तैयार है, जिसका संभालना तेरे अख़्तयार है। (गले लगाकर) पुत्री! तसल्ली रख, मैं ज्यादा दिन नहीं लगाऊंगा और बहुत जल्द तुझे वापस बुलाऊँगा।

सीता (जनक जी के गले लगकर)

गाना (टोड़ी ताल दादरा बतर्ज किथे कोता दिल जानिया डेरा)

मेरी सइयो मैं होई पराई;
मेरा बस न चलदा काई।
होल दूर मैंनू सारे छड़के,
गल्ल पुच्छता न कोई सद के।
मैंनूँ कल्ली नूं ले चल्ले कढ़ के,
मेरे बावला तेरी दुहाई।
हुई कमली मैं सारे संसार दी,
कोई सुने न पई पुकार दी।
नहीं खबर सी ऐस व्योहार दी,

नी मैं चल्ली आं बावल जाई ॥ मेरी०

रोंदी रोंदी मैं कमली होई,

मेरी डोली न रखदा कोई।

मैंनूं देन्दा न बावल ढोई,

गल्ल पुच्छदा न कोई भाई ॥ मेरी०

मात पिता ने फड के बाहों,

मैंनूं कीता है दूर निगाहों।

छड रोंदी नूं मुड़ गये राहों,

अज सारियां मैंनूं भुलाई ॥ मेरी०

छड चलियाँ सारी सहेलियॉ,

नाल रहंदियाँ हसियां खेलियां।

साम्भ बावला तेरी हवेलियां,

ऐथे रहन दी आस मुकाई ॥ मेरी०

मेरे बावला केहड़े कसूर ते,

मैंनूं सिट दित्ता ऐनी दूर ते।

आग लगे नी ऐस दस्तूर ते,

इक रात वी रहन न पाई ॥ मेरी०

मेरी रहियां पसारियां बाहवाँ,

नहीं दित्ता दिलासा आवां।

वांग कूंज दे कूक दी जावां,

केहड़ी कीती है खोटी कमाई ॥ मेरी०

जाँजी चल पये जँज सिंगार के,

वेखां मुड़ के ते कूकां मार के।

चुप होई 'यशवन्तसिंह' हार के,

होर न कोई पार बसाई॥ मेरी०

नाटक

प्यारी सहेलियो! आज तुम्हारी सीता को मजबूर किया जाता है, जबरदस्ती तुम्हारी नजरों से दूर किया जाता है। अफसोस सब के सब इस बात पर अड़े हैं और मुझको रवाना करने को बिल्कुल तैयार खड़े हैं। निस्सन्देह अब जुदाई की घड़ी है, जो मौत की तरह मेरे सिर पर खड़ी है। अब मुझे ऐसी जगह जाना होगा जहां अपना होगा न बिगाना होगा। किसे अपना दुख सुनाऊँगी किससे अपना दिल बहलाऊँगी। आह! आज तो तुमने भी साथ छोड़ दिया और मेरी तरफ से मुँह मोड़ लिया। जब मां बाप के नजदीक ही मेरा यहां रहना निर्मूल है तो तुम्हारे पर तो मेरा अफसोस करना फिजूल है। हाय, किस तरह अपने आपको सम्भालूं और किस किस की याद दिल से निकालूं। आह! जिनके पसीने के बदले अपना खून बहाती थी, जिनको जरा सा दुखी देखकर तमाम रात नींद नहीं आती थी, आज उन सबके सामने अपनी किस्मत पर

रो रही हूं और अपनी जान खो रही हूं मगर क्या मजाल कि किसी का दिल पिघले या किसी के दिल से कोई हमदर्दी का शब्द निकले, बल्कि हर एक इस बात का मुन्तजिर है कि कब यहाँ से हिले ताकि हमें अपने घरों को जाना मिले। अच्छा बहिन रूखसत, अलविदा, जाओ आराम करो और अपना काम करो। मेरा कहना सुनना माफ करना, न मालूम फिर मिलना नसीब होगा या नहीं।

तमाम सहेलियों का गाना (रागनी सोहनी बतर्जे पंजाबी)

किन्हूं खबर सी नी तेरे बिछड़न दी,
साडी डार चों मृग विछोड़ लित्ता।
बैठ सुत्तियां नू बिज आन पई,
साडा कालजा बिच्चों मरोड़ लित्ता।
इक फूल सी सारे बगीचियां दा,
ओ ही आन के जालिमां तोड़ लित्ता।
फोक रह गया नी इस मैंहदड़ी दा,
जेहड़ा रंग सी बिच्चों निचोड़ लित्ता।
नाल जिन्हा हँसदी खेलदी सी,
अज उन्हां दे नालों मुख मोड़ लित्ता।
सानूं छड के कढ के जिन्द साडी,
नाल किन्हां दे वास्ता जोड़ लित्ता।

छड सारी सहेलियां रोंदियां नूँ,
मैंने अपना आप सँगोड़ लित्ता।
जीवन की है 'यशवन्तसिंह' लड़कियां दां,
बाहों फडिया ते अग्गे नूँ टोर लित्ता।

नाटक

प्यारी! बहिन लड़कियों का जीवन वास्तव में एक स्वप्न के तुल्य है, जिस प्रकार मनुष्य स्वप्न में धन दौलत पाकर सुखी होता है, और थोड़ी देर में उससे ज्यादा दुखी होता है। क्योंकि चन्द मिनट पहले पूर्ण स्वतन्त्रता, जहां आंख खुली वही दरिद्रता की दरिद्रता। बेचारा हाथ मलमल कर रोता है, वृथा अपनी जान खोता है, लड़कियों का जीवन सर्वथा इसी मनुष्य के मानिन्द है और इसका आनन्द केवल मिथ्या आनन्द है। बेचारी हर प्रकार से माता पिता की भक्ति का दम भरती हैं, और अपने सर्वस्व को उन पर निछावर करती हैं, उनको खुशी देखकर खुशी मनाती हैं, शुद्ध स्नेह के प्रभाव से जहां उनको तनिक दुखी देखा तो पुष्प की नाई कुमला जाती हैं। तमाम घर की देखभाल रखती हैं, और हर एक प्रकार की हानि लाभ का पूरा पूरा ख्याल रखती हैं। माता पिता किंचित काल तो उन से प्रेम प्रकट करते हैं, और उनकी मुहब्बत का दम भरते हैं, मगर जब ही पता लगता है

कि जब घी की मक्खी की तरह निकाल देते हैं, और तत्काल ही दूसरों को मझाल देते हैं, चलती दफा सिर पर हाथ रखकर कह देते हैं कि बेटी हमारा इसमें क्या अपराध है, क्योंकि कुल जगत की ऐसी ही मर्याद है। बस इतना कर्तव्य पूर्ण किया और अपना मार्ग लिया, उधर चलो-चलो की धूम है, इधर जो उस बेचारी के दिल पर गुजरती है उसे ही मालूम है मगर कुदरत ने उनके मुँह पर ऐसी मोहर लगाई है, कि आज तक कोई भी लड़की मां बाप की शिकायत जबान पर नहीं लाई है। प्रिय तेरे वियोग का कष्ट हमारे लिए मृत्यु से कम नही, सच पूछो तो इस समय दम में दम नहीं। आह! न सीता सी सहेली हमको मिलेगी, न हमारी आत्मा खिलेगी, हँसी खुशी तो हमसे उसी वक्त विदा हो गई, जब तुम हम से जुदा हो गई। अच्छा बहिन! सिवाय आंसू बहाने के और हमारा क्या अखत्यार है, क्योंकि खुद हमारे सिरों पर भी यही घड़ी सवार है। यह सफर सब को पेश आना है और वारी बारी से सबको इसी मार्ग से जाना है। फिर हमें बोलने का क्या मजाज़ है हमारी बकवास केवल नक्कारखाने में तूती की आवाज़ है। कभी-कभी अपनी सूचना देती रहना और हमारी खबर लेती रहना।

पण्डित सत्यानन्द–(जनक से) राजन् ! अब बहुत देर हो रही है, इधर सीता भी आपको देख देख कर रो रही है। इसलिए अब अधिक विलम्ब न कीजिए और बारात को आगे बढ़ने दीजिये।

जनक–(दशरथ के आगे हाथ जोड़ कर भड़भड़ाई आवाज से) महाराज ! सीता बिल्कुल नादान है, यदि आपकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य कर बैठे तो क्षमा करना और किसी प्रकार का विचार दिल में न लाना, आखिर बच्चा है, समझते समझते समझ जायेगी।

दशरथ–(जनक का हाथ पकड़ कर) सीता के बारे में आप किसी प्रकार का ख़्याल न करें। जहां राम दिल का सरूर है, वहां सीता आंखों का नूर है। सीता पहले और राम पीछे।

(३) जंगल

(परशुराम से मुठभेड़)

एक नव आगन्तुक–(गरज कर) मेरे गुरु का धनुष किसने तोड़ा है ? शीघ्र उसको मेरे सामने लाओ और अधिक देर न लगाओ, नहीं तो सब को जान से मारूँगा और हर एक को मौत के घाट उतारूँगा। शायद परशुराम को भूल गये और इसलिए इतने फूल गये।

सब बराती–(सहम कर) अरे यह कमबख्त कहां से आ मरा ।

रामचन्द्र–(सामने जाकर) मुझ से यह कसूर हुआ है और मेरे हाथ से वह बोदा धनुष चकनाचूर हुआ है ।

परशुराम—क्या तुम्हें मौत की परवाह नहीं थी, या जिन्दगी की चाह नहीं थी ।

राम—बेशक खतावार हूं और जो सजा दो उसका सजावार हूं ।

परशुराम—(परसा दिखाकर) अच्छा अभी बताता हूं और इस हिमाकत का मजा चखाता हूं ।

लक्ष्मण–अजी महाराज ! क्यों गेंद की न्याईं उछल रहे हो और बिना बात म्यान से निकल रहे हो । वह कमान बिल्कुल गली सड़ी थी, न जाने कब से बेकार पड़ी थी जिस के लिए आप इतने तलमला रहे हो और कैंची की तरह जबान चला रहे हो । कभी परसा सम्भालते हो, कभी आंखें निकालते हो । अगर कुछ मतलब है तो बता दीजिये, वरना चुपके से अपनी राह लीजिये ।

परशुराम–(क्रोधित होकर) औ शोख चश्म गुस्ताख ! क्यों चिर चिर करता है शायद तू मेरे कहरो-गजब से नहीं डरता है । क्यों मुझे नाहक गुस्सा दिला रहा है और अपनी मौत को बुला रहा है । बड़े-बड़े बहादुर मेरे नाम की दुहाई देते हैं और सामने भागते ही

दिखाई देते हैं। तुझे बालक जानकर तरस खाता हूं, इसलिए शस्त्र नहीं चलाता हूं, मगर बकरे की मां कब तक खैर मनायेगी, तेरी जान मेरे हाथ से जायेगी।

रामचन्द्र जी का गाना

क्यों बच्चे से नाहक लड़ाई करो,
ब्राह्मण हो कुछ तो समाई करो।

परशुराम

यह बच्चा नहीं जहर की बेल है,
समझ रक्खा इसने मुझे खेल है।

रामचन्द्र

किया है, गुनाह मैं गुनाहगार हूं,
सजा दो मुझे मैं सजावार हूं।

लक्ष्मण

क्यों निकले पड़ो इस क़दर म्यान से,
मैं हूं खूब वाकिफ तेरी शान से।

परशुराम

यह करता है खुद मौत की जुस्तजू,
ज़रा कर तो इसको मेरे रूबरू।

लक्ष्मण

तो लक्ष्मण भी कोई तमाशा नहीं,
जो डालोगे मुँह में बताशा नहीं।

परशुराम

जरा ठहर, तुझको बताता हूं मैं,

मज़ा सरकशी का चखाता हूं मैं।

लछमण

यह गीदड़ सी भबकी दिखा और को,

यह फीके मज़े हैं चखा और को।

परशुराम

शरारत तेरी साफ़ बतला रही,

तेरी मौत सिर पर है मण्डला रही।

रामचन्द्र

महाराज लछमण तो नादान है,

तुम्हें भी हुआ आज ख़फ़क़ान है।

परशुराम

यह देखो मुझे दांत दिखला रहा,

शरारत से अब भी है पेश आ रहा।

रामचन्द्र

यह कहने से मेरे नरम हो गया,

तुम्हें उस पर नाहक भरम हो गया।

नाटक

परशुराम—इसी का नाम नरमी है! वह मुझे बातों बातों में उड़ा रहा है और मेरी नक़लें करके मुझे चिढ़ा रहा है।

लछमण—(रामचन्द्र जी से आंखें बचाकर) सामने से चला जा वर्ना (अपना हाथ दांतों से दबाकर) कच्चे को चबा जाऊँगा।

परशुराम—(रामचन्द्र जी से) तुम इसको मेरी आंखों के सामने

से दूर ले जाओ बरना बुरी दुर्गत बनाऊँगा।

लक्ष्मण—तुम अपनी आँखें बन्द करलो, मैं खुद ही नजर नहीं आऊँगा।

परशुराम—तू मुझे मत दिखाई दे, बल्कि भलाई इसी में है कि तेरी आवाज भी मुझे न सुनाई दे।

लक्ष्मण—इसका इलाज तो बिल्कुल आसान है, कानों में उँगलियां दे लो, बस तुम्हारे लिए चारों तरफ़ सुनसान है।

परशुराम—तू बड़ा शरीर है।

लक्ष्मण—आदमियों की तरह बात कर, वर्ना इधर मेरे हाथ में तीर है।

परशुराम—(कुल्हाड़ा उठाकर) ओ बदजबान बेबाक शैतान, अभी देखता हूं तेरा तीर कमान।

रामचन्द्र—महाराज! इसकी बातों पर न जाइये, ज़रा गुस्से को जब्त फ़रमाइये।

लक्ष्मण—बस भाई साहब, अब सहन की अवधि हो चुकी, लक्ष्मण के कानों को ऐसी बातें सुनने की आदत नहीं, आपने वृथा ही महाराज महाराज कहकर इसका दिमाग़ आसमान पर चढ़ा दिया और आपकी नरमी ने इसका इस क़दर हौसला बढ़ा दिया, अब मुझको अवश्य तलवार सम्भालनी पड़ेगी और इसकी यह

हवा दिमाग़ से निकालनी पड़ेगी। (परशुराम से) आप बड़ी खुशी से शस्त्र संभालिये और अपने दिल का अरमान निकालिये।

परशुराम का गाना (बह्रे तवील)

तेरी बातों से होता है जाहिर मुझे,
कि तेरी मौत में कुछ कसर ही नहीं।
क्यों उछलता है इतना मेरे सामने,
मेरी ताक़त की तुझको खबर ही नहीं।
आज तक तो कोई पृथ्वी पर मुझे,
आया ऐसा बहादुर नजर ही नहीं।
एक दफा जो मेरे सामने आ गया,
हो सका वह कभी जांबर ही नहीं।
तेरी बातों से०
रहम करता हूं बच्चा समझ कर तुझे,
हुआ तेरे पै मुतलक़ असर ही नहीं।
है उसी वक्त तक तेरी खरमस्तियां,
जब तलक मैं उठाता तबर ही नहीं।
तेरी बातों से०
जा चला जा इसी में तेरी बेहतरी,
वरना गर्दन पै होगा यह सर ही नहीं।
जिस घड़ी मैंने परसा हिला भी दिया,

यह रहेगी तेरी करों फर ही नहीं।
तेरी बातों से०
क्यों कज़ा को बुलाता अरे छोकरे,
अभी लड़ने की तेरी उमर ही नहीं।
तेरी पहली खता माफ करदी मगर,
अब करूँगा कभी दर गुज़र ही नहीं।

नाटक

परशुराम—अरे कम्बख़्त ! तेरे सिर में यह क्या हवा समाई है, मालूम होता है तेरी मौत ही तुझको मेरे सामने लाई है। बड़े बड़े शूरवीर मेरी बहादुरी का सिक्का मानते हैं, और मेरी ताक़त को अच्छी तरह जानते हैं। बहुत से क्षत्री मेरे हाथ से मारे गये और मृत्यु के घाट उतारे गये। जो सामने आया वह कदापि जीवित न जाने पाया। जब ऐसे-ऐसे योद्धा मेरे मुकाबले की ताब न ला सके, और मेरे सामने गर्दन न हिला सके, तो तेरे जैसे बच्चों कच्चों की क्या बिसात है बल्कि यह तो मेरे लिए तुच्छ सी बात है। अभी जरा सा परसा हिला दूँ तो तेरे जैसे हज़ारों को भूमि पर सुला दूँ। मगर क्योंकि तेरा कुछ कसूर नहीं, इसलिए मुझे तेरी जान लेना मन्जूर नहीं। जिसने मेरे गुरु का धनुष तोड़ा है, उसे कदापि जीता नहीं छोड़ूँगा, बल्कि उस धनुष की नाईं

उसे भी बीच में से तोड़ूंगा। हाँ अगर तू भी शरारत से बाज न आयेगा, तो कदापि जिन्दा न जाने पायेगा।

लक्ष्मण का गाना (बहरे तवील)

ऐसी गीदड़ सी भबकी दिखा और को,
तेरी धमकी का लक्ष्मण को डर ही नहीं।
लाख शेखी जता लाख बातें बना,
खौफ का मेरे दिल में गुजर ही नहीं।
और होंगे जिन्होंने तेरे सामने,
खौफ खाया उठाया था सिर ही नहीं।
तुझे बुज़दिल ही मिलते रहे आज तक,
कोई आया बहादुर नज़र ही नहीं।
ऐसी गीदड़ सी०

चाहे कम दिल हूं, कमसिन हूं, कमजोर हूं,
ऐसी बातों का तो कुछ जिकर ही नहीं।
भाग जाऊँ तेरे सामने से अगर,
तो मैं दशरथ पिता का पिसर ही नहीं।
ऐसी गीदड़ सी०

आज़माऊँ न जब तक कि ताकत तेरी,
मुझे आयेगा हरगिज़ सबर ही नहीं।
आज या तू नहीं और या मैं नहीं,

एक की मौत में कुछ ही कसर नहीं।
ऐसी गीदड़ सी०
मेरी मौजूदगी में श्री राम को,
पहुँचा सकता कोई भी जरर ही नहीं।
ऐसी गीदड़ सी०
छोड़ दे अब ज़बानी जमा खर्च को,
किस लिए तू उठाता तबर ही नहीं।
तू बहादुर बना फिर चाहे जिस क़दर,
मगर लच्मण को मुतलक फिकर ही नहीं।
ऐसी गीदड़ सी०
राम नरमी से तुझको बहुत कह रहे,
हुआ तुझ पर ज़रा भी असर ही नहीं।
सच कहता था 'यशवन्तसिंह' बेशुबाह,
तू है हैवान मुतलक बशर ही नहीं।
ऐसी गीदड़ सी०

नाटक

यह गीदड़ भबकियाँ किसी और को दिखाओ और किसी बुज़दिल के आगे अपनी शेखी जताओ, मेरे सामने तुम्हारी शेखी नहीं चलेगी और इस पानी में दाल नहीं गलेगी, वास्तव में आज तक तुम्हें किसी से वास्ता नहीं पड़ा और कोई ऐसा

ही बुज़दिल होगा जो तुम्हारे सामने नहीं खड़ा। इसलिए तुम्हारा हौसला इतना बढ़ गया और यह मामूली दिमाग आसमान पर चढ़ गया। हमचू" मा दीगरे नेस्त की हवा समा गई और आंखों में हिमाकत की चरबी छा गई, इस पर भाई साहिब की नरमी ने और भी काम बिगाड़ दिया और फिज़ूल तारीफ करके तुम्हे फाड़ दिया, वरना अगर पहिले ही मुनासिब वर्ताव करते और यथायोग्य आदर भाव करते तो आप यह सारी चर्ब-जबानी भूल जाते और आपके हाथ पांव तत्काल ही फूल जाते। अच्छा कुछ मुजायका नहीं आज आपको अपनी ताकत अजमाने का अच्छा मौका मिल जायेगा, इधर मेरा भी मुद्दत का अरमान निकल जायेगा, परन्तु पहले वार करने से लक्ष्मण लाचार है, इसलिये नहीं कि तू ब्राह्मण कुमार है, क्योंकि गुण कर्मानुसार तेरे ब्राह्मण होने से मुझे कतई इन्कार है, बल्कि इसलिये कि तू हमारे गुरू विश्वामित्र जी का करीबी रिश्तेदार है।

परशुराम—(दांत पीस कर) अरे धूर्त! साक्षात् शरारत की मूर्त! अब तू इतनी ज़बान चलाने लगा, कि मेरी इज्जत भी खाक में मिलाने लगा, वही बात हुई कि—

रंज की जब गुफ्तगू होने लगी!
आप से 'तुम' तुम से 'तू' होने लगी।

(परसा उठाकर) खबरदार! होशियार हो जा और मरने के

लिये तय्यार हो जा, तेरे मरने में अब बिल्कुल कसर नहीं, अगर एक ही वार से तेरी हड्डियाँ सुरमा न बना दूँ तो मैं भी परशुराम नहीं।

रामचन्द्र-(दोनों के मध्य में होकर) जब आपको इसके कसूरवार होने से खुद इन्कार है तो फिर आपकी फिजूल तकरार है।

परशुराम-मेरे क्या अख्त्यार है, यह खुद मौत का तलबगार है।

राम०—लक्ष्मण ! तुम इन्हें अधिक न सताओ, जरा इधर को आ जाओ। (परशुराम से) जरा गुस्से को थाम लीजिये और मेरे साथ कलाम कीजिये।

परशुराम-पहले इसको मेरी आंखों से दूर कर दो और फौरन यहाँ से काफूर कर दो।

लक्ष्मण-इसका इलाज तो मैं पहले ही बता चुका हूं।

परशुराम-देखो वह फिर बोलता है और नाहक विष में विष घोलता है।

राम०-(लक्ष्मण को पीछे हटा कर) अब यह कदापि नहीं बोलेगा, कहिये क्या आज्ञा है ?

परशुराम-क्या वास्तव में यह तुम्हारा ही कसूर है ?

राम०-बेशक जो दण्ड आप दें मुझे मंजूर है।

परशुराम-मुझे सन्देह है कि तुमने यह धनुष उठाया है।

राम०—तो आपने मेरे बल को कब आजमाया है।

परशुराम-(धनुष को आगे करके) लीजिए इस धनुष का चिल्ला चढ़ाकर कमान कीजिए और मेरा इतमीनान कीजिए।

रामचन्द्र-(चिल्ला खींच कर और तीर चढ़ा कर) लीजिए महाराज! चढ़ गया।

परशुराम-(सहम कर) बस उतार लीजिए, मुझे इतमीनान हो गया।

राम०-परन्तु मुझे तो इतमीनान नहीं हुआ।

परशुराम—तुम्हारा इतमीनान कैसा?

राम०-हमारा इतमीनान ऐसा कि मेरा तीर जब कमान पर चढ़ जाता है तो बिना किसी की जान लिए वापिस नहीं आता है।

परशुराम-तो यह किस की जान लेगा?

राम०-तुम्हारी लेगा और किसकी।

परशुराम—(कांप कर) ना महाराज! ऐसा न करना, मैं मर जाऊंगा।

राम०-यह तीर तो आपको सहना पड़ेगा, मगर घबराओ नहीं दूसरा कदापि नहीं चलाऊंगा।

परशुराम-मगर दूसरे की तो नौबत ही नहीं आयेगी।

राम०-क्या एक ही तीर में जान निकल जायेगी?

परशुराम–वाह, जान निकलने की आपने अच्छी कही, आधी जान तो मेरे में अब भी नहीं रही।

लक्ष्मण–(ताने के साथ) बस मिश्र जी हो चुके? जरा परसा तो उठाओ और कुछ तो अपनी वीरता के जौहर दिखाओ।

परशुराम–(गिड़गिड़ा कर) लक्ष्मण जी! मुझे किसी तरह क्षमा दिलाओ और मेरी जान बचाओ।

लक्ष्मण–तुम तो इतना उछलते थे।

परशुराम–मूर्खता-वश मेरी जिह्वा से ऐसे शब्द निकलते थे।

लक्ष्मण–(लापरवाही से) मुझे क्या कहते हो, मैं तो तुम्हारी नज़र से दूर हूं, इसलिए इस प्रकार की प्रार्थना स्वीकार करने से मजबूर हूं, मेरा जो बोलना है वह तुम्हारे निकट विष में विष घोलना है। रामचन्द्र जी से आपकी बात है और अब मामला उनके हाथ है, इसलिए मेरा मध्य में बोलना बिल्कुल वाहियात है। (रामचन्द्र जी को चुपके से इशारा करके) अब देखते क्या हो छोड़ दो तीर।

परशु०–(रामचन्द्र से हाथ जोड़ कर) मैं आपका भिखारी हूं, मुझे जीवनदान दीजिए और इतना अहसान कीजिए।

रामचन्द्र–तुमको तो अपनी बात की शर्म नहीं मगर शरण में आये हुए शत्रु पर वार करना क्षत्री का धर्म नहीं परन्तु इस शर्त पर छोड़ता हूं कि आगे को कभी शस्त्र न उठाना, और किसी क्षत्री के मुकाबले पर न आना।

परशुराम-(खुश होकर) आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूं और इस बात का इक़रार करता हूं कि आगे को कभी शस्त्र को हाथ नहीं लगाऊँगा और इसी जगह से विन्ध्याचल पर्वत को चला जाऊँगा। आज से अपनी जिन्दगी ईश्वर ध्यान में गुजारूँगा और सब पापों का प्रायश्चित करके सिर से बोझ उतारूँगा।

रामचन्द्र-अच्छा जाईये कृपानिधान।

परशुराम-(जल्दी से कदम उठाकर) सुखी रहो यजमान।

लक्ष्मण-(हँसी से) मिश्र जी भोजन करके जाना, ऐसी क्या जल्दी है? कभी तो हमारा भी भोजन कर लिया करो।

रामचन्द्र-(मुस्कराते हुए लक्ष्मण का हाथ पकड़ कर) कहीं तो इस चंचलता को छुपा लिया करो।

परशुराम-(भागते हुए हाथ का इशारा करके) बस दया रक्खो यही सब कुछ है कि जान बची, अभी तो पहली ही रोटी नहीं पची, अब वापिस आ गया तो ऐसे फुलके खाऊँगा कि अपनी जान भी दे जाऊँगा।

अयोध्या में वापिसी

(रनवास)

एक बांदी-(हांपती हुई) रानी जी! बरात आ रही है।

कौशल्या-क्यों वृथा बात बना रही है?

बांदी-मैंने अभी छत पर से देखा है सामने बड़ी गर्द छा रही है।

कौशल्या—बस गर्द को ही देखकर अनुमान कर लिया और
यूँ ही भाग-भाग कर अपने को हैरान कर लिया।
बांदी-मेरा अनुमान बिल्कुल दुरुस्त है, मालूम होता है कि सफ़र की थकान के कारण उनकी रफ्तार कुछ सुस्त है, वरना कदापि इतनी देर न लगाते और अब तक तो कभी के शहर में प्रवेश कर जाते (जल्दी से) वह देखिये नक्कारे की आवाज़ आई।
कौशल्या-बेशक तेरा अनुमान बिल्कुल ठीक है और यह आवाज तो बिल्कुल नज़दीक है। जा ज़रा कैकेई और सुमित्रा को भी बुला ला और अपने साथ लिवाला।
बांदी-जाती हूं और अभी···(इशारा करके) एलो वह स्वयं ही आ रही हैं और आप ही आप मुस्करा रही हैं।
रामचन्द्र व लक्ष्मण-(बारी बारी सब माताओं के पांव पकड़ कर) माता जी नमस्ते!
कौशल्या-(दोनों को छाती से लगाकर) चिरंजीव रहो मेरे लाल, मेरी आंखों के तारे, दिल के दुलारे, मेरे बुढ़ापे के सहारे, बेटा! तुम्हारे इन्तजार में तो आंखें पक गईं।
सुमित्रा-बेटा जरा इधर भी आओ और मुझे भी अपना चांद सा मुखड़ा दिखाओ।
दोनों-(हाथ जोड़कर) माता जी आपके चरण सेवक खड़े हैं।
सुमित्रा-(माथा चूमकर) आ गई मेरी फूलवारी, मेरे घर

की बाग बहारी, मैं तुम पर बलिहारी ।

केकई—बस बस ज्यादा प्यार को जाने दो, जरा मेरी ओर भी आने दो, और मुझे भी अपनी प्यास बुझाने दो ।

दोनों—(गोद में बैठकर) माता जी कहिये चित्त तो प्रसन्न है !

केकई—(बलायें लेकर) मेरी आंखों के तारे, मेरे दिल के सरूर, मेरी क़िस्मत के जहूर, चश्मे बद दूर, तुम्हें देखकर सब दुःख भूल गई ।

तुम चारों का घर मेरे जिस दिन हुआ जहूर ।
दुखड़े मेरे हो गये जन्म जन्म के दूर ॥

बेटा ! अगर कहीं जाया करो तो इतना इन्तजार न दिखाया करो ।

रामचन्द्र—हां माता जी ! कुछ इत्तफाक़ ही ऐसा हो गया जिस कारण इतने दिन लग गये, पहले ताड़का से छेड़-छाड़ हो गई, उससे छुटकारा हुआ तो मारीच आदि राक्षसों से युद्ध छिड़ गया, उसका फैसला हुआ तो मुनि विश्वामित्र जी आज कल करते रहे, लौटने को तैयार थे कि महाराज जनक का स्वयम्वर का···(लज्जा से नेत्र नीचे कर लिए)

सुमित्रा—(हाथ के इशारे से सिर हिला कर) हां तो फिर स्वयम्वर का निमंत्रण पत्र आ गया । फिर क्या हुआ, पूरा विस्तार से सुनाओ ।

रामचन्द्र–(मचल कर) बस माता जी! फिर कुछ नहीं हुआ।

सुमित्रा–(प्रेम भाव से गले लगा कर और माथा चूमकर) अरे मेरे शरमाऊ बेटे, मैं तेरे सदके जाऊँ।

दशरथ–तुम भी अजीव अकल की मालिक हो, अपने लाड प्यार में ही मस्त हो गई, किसी ने उस बेचारी सीता की भी खबर ली। इन बातों के लिए बहुत वक्त है, पहले उसको पीनस से उतारो।

कौशल्या–स्वामिन्! मुझे स्वयं ध्यान है, इतनी देर भूल के कारण नहीं हुई बल्कि मुझे सामग्री का इन्तजार है, लीजिये वह आ गई।

(कौशल्या का दूसरी रानियों सहित सीता को पीनस से उतारने के लिए जाना और ईश्वर का धन्यवाद करना)

गाना (दादरा भैरवी बतर्ज़ थियेटर)

ईश्वर तुम्हारा धन्यवाद बार बार है,
आये हमारे दुलारे द्वारे नकारे बजें।
तुम धन्य हो तुम धन्य हो,
निज लाडलों का आज जो देखा दीदार है।
ईश्वर तुम्हारा धन्यवाद बार बार है,
सारे ही घर में, शहर में, नगर में,
मुबारिक-मुबारिक की धूम, छोटी बड़ी सारी खड़ी।
हर एक को बहू देखने का इन्तजार है,
ईश्वर तुम्हारा धन्यवाद बार बार है।

जनक की दुलारी हमारी प्यारी,
पधारी हमारे द्वार, शुभ घड़ी कैसी चढ़ी।
मेरी खुशी का न आज कोई शुमार है,
ईश्वर तुम्हारा धन्यवाद वार वार है
देने वधाई लुगाई भी आई,
मनाई सभी ने खुशी, दिल की कली सबकी खिली।
'यशवन्तसिंह' भी आज तो गाता मल्हार है,
ईश्वर तुम्हारा धन्यवाद वार वार है।

:o:-*-:o:

दसवां दृश्य

महाराज दशरथ का दरबार और हार्दिक इच्छा का इजहार

(गाना बतर्ज कव्वाली)

मुझे अब राज से करना किनारा ही मुनासिब है,
जो है इरशाद वेदों का विचारा ही मुनासिब है।
करूं मैं याद ईश्वर की यही वेदों की आज्ञा है,
यह बाकी जिन्दगी अब यों गुजारा ही मुनासिब है।
उमर के चार हिस्सों में कदम चौथे में है मेरा,
मुझे अब इन झमेलों को विसारा ही मुनासिब है।
कूंवर चारों जवां हैं हर तरह लायक व फातक हैं,
यह सारा बोझ उनके सर पै डारा ही मुनासिब है।

मगर मेरी समझ में रामचन्द्र की फजीलत है,
यह शाही ताज उनके सिर दे धारा ही मुनासिब है।
वह चारों में बड़ा है इसलिए भी हक है उसका ही,
जो हो हकदार हक उसका न मारा ही मुनासिब है।
और तो सब फराइज से सुबकदोष हो गया हूं मैं,
मगर यह फर्ज भी सिर से उतारा ही मुनासिब है।
कहो मेरे वजीरो! क्या तुम्हारी राय है इसमें,
तुम्हें भी तो जबां से कुछ उचारा ही मुनासिब है।
बुला ला रामचन्द्र को जरा तू पास अब मेरे,
वहां 'यशवन्तसिंह' जाना तुम्हारा ही मुनासिब है।

नाटक

उपस्थित गण! जिस अभिप्राय के लिए यह दरबार नियत फरमाया है और आप लोगों को विशेषतः बुलाया है मैं चाहता हूं कि उसका इज़हार कर दूँ। मैं अपनी आयु का लाभदायक से लाभदायक भाग प्रजा की सेवा और आप लोगों की प्रसन्नता में व्यय करता रहा और हर प्रकार से आपकी बेहतरी तथा उन्नति का दम भरता रहा। जो कुछ मैंने किया और कर रहा हूं वह मेरा फर्ज है, न कि किसी प्रकार का अहसान जताने की गर्ज है। अस्तु! यह सब ईश्वर की मेहरबानी है और इस में किसी प्रकार की व्यर्थ शेखी जतानी है। सारांश यह है

कि आप देखते हैं कि यह मेरी अन्तिम अवस्था है और यह भी आपको भली प्रकार विदित होगा कि वेदों और शास्त्रों की इस बारे में क्या व्यवस्था है। लाख वर्ष जिये आखिर एक दिन मरना है और निस्सन्देह इस दुनियां से कूच करना है। तृष्णाओं को न किसी ने पूरा किया, न करेगा और इन्हें साथ ही लेकर मरेगा, परन्तु मैं ऐसा कृतघ्न नहीं हूं कि उस परमात्मा के उपकारों को याद न करूँ और हृदय से उसका धन्यवाद न करूँ! मुझे उस दयालु की दया से न केवल हर प्रकार की तृष्णाओं से भी संतोष हो गया बल्कि मुझे अपने सकल कर्त्तव्यों से भी संतोष हो गया। परन्तु एक इच्छा है जिसको पूर्ण किया चाहता हूं, यानी अब राज्य भी अपने उत्तराधिकारी को दिया चाहता हूं। अच्छा है वह मेरी जिन्दगी में सब कार्यों को संभाल लें और हम भी अपनी आंखों से देख भाल लें। शेष रही यह बात कि युवराज किसको किया जाये और राजतिलक किसको दिया जाये सो हमारी सम्मति में रामचन्द्र को युवराज बनाया जाये और सूर्यवंशी ताज उसको पहनाया जाये, वह चारों में हर प्रकार से योग्य है और होशियार भी है, फिर आयु में सबसे बड़ा है, इसलिए हकदार भी है। हमने अपनी सम्मति को प्रकट कर दिया और उसका ऐलान सकल

दरबार में कर दिया। हमारी हार्दिक इच्छा है कि इस मामले में पूरा पूरा इन्साफ हो, इसलिए यदि किसी को मेरी सम्मति से इखतिलाफ हो तो वह निर्भय होकर खंडन करे, न हमारा लिहाज करे न अपनी आत्मा का हनन करे।

उपस्थित गण

महाराज आपका इशराद फरमाना मुबारिक है,
बिलाशक आपकी तजवीज शाहाना मुबारिक है।
किसे हो इखतिलाफ ऐसा किया इन्साफ ऐ राजन,
तबियत में ख्याल ऐसा बुजुर्गाना मुबारिक है।
महाराज आपने यह इन्तखाब ऐसा किया आला,
हमारे राम का युवराज हो जाना मुबारिक है।
अगर्चे है यह ख्वाहिश आप ही कायम रहें दायम,
सिरों पे साया रय्यत के यह पिदराना मुबारिक है।
मगर यह भी जरूरी है इन्हें भी कुछ तजुर्बा हो,
दिल अंदर इस किस्म के भाव का आना मुबारिक है।
मुकर्रर कीजिए तारीख निश्चय एक दिन करके,
सरे दरबार ही ऐलान हो जाना मुबारिक है।
मुबारिक आपको हों राम, अयोध्या रामचन्द को,
मगर 'यशवन्तसिंह' को यह टोहाना ही मुबारिक है।

नाटक

महाराज! आपका ख्याल वास्तव में शुभ ख्याल है

और आपकी तजवीज भी बे-नजीर व बे मिसाल है। आपने जो चुनाव किया है निःसंदेह लाजवाब किया है। सकल अयोध्या की राजनगरी के शुभचिन्तकों को आपकी सम्मति से बिल्कुल इत्तिफाक है और यह आपका हुस्ने इखलाक है, बल्कि महाराज ने हम लोगों की इज्जत बढ़ाई है जो हमारी सम्मति भी तलब फरमाई है। अब हम सब एक जबान होकर यह बात स्वीकार करते हैं कि महाराज इस विषय में सर्वथा इन्साफ करते हैं। यों तो चारों राजकुमारों का प्रत्येक गुण एक दूसरे से आला है परन्तु श्री रामचन्द्र जी को तो परमेश्वर ने सकल शुभ गुणों के सांचे में ढाला है। प्रजा का पूरा जानिसार है, राजनीति के प्रत्येक कार्य से वाकिफकार है, झूठ का शत्रु, सच्चाई का तरफदार है, दिल की सफाई और हाथ की उदारता में दाता है घोड़े की सवारी में देखो तो पूरा शहसवार है। रणभूमि में शत्रु का सिर और उसकी तलवार है, सारांश कि हर एक पहलू से होनहार है और सब भाइयों में बड़ा होने की वजह से भी हकदार है, इसलिए हमारी सम्मति में यह चुनाव अति उत्तम है, आगे महाराज को अख्तियार है।

दशरथ—देखो हमारी हां में हां हरगिज न मिलाई जाये,
जिस किसी को जरा भी विरोध हो वह तत्काल अपनी

आवाज उठाये, सम्मति पूछने का अभिप्राय यह नहीं कि जिस तरफ हमारी जबान हिल जाय, आपके मुँह से भी बे विचारे उसी तरह हां जी हां जी निकल जाय। प्रत्येक को अपनी स्वतंत्र सम्मति का इस्तेमाल करना चाहिए। जहां आपने रामचन्द्र के गुणों की प्रशंसा की वहां उसके अवगुणों का भी (यदि कोई हों) ख्याल करना चाहिए। वही बात न हो कि यदि हम दिन को रात बतायें तो आप लोग भी हमारे सुर में सुर मिलायें और उँगलियों के इशारे से चांद और सितारे दिखायें, इसलिए आपको खूब सोच-समझकर उत्तर देना चाहिए और बिना सोचे विचारे किसी का पक्ष न लेना चाहिए।

उपस्थितगण—महाराज हमने भली प्रकार सोच विचार कर उत्तर दिया है, न कि आपका व्यर्थ समय नष्ट किया है। हमारी सम्मति में रामचन्द्र जी को युवराज बनाये जाने में बिल्कुल शक नहीं और उनकी उपस्थिति में किसी दूसरे को कदापि हक नहीं। आप शीघ्र कोई तिथि नियत कीजिये और बड़ी खुशी से रामचन्द्र जी को अपने कर कमलों से राजतिलक दीजिये। लो रामचन्द्र जी समय पर ही तशरीफ़ ले आये।

दशरथ—इस शुभ समय सारी सभा भरपूर है यदि आपको यह चुनाव मन्जूर है तो कल राजतिलक की

रसम अदा की जायेगी, और हर एक की नजर वगैरह उसी समय ली जायेगी।

रामचन्द्र—(हाथ जोड़कर) पिता जी आपका सेवक आपकी आज्ञानुसार उपस्थित है।

दशरथ—बेटा! राजसभा की सम्मति के अनुसार कल तुम को राजतिलक दिया जायेगा और अयोध्या का राज तुम्हारे आधीन किया जायेगा। यह अमानत है जो तुमको विश्वास-पात्र जानकर दी जाती है और वंश परम्परा से हमारे वंश में इसी प्रकार चली आती है। मुझे न केवल आशा है बल्कि पूर्ण विश्वास है कि जब तुम अपने सिर पर शाही ताज रक्खोगे तो रघुकुल की हर प्रकार से लाज रक्खोगे। राज्य को पाकर किसी प्रकार का अभिमान करना ओछेपन की निशानी है, बल्कि जो सर्वदा एक रस रहता है वही मनुष्य लासानी है। मुझे अधिक कहने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि तुम राजनीति के प्रत्येक भेद को भली प्रकार जानते हो और अपना हित अनहित पहचानते हो। प्रत्येक कार्य इस प्रकार से किया जाये कि किसी मनुष्य को किसी तरह की उँगली उठाने का अवसर न दिया जाये।

रामचन्द्र—(सिर झुका कर) आपका उपदेश मुझे किसी प्रकार भी ईश्वरीय आज्ञा से कम नहीं, और आपकी

उपस्थिति में मुझे कुछ भी गम नहीं। परमात्मा आपको हमारे सिरों पर चिरकालीन रक्खे।

दशरथ–इस समय दरबार बरखास्त किया जाता है और राजतिलक के लिए कल दस बजे का समय नियत किया जाता है।

रंग में भंग

मंथरा–रानी जी क्या बना रही हो ?

केकई–मंथरा, आज तू नियम विरूद्ध बहुत देर से आई, क्या रास्ते में कोई सहेली मिल गई ?

मंथरा–(मुँह बना कर) क्या बताऊँ आज धात्री ने ऐसी बात सुनाई, जिसे सुन कर मेरे पांव तले की जमीन निकल गई।

केकई–जरा हमें भी सुना, कि वह ऐसी क्या बात सुना गई।

मंथरा–अजी क्या बात सुना गई, बस हमारी तुम्हारी शामत आ गई।

केकई–(सहम कर) अरी कम्बखत ! तेरी जल जाय ज़बान कहीं नशा तो नहीं खा गई।

मंथरा–मैंने तो नशा-वशा कुछ नहीं खाया मगर आपके यह सब नशे हरन हुआ चाहते हैं।

केकई–मंथरा ! आज तू विचित्र वार्तालाप कर रही है। मानो अपनी मौत का संलाप कर रही है जो बात है

जल्द बयान कर और मुझे नाहक न परेशान कर।

मन्थरा का गाना (चौबोला)

रानी जी मैं क्या कहूं बड़े गजब की बात,
जब से मैंने यह सुना थर थर कांपे गात।
थर थर कांपे गात, बात क्या कहूं बहुत दुखदाई,
राज सभा ने आज बैठ मन मानी बात बनाई।
राम बना लिए युवराज ना किसी ने जर्रा हिलाई,
राज तिलक की राजा ने कल की तारीख ठहराई।
गजब यह हो गया रानी, बात करली मन मानी,
बुरी तकदीर हमारी,
मिला राम को राज भरत को मिल गई ताबेदारी।

नाटक

रानी जी! आज महाराज ने एक आम दरबार किया और अपनी मन्शा का यों इजहार किया कि हम रामचन्द्र को अपना युवराज बनाना चाहते हैं और उनके सिर पर ही रघुवंश का ताज पहनना चाहते हैं। उनके कहने की देर थी, सब वज़ीरों मशीरों ने भी हां में हां मिला दी और हर एक ने यही सलाह दी कि रामचन्द्र ही सब में लायक है और उसी का हक सब पर फ़ायक है। भला किसी की क्या मजाल थी कि जो राजा के विरुद्ध आवाज उठाता और व्यर्थ अपनी जान आफत में फँसाता। जो

कुछ उनकी तरफ़ से फ़रमान हुआ, वही सबके लिए प्रमाण हुआ। राजतिलक के लिए भी ऐसी जल्दी की कि चट रोटी पट दाल, ले बेटा राज सम्भाल। यानी कल दस बजे सब काम हो जायेगा और चारों तरफ़ राम ही राम हो जायेगा। आप या तो महलों के कव्वे उड़ाना या कौशल्या के पांव दबाना, इधर भरत बेचारे की क़िस्मत फूट गई और सारी सुख सम्पति उनके हाथ से छूट गई। वह या तो सारी उमर रामचन्द्र की खिदमत गुजारी करेगा या किसी और की ताबेदारी करेगा। हाय हाय! एक बेटा तो राज करे और दूसरा दर बदर मारा मारा फिरे। सच है, दुनियां की दोरंगी इसी को कहते हैं।

केकई का गाना [चौबोला]

इसी बात पर हो रही थी इतनी हैरान,
तूने तो यों ही मेरे कर दिये खुश्क प्राण।
कर दिये खुश्क प्राण जान में जान ज़रा अब आई,
सूझी तुझे शरारत क्या कुछ दे गई मौत दिखाई।
तुझको उचित यही था आकर देती मुझे बधाई,
न कि उल्टी मुर्दों की सी अपनी शकल बनाई।
चपल चंचल मतवारी, बड़ी तू मूर्ख नारी,
खड़ी क्या शकल बनाये।
बातों बातों में ही तूने मेरे होश उड़ाये॥

नाटक

बस यही बात थी, जिसके लिए इतनी देर से सटपटा रही थी और यूँ ही नाक भवें चढ़ा रही थी। कम्बख्त तूने तो इस प्रकार के शब्द इस्तेमाल किये कि यों ही मेरे प्राण निकाल लिये। मैं डर गई कि परमेश्वर भला करे, न जाने ऐसा क्या भयानक समाचार सुन आई, परन्तु जब असल बात सुनी तब तनिक जान में जान आई। हाय तेरा सत्यानाश जाय! हाय हाय अब तक दिल धड़क रहा है और कलेजा फड़क रहा है। अरी दुष्टा! तुझे तो यह चाहिये था कि उछलती कूदती आती, मुझे मुबारिकबाद सुनाती और अपना मुँह मांगा उपहार पाती न कि ऐसी भयानक शकल बनाई और ऐसी जबान चलाई कि मेरी अब तक अकल ठिकाने नहीं आई। यदि रामचन्द्र को राज मिलता है तो तेरे घर से क्या निकलता है। रामचन्द्र बड़ा होनहार है और कौशल्या से बढ़कर मेरा फरमांबदार है।

मन्थरा का गाना

कल को हो जायगा मालूम आज की रात गुजर जाने दे।
रानी तू है भोली भाली, अपने शृंगार पर मतवाली,
तू तो रह गई बिल्कुल खाली, सो रहो बाहें सिरहाने दे।
कल को हो जायगा० ॥
तेरा हो रहा घर बरबाद, मुझे तुझे मुबारिकबाद,

रोवेगी कर कर के याद, अब तू लाख मुझे ताने दे।
कल को हो जायगा० ॥
बेशक तेरा दिल है पाक, अपना समझ उसे तू लाख,
मेरी कटवा दीजो नाक, तुझको पास अगर आने दे।
कल को हो जायगा० ॥
जब तक नहीं था कुछ अख्त्यार, तब तक था फरमांबरदार,
जिस दिन होगा खुद-मुख्त्यार. तुझे जो रोटी भी खाने दे।
कल को हो जायगा० ॥
उड़ाना तुम महलों के काग, फूटे उधर भरत के भाग,
अब भी अपनी जिद को त्याग, उसको मत पर फैलाने दे।
कल को हो जायगा० ॥
रानी नहीं बात यह फर्जी, मेरी इसमें क्या खुदगर्जी,
अब भी मान लो मेरी अर्जी, अपनी हठ धर्मी जाने दे।
कल को हो जायगा० ॥
अब भी करले कोई इलाज, लेकिन मत जाने दे राज,
कुछ जिद अगर करें महाराज, बेशक मरें तो मर जाने दे।
कल को हो जायगा० ॥

नाटक

रानी जी! यों तो आप चाहे जो कुछ कहें क्योंकि आप जबरदस्त हैं, परन्तु यदि सच पूछो तो अपने बनाव शृंगार में ही मस्त हैं। केवल शरीर की ही देखभाल है,

या कुछ आगामी जीवन का भी ख्याल है। बेशक इस समय मेरा कहना बिल्कुल बे बुनियाद है, परन्तु इसमें आपका भी क्या अपराध है, क्योंकि "विनाशकाले विपरीत बुद्धि" एक प्रसिद्ध बात है, यानी जब किसी मनुष्य के विनाश की घड़ी आती है, तो उसकी अक्ल स्वयं उल्टी हो जाती है, ठीक आपका भी यही हाल है। भोली रानी ! तुम हर एक का दिल अपने जैसा जानती हो और इसलिए रामचन्द्र को अपना फरमांदार मानती हो, मगर यह तो सोचा होता कि इस समय तक उसके अधीन ही क्या था जो तुमको कुछ हानि पहुँचाता, किसी प्रकार नीचा दिखाता। जरा आज की रात गुजर जाने दे और उसको राज नजर आने दे, फिर देखना कि कैसे गुल खिलते हैं और क्या क्या नतीजे निकलते हैं, रोयेगी पछतायेगी और हाथ मलती रह जायगी। जब पेट से भी फाके मरोगी उस समय मेरा उपदेश याद करोगी, जिस समय सब आपत्तियां अपनी जान पर सहोगी, उस समय अपनी जबान से ही कहोगी, कि मन्थरा मेरी पूरी खैरख्वाह थी उसकी सलाह मेरे लिये नेक सलाह थी। मगर 'फिर पछताये क्या बने जब चिड़ियां चुग गईं खेत' जरा सोचो तो सही कि यदि भरत राजा बन गये तब मैं कौनसी रानी बन जाऊँगी। या रामचन्द्र को राजतिलक मिलने से पटरानी कहलाऊँगी। फिर

बताओ इसमें मेरी अपनी कौनसी गर्ज है, मगर तेरा नमक खाया है इसलिए तेरी खैरख्वाही मेरा फर्ज है। सकल वृतांत तुमको बता दिया और अच्छी तरह जता दिया। इसलिए अब भी समय है यदि कुछ बनता है तो बना ले और जिस तरह हो सके राजा को मना ले। वरना कल को यह न कहना कि मेरी बांदियां कृतघ्न निकलीं।

केकई–(दिल ही दिल में) यदि न्याय से देखा जाय तो मंथरा का कहना सब प्रकार से ठीक है और वह मेरी सच्ची दर्द शरीक है। निस्सन्देह यदि रामचन्द्र को राजतिलक मिल गया तो भरत अयोध्या से निकल गया। या तो दरबदर फिरता हुआ हमारे कुल की बदनामी करेगा या सारी उमर रामचन्द्र की गुलामी करेगा, और इसमें भी सन्देह नहीं कि रामचंद्र भरत को सर्वदा के लिए गुमनाम करदे और वैसे ही बेचारे का काम तमाम करदे। यह बात तो प्रसिद्ध है कि 'सौकन जाया किसको भाया' उसको तो भरत का जीवन ही असह्य प्रतीत होगा और उसकी मौजूदगी आंखों में कण्टक होगी। इधर कौशल्या मेरे साथ कौन सा अच्छा सलूक करेगी, वह तत्काल ही दो टूक करेगी। सौकन तो पति के राज्य में ही सौ सौ बकवास बकती है हालांकि वह भी बराबर का अधिकार रखती है।

सौकन सियापा तो दुनियां में प्रसिद्ध है, बेटे का राज्य हो तो तू उसको कब भायेगी, वह तो तुझे वहां से निकाल कर रोटी खायेगी। बेचारी मंथरा का भला हो उसने तुझे जता दिया और सब वृत्तान्त बता दिया, वरना तेरे नष्ट होने में तो केवल कुछ घण्टे ही रह गये थे और तेरी जान को सारी उम्र के लिए टण्टे ही रह गये थे। अब तो कदापि किसी के दम में न आऊँगी, चाहे इधर की दुनियाँ उधर हो जाये। जिस प्रकार मुझसे बन पड़ेगा राज्य भरत को ही दिलाऊँगी, मगर एक मुश्किल है कि महाराज को कैसे समझाऊँगी और क्या बहाना बनाऊँगी जो वह मेरी बात मानने पर मजबूर हों और रामचन्द्र उनकी आंखों से दूर हों। (कुछ सोचकर) हां यह ठीक है, मँथरा से पूछती हूं, वह ही कुछ यत्न बतायेगी और मेरा काम बनायेगी, क्योंकि वह ही मेरी हम-राज है और वैसे भी पूरी जमाना-साज है।

केकई का गाना

बांदी बता कोई तदबीर, अब मैं कैसे यत्न बनाऊँ।
मुझको नहीं था बिल्कुल ख्याल, बेशक हो जाती पायमाल,
तूने कर दिया नमक हलाल, तेरा नहीं अहसान भुलाऊँ।
बांदी बता कोई तदबीर०
गर तू नहीं कराती याद, मैं तो हो जाती बरबाद,

तेरी हमदर्दी की दाद, देती हुई सदा गुण गाऊँ।
बांदी बता कोई तदबीर०
होती सारी उमर खराब, हो गया था बरबाद शबाव,
क्या क्या सहती कष्ट अजाब, अब भी सँभली शुक्र मनाऊँ।
बांदी बता कोई तदबीर०
यह भी खैर हुई ऐ प्यारी, हो गई खबर वक्त पर सारी,
तूने खूब करी होशियारी, ले यह हार तुझे पहनाऊँ।
बांदी बता कोई तदबीर०
लेकिन इतना और बतादे, करना बहाना कुछ सिखलादे,
ऐसी कोई नेक सलाह दे। जिससे कामयाब हो जाऊँ।
बांदी बता कोई तदबीर०
गर यह बन गया मेरा काम, तुझको दूँगी खूब इनाम,
बैठी पलंग पर कर आराम, तुझसे कुछ नहीं काम कराऊँ।
बांदी बता कोई तदबीर०
मेरी सच्ची जान-निसार, जिस दिन हुआ भरत मुख्तयार,
सब की करूँ तुझे सरदार, भरत के सिर की सौगंध खाऊं।
बांदी बता कोई तदबीर०

मन्थरा का गाना (बतर्ज पूर्ववत)

इसका फिकर करो ना मूल, ऐसी युक्ति बतला दूँगी।
जब तक बन्दी ताबेदार, तुम क्यों फिकर करो सरकार,
तुम पर करदूँ जान निसार, ऐसे फन्दे फैला दूंगी।

इसका फिकर करो०

रहता काम यही दिन रात, यह तो मामूली सी बात,
देख अब बाँदी के भी हाथ, सब कुछ करना सिखला दूँगी।

इसका फिक्र करो०

ऐसा आया याद बहाना, कुछ भी पड़े न जोर लगाना,
जो कुछ कहूं सो करती जाना, बल्कि करके दिखला दूंगी।

इसका फिकर करो०

ले अब इधर को करले ध्यान, सुनले बात खोलकर कान,
करले बस इतना सामान, बाकी मैं खुद बतला दूंगी।

इसका फिकर करो०

राजा देख तेरा यह हाल, मुझसे पूछेंगे तत्काल,
फिर मैं लूंगी आप सँभाल, बातों में ही फुसला दूँगी।

इसका फिक्र करो०

नाटक

रानी जी! मेरी उपस्थिति में आपको फिक्र ही क्या है, और ऐसी बातों का तो जिक्र ही क्या है, परमेश्वर न करे यदि कोई भारी मामला आ पड़ा तो मिन्टों में सुलझा दूंगी और यदि किसी बात को बिगाड़ना चाहूं तो बातों में ही उलझा दूंगी। जब मेरे सर पर आपका हाथ है, तो सारी सृष्टि मेरे साथ है। ले अब तरकीब बताती हूं और एक बात सिखाती हूं। ज़रा इधर को ध्यान कर

और मेरी तरफ़ कान कर। (चुपके से कुछ कान में कह कर) इतना काम कर लो।

केकई—वाह वाह! खूब बताया और ऐन समय पर याद दिलाया। देख अब स्त्री चरित्र दिखलाती हूं और हथेली पर सरसों जमाती हूं।

(२) केकई का महल

महाराजा दशरथ—(हैरान होकर) हैं, हैं! यह क्या वृतांत है कि आज बजाय उत्सव के रंज व ग़म के आसार पैदा हो रहे हैं। तमाम काम उलटे और बेकायदा हो रहे हैं। प्यारी क्यों इस तरह फ़र्शे ज़मीन हो रही हो, जागती हो या सो रही हो?

केकई—न जागती हूं न सो रही हूं बल्कि अपनी क़िस्मत को रो रही हूं।

दशरथ—प्यारी! ज़रा आंखें खोलो, कुछ मुंह से बोलो। किसने सताया, किसने दुखाया। कोई बात भी बताओ, कुछ हाल तो सुनाओ। क्या तबियत नासाज हो गई या मुझसे ही नाराज हो गई?

केकई—(चुप)

दशरथ—(बाजू हिलाकर) जरा बताओ तो सही, किस बात पर मेरे से रंजीदा हो गई और इस क़दर दिल कशीदा हो गई?

केकई—(चुप)

दशरथ—मन्थरा ! तुझे कुछ हाल मालूम है, कि आज रानी क्यों इस कदर सुमसुम है ? सच सच बता कि क्या इसरार है वर्ना समझ ले तेरी गर्दन है और मेरी तलवार है ।

मन्थरा—महाराज ! आज प्रातःकाल से इनका यही हाल है, न जाने तबियत पर क्या मलाल है। मैंने हरचन्द बुलाया और अपना सारा जोर लगाया, मगर क्या मजाल कि मुख से बोली हो या ज़रा आंख खोली हो केवल एक चार ठण्डी साँस भर इतना कहा कि मेरी किस्मत फूट गई, न जाने क्या बात है जिसके बताने में गुरेज करती हैं और क्यों इतना परहेज करती है ! जब आपके बुलाते भी नहीं बोलती, तो मेरी ताकत है जो ज़्यादा मुख खोलती । अधिक जबान चलाती तो कोड़े से अपनी खाल उड़वाती ।

महाराज दशरथ का गाना (बतर्ज़ कव्वाली)

यह क्या कारण महलों में बिछा है फ़र्श मातंम का ।
मेरी प्यारी बताओ तो है क्या बाइस तेरे ग़म का ॥
पड़ी मुँह सर लपेटे ले रही हो सांस क्यों ठण्डे ।
पता लगता नहीं मुझको तेरी इस चश्म पुरनम का ॥
तेरी हालत दिगरगूँ देखकर हूं मैं तआज्जुब में ।
बता जल्दी नहीं तो हूं मुसाफिर एक दो दम का ॥

सताया जिस किसी ने नाम उसका तू बता मुझको।
मेरा खँजर बता तो आज किस कम्बख़्त पर चमका॥
किसी ने बात कोई नामुनासिब हो कही तुम से।
करूँ तन से जुदा सर आज ही मैं ऐसे ज़ालिम का॥
इशारा तुम करो मुझको बशर तो चीज़ ही क्या है।
अभी 'यशवन्तसिंह' तख्ता पलट दूँ सारे आलम का॥

केकई का गाना (वतज—पूर्ववत)

गई है फूट किस्मत आज मुझ कर्मों की मारी की।
बताऊँ क्या वजह तुमको मैं अपनी बेक़रारी की॥
खुद ही बरबाद करते हो मुझे फिर पूछते आकर।
बताओ क्या वजह है इस तुम्हारी आहो जारी की॥
छिपाई बगल में छुरियां कत्ल करते हो धोके से।
मैं सारी समझे बैठी हूं जो तुमने होशियारी की॥
यही उम्मीद थी तुम से यों ही बरबाद करना था।
मिली है दाद मुझको खूब ही खिदमत गुजारी की॥
बला से आपकी चाहे करूँ जीऊँ चाहे उजड़ूँ।
मगर सुनने लगे क्यों आप मुझ दुखिया बिचारी की॥
मेरी किस्मत में तो यों ही लिखा बरबाद होना था।
हुई है देर जाओ लो खबर अपनी प्यारी की॥
फलो फूलो हंसो खेलो मुबारिक हो जशन तुमको।
मगर 'यशवन्तसिंह' मैंने अदम की बस तैयारी की॥

(महाराजा दशरथ का गाना वतर्ज़—हाय सैयां पड़ूं मैं तोरे पैयां)

मेरी प्यारी यह क्यों हैं आहो ज़ारी बता री मुझे तो ज़रा ।

बोलो बोलो तो मुँह से ऐ प्यारी,

काहे करती हो तुम आहो जारी ।

वारी मेरी प्यारी, यह क्यों है बेकारी,

मैं वारी बलिहारी, अब सारी बतलारी ।

प्यारी यह क्यों है०

सच्ची बतादो मुझको कैसी दशा है यह

हो रहा हाल बेहाल,

ऐसी क्या हुआ आजार जो जीने से बेजार,

क्या आज़ार कर इज़हार, मैं बलिहार, हूं हर बार ।

प्यारी यह क्यों है०

केकई का गाना (पूर्ववत)

अजी जाओ मेरे को न सताओ बनाओ न बातें जी,

जाओ जाओ तुम जीते मैं हारी,

जो करनी थी करली आज सारी ।

उजाड़ी फुलवाड़ी, कटारी सीने मारी,

बन जोगन, फिरूं बन बन, करूं भरमन, पालूँ तन ।

अजी जाओ०

कर्मों की मारी मैं तो रुदन करूँ, जी काहे दुख पाओ भला,

आप काहे करत तकरार, बनकर आंय होगमखूवार ।

अजी जाओ, न सताओ, हट जाओ, क्यों जलाओ।

दशरथ का गाना (तर्ज़—तोरी छल बल है न्यारी)

तेरी बातें हैं निराली, मुझे घायल करने वाली,
कैसी सूरत बनाली, मूरख नादान,
आओ आओ प्यारी जान, मेरा यह कहा मान,
करती हो नाहक मुझे क्यों हैरान।
देख तेरा यह हाल हुआ जिया निढाल,
करो कुछ तो ख्याल, अरी सुन सुन सुन।
सुन सुन सुन, सुन सुन सुन
तेरी बातें हैं निराली०

केकई का गाना (वतर्ज़—बहरे तवील)

हाथ जोड़ूँ पिया न जलाओ जिया, मेरा कांपे हिया न सताओ जान। जाओ जाओ मेहरबान, नाहक क्यों खाई जान, पीछा भी छोड़ो करके वीरान। खूब मिली है दाद, सदा रखूंगी याद, ऐसा किया बरबाद। अजी बस बस बस, बस बस बस, बस बस बस, बस बस बस। हाथ जोड़ूँ पिया०

महाराजा दशरथ का गाना (वतर्ज़—बहरे तवील)

क्या मुसीबत पड़ी तुम पै ऐ प्रिय जी,
हाल क्या है मुझे कुछ सुना तो सही।
मैं सिरहने खड़ा हूं बड़ी देर से,

जरा गर्दन को ऊपर उठा तो सही।
मेरी प्यारी दशा क्या तुम्हारी हुई,
होश अपने ठिकाने पै ला तो सही।
छोड़ कर अर्श को क्यों पड़ी फर्श पर,
पास मेरे ऐ प्यारी तू आ तो सही।
क्या मुसीबत पड़ी०
क्या सताया दुखाया किसी ने तुझे,
नाम उसका मुझे भी बता तो सही।
करूँ टुकड़े तभी चैन आये मुझे,
तू जबां को जरा सा हिला तो सही।
क्या मुसीबत पड़ी०
हो गया आन की आन में रोग क्या,
नब्ज अपनी मुझे तू दिखा तो सही।
आ उठाऊँ पलग पर बिठाऊं तुझे,
हाथ अपना इधर को बढ़ा तो सही।
क्या मुसीबत पड़ी०
हो गई मुझ से नाराज क्यों इस कदर,
जरा मुँह पर से आंचल उठा तो सही।
जो कहो सो करूँ तेरी त्रिपता रूँह,
बात को पर ठिकाने लगा तो सही।
क्या मुसीबत बड़ी०

रोग हो तो बुलाऊँ अभी वैद्य को,
कोई निश्चय मुझे भी दिला तो सही।
भेज देता हूं 'यशवन्तसिंह' को अभी,
टुक तबीयत को अपनी टिका तो सही।

क्या मुसीबत पड़ी०

केकई का गाना (बहरे तवील)

मुझ नसीबों जली की न पूछो व्यथा,
जाओ आनन्द अपना मनाओ बलम
न जीऊँ न मरूँ यों ही आहें भरूँ,
दोष किस पै धरूँ मेरे फूटे करम।
कर दिया मुझको बरबाद बस आपने,
मेरे जीने का न कुछ रहा है धरम।
आज रानी से बांदी हुई केकई,
कौन पूछे भला मेरे दिल का मरम।

मुझ नसीबों जली०

दे दिया राम को राज आज आपने,
भरत को कर दिया बेनवा एक दम।
क्या नहीं भरत बेटा रहा आपका,
ऐसा करते हुए भी न आई शरम।

मुझ नसीबों जली०

मेरी मौजूदगी में मेरे भरत का,
कर दिया अपने बेखता सर कलम।
वह भी आखिर किसी का है लख्ते जिगर,
हाय ऐसा जुलम हाय ऐसा जुलम।

मुझ नसीबों जली०

वह वचन दोनों पूरे करो अब मेरे,
आपने जो खाई हुई है कसम।
राम चौदह वर्ष वन में भ्रमण करे,
भरत को राज की हो मुबारिक रसम।

मुझ नसीबों जली०

जी नहीं है यह मंजूर बात आपको,
साफ कहदो न रक्खो जरा भी शरम।
फैसला हो हमारा तुम्हारा अभी,
या इधर हो कदम या उधर हो कदम।

मुझ नसीबों जली०

भरत मारा फिरे दर बदर इस तरह,
रामचन्द्र बने राज का मुन्तजिम।
किस तरह से यह देखूं मैं 'यशवन्तसिंह',
हा सितम ! हा सितम ! हा सितम ! हा सितम !

मुझ नसीबों जली०

दशरथ का गाना (बहरे तवील)

होश से बात कर आज तेरी अकल,
मुझे आती ठिकाने नजर ही नहीं।
तेरा बिल्कुल दिमाग आज कायम नहीं।
तुझे अपने बदन की खबर ही नहीं।
तुझे नाहक ही ऐसा भरम हो गया,
रामचन्द्र क्या तेरा पिसर ही नहीं।
तेरी उल्टी समझ आज क्यों हो गई,
मेरे कहने का होता असर ही नहीं।
होश से बात०

तूने खुद ही मेरे से कहा बारहा,
राम की लायकी में कसर ही नहीं।
वह मेरी सब से ज्यादा इताअत करे,
कौशल्या की उसको खबर ही नहीं।
होश से बात०

आज किस मुँह से कहती हो ऐसे वचन,
तेरे दिल में दया का गुजर ही नहीं।
बेगुनाह रामचन्द्र को बनवास हो,
तुझे परलोक का भी तो डर ही नहीं।
होश से बात०

इस बुढ़ापे में मुझको न यह दुख दिखा,
कष्ट सहने की मेरी उमर ही नहीं।
और जो कुछ कहो सो खुशी से करूँ,
होगा मुझको जरा भी उजर नहीं।
होश से बात०
छोड़ जिद को न बरबाद कर वंश को,
ऐसी बातों का कर तू जिकर ही नहीं।
यही ग़म है कि कुल नष्ट हो जायगा,
और 'यशवन्तसिंह' कुछ फ़िकर ही नहीं।
होश से बात०

केकई का गाना (बहरे तवील)

मैं तो पागल दिवानी सौदाई सही,
ऐसी बातों का तो कुछ जिकर ही नहीं।
क्यों सताते हो फिर तुम मुझे बे वजह,
कुछ तुम्हें तो पहुँचाया ज़रर ही नहीं।
जाओ जाओ सताओ न नाहक मुझे,
कुछ हमारा किसी पर जबर ही नहीं।
या कि रोने की भी है मनाही हमें,
और तो कोई छोड़ी कसर ही नहीं।
मैं तो पागल०

हाय हाय न इतना जुलम तो करो,
तुम्हें परमात्मा का भी डर ही नहीं।
जो जबरदस्त हैं चाहे जो कुछ करे,
हम गरीबों का तो कुछ उज़र ही नहीं।
मैं तो पागल०

जान देने को तैयार बैठी हूं मैं,
मौत का मुझे बिल्कुल खतर ही नहीं।
बात जब तक कि पूरी न होगी मेरी,
मुझे आयेगा हरगिज सबर ही नहीं।
मैं तो पागल०

तुम बहाने बनाओ चाहे जिस कदर,
होगा मेरे पै उनका असर ही नहीं।
आज या तो मेरी बात पूरी हुई,
वरना गरदन पै होगा यह सर ही नहीं।
मैं तो पागल०

रामचन्द्र है लाडला आपको,
भरत गोया किसी का पिसर ही नहीं।
आई दिल में सो करली है 'यशवन्तसिंह'
इन फरेबों की मुझको खबर ही नहीं।
मैं तो पागल०

दशरथ का गाना (काफी भैरवी ताल छप)

अरी बेवफा मुझे सच बता तुझे राम से क्या वैर है,
क्या भरत बेटा बहुत है और रामचन्द्र गैर है।
जहां राम दिल का सरूर है वहां भरत आंखों का नूर है।
हां इतनी बात जरूर है कि वह मुस्तहक बिलगैर है।
मुझे दोनों एक समान हैं, दशरथ के दोनों प्राण हैं।
मैं जिस्म हूं वह जान हैं, नहीं चैन उसके बगैर है।

अरी बेवफा० ॥

क्यों गम के आंसू बहा रही, क्यों मुफ्त जी को जला रही,
क्यों ऐसी बातें बना रही, कोई सर न जिसका पैर है।

अरी बेवफा० ॥

देकर दगा मत प्राण ले, मेरी इस तरह मत जान ले,
हठ छोड़ कहना मान ले, इसमें ही सब की खैर है।

अरी बेवफा० ॥

कुल नष्ट सब हो जायगा, क्या हाथ तेरे आयेगा,
तुझे खुद न जीना भायगा, क्यों खा रही खुद जहर है।

अरी बेवफा० ॥

नाटक

प्यारी! जरा बुद्धि से काम कर, आज तेरे दिल में यह क्या वहम समा गया, जो बैठे बिठाये इस प्रकार का वृथा विचार दिल में आ गया, जरा अपनी तबियत को

सम्भालो और ऐसी वाहियात बातें मुख से न निकालो मेरे लिये दोनों आंखें समान है, न रामचन्द्र कोई गैर है, न भरत से वैर है। फिर मैंने अपनी सम्मति से यह कार्य नहीं किया है, बल्कि तमाम ऋषियों और राज सभा के कर्मचारियों ने भी यही मशवरा दिया है। न किसी ने किसी प्रकार का इशारा किया बल्कि हर एक ने इस बात पर खुशी का इजहार किया। शायद तुमको यह वहम होगा कि रामचन्द्र को राजतिलक मिलने से कौशल्या की इज्जत बढ़ जायेगी और हर प्रकार से उसकी बाजी चढ़ जायेगी, वह अपनी माता को ही चाहेगा और तुझे कुछ हानि पहुँचायेगा। मगर यह तेरा ख़्याल केवल बोदा ख़्याल है, और रामचन्द्र से ऐसी सम्भावना रखनी बिल्कुल मुहाल है। वह कौशल्या की अपेक्षा तेरा अधिक फरमांबरदार है और जहां तुम्हारा पसीना गिरे वहां अपना रुधिर बहाने को तैयार है। एक तुम्हारे पर ही क्या दारोमदार है बल्कि वह तो सबका एक सा खिदमतगार है। इसके अतिरिक्त जिसके लिए तुम इतनी कोशिश कर रही हो और वृथा ही ठण्डे सांस भर रही हो वह स्वयं गले का हार होगा और तेरी सूरत तक से बेजार होगा। भरत को चाहे कोई लाख मजबूर करे मगर यह सम्भव नहीं कि वह रामचन्द्र की उपस्थिति में किसी प्रकार भी

राज मंजूर करे और फिर ऐसे ढंग पर जैसे तुम दिलाना चाहती हो और सर्वदा के लिये उसके माथे पर कलंक का टोका लगाना चाहती हो। तुम्हारी इस हठ का फल यह होगा कि तमाम कुल का नाश हो जायगा, इधर रामचन्द्र मेरी आखों से दूर हुआ उधर मेरा स्वर्गवास हो जायगा। भरत भी इस सदमे को नहीं सह सकेगा और कदापि जिन्दा न रह सकेगा। लक्ष्मण वैसे ही उनकी जान जीता है और बग़ैर रामचन्द्र के एक पल पानी नहीं पीता है। वह या तो उनके साथ जायेगा या उनके जाने से पहले अपनी जान गंवायेगा। कौशल्या यह समाचार पाते ही परलोक सिधारेगी, इधर सीता दीवारों से टक्करें मारेगी। शत्रुघ्न का इन आपत्तियों से वैसे ही दम निकल जायगा और यह कुल देखते देखते खाक में मिल जायगा। बस तुम अकेली यहां पांव फैलाना और अपने मनमाने मंगल गाना। परमेश्वर के वास्ते ज़रा अपनी तबियत को बहाल कर और नहीं तो मेरे बुढ़ापे की ओर ख़्याल कर।

केकई का गाना (तर्ज पहले जैसी)

क्यों मुफ़्त मग़ज खपा रहे, मुझको न यह मँजूर है।
अपनी क़सम को तोड़ दो किसने किया मजबूर है॥
क्या मुझको आप बना रहे, क्या सब्ज बाग़ दिखा रहे।

क्यों जान मेरी खा रहे, सीना तो कर दिया चूर है ॥
क्यों मुफ़्त०

कल मरते आज मरें सभी, दुनिया से कूच करें सभी।
बेशक कुएं में पड़े सभी, इसमें मेरा क्या कसूर है ॥
क्यों मुफ़्त०

सूरज इधर से उधर चढ़े, चूल्हे में तेरा कुल पड़े।
पर केकई न कभी मुड़े, तिरिया का हठ मशहूर है ॥
क्यों मुफ़्त०

मुझको न जब कुछ सुख रहा, तेरे सुख से क्या मतलब रहा।
इन्साफ़ क्या है वाह वाह, यह भी कोई दस्तूर है ॥
क्यों मुफ़्त०

यहां से भरत को टाल कर, करके बहाना निकाल कर।
उसको विदा नन्हाल कर, आँखों से कर दिया दूर है ॥
क्यों मुफ़्त०

नाटक

आप क्यों वृथा जान खो रहे है, क्यों आप हीले बहाने बना रहे हैं। तुम्हारी नीयत में तो पहले ही खलल था इसलिए भरत को टाल दिया, और नन्हाल का बहाना करके यहाँ से निकाल दिया, उस बेचारे को क्या मालूम है कि मुझको अमृत में विष पिलाया जा रहा है और मेरी जड़ों पर कुल्हाड़ा चलाया जा रहा है। जब आपको ही उसको बरबाद करना मंजूर था तो राज सभा का क्या मकदूर था, कि

आपके विरुद्ध आवाज़ उठाती और आपकी हां में हां न मिलाती 'यथा राजा तथा प्रजा'। सभासदों की शामत आई थी जो आपकी बात पर ऐतराज करते और वृथा आपको नाराज करते, अगर करते तो आप उनका भी भरत जैसा हाल करते और एक एक को पामल करते। अस्तु, मुझे उससे क्या चूल्हे में पड़े तुम्हारी राजसभा, यहां तो दो शब्दों की बात है और अधिक झक झक करना वाहियात है। अब या तो अपने वचन को निभाओ या साफ इन्कार कर जाओ, फिर यदि बोलूँ तो कसूरवार, न कुछ झगड़ा न तक़रार। बाक़ी रहे यह डरावे कि कुल का नाश हो जायगा और हमारा स्वर्गवास हो जायगा, सो इन बातों की मुझे लेशमात्र भी परवाह नहीं। तुम्हारी और तुम्हारे कुल की तो क्या मुझे अपनी जिन्दगी की भी चाह नहीं। जब मैं ही विपत के दिन काटूंगी तो तुम्हारे कुल को क्या शहद लगाकर चाटूंगी और फिर जिस कुल में आप जैसे सत्यवादी हों बेहतर है कि ऐसे कुल की दुनिया से जल्दी बरबादी हो। वही कुल संसार में फलते फूलते हैं, जो अपनी प्रतिज्ञा को नहीं भूलते हैं। न कि आप जैसे कृतघ्न जिन्हें अपनी जबान का पास न धर्म का होश। शास्त्रों में कृतघ्नता से अधिक कोई पाप नहीं और इसके लिये कोई प्रायश्चित और

पश्चाताप नहीं अस्तु मुझे इस बहस से सरोकार नहीं, आप केवल इतना कह दीजिये कि मेरा तेरे साथ कोई कौल करार नहीं। यदि अपनी जबान का कुछ पास है तो भरत को राजतिलक और राम को बनवास है। दोनों में जो पसन्द हो मन्जूर कीजिये और इस झगड़े को दूर कीजिये।

दशरथ का गाना (रागनी मालकौंस ताल तीन)

अकल तेरी बिल्कुल ही मारी गई है,
न नेकी बदी कुछ बिचारी गई है।
बुढ़ापे को न मेरे बरबाद कर तू,
न मुझसे विपत यह सहारी गई है।
अरी बेवफा मुझको धोखे में देकर,
मेरी जान विपता में डारी गई है।
अकल तेरी०

डसा सांप बनकर मुझे तू ने जालिम,
रघुवंश की पत उतारी गई है।
न इज्जत रही और न हुरमत रही है,
हया और शर्म आज सारी गई है।
अकल तेरी०

दिखाऊँगा दुनिया में क्या मुँह किसी को
बिगड़ बात सारी हमारी गई है।
है 'यशवन्तसिंह' मेरे कर्मों का चक्कर,
न बिगड़ी किसी से सँवारी गई है।

अकल तेरी०

नाटक

ओ बे-वफा! मैंने तुझसे इसलिए कौल करार नहीं किया था और न इसलिए अपना दिल तुझको दिया था कि तू उसका नाजाइज़ इस्तेमाल करे और खासकर मुझको ही पायमाल करे। सच है हर एक चीज उचित स्थान और योग्य हाथों में ही कद्र पाती है और मूर्खों के हाथों में फँसकर उसकी उल्टी तासीर हो जाती है। अफ़सोस! मेरी कम-समझी और सादापन ने न सिर्फ मेरा ही काम तमाम कर दिया, बल्कि सारे कुल को सदा के लिए गुम-नाम कर दिया। आह! अगर मैं पहले से इन त्रिया'चरित्रों को जानता तो कदापि तेरा कहना न मानता, न तेरे इस दामे फरेब में आता, न अपना नाम व निशान दुनिया से मिटाता। मैं तो यह जानता था कि तू मेरे दिल में उसकी रक्षक होकर बसेगी, न कि उल्टा सांप बनकर डसेगी। ओ जालिप! तू आज तक मुझको अमृत के धोके में विष पिलाती रही और इसी दिन के लिए अपनी अय्यारी और

मक्कारी से मुझ पर जाल फैलाती रही। हाय, हाय! मैं रामचन्द्र जैसे लायक और आज्ञाकारो पुत्र को बिना किसी अपराध के किस प्रकार घर से निकाल दूँ। और बिना कारण उस बेचारे की जान विपत्ती में डाल दूँ ओ बे रहम! परमेश्वर को क्या मुँह दिखाऊंगा और इस पाप को कहां छिपाऊंगा? ऐ मौत! तूही आजा, क्योंकि इस समय मैं बहुत कष्ट भर रहा हूं और बड़ी बेसबरी से तेरा इन्तजार कर रहा हूं, मुझको अब जिन्दगी की जरूरत नहीं। यद्यपि प्रत्येक मनुष्य तेरे नाम से डरता है तथापि अभागा दशरथ बड़ी खुशी से तेरा स्वागत करता है। मगर नहीं मालूम आज तुझे भी यहां आते हुये क्यों मौत पड़ती है, तू भी उल्टी मेरी शक्ल से डरती है। सायंकाल से तेरा इन्तजार करते करते प्रातःकाल होने को आया, परन्तु तूने इस समय तक अपना मुँह नहीं दिखाया। ऐ जमीन तू ही फट जा और थोड़ी देर के लिए अपनी जगह से हट जा। परमेश्वर के वास्ते तू ही मुझको थोड़ी जगह खैरात दे और मुझको इस आपत्ति से निकल जाने दे। ऐ आसमान के सितारो! तुम तमाम रात मेरी रिफाकत का दम भरते रहे और मेरे जख्मी दिल की मरहम पट्टी करते रहे मगर शोक कि तुम भी इस बदनसीब का साथ छोड़े जाते हो, और मेरी ओर से मुँह मोड़े जाते हो, सच है-

सिया बख्ती में कब कोई किसी का साथ देता है।
कि तारीकी में साया भी जुदा रहता है इनसां से।

हे परमेश्वर! सिवाय तेरे दुनिया में न कोई मेरा सहायक रहा और न मैं किसी को मुँह दिखाने लायक रहा। अब तू जल्दी मुझको इस दुनिया से उठा ले और अपनी आनन्द-मय गोद में बिठा ले। ऐ मौत! मेरी प्यारी मौत! आ! आ, आ! अब अधिक देर न लगा। हां हां, मैंने देख लिया तू आ गई, ले मैं स्वागत के लिए आता हूं।

(महाराज दशरथ का मूर्छित होकर भूमि पर गिर जाना)

बांदी—मन्त्री जी उपस्थिति होना चाहते हैं।

केकई—हां उन्हें कहदो कि आप को अन्दर बुलाते हैं।

मन्त्री—महाराज राजतिलक का सब सामान तैयार है और वहां आपका बहुत इन्तज़ार है।

केकई—महाराज राजतिलक के कार्य में इधर उधर भागते रहे जिसके कारण तमाम रात जागते रहे। यद्यपि यह सोने का समय नहीं, मगर इस समय जगाना योग्य नहीं। आप इतना काम कीजिये कि रामचन्द्र को यहीं भेज दीजिये।

मन्त्री—बहुत अच्छा। अभी जाता हूं और रामचन्द्र को आप का सन्देश सुनाता हूं।

रामचन्द्र–पिता जी ! आपका सेवक उपस्थित है कहिये क्या आज्ञा है ?

दशरथ–(जरा आंख खोलकर) बेटा ! केवल तुम्हें देखने की लालसा थी और यह हमारा अन्तिम आशीर्वाद है।

रामचन्द्र–पिता जी ! खैर तो है, चित्त पर कैसी बेकरारी है ?

दशरथ–(नेत्रों में जल लाकर) बेटा ! आओ जरा गले लगा लूँ, क्योंकि अब हमारी सफर की तैयारी है।

(महाराजा दशरथ का रामचन्द्र की तरफ हाथ बढ़ाना किन्तु फिर बेहोश हो जाना)

रामचन्द्र जी का गाना [बेहरे तवील]

क्या हुक्म है मुझे आप आज्ञा करो,
हाथ बांधे खड़ा तावेदार ऐ पिता।
मेरे जीते जी हो कोई कष्ट आपको,
मेरे जीने पर धिक्कार है ऐ पिता।
आपको देखकर इस दशा में मेरा,
हो रहा आज सीना फिगार ऐ पिता।
कुछ वजह बेकली की बताओ मुझे,
पूछता आप से बार बार ऐ पिता।
क्या हुक्म०
क्या मेरे से ही कोई खता हो गई,

आपको जिस से पहुँचा आजार ऐ पिता।
मेरे प्यारे पिता दो मुझे भी बता,
रो रहा खड़ा जार जार ऐ पिता।
क्या हुक्म०
जान मेरी निकलने को तैयार है,
नजर आते हैं खोटे आसार ऐ पिता।
कोई दुख सुख का साथी न बिन आपके,
कौन मुझको करेगा प्यार ऐ पिता।
क्या हुक्म०
आपको इस तरह कष्ट में देखकर,
मैं नहीं सकता हरगिज सहार ऐ पिता।
कोई अपराध हो तो क्षमा कीजिये,
मैं मुआफी का हूं तलबगार ऐ पिता।
क्या हुक्म०
कोई मुँह से तो अपने इशारा करो,
क्या रहा न मेरा ऐतबार ऐ पिता।
जो कहो सो ही करने को तैयार हूं,
जान कर दूँगा अपनी निसार ऐ पिता।
क्या हुक्म०

नाटक

पिता जी! आपकी यह हालत देखकर कलेजा मुँह

को आ रहा है और आंखों में अंधेरा छा रहा है। हाय ! यह क्या ग़जब हुआ और आपके इस प्रकार परेशान होने का क्या सबब हुआ। एक रात में ही इस कदर तब्दीली हो गई कि आप के चेहरे की रंगत बिल्कुल पीली हो गई। आँखे बिल्कुल पथरा रही हैं और अन्दर घुसी जा रही हैं। आखिर कोई वजह तो बताओ कि आपको क्या मलाल हुआ जो इतनी जल्दी आपका यह हाल हुआ। हाय ! हाय !! पिता जी आपकी आंखों से आँसुओं की नदी बह रही है, न मालूम आपकी इच्छा के विरुद्ध कौन सी बात हुई है जो आपकी आत्मा इतना कष्ट सह रही हैं। अगर मेरी जिन्दगी में आपको इस कदर आज़ार है तो मेरे इस जान पर धिक्कार है। मगर क्या किया जाय आपकी जबान कुछ हिले तो रोग का पता मिले। (केकई से) माता जी ! अगर कुछ मालूम हो तो आप ही बताइये कि क्या बात है ?

केकई—हां मालूम तो है पर इसका उपाय तुम्हारे हाथ है।

रामचन्द्र—माता जी शीघ्र बताइये और मेरा सन्देह मिटाइये।

केकई—बात तो मामूली है अगर पूरी करो तो बताऊँ वरना क्यों वृथा सिर खपाऊँ।

रामचन्द्र—माता जी ! आश्चर्य है कि आज आप किस प्रकार का सन्ताप कर रही हो और ठीक बात प्रगट

करने से क्यों डर रहा हो? गोया आपको इस बात की चिन्ता है कि रामचन्द्र पर मेरा क्या हक है इसलिये आप ऐसा ख्याल कर रही हो कि बार बार 'अगर' का शब्द इस्तेमाल कर रही हो। 'अगर' का क्या अभिप्राय है, आप यों कहें कि मैं तुझको आज्ञा देती हूं। माता जी! अगर रामचन्द्र पर आपका इतना भी ऐतबार नहीं, तो मै किसी भी अवस्था में आपका पुत्र कहलाने का हकदार नहीं। रामचन्द्र जैसा पिता जी का ताबेदार है वैसा ही आपका फरमांबरदार है, आपकी आज्ञा से जलती आग में कूदने को तैयार हूं। आपकी और पिता जी की आज्ञा मेरे लिए एक सामान है, और मेरी जान हर समय आपके चरणों में कुर्बान है। आप 'अगर' का शब्द इस्तेमाल करके मुझको कलंक न लगाइये और जो कुछ आज्ञा हो शीघ्र फरमाइये।

केकई—बेटा! महाराज ने मुझसे स्वयं इसरार किया था, तुम्हारे लिए चौदह साल का वनवास और भरत के लिए राजतिलक का इकरार किया था। मगर अब अपने कौल को पूरा होते न देखकर मुझे उभार रहे हैं और इसलिए अपने हाथ पांव मार रहे हैं।

राम—वाह! इसीलिए हैरान हो रहे हैं और वृथा ही परेशान हो रहे हैं। यह तो बिल्कुल मामूली सा काम

है। जब तक इस आज्ञा का पालन न करलूँ अयोध्या तो क्या किसी बस्ती में भी कदम रखना मेरे लिए हराम है।

केकई—(मुँह बनाकर) हां बेटा बात तो कुछ भी नहीं, दिन गुजरते क्या देर लगती है, जब अनगणित सदियां गुजर गईं तो यह दस और चार चौदह वर्ष तो यों ही गुजर जायेंगे। आखिर यह घटेंगे ही बढ़ने से तो रहे। परमेश्वर खैर रक्खे एक दिन तो कल को ही कम हो जायगा। मैंने तो यहां तक भी कह दिया था, मेरे लिए भरत और रामचन्द्र दोनों बराबर हैं। भरत ने राज्य किया तो क्या और रामचन्द्र ने किया तो क्या, मगर यह कहने लगे कि हमारे कुल की आन जाती है।

राम—माता जी! यह बिल्कुल साधारण सी बात है, परमेश्वर न करे यदि कोई कठिन कार्य भी आ पड़े तो रघुकुल की आन तब भी जान के साथ है।

केकई—(सिर पर हाथ फेर कर) हां बेटा बिल्कुल ठीक है, मेरे लाल अभी रवाना हो जाओ और अधिक देर न लगाओ क्योंकि तुम्हें देखकर महाराज को क्लेश होता है और उनका दुःख और भी विशेष होता है।

महाराज दशरथ का गाना (बहरे तवील)

हाय, मेरे जिगर बन्द का बे-वफा,

तूने नाहक मेरे से जुदा कर दिया।
पाप तो तू करे दोष मुझ पर धरे,
तूने यों ही मुझे रूसियाह कर दिया।
खौफ ईश्वर का बिल्कुल न तुझको रहा,
सब धर्म और कर्म को जुदा कर दिया।
नेको बद की तुझे कुछ खबर न रही,
पाप ने तेरा सीना सियाह कर दिया।
हाय मेरे जिगर०
जो असल बात है तू छिपाकर उसे,
साबित अपने तईं बे गुनाह कर दिया।
हाय तेरा बुरा हो अरी बेहया,
तूने सारे ही कुल को तबाह कर दिया।
हाय मेरे जिगर०
तू असल रूप में आज प्रगट हुई,
हक सारा पति का अदा कर दिया।
तूने अपनी शरम तो उतारी ही थी,
साथ मुझको भी मगर बे हया कर दिया।
हाय मेरे जिगर०
झूठ बकते हुए भी न आई शरम,
हाय ऐसा जुलम बरमला कर दिया।

खुद बनी मुद्दई खुद की मुद्दायला,
जज बनकर खुद ही फैसला कर दिया।
हाय मेरे जिगर०
तू मेरी अर्धाङ्गी थी बेशक मगर,
तूने सारा जिस्म ही सफा कर दिया।
न सिर्फ यह जिस्म ही सफा कर दिया,
बल्कि सारी अयोध्या को दाह कर दिया।
हाय मेरे जिगर० ॥
तू जा इतने मुझे कष्ट पहुँचा रही,
कौनसा मैंने ऐसा गुनाह कर दिया।
दोष 'यशवन्तसिंह' यह किसी का नहीं,
मेरे कर्मों ने मुझको फनाह कर दिया।
हाय मेरे जिगर० ॥

नाटक

ओ बेहया! वैसे तूने मुझको जलाकर खाक कर दिया, लेकिन अब सचाई को भी बालाय ताक धर दिया। हाय हाय! ऐसा जुलम कि पाप तो स्वयं करती है और दोष मुझ पर धरती है। ओ जालिम! कुछ परमेश्वर का भय कर और ऐसा दोष तो मेरे सिर पर न धर। मेरे लिए एक यही दुःख मौत का पैगाम है मगर तुझे क्या तुझको तो अपने स्वार्थ से काम है।

हे परमेश्वर! मैंने कौनसा ऐसा कसूर कर दिया, जो आपने भी मुझको नजर से दूर कर दिया। हे जीवात्मा! तू क्यों निकल निकल कर वापिस आ रही है और वृथा ही मुझको इस प्रकार के दुर्वचन सुनवा रही है। मौत! आज तू भी मेरे साथ या तो दिल्लगी कर रही है या मेरे जैसे पापी के पास आने से डर रही है। तू आती है और अपनी सूरत दिखाकर फिर भाग जाती है। मगर याद रख कि दुखियों के साथ हंसी करना तेरे लिये मुनासिब नहीं और किसी के जख्म पर नमक छिड़कना वाजिब नहीं। मेरी अवस्था इस समय क़ाबिल रहम है, मगर तुझको न मालूम किस बात का वहम है। परमेश्वर के वास्ते जल्दी......मेरा......काम तमाम...

(महाराज दशरथ का फिर बेहोश हो जाना)

ग्यारहवां दृश्य

वनवास

(कौशल्या का महल)

राम—(हाथ जोड़कर) माता जी नमस्ते।

कौशल्या—(माथा चूमकर) चिरंजीव रहो मेरे नौनिहाल। (आसन की ओर इशारा करके) यहां बैठो मेरे लाल, मैं अभी आती हूं और तुम्हारे लिये कुछ खाने को लाती हूं।

रामचन्द्र—बस माता जी अब खाने पीने से क्षमा कीजिये और शीघ्र आज्ञा दीजिये।

कौशल्या—ना बेटा! मैं अधिक देर न ठहराऊंगी, मगर थोड़ा सा आहार अवश्य कराऊँगी, क्योंकि आज तुम्हें राजतिलक की शुभ रस्म होनी है इसलिये वहां निराहार जाना एक प्रकार की बद-शगूनी है।

रामचन्द्र—माता जी! राजतिलक के लिए जो वचन निकलना था, कभी का निकल गया और मुझको बजाय अयोध्या के जंगल का राज्य मिल गया।

कौसल्या—बेटा! यह कैसे अशुभ वचन मुख से निकालते हो और वृथा मेरी जान को चिन्ता में डालते हो।

रामचन्द्र—माता जी! जो बात मैंने कही है वह वास्तव में सही है।

कौशल्या—(सहम कर) आखिर क्या मामला है जरा मुझे तो बताओ और सकल वृतान्त सुनाओ।

रामचन्द्र का गाना [लावली जिला]

राज के बदले माता मुझको हो गया हुकम फकीरी का,
खड़ा मुन्तजिर ऐ माता मैं तेरे हुक्म अखीरी का।
दिया भरत को राज पिता ने मुझे हुक्म बन जाने का,
चौदह साल रहूं मैं बन में हुक्म नहीं यहां आने का।
हुक्म नहीं अब रहा मुझे इस घर का खाना खाने का,

नहीं किसी का दोष ऐ माता बदला रंग जमाने का।
राज पाट का गम नहीं मुझको न कुछ फिकर अमीरी का।
राज के बदले माता मुझको होगया हुक्म फकीरी का।

कौशल्या का गाना (लावनी जिला)

बैठी थी मैं खुशी में इन बातों का शान गुमान नहीं,
सुनकर तेरी बातें मेरे रहीं बदन में जान नहीं।
तूने की तैयारी बन की कौशल्या को खैर नहीं,
प्राण त्याग दूँ अभी रहूंगी जिन्दा तेरे बगैर नहीं।
दे दें राज खुशी से उसको मुझको उससे वैर नहीं,
वह भी बेटा तू भी बेटा भरत मुझे कुछ गैर नहीं।
बिना राज के बेटा मेरी घटती कोई शान नहीं,
सुन कर तेरी बातें मेरी रही बदन में जान नहीं,

रामचन्द्र

हुक्म पिता का साथ जान के जब तक दम में दम माता।
ठाठ बाट और राजपाट का मुझको नहीं कुछ गम माता।
वचन पिता का पूरा कर दूँ दीजे आप हुक्म माता।
रघुवंश की आन न जाये सिर हो चाहे कलम माता।
और नहीं कुछ फिकर फिकर है फकत पिता की पीरी का।
राज के बदले माता मुझको हो गया हुक्म फकीरी का।

कौशल्या

मिला भरत को राज मुझे इसका नहीं मुतलक गम बेटा,

मेरे वास्ते भरत राम दोनों ही हैं एक सम बेटा।
नहीं किसी का कुछ भी बिगड़ा फूटे मेरे कर्म बेटा।
जाने से तू पहले कर जा सिर को मेरे कलम बेटा।
तुझ बिन मेरे लाल मेरा जिन्दा रहना आसान नहीं,
सुनकर तेरी बातें मेरे रही बदन में जान नहीं।

रामचन्द्र

चन्द रोज की बात है थोड़े दिन तक करो सबर माता,
रोने धोने का नहीं मौका दिल पर करो जबर माता।
प्रारब्ध के चक्कर में सब होते जेर ज़बर माता,
क्या जाने क्या होगा कल को कल की किसे खबर माता।
नहीं किसी पर गिला फैसला हुआ अमर तक़दीरी का,
राज़ के बदले माता मुझको हो गया हुक्म फकीरी का।

कौशल्या

मेरे दिल को मैं ही जानूँ और को नहीं खबर बेटा,
तुझको करके दूर नज़र से कैसे करूँ सबर बेटा।
बेशक दे दें राज भरत को मेरा नहीं जबर बेटा,
मां बेटा एक जगह पर बैठकर कर लेंगे यों ही गुज़र बेटा।
तू हो मेरे पास मुझे कुछ चाहिए और सामान नहीं,
सुनकर तेरी बात मेरे रही बदन में जान नहीं।

रामचन्द्र

चौदह साल ज़माना क्या है जल्द खतम हो जायगा,

एक-एक दिन घटते घटते आखिर कम हो जायगा।
ईश्वर आज्ञा के आगे सब का सर खम हो जायेगा,
—एक रोज सब अदना आला एक ही सम हो जायगा।
नहीं रहेगा भेद भाव कुछ शाही और वजीरी का,
राज के बदले माता मुझको होगया हुक्म फकीरी का।

कौशल्या

चौदह साल सदी का हिस्सा कहने को मामूली है,
लेकिन मुझको तो ऐ बेटा एक-एक दिन भी सूली है।
तुम तो हो खुद विद्वान कुछ बात न तुम से भूली है,
हुक्म पिता का मानोंगे तो मेरी हुक्म अदूली है।
मेरा हक उनसे ज्यादा क्या तू मेरी सन्तान नहीं,
सुन कर तेरी बातें मेरे रही बदन में जान नहीं।

रामचन्द्र

ऐसे मौके जिन्दगियों में बार बार नहीं आते हैं,
दुःख सुख में जो रहें एक रस वही मनुष्य कहलाते हैं।
रँज मुसीबत गर्दिश ग़म इन्सानों पर ही आते हैं,
वक्त मुसीबत धीर पुरुष नहीं पीछे कदम हटाते हैं।
नहीं मुझे अफसोस जरा, नहीं कारण कुछ दिलगीरी का।
राज के बदले माता मुझको हो गया हुक्म फकीरी का।

कौशल्या

ऐ बेटा क्या मैंने तुमको इसलिए ही पाला था,

यही कष्ट दिखलाने को क्या तूने होश सम्भाला था।
इसीलिए क्या अपने को सौ सौ विपदा में डाला था,
खूब बढ़ापे में की सेवा करना यही उजाला था।
क्या समझाऊँ ज्यादा तुझको तू कोई नादान नहीं,
सुनकर तेरी बातें मेरे रही बदन में जान नहीं।

नाटक

कौशल्या–यह तो तुम अच्छी तरह जानते हो कि सन्तान पर पिता की अपेक्षा माता का अधिक हक है।

रामचन्द्र–बेशक इसमें क्या शक है।

कौशल्या–तो स्वामी जी की अपेक्षा तुम पर मेरा अधिकार ज्यादा है।

रामचन्द्र–जब मैं मान चुका हूँ तो इसका बार बार दोहराना बेफ़ायदा है।

कौशल्या–बणी से या दिल से।

रामचन्द्र–दिल से ही नहीं बल्कि सच्चे दिल से।

कौशल्या–(दिल ही दिल में प्रसन्न होकर, अब आगये काबू में) अच्छा तो मेरा हुक्म है तुम वन न जाओ।

रामचन्द्र–परन्तु कोई कारण भी बताओ।

कौशल्या–फिर वही अगर मगर का सवाल !

रामचन्द्र–माता जी ! मैंने आप की दिली मन्शा को समझा

लिया मगर यह आपका बिल्कुल उल्टा ख़्याल है।

कौशल्या—वह किस तरह ?

रामचन्द्र—वह इस तरह कि पिताजी हम तुम दोनों के स्वामी हैं और उनकी आज्ञा का पालन न करना तुम्हारे लिए भी बदनामी है क्योंकि वह आपके पति और मेरे बाप हैं, इसलिए उनकी आज्ञा के विरुद्ध चलना दोनों के लिए महापाप है धर्म-शास्त्र की आज्ञानुसार पति के विरुद्ध आपको कोई आज्ञा देने का अधिकार नहीं, इसलिये आपकी आज्ञा मानने को तैयार नहीं।

कौशल्या का गाना (बहरे कव्वाली)

निकाले जिस घड़ी तूने अयोध्या से कदम बेटा,
निकल जायेगा फ़ौरन ही तेरी माता का दम बेटा।
भला किसके सहारे जिन्दगी के दिन गुजारूँगी,
न यों बरबाद कर मुझको तुझे मेरी कसम बेटा।
किया था परवरिश तुझको कि देगा सुख बुढ़ापे में,
न कर तेरी जुदाई से मेरे सर को कलम बेटा।
सहूं मैं किस तरह सदमा भला तेरी जुदाई का,
करूँ कैसे सबर हाय सितम बेटा सितम बेटा।
मेरी सारी उम्मेदों पर न फेरो एक दम पानी,
तू कुछ तो ख़्याल कर मेरा न कर इतना जुलम बेटा।

सफाई हो गई बस एकदम सारी मुहब्बत की,
हुआ क्यों संगदिल ऐसा करो कुछ तो रहम बेटा।
उमर भर की कमाई लुट गई 'यशवन्तसिंह' मेरी,
पड़ी तकदीर चक्कर में हमारी एक दम बेटा।

रामचन्द्र

इजाजत दो मुझे मैं चूमता तेरे कदम माता,
मुझे मुश्किल यहां पर ठहरना अब एक दम माता।
जुदाई आपकी मुझको अगर्चे सख़्त मुश्किल है,
मगर मजबूर करता है मुझे मेरा धर्म माता।
बला से जान भी जाये मुझे परवाह नहीं मुतलक,
चली आई शुरू से यह रघुकुल रसम माता।
न खिदमत कर सका मैं आपकी अफसोस इतना है,
सहे मेरी बदौलत आप ने भी रंजोगम माता।
पिता का दोष है कुछ और न माता पर गिला मेरा,
हमारे वास्ते यों ही था ईश्वर का हुकम माता।
खुशी में रंज में गम में मुसीबत और राहत में,
रहे ईश्वर की आज्ञा में सरे तसलीम गम माता।
खड़ा है मुन्तज़िर 'यशवन्तसिंह' भी साथ जाने को,
खुशी से दो इजाजत अब करो क़िस्सा खतम माता।

नाटक

रामचन्द्र—माता जी आप धैर्य से काम लो।
कौशल्या—बेटा किस के आश्रय? कोई सहारा भी हो।

रामचन्द्र—जब वह दिन न रहे तो ये भी न रहेंगे।

कौशल्या—अच्छा बेटा जिस तरह होगा अपनी जान पर जबर सहेंगे।

रामचन्द्र—परमात्मा फिर आपके दर्शन करायेंगे।

कौशल्या—किन्तु उस पराई बेटी को क्यों कर समझायेंगे (बांदी को इशारा करके) जा जरा सीता को मेरे पास बुला ला।

सीता—(हाथ जोड़कर) माता जी कहिये क्या आज्ञा है?

कौशल्या—(आंखो में आंसू भरकर) बेटी क्या बताऊँ और क्योंकर सुनाऊँ, ऐसा पाषाण हृदय कहां से लाऊँ, ये खुद ही बता देंगे और कुल समाचार सुना देंगे।

सीता—(रामचन्द्र से) प्राणनाथ! माता जी यह क्या फरमा रही हैं और क्यों इस कदर आंसू बहा रही हैं? क्या दासी की निस्बत कोई शिकायत है जो माता जी को रंज निहायत है?

रामचन्द्र—नहीं प्रिय! तुम पर तो उनकी सर्वदा नजर इनायत है और हर समय उनकी जबान पर तुम्हारी फरमांबरदारी की हिकायत है।

सीता—तो फिर इस कदर रंज का क्या कारण है?

रामचन्द्र—वृथा रंज करती हैं वर्ना बात तो बिल्कुल साधारण है।

सीता—यदि कुछ हानि न हो तो मुझे भी बता दीजिये।

रामचन्द्र (गाना पीलों या जिला ठेका ताल तलवाड़ा)

मैं तो हुकम पिता का मान आज ही जाता हूं जंगल को,
चौदह साल का है बनवास, आऊँ काट तुम्हारे पास।
तुमने होना नहीं उदास, रौनक देना इसी महल को,
केकई समझो मात समान, उनका मत करना अपमान,
यही धर्मात्मा की पहचान, रखना कायम जरा अक़ल को।
मैं तो हुकम०

रखना अपने मन में धीर, होना मत दिल में दिलगीर,
ऐसी कायम करो नजीर, दुनियां दे न ताना कल को।
मैं तो हुक्म०

इसमें किसी का नहीं कसूर, यही था ईश्वर को मंजूर,
किसकी ताकत करे गरूर, रोके उनके हुक्म अटल को।
मैं तो हुक्म०

देना नहीं भरत को दोष, वह तो है बिल्कुल निर्दोष,
रहना तुम बिल्कुल खामोश, दिलासा देना उस व्याकुल को।
मैं तो हुक्म०

रुखसत करो न करो कोहराम, रोने धोने का नहीं काम,
ले 'यशवन्तसिंह' ईश्वर का नाम, काटूं मैं अपनी मंजिल को।
मैं तो हुक्म०

नाटक

प्रिय जी, पिता जी की आज्ञा से चौदह वर्ष के लिये बन

में जाता हूं और सबन तो आज्ञा दे दी है अब तुम से आज्ञा चाहता हूं। इसमें न पिता जी का दोष है न माता केकई का कसूर है, बल्कि ईश्वर को इसी तरह मन्जूर है। मुझे विश्वास है कि तुम मेरी अनुपस्थिति में न केवल स्वयं ही धैर्य से काम लोगी बल्कि मेरे माता पिता को भी मुझसे अधिक आराम दोगी। भरत, शत्रुघन और लक्ष्मण को हरगिज उदास न होने देना, उनकी हर प्रकार से तसल्ली व दिलजोई करती रहना। चौदह वर्ष समाप्त होते ही तत्काल आऊँगा और एक पल भी देर न लगाऊँगा।

सीता जी का गाना (रगत ऊपर जैसी)

रहना नहीं यहां मन्जूर, आपके साथ चलूँगी वन में।
सुख में रही आपके साथ, दुःख में कहां अकेले जात,
कैसे जिऊँगी तुम बिन नाथ, त्याग दूँ प्राण यहीं इक छन में।
रहना नहीं यहां० ॥

अयोध्या वहीं जहां पर राम, यहां रहने का क्या परिणाम,
करो जो तुम वन में विश्राम, काम क्या है मेरा महलन में।
रहना नहीं यहां०।

हो गया क्या मुझसे अपराध, करो न यों मुझको बरबाद,
निस दिन रहे आपकी याद, भर भर आये नीर नैनन में।
रहना नहीं यहां० ॥

किया था माता ने उपदेश, चाहे दुःख हो चाहे क्लेश,
होवे घर चाहे परदेश, रहना स्वामी के चरणन में।
रहना नहीं यहां० ॥

चलोगे जिस मार्ग पर आप, करती चलूँगी रस्ता साफ,
तुम्हारे चरणों के प्रताप, रहूं मगन मैं अपने मन में।
रहना नहीं यहां० ॥

विनती करो नाथ मन्जूर, करो न निज चरणों से दूर,
मेरा क्या 'यशवन्तसिंह' कसूर, आ नहीं सकता फर्क प्रण में।

रहना नहीं यहां० ॥

नाटक

प्राणनाथ! जो कुछ पिता जी की आज्ञा है उसके बारे में मुझको न कोई ऐतराज है और न उसके काम में कोई दखल देने का मुझको मजाज है। वह हर तरह से मालिक और मुखत्यार हैं, हम तो उनकी आज्ञा के तावेदार हैं। आप बड़ी खुशी से उनके हुक्म की तामील दीजिये। मगर अपनी दासी को साथ चलने की आज्ञा दीजिये। जब आपका जंगल में कयाम है तो मेरा अयोध्या में क्या काम है अगर आपको वनवास है तो मुझको भी वनवास है मेरे लिए वही अयोध्या है जहां आपका निवास है।

रामचन्द्र—प्रिय जी! तुम जंगल में कष्ट सहन नहीं कर सकोगी, वहां बहुत कष्ट होंगे।

सीता—आपके चरणों में रहकर मेरे सब दुःख नष्ट होंगे।

रामचन्द्र—वहां जंगली जानवर तुमको सतायेंगे।

सीता-हम उनसे अपना दिल बहलायेंगे।

रामचन्द्र-तुम मुसीबत के वक्त मेरी सहायता करो जो आर्य स्त्रियों का काम है।

सीता-मेरा साथ जाने का भी तो यही परिणाम है।

रामचन्द्र-तुम तो मन्तक लड़ा रहो हो और बात को कहीं से कहीं ले जा रही हो।

सीता-(हाथ जोड़कर) मेरी आपके सामने मन्तक लड़ाने की हरगिज ताकत नहीं और सच पूछो तो बात करने की भी लियाकत नहीं।

रामचन्द्र-पिता जी की आज्ञा का पालन हम दोनों के लिए आवश्यक है।

सीताजी का गाना (बहरे तवील)

जो पिता का हुक्म है खुशी से करो,
दूँगी हरगिज मैं उसमें दखल ही नहीं।
साथ जाऊँगी मैं भी मगर आप के,
इस जगह अब रहूं एक पल ही नहीं
साया बन कर रहूंगी मैं संग आपके,
न ससुर घर रहूं न रहूं बाप के।

कष्ट देते हो बदले में किस पाप के,
देखना चाहते मेरी शकल ही नहीं।
जो पिता का० ॥
किस लिए नाथ दिल से बिसारा मुझे,
बे खता किस लिए आज मारा मुझे।
और सूझे न कोई सहारा मुझे,
मेरी बिल्कुल ठिकाने अकल ही नहीं।
जो पिता का० ॥
बिन तुम्हारे अयोध्या बियाबान है,
क्या करेगा जिसम जब नहीं जान है।
आपके साथ बन भी गुलिस्तान है,
मुझे भायेंगे हरगिज महल ही नहीं।
जो पिता का० ॥
तुम पिता का वचन तो निभाने लगे,
कौल अपना मगर क्यों भुलाने लगे।
मुझे उल्टी अकल क्यों सिखाने लगे,
मैं करूँ इस पै हरगिज अमल ही नहीं।
जो पिता का० ॥
काम मेरा अयोध्या में अब क्या रहा,
जायगा मुझसे हरगिज न यह दुख सहा।
दो इजाजत मुझे भी यह मानो कहा,

वरना सीता की समझो कुशल ही नहीं ।

जो पिता का हुक्म ॥

खौफ तकलीफ का क्या दिखलाते मुझे,

रास्ते पर नरक के चलाते मुझे ।

ऐसी कमजोर बुजदिल बनाते मुझे,

गोया मैं क्षत्री की नसल ही नहीं ।

जो पिता का हुक्म० ॥

नाटक

स्वामी जी ! मुझे आपकी आज्ञा हर समय स्वीकार है मगर अपने पतिव्रत धर्म से सीता लाचार है । आप अपने को तो कलंक से बचाते हैं, मगर यही कलक मुझ पर लगाना चाहते हैं । आखिर असलों की असल हूं और क्षत्री वंश की नसल हू । मरते मर जाऊँगी, मगर पिता जनक तथा माता धरणी के नाम को वट्टा न लगाऊँगी । यदि आप अकेले वन को जायेंगे तो यह निश्चय रखिये कि सीता को कदापि जीवित न पायेंगे ।

रामचन्द्र–तुम बन में किस लिये जाती हो ?

सीता—आप किस लिए जाते हैं ?

रामचन्द्र–मुझको मेरे पति की आज्ञा है ।

सीता–मुझको मेरी माता की आज्ञा है ।

रामचन्द्र–तुम्हारी माता की क्या आज्ञा है ।

सीता—आपके पिता की क्या आज्ञा है ?

राम०—मेरे पिता की यह आज्ञा है कि तुम वन को जाओ।

सीता—मेरी माता की यह आज्ञा जहां तुम्हारे पति जाये वहां तुम जाओ'।

राम०—तुम्हारी मन्तक़ तो वास्तव में लाजवाब है मगर तुम्हारा साथ जाना मेरे लिए एक तरह का अजाब है।

सीता—(रामचन्द्र के पांव पकड़ कर) प्राणपति ! यदि आपको यह निश्चय है कि चौदह वर्ष के बाद आप सीता को जीवित देख सकेंगे तो खुशी से छोड़ जाइये।

राम०—अच्छा प्रिय चलो ! अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम अपनी हठ से नहीं टलोगी और अवश्य साथ चलोगी। अच्छा माताओं को नमस्कार कीजिये और उन से आशीर्वाद लीजिये।

सीता—(कौशल्या के पांव पकड़ कर) माता जी आपके पांव पड़ती हूं और आज्ञा के लिए प्रार्थना करती हूं।

कौशल्या—(भड़भड़ाई हुई आवाज से) बेटी क्या कहूं, रोते रोते आंखों का पानी खतम हो गया, आहे भरते कलेजा भस्म हो गया। न मालूम मैंने ऐसा कौनसा पाप किया है, जो तुमने मुझको ऐसा सँताप दिया है अभी अपनी किस्मत को रो रही थी और पहले ही जख्म

से निढाल हो रही थी, तुम भी साथ छोड़ने को तैयार हो, गया दोनों मेरी सूरत से बेजार हो।

कच्चे हैं खम सबूचा कुछ जरूफ जरजरे।
रोना नहीं है एक का आवा बिगड़ गया॥

अच्छा बेटी! किस पर क्या गिला है, अपने कर्मों का फल मिला है। इस बुढ़ापे को यों ही बरबाद होना था हमने तमाम उमर अपनी किस्मत को रोना था—

क्या कहूं बेटी मुझे घर घाट से तुम खो चले।
एक को रोती थी पहले, अब तो लेकिन दो चले॥

(कौशल्या का बेहोश हो कर गिर जाना)

लक्ष्मण—(क्रोध में आकर) अब तक बहुत खूने जिगर पिया अपने आपको बहुत जब्त किया। मगर माता जी की अवस्था देखकर सीना चाक हो गया और कलेजा जलकर खाक हो गया। मेरी उपस्थिति में माता जी को इस कदर आजार! मेरी जिन्दगी पर लाख लानत और फटकार धिक्कार! (हाथ के इशारे से कौशल्या के सिर को उठाकर) माता जी जरा आंखें खोलों, तुम्हारा लक्ष्मण तुम्हारे कदमो पर निसार है, अगर नहीं बोलती तो लीजिये (खँजर निकाल कर) लक्ष्मण तुम से पहले मरने को तैयार है।

रामचन्द्र–(जल्दी से हाथ पकड़ कर) हैं! हैं!! लक्ष्मण जरा होश करो इस कायरता क्या अर्थ है।

कौशल्या–(लक्ष्मण को छाती से लगाकर) नहीं बेटा! मैं अच्छी हूं, यों ही चक्कर सा आ गया था।

लक्ष्मण–(क्रोध में आकर) अजब अंधेरा है कि जब राम सब प्रकार से राज़ का हक दार है, तो किसी दूसरे का इस पर क्या अधिकार है? रोने और गिड़गिड़ाने से राज नहीं मिल सकता। हां अगर किसी की हिम्मत है तो मुकाबले पर आये, हमारे दो हाथ देखे और अपने दिखलाये ताकि राज करने का मजा भी आये। वरना मैं कदापि ऐसी बेईमानी और चालाकी न चलने दूँगा और जब तक दम में दम है किसी की दाल न गलने दूँगा।

रामचन्द्र...प्यारे लक्ष्मण! मुझे सख्त अफसोस है कि तुम्हारी तबियत में क्यों इस कदर जोश है। जरा सोचो तो किस के हाथ देखोगे और किसको दिखाओगे, किससे लड़ोगे और किसके बरखिलाफ तलवार उठाओगे? बगैर सोचे समझे मुँह से बात निकालते हो और वृथा ही अपने को पापों में डालते हो। मालूम नहीं तुम क्या ख्याल कर रहे हो और किसके लिये यह शब्द

इस्तेमाल कर रहे हो जरा अपने आपको सम्भालो और इस फिजूल जोश को दिल से निकालो।

लक्ष्मण—तमाम कुल का नाश हो रहा है, जिसे देखकर मेरा कलेजा पाश-पाश हो रहा है, उधर पिताजी की हालत बद से बदतर हो रही है, इधर माता जा जान खो रही हैं और सीता बेचारी अलग जमीन पर पड़ी रो रही है। आपको न मालूम कौन सा चाव चढ़ रहा है, उल्टा मुझे कह रहे हैं कि तुम्हारा गुस्सा बेफायदा बढ़ रहा है। अच्छा अगर यों है तो यों ही सही, इस तरह सारे कुल का मलिया मेट करके भरत अवश्य राज कर लेगा और सूर्य वंशी मुकुट अवश्य अपने सिर पर धर लेगा। यदि धर्म और न्याय इसी का नाम है तो मैं भी अगर एक-एक को राज का मजा न चखा दूँ तो सुमित्रा का दूध एक बार नहीं बल्कि लाख बार हराम है।

राम०—प्रिय भाई! जरा गुस्से को दिल से निकालो और बात के हर पहलू पर अच्छी तरह दृष्टि डालो। इसमें भरत का क्या कसूर है, वह बेचारा तो यहां से कोसों दूर है। तुम बार बार क्यों उसका नाम लेते हो, वृथा ही उसको दोष देते हो। माता केकई का भी यों ही बहाना है, वरना दर असल तो यह हमारा

आजमायश का जमाना है। मगर अफ़सोस कि तुम मामूली सी आजमायश में ही डगमगा गये और थोड़ी सी बात पर इस क़द्र घबरा गये। ऐसे शब्द मुख से निकाल कर दुनिया को हँसा रहे हो और अपने आपको पापों के फन्दे में फँसा रहे हो। क्रोध की वजह से तुम्हारी तबियत बिल्कुल बहाल नहीं और रघुकुल की आन का तुमको मुतलक़ ख्याल नहीं।

लक्ष्मण—बहुत अच्छा अगर रघुकुल की यही रसम है, तो अब अयोध्या में रहना मेरे लिए भी क़सम है। जीते जी आपका साथ नहीं छोड़ सकता और किसी अवस्था में भी आपकी रिफाक़त से मुँह नहीं मोड़ सकता।

राम०—यदि तुम भी साथ जाओगे तो भरत का क्या हाल होगा ?

लक्ष्मण—लक्ष्मण से यह कैसा सवाल ?

राम०—इस अवस्था में उसका जिन्दा रहना सख्त दुश्वार है।

लक्ष्मण—लक्ष्मण उससे पहले जान देने को तैयार है।

राम०—तुम्हारी इस जिद से सारा कुल बे-चिराग़ हो जायगा।

लक्ष्मण का गाना (बतर्ज़ कव्वाली)

कसम खाई है बस मैंने तुम्हारे साथ जाने की।

हटा सकती नहीं मुझको कोई ताकत जमाने की ॥
मुबारिक हो भरत को राजधानी इस अयोध्या की।
यहां तो धुन लगी है अब नई बस्ती बसाने की ॥
दिया वह राज ईश्वर ने नहीं सीमा कोई जिसकी।
हुकूमत हाथ आई आज किस्मत से जमाने की ॥
हमारी राजधानी में खलल कोई न आयेगा।
न आयेगी कभी नौबत किसी के दिल दुखाने की ॥
पखेरू जंगलों के राम की प्रजा कहलायेंगे।
पड़ेगी कान में आवाज हर दम चहचहाने की ॥
श्री रघुवीर की सेवा मिले तो और क्या चाहिए।
नहीं दिल में हवस बिल्कुल रही राजा कहलाने की ॥
अगर हों कष्ट भी बन में मुझे परवाह नहीं किंचित।
मगर ताकत नहीं सदमा जुदाई का उठाने की ॥
तुम्हारे साथ ही मैंने यहां का अन्न जल छोड़ा।
कसम है आपके बिन जो शकल देखूँ 'टोहाने' की ॥

नाटक

लक्ष्मण—भ्राता जी! आपकी आज्ञा शिरोधार्य, मगर अयोध्या में रहने से लक्ष्मण असमर्थ है। मैं किसी अवस्था में भी इस जगह नहीं रह सकता और हरगिज आपकी जुदाई का सदमा नहीं सह सकता। अगर आप मुझको यहां छोड़ जायेंगे तो जिस्म तो जरूर यहां रह जायेगा,

मगर प्राण आपके साथ जायेंगे ।

सुमित्रा—शाबाश बेटा ! शाबाश ! आज तूने मेरे दूध का हक दे दिया । मेरे कुल भूषण ! यद्यपि तेरा वियोग मेरे लिए महा दुखदाई है परन्तु इस अवस्था में भी मेरी आत्मा सन्तुष्ट है । आवश्यकता हो तो अपनी जान पर खेल जाना परन्तु बड़े भाई की सेवा से जी न चुराना .

रामचन्द्र–उचित तो यही था कि तुम यहीं ठहर जाते और राज कार्यों में भरत का हाथ बटाते । अस्तु यदि चलने का ही इरादा है तो अब देर करना बे-फायदा है । माताओं को अन्तिम नमस्ते करो और जंगल के रस्ते-पड़ो ।

(२) रामचन्द्र, लक्ष्मण और सीता का कौशल्या और सुमित्रा से विदा होना और उनका उपदेश ।

कौशल्या रामचन्द्र से (गाना बहरे तवील)

मेरे बेटा यह सुन ले नसीहत मेरी,

तु अकेला अयोध्या में आना नहीं ।

पीठ देखी है तीनों की जाती दफा,

तू अकेला मुझे मुँह दिखाना नहीं ।

मेरे बेटा०

कर रहा मुझको मजबूर मेरा धर्म,

वरना करती यहां से रवाना नहीं।

कोई लक्ष्मण को नेकी बदी हो गई,

तो समझ ले मेरा कुछ ठिकाना नहीं।

मेरे बेटा०

हर तरह ख़्याल रखना मेरे लाल का,

कोई तकलीफ इसको पहुँचाना नहीं।

मेरा नन्हा सा बच्चा है कोमल बदन,

रामचन्द्र इसे तुम रुलाना नहीं।

मेरे बेटा०

जानकी जान के साथ हरदम रहे,

दुःख उठाने का इसके जमाना नहीं।

कोई अपराध हो जाये इससे अगर,

ख्याल इसका तबियत में लाना नहीं।

मेरे बेटा०

जो करो काम तीनों सलाह से करो,

भेद 'यशवन्तसिंह' से छिपाना नहीं।

भूल जाना कौशल्या को बेशक मगर,

यह नसीहत मेरी तुम भुलाना नहीं।

मेरे बेटा०

नाटक

पुत्र ! दिल तो नहीं चाहता कि तुमको यहां से विदा करूँ और एक पल के लिए भी अपने से जुदा करूँ परन्तु क्या करूँ धर्म की जंजीर ने मुझको चारों ओर से जकड़ रक्खा है और मेरी जबान को बुरी तरह पकड़ रक्खा है। छाती पर पत्थर रखकर आंखों से दूर करती हूं, मगर तुम्हें इतनी नसीहत जरूर करती हूं कि जिस तरह जाते हुए तीनों ने पीठ दिखाई है, इसी तरह तीनों ही आकर अपनी शकल दिखाना। यदि मेरे लक्ष्मण और सीता को कुछ हो गया तो तू भी अयोध्या में मत आना क्योंकि इस हालत में तुझे मेरे पास आने का कोई अधिकार नहीं और कौशल्या हरगिज तेरी सूरत देखने को तैयार नहीं।

नसीहत सुमित्रा की लक्ष्मण को

लाल मेरे करूँ क्या नसीहत तुझे,
तू तो खुद ही मेरे से है दाना पुत्र।
जिस जगह पर पसीना गिरे राम का,
खून अपना वहां तुम बहाना पुत्र।
लाल मेरे०
रामचन्द्र को तकलीफ कुछ हो अगर,
जान अपनी वहां तुम लड़ाना पुत्र।

मैंने तुझको निछावर किया राम पर,
फ़र्ज़ अपना मगर तुम निभाना पुत्र।
लाल मेरे०
राम तुम पर खफ़ा भी अगर हों कभी,
मैल मन में ज़रा भी न लाना पुत्र।
होना इनके हुक्म से न बाहर कभी,
रंज इनको न कोई पहुँचाना पुत्र।
लाल मेरे०
जानकी को बजाये मेरे जानना,
हर तरह हुक्म इनका बजाना पुत्र।
भेद इनमें व मुझ में न कुछ समझना,
शीश चरणों में इनके झुकाना पुत्र।
लाल मेरे०
लाज रखियो मेरे दूध की लक्ष्मण,
कभी ताना न मुझको दिलाना पुत्र।
रामचन्द्र को वन में जो कुछ हो गया,
तुम भी हरगिज यहां पर न आना पुत्र।
लाल मेरे०

नाटक

केकई—बेटा! यह कीमती वस्त्र अब तुम्हारे बदन पर शोभा नहीं देते, इन्हें उतार दो (भगवे वस्त्र आगे

करके) यह गेरवे वस्त्र पहन कर बन की राह लो।

रामचन्द्र–लाइये माता जी आपका फरमाना बिल्कुल सही, कहिए और कुछ तो कसर नहीं रही?

केकई–(सीता से) तू मेरी ओर आ ताकि मैं तुझे अपने हाथ से वस्त्र पहना दूँ।

राम०–माता जी! आज तक आपने हर तरह से हमारी नाज बरदारी की और हद से ज्यादा खातिरदारी की। खिलाया, पिलाया, पहनाया, ओढ़ाया मगर अब इन्हें भी कुछ शुध बुध आने दो और स्वयं भी ज़रा हाथ पांव हिलाने दो।

दशरथ—ओ बेरहम? अभी तक तेरा कलेजा ठण्डा नहीं हुआ, अब भी तू अपनी आदत से बाज नहीं आती है और नश्तर पर नश्तर चुभोये जाती है। ओ जालिम, तू कौनसे जन्म के उतारे उतार रही है और नाहक मरे हुओं को मार रही है।

राम०–पिता जी जरा इस्तकलाल कीजिये, और अपनी तबियत को बहाल कीजिये। माना कि आपको माता जी की राय से इख्तलाफ है, तो भी इनकी निस्बत ऐसे शब्द बर्ताव में लाना आपकी शान के सरासर खिलाफ है। अब अधिक बिलम्ब न कीजिए और प्रसन्नता से बिदा करके आशीर्वाद दीजिये।

दशरथ-(नेत्रों में जल लाकर) अच्छा बेटा! ईश्वर तुम्हारा निगहबान है परन्तु दशरथ अब कोई दम का महमान है। (सौमित्र को आहिस्ता से समझा कर) तुम इनके संग जाना और जिस तरह से हो सके दम दम दिलासा देकर वापिस ले आना।

रामचन्द्र-(पिता और माताओं के पांव पकड़ कर) मेरे पूजनीय पिता तथा माताओ! रामचन्द्र अब यहां से बिदा होता है और कुछ काल के लिए आपके चरणों से जुदा होता है। जब आपका आशीर्वाद मेरे साथ है तो यह चौदह वर्ष का वनवास मेरे लिये बिल्कुल मामूली बात है। परमात्मा बल दे कि हम तीनों अपना धर्म पालन करते हुये फिर अपनी जन्म भूमि में आयें और अपना सिर आपके पवित्र चरणों में झुकायें। (कौशल्या से) माता जी! अब धैर्य से काम लेने में ही दानाई है और इसी में सारी कुल की भलाई है :-

नगरी मेरे पिता की सुख से बसो सुदाम,
हम जंगल को चल दिये कर तुमको प्रणाम।

कौशल्या गाना (बतर्ज—दिये दु:ख यह फलक ने सारे)

खुद ही आ जायेगा बेटा सबर आहिस्ता आहिस्ता।
सहूंगी जान पर सारे जबर आहिस्ता आहिस्ता॥

न जाने और क्या क्या रंजोगम सहने अभी होंगे।
छिने सायद हमारे से यह घर आहिस्ता आहिस्ता ॥
अगर जाने से पहले फैसला मेरा भी कर देते।
निकल जाती जो बाकी थी कसर आहिस्ता आहिस्ता ॥
मेरे बेटा नहीं अब जिन्दगी की चाह रही मुतलक।
कतल कर शौक से मुझको मगर आहिस्ता आहिस्ता ॥
मुरादें केकई की आज पूरी हो गईं सारी।
फैलाये सौत ने आखिर को पर आहिस्ता आहिस्ता ॥
नहीं मालूम कब मे विष भरी बैठी थी वह नागन।
हुआ जाहिर जहर का अब असर आहिस्ता आहिस्ता ॥
मिला शक एक दो दिन तो अयोध्या तिलमिलायेगी।
खुद ही मिट जायगा यह शोरोशर आहिस्ता आहिस्ता ॥
हाय रे इस बुढ़ापे का सहारा न रहा कोई।
हुए 'यशवन्तसिंह' सब मुन्तशिर आहिस्ता आहिस्ता ॥

०:—०—:०

बारहवाँ दृश्य

(१) राम का बन गमन और नगर निवासियों का रुदन

गाना (बतर्ज—दिए दुःख यह फलक ने सारे)

हाय दशरथ की फुलवाड़ी, जालिम केकई उजाड़ी,
वाहवा तेरी गति विधाता, कोई भेद न तेरा पाता जी।

तेरी कुदरत सब से न्यारी, जालिम केकई० ॥
जो ताजो तख्त का वाली, जाता हाथों से खाली जी।
राजा से बना भिखारी, जालिम केकई०
सब तज कर माल खजाना, ले लिया फकीरी बाना जी।
छोड़ सब महल अटारी, जालिम केकई० ॥
धन्य धन्य लक्ष्मण से भ्राता, हैं धन्य तुम्हारी माता जी'
धन्य धन्य तू जनक दुलारी, जालिम केकई० ॥
छोड़ी तुमने यह नगरी, रोती है प्रजा सगरी जी।
क्या पुरुष और क्या नारी, जालिम केकई० ॥
तुम वन को राम पधारे, रहा सिर पर कौन हमारे।
फूटी तकदीर हमारी, जालिम केकई० ॥
तुमको तो नहीं कुछ मुश्किल, है भारी हम को पल पल।
हम चरणों पर बलिहारी, जालिम केकई० ॥

सौमित्र—आपके लिए यह रथ उपस्थित है, इसमें सवार हो जाइये।

रामचन्द्र—यह वृथा झमेले हमारे साथ न लगाइए, कृपया इसे वापस ले जाइए।

सौमित्र—आपका इसमें क्या नुकसान है।

रामचन्द्र—फकीरों के लिए यह बखेड़ा बवाले जान है।

सौमित्र— आप यह किस प्रकार के शब्द मुँह से निकाल

रहे हैं और वृथा मेरे कलेजे में घाव डाल रहे हैं। यह आपका बिल्कुल गलत ख़्याल है। आपको फकीर करने की किस की मजाल है। यदि फिर ऐसे शब्द मुख से निकालोगे तो तत्काल ही अपनी आत्म हत्या कर लूँगा, आपके सामने शरीर को जला कर भस्म कर दूँगा।

रामचन्द्र—मन्त्री जी! यदि आप मेरे इन शब्दों से दुखी हुए हैं तो क्षमा करें।

सौमित्र—आप अधिक विलम्ब न फरमाइये और रथ में सवार हो जाइये।

रामचन्द्र—जरूरत तो नहीं थी मगर मैं आपको भी नाराज करना नहीं चाहता। (नगर वासियों से) आप अपने घरों में जाकर आराम कीजिये और हमारा प्रणाम लीजिये। आपकी सहानुभूति का मशकूर हूं मगर क्या करूँ इस वक्त तो मैं स्वयं मजबूर हूं।

सब नगरवासी—महाराज हम आपके साथ जायेंगे और अपनी नई अयोध्या बसायेंगे :—

> प्यारे वतन से हम गये, हम से वतन गया।
> नकशा हमारे रहने का जंगल में बन गया॥

(२) तमसा नदी

(रामचन्द्र का नगर निवासियों को सोते हुए छोड़कर आगे को चल देना और अयोध्या वासियों का रामचन्द्र जी को वहां न पा कर परेशान होना)

गाना (भैरवी ठेका तलवाड़ा बतर्ज—मत छोड़ो वैदिक धर्म)

ऐ राम जुदाई तेरी मार कर, कर गई चकना चूर।
चल दिये अकेले आप, नींद में देख हमें मखमूर॥
क्या दिल में राम विचारी, की रातों रात तैयार।
क्या देखी खता हमारी, क्यों किया निज चरणों से दूर।
ऐ राम जुदाई तेरी० ॥
गर यही मता ठाना था, धोखा देकर जाना था।
हमें पहले बतलाना था, आपको यही था जो मंजूर॥
ऐ राम जुदाई तेरी० ॥
कहीं खोज भी तो नहीं पाता, कोई मिले न आता जाता।
क्या यत्न करें अब भ्राता, हुये हम सभी तरह मजबूर॥
ऐ राम जुदाई तेरी० ॥
न हमें अयोध्या भावे, न पता तुम्हारा पावे।
वन भी खाने को आवे, जिगर में डाल रहा नासूर॥
ऐ राम जुदाई तेरी० ॥
अब कुछ न रहा ठिकाना, मुश्किल हुआ वापिस जाना।
कुल दुनियां देगी ताना, हाय हमको बिना कसूर॥

ऐ राम जुदाई तेरी० ॥

कोई हमको आन बता दे, श्रीराम का पता बता वे।
वह रस्ता हमें जता दे, उमर भर हों उसके मशकूर ॥

ऐ राम जुदाई तेरी० ॥

(३) राजा गुह निषाद् से भेंट

गुह–मेरे धन्य भाग हैं जो आपने अपने पवित्र चरणों से इस भूमि को पवित्र किया। दास के गृह पर चल कर कुछ जलपान कीजिये और मुझ पर इतना अहसान कीजिये।

रामचन्द्र–इस आतिथ्य भाव के लिये आपका मशकूर हूं परन्तु बस्ती में पांव रखने से मजबूर हूं।

गुह–मुझे स्वयं आश्चर्य है कि आपने ऐसा वेष क्यों बनाया है ?

रामचन्द्र–पिता ने चौदह वर्ष तक इसी वेष में रहने के लिये फरमाया है।

गुह—आखिर कोई कसूर ?

रामचन्द्र—कसूर हो या न हो पिता की आज्ञा हर हालत में मंजूर।

गुह–भगवन् ! आप धन्य हैं जो इस अवस्था में भी हर प्रकार से प्रसन्न हैं। बहुत अच्छा मैं जाता हूं और इसी जगह आपके लिए भोजन पहुँचाता हूं।

राम०—प्यारे मित्र ! अगर यह भोजन हमको भाते तो घर से चलकर ही क्यों आते । यहीं से कुछ कन्द मूल चुनकर खा लेंगे और पेट की अग्नि बुझा लेंगे । आपको आये हुये बहुत देर हो गई, अब आराम कीजिये और हमारा प्रणाम लीजिये ।

गुह-(अपने साथियों से) तुम इस जगह पहरे पर तईनात रहो और रामचन्द्र जी की सेवा में ही सारी रात रहो ।

राम०—(सौमित्र से) मन्त्री जी ! आप वापिस लौट जायें और पिता जी को धीर बंधायें । अयोध्या से आपकी अधिक अनुपस्थिति अनुचित है और आपका चला जाना ही उचित है ।

सौमित्र—मैं आपसे एक विनती करना चाहता हूं, आशा है आप मंजूर करेंगे ।

राम०—आप वृद्ध हैं, आशा है कोई नेक सम्मति प्रदान कर हमें मशकूर करेंगे ।

सौमित्र—महाराज की आज्ञा का पालन तो आपने कर दिया अब वापिस चलना चाहिये ।

राम०—यह किस तरह, जरा साफ तौर से फरमाइए ।

सौमित्र—आप उनकी आज्ञानुसार जंगल में आ गये ।

राम०—और चौदह साल के अरसे को आप बीच में से खा गये ?

सौमित्र–यदि चौदह वर्ष पूरे न हुये तो भी हमारे ख्याल में कुछ हरज नहीं।

राम०–आपको कुछ वहम का तो मरज नहीं।

सौमित्र–आपको अधिक हठ नहीं करनी चाहिये।

रामचन्द्र–मन्त्री जी अगर यही शब्द किसी साधारण पुरुष के मुख से निकलते तो शायद मुझको इतना अफ़सोस न होता और लगभग मेरी तबियत पर भी इस कदर जोश न होता। परन्तु आप जैसे विचारवान और धर्मात्मा के मुख से ऐसे शब्द सुनकर मेरी सारी प्रसन्नता शोक में तबदील हो गई, जब आप यह कहते हैं कि बस महाराज के हुक्म की तामील हो गई। गोया आप मुझको पाप मार्ग पर चलाना चाहते हैं और सचाई के ऊपर छल और कपट का गिलाफ चढ़ाना चाहते हैं। आपकी यह कोशिश बिल्कुल बेसूद है, अगर फर्ज कर लेना ही सच्चाई है तो आप भी फर्ज कर लीजिये कि रामचन्द्र भी अयोध्या में मौजूद हैं जब तक वरना दम में दम है बिना चौदह वर्ष समाप्त किये अयोध्या में कदम रखना कसम है।

सौमित्र–तो मेरे लिए कोई उपाय बताइये।

राम०–आप बड़ी खुशी से अयोध्या तशरीफ ले जाइये।

सौमित्र—मगर महाराज का तो यह हुक्म था कि उनको साथ लेकर आना।

रामचन्द्र–आप स्वयं दाना और समझदार हैं, हर तरह से उनकी धीर बँधाना और हर एक काम को बड़ी योग्यता से निभाना।

सौमित्र–इस वक्त तक तो उन्हें कुछ उम्मीद भी है मगर मेरे जाने से उनका दुःख और विशेष होगा।

रामचन्द्र–नहीं बल्कि आपके न जाने से उनको क्लेश होगा।

(१) महाराज दशरथ भूमि पर लेटे हुए हैं, कौशल्या जी सिरहाने पंखा झल रही हैं।

महाराजा दशरथ का गाना (टोडी आसावरी ताल धमार)

मेरे निकसे जात प्राण।
अन्त समय अब आ गया मेरा बिल्कुल निश्चय जान।
मेरे निकसे जात प्राण।
ऐ प्यारी मैंने तुझको भी नाहक किया वीरान।
मुझ पापी को बख्श दो लेकिन निर्बल दुखिया जान।
मेरे निकसे०
इस दुनियां में समझ मुझे अब मिनटों का मेहमान।
वक्त आखिरी मुझ दुखिया पर कर इतना अहसान॥
मेरे निकसे०

कैसी वह मनहूस घड़ी थी दी जब तुझे जबान ।
ऐ जालिम केकई मिटाया तूने मेरा निशान ॥
मेरे निकसे०

प्यारे राम अब तेरा मिलना मुझको कठिन महान ।
मुझ पापी से मिलने में भी बेटा तेरी हान ॥
मेरे निकसे०

दुनियां में होगा नहीं मुझ सा गुनहगार इन्सान ।
हे ईश्वर मुझ अपराधी का हो कैसे कल्याण ॥
मेरे निकसे०

नाटक

प्रिय जी ! मेरा अन्त समय निकट आ रहा है और पीड़ा तथा चिन्ता से मेरा दम घुटा जा रहा है। निःसन्देह अब काल मेरे सिर पर सवार हो रहा है और मुझे एक शब्द बोलना भी सख्त दुश्वार हो रहा है। न मालूम किस समय इस जहां से कूँच कर जाऊँ और तुमसे कुछ न कहने पाऊँ। प्यारी, मैंने अपनी मूर्खता से न केवल अपना ही सत्यानाश किया, बल्कि तुम्हारे नाजुक दिल को भी पाश पाश किया। सारी आयु इस जालिम की मुहब्बत का दम भरता रहा और तुम्हारी ओर से सर्वदा लापरवाही करता रहा। अस्तु मैंने अपने विषय

वासना का फल पाया और अपनी जड़ों पर आप कुल्हाड़ा चलाया इसमें शक नहीं कि यह विपत्ति तुम्हारे लिए बहुत सख्त है, मगर मेरा भी अब आखिरी वक्त है। इसलिए मैं हाथ जोड़ता हूं कि मेरे अपराध माफ कर दो और मेरा परलोक का मार्ग साफ कर दो। शायद इसी कारण मेरी जान नहीं निकलती, कि मुझको इस पाप कर्न की मुआफी नहीं मिलती। (चिल्लाकर) हे परमेश्वर तेरी दुहाई है! अब जान निकालने में भी क्यों देर लगाई है।

कौशल्या का गाना (रेखता भैरवी ताल दादरा)

स्वामी यह मुझ से कष्ट उठाया नहीं जाता,
जो आपका अहसां है भुलाया नहीं जाता।
दासी हूं नाथ आपके चरणों की धूल हूं,
पर क्या करूँ यह कष्ट बटाया नहीं जाता।
मैं देखकर इस हालत में तुम को प्राणनाथ,
सहती हूं जो क्लेश बताया नहीं जाता।
सागर में पाप के हो क्यों धकेलते मुझे,
स्वामी यह पाप मुझ से छुड़ाया नहीं जाता।
नाचीज़ हूं मैं आपकी दासी प्राण पत,
पापों का बोझ मुझ से उठाया नहीं जाता।
मुझको जुदाई राम की सहनी आसान है,

बेहुरमती का दाग़ लगाया नहीं जाता।
मेरा निशान मिट गया संसार से मगर,
माता पिता का नाम मिटाया नहीं जाता।

नाटक

प्राणनाथ! आप कैसे शब्द मुख से निकाल रहे हैं और मुझ को क्यों पापों के गढ़े में डाल रहे हैं। आपका दरजा मेरे लिए परमेश्वर के समान है, यह दासी हर समय और हर हालत में आपकी तावय फ़रमान है। आप मेरे सामने हाथ जोड़कर मेरे पापों को और भी भारी कर रहे हैं और मुझे नरक में धकेलने की तैयारी कर रहे हैं। पिछले पापों का तो यह फल मिल गया कि पाला पलोसा लाल गोद से निकल गया। इस पर यह आपकी अनुचित कार्रवाई न मालूम क्या गज़ब ढायेगी और किन किन मुसीबतों का सामना करायेगी। प्राणपति! मुझ पापन अभागी के पापों की वजह से आप जैसे प्रतापी धर्मात्मा को भी इस कदर कष्ट हुआ और मुझ बदनसीब की बदौलत आपका पुण्य प्रताप नष्ट हुआ। मैंने जो कुछ सुख भोगा वह केवल आपका ही प्रताप है, मगर अफसोस कि मेरी वजह से आप जैसे पवित्र आत्मा को इस कदर सन्ताप हैं। खैर जो कुछ हुआ सो हुआ अब तबियत को सम्भालिए और ऐसे अनुचित शब्द मुँह

से न निकालिये। एक आर्य स्त्री के लिए यह डूबने मरने का मुकाम है, वह पति की दासी है न कि पति उसका गुलाम है। यद्यपि मैं पतिव्रता देवियों के चरणों की धूल भी नहीं हूं, मगर ऐसी गई गुजरी और नामाकूल भी नहीं हूं। आखिर क्षत्राणी का दूध पिया है और जिस माता पिता ने जन्म दिया है, उनके नाम को हरगिज़ बट्टा न लगाऊँगी और जब तक दम में दम है हर तरह से अपने कुल की लाज निभाऊँगी।

महाराजः दशरथ (गाना मालकौंस तीन ताल धीमा)

सहायक मेरा इस समय एक तू है,
गई हर तरह से मेरी आबरू है।
नहीं जिन्दगी की रही कोई ख्वाहिश,
मुझे मौत की आज खुद जुस्तजू है।
उठाओ मुझे नाथ जल्दी यहां से,
तेरे चरण सेवक की यही आरजू है।
सहायक मेरा०
अगर्चे नहीं मुँह दिखाने के काबिल,
मेरा पाप हरदम मेरे रूबरू है।
मगर आप अपनी दया से छिपालो,
यही विनती मेरी शामो सुबह है।
सहायक मेरा०

न गमख्वार दुनियां में कोई है मेरा,
न मेरी किसी से रही गुफ़्तगू है।
मेरे पाप कर्मों का चर्चा जहां में,
हुआ हर जगह जा बजा कू बकू है॥
सहायक मेरा०
न जाने कि अटकी कहां जान मेरी,
हुई आज मुझसे यह क्यों दू बदू है।
गिला है न 'यशवन्तसिंह' कुछ किसी पर,
न मित्र है अपना न कोई अदू है।
सहायक मेरा०

नाटक

हे नाथ ! माना कि मैं आपकी कृपा का पात्र नहीं हूं, किन्तु क्या मौत का दरवाजा भी मेरे लिये बन्द है। परमात्मा ! दया करो, अब मुझ में कष्ट सहने की शक्ति नहीं। प्रभू ! अब मुझे अधिक न सताओ, जल्दी इस पाप भूमि से उठाओ। ओ जालिम केकई ! पति को डसने वाली नागन। अब तो तेरा कलेजा ठण्डा हुआ। ओ बेरहम ! तूने मेरी नाज़ बरदारियों का खूब बदला दिया। ओ बेवफ़ा केकई। मेरी तो अब इस दुनियां से कूच की तैयारी है, मगर याद रख :—

मिटाया तो मेरा नामो निशां तूने अरी जालिम।
मिटेगी एक दिन तू भी मेरा नामो निशां होकर॥

अफ़सोस! चार बेटों के होते हुए आखिरी समय में कोई भी पास नहीं, जिसको छाती से लगाकर शान्ति से प्राण त्याग देता।

उफ़! गले में कफ़ आ गया। प्यारी जरा पानी का घूँट·

बांदी–महारानी जी मन्त्री जी तशरीफ़ ले आये हैं।

दशरथ–(करवट बदल कर) अरी जल्दी जा और उन्हें मेरे पास बुला ला।

सौमित्र–महाराज···(रोते हुए घिग्घी बँध गई और एक शब्द भी न बोल सके)

दशरथ–सौमित्र! कहो मेरे हंसो की जोड़ी को साथ लाये?

सौमित्र–चुप।

दशरथ–हाय हाय जो आता है जान का लागू, कुछ मुँह से तो बोलो।

सौमित्र–(आंसू पोंछ कर) महाराज! मैंने हरचन्द जोर लगाया, बहुत कुछ समझाया बुझाया, मगर उनके धैर्य में जरा भी फ़र्क न आया। अपनी सारी मंतिक लड़ाता था मगर उनका एक ही वाक्य सुन कर निरुत्तर हो जाता था, क्या सुनाऊँ, न कुछ सुनाने को दिल चाहता है न चुप ही रहा जाता है।

दशरथ–आखिर कुछ कहोगे या फिजूल बातें बनाते रहोगे।

सौमित्र–भगवन ! जिस समय मैं आपकी आज्ञानुसार रथ लेकर उनकी सेवा में पहुँचा, तो प्रथम तो उन्होंने रथ में बैठने से इन्कार किया और बहुत इसरार किया। मेरे इस सत्कार को भी उन्होंने नापसन्द किया, आखिर बमुश्किल तमाम उन्हें रजामन्द किया। शाम को राजा गुह की राजधानी में कयाम किया और सारी रात उस जगह विश्राम किया। राजा गुह ने अति प्रसन्न वदन हो आतिथ्य भाव प्रगट किया और अपने निज के आदमियों को पहरे पर नियत किया। भोजनादि के लिए उन्होंने हरचन्द मजबूर किया मगर रामचन्द्र जी ने नामन्जूर किया। अगले दिन जब नित्य कर्म से निवृत हुए तो आपका हुक्म उनको सुनाया और अपनी ओर से भी कुछ मिर्च मसाला लगाया। मगर क्या मजाल जो उन्होंने जरा जुम्बिश खाई हो, बल्कि मुझे कहा कि तुम तो बिल्कुल सौदाई हो। मुझे धर्म से गिराकर पाप के मार्ग पर चलाना चाहते हो, और दुनियां में कलंक का पात्र बनाना चाहते हो, यह तुम्हारा विचार बिल्कुल खाम है, बगैर चौदह वर्ष समाप्त किए अयोध्या में कदम रखना तो दरकिनार शक्ल दिखाना भी हराम है।

दशरथ—यह तो मुझे पहले ही ख़्याल था और उनका वापिस आना सख्त मुहाल था। हाय शोक मेरी क़िस्मत फूट गई, अब तो रही सही उम्मेद भी टूट गई। अच्छा कुछ कहा हो तो वह भी सुनाओ।

सौमित्र—आपको और माताओं को हाथ जोड़कर प्रणाम किया है और यह पैगाम दिया है कि मेरी माता केकई को हरगिज कोई तक़लीफ़ न होने पावे और भरत को तत्काल ननिहाल से बुलाकर राजतिलक दे दिया जाये।

सुमित्रा—प्यारी सीता का भी कुछ हाल सुनाओ।

सौमित्र—वह मुड़ मुड़कर अयोध्या की तरफ़ देख-देख कर व्याकुल होती जाती थीं, मुख से तो कुछ न बोलती थीं मगर बेतहाशा रोती जाती थीं।

कौशल्या—मेरे लक्ष्मण का क्या हाल था?

सौमित्र—उनकी तबियत पर महारानी की कार्यवाही का सख्त मलाल था, गुस्से के मारे आंखों का रंग खूनी कबूतर की तरह लाल था। यद्यपि वह महाराज की शिकायत करते थे, मगर रामचन्द्र जी हर समय उन्हें खामोश रहने की हिदायत करते थे।

दशरथ—(धायें मारकर) बेटा लक्ष्मण! बेशक मैं तुम्हारा गुनाहगार हूं और तुम्हारी ओर से शर्मसार हूं। मगर ऐ बेटा! मुआफ कर दो क्योंकि अब मैं इस दुनियां से

कूच करने को तैयार हूं। परमेश्वर दया करो।

वशिष्ठजी—महाराज अब रोने धोने से काम नहीं चलेगा। रामचन्द्र का आना तो दुश्वार है मगर इस खानदान को सँभालना आपके अख़्त्यार है। जो होना था हो चुका अगर आप अपनी तबियत को संभालेंगे, तो सारे खानदान को नष्ट होने से बचा लेंगे। अन्यथा जो नतीजा होगा यह सामने नजर आ रहा है, जिसका ध्यान आते ही कलेजा मुँह को आ रहा है।

दशरथ का गाना (बतर्ज—तुझको रोहित कहां पाऊँ)

छोड़ मुझको किधर को पधारे, मुख दिखला जा ऐ मेरे प्यारे,
बेगुनाह तुझको घर से निकाला, कर लिया मैंने अपना मुँह काला,
पाप प्रकट हुए आज सारे, मुख दिखला जा० ॥
आखिर वक्त है राम आजा, चांद सा मुखड़ा मुझको दिखाजा,
मिल सकूँगा न फिर ऐ प्यारे, मुख दिखला जा०
लक्ष्मण मेरी आखिरी घड़ी है, मौत मुँह खोले सम्मुख खड़ी है,
तू आजा ऐ आंखों के तारे. मुख दिखला जा० ॥
बेटी सीता ऐ मेरी दुलारी, फिरती होगी कहां मारी मारी,
कष्ट तूने भी क्या क्या सहारे, मुख दिखला जा० ॥
जो कुछ उम्मीद थी वह भी टूटी, हाय यकलख्त तकदीर फूटी,
जा रहा हाथ खाली पसारे, मुख दिखला जा० ॥
हाय २ मैं हूं कैसा कमबख्त, हो गई जान भी किस कदर सख्त

प्राण भी न निकलते हमारे, मुख दिखला जा० ॥
रोना रोयें क्या इस बेकसी का, दोष 'यशवन्तसिंह' न किसी का
आप मारे जंड़ों पर कुल्हाड़े, मुख दिखला जा० ॥

नाटक

गुरू जी! आपकी यह तिफ्ल तसल्ली मुझे कुछ फायदा नहीं पहुँचा सकती, और गई हुई बात कभी वापिस नहीं आ सकती, कर्म की गति प्रबल है और यह सब अपने कर्मों का ही फल है। किसी पर क्या अफसोस है, केवल अपनी प्रारब्ध का ही दोष है। अच्छा अब अपना काम सँभालो और मेरे रास्ते में रुकावट न डालो। प्यारे राम! मुझे माफ करो। प्यारी कौशल्या! तुम धन्य हो जो इतना कष्ट पाने पर भी मुझसे प्रसन्न हो। प्यारी सुमित्रा! बिदा (हिचकी लेकर) हाय प्यारे राम मैं चला।

कौशल्या—(जल्दी से सम्भाल कर) अरे कोई जल्दी आओ, महाराज के तो तेवर बदल गये।

वशिष्ठ जी—(नाड़ी देखकर) अफसोस तेवर क्या बदल गये, खुद महाराज ही इस संसार से चले गये।

कौशल्या—(सिर पीट कर) क्या बिल्कुल ही नाड़ी छूट गई।

वशिष्ठ जी—(दशरथ के सीने पर हाथ रखकर) हां महारानी जी अब तो बिल्कुल आशा टूट गई।

सुमित्रा–(छाती पर दुहत्थड़ मार कर) हाय रे हमारी किस्मत फूट गई।

कौशल्या तथा सुमित्रा का विलाप (बतर्ज है बहारे बाग दुनियां चन्द रोज

हा! हमारे प्राण प्यारे चल बसे,
रंजो ग़म के दुःग के मारे चल बसे।
किस तरह अब जिन्दगी होगी बसर,
जो थे जीवन के सहारे चल बसे।

मिल गया सारा सुहाग अब खाक में,
आज किस्मत के सहारे चल बसे।
आरज़ू न पूरी उनकी हो सकी,
मार कर वह आह के नारे चल बसे।
छोड़कर सब जाहो हशमत हाय हाय,
दोनों कर खाली पसारे चल बसे।
हो गया अन्धेरा आँखों में एक दम,
आज सुख सारे हमारे चल बसे।
केकई अब आ गया तुझको सबर,
जिनका दुख था वह बेचारे चल बसे।
इस दहर फानी में ऐ 'यशवन्तसिंह',
जिन्दगी के दिन गुजारे चल बसे।

वशिष्ठ जी—देवियो ! सबर करो और जितनी जल्दी हो सके भरत को खबर करो ।

तेरहवां दृश्य

स्थान केकयपुर

शत्रुघ्न–(भरत से) भ्राता जी ! आज तो आपकी तबियत कुछ सुस्त है ।

भरत—हां शत्रुघ्न जी, तुम्हारा ख्याल बिल्कुल दुरुस्त है ।

शत्रुघ्न—क्या कारण है जरा मैं भी तो सुन पाऊँ ।

भरत–कुछ कारण हो तो बताऊँ ।

शत्रुघ्न–कारण तो अवश्य है मगर मुझसे पोशीदा रखते हो ।

भरत–शोक है कि तुम मेरी निस्बत ऐसा अकीदा रखते हो ।

शत्रुघ्न–तो फिर आपको बताने में क्या ऐतराज है ।

भरत–शत्रुघ्न जी ! भला आपसे भी कोई मेरा पोशीदा राज है ?

शत्रुघ्न–तो बिना कारण आपकी तबियत पर कैसा खेद है ?

भरत–मैं खुद हैरान हूं कि यह क्या भेद है ।

शत्रुघ्न–आखिर इसका कोई इलाज भी···?

योधा जीत*–(आकर) अयोध्या से एक दूत आया है ।

---

*भरत के मामा का नाम

भरत–कुशलता की भी खबर लाया है।

योधाजीत–हां वैसे तो खैरियत बतलाता है मगर कहता है कि आपको जल्दी बुलाया है।

भरत–कोई जाये तो उस दूत को हमारे पास लाये।

दूत–(शाही आदाब बजा लाकर) आज्ञानुसार यह सेवक उपस्थित है।

भरत–अरे कुशल तो है जो ऐसी जल्दी का सन्देशा लाया है।

दूत–हाँ महाराज, वैसे तो कुशल है मगर आपको जल्दी बुलाया है।

भरत–पिता जी तो प्रसन्न हैं।

दूत–हां महाराज, आपको जल्दी बुलाया है।

भरत—माता जी तो प्रसन्न हैं ?

दुत–हां महाराज आपको जल्दी बुलाया है।

भरत–भाई रामचन्द्र जी व लच्मण जी तो खुश हैं ?

दूत–हां महाराज आपको जल्दी बुलाया है।

भरत–अरे तू आदमी है या ऊदविलाव, जो बात पूछता हूं उसका तो जबाब नहीं देता 'हां महाराज आपको जल्दी बुलाया है' की महारनी रट रहा है।

दूत–हां महाराज कह तो रहा हूं कि आपको जल्दी बुलाया है।

भरत—(क्रोध में आकर) तू सीधी तरह हमारी बात का जवाब क्यों नहीं देता ?

दूत—(हाथ जोड़कर) हां महाराज पूछिये क्या पूछते हो ?

भरत—अरे मैं पूछता हूं पिता जी. माता जी व भ्राता जी तो राजी खुशी हैं।

दूत—हां महाराज वैसे तो सब कुशल है, मगर आपको जल्दी बुलाया है।

भरत—अजब दीवाने से पाला पड़ा।

दूत—हाँ महाराज आपको जल्दी बुलाया है।

भरत—अरे जल्दी तो बुलाया है मगर कुछ कारण भी बताया है।

दूत—हां महाराज मैं भी तो यही कहता हूं कि आपको जल्दी बुलाया है।

शत्रुघ्न—भ्राता जी ! इस विवाद को छोड़ो और शीघ्र अयोध्या की तैयारी करो।

दूत—(जरा आगे होकर) हां महाराज मैं भी तो यही कहता हूं कि आपको जल्दी बुलाया है।

शत्रुघ्न—अच्छा जरा चुप रह अधिक बकवास न कर।

दूत—न महाराज इससे अधिक एक शब्द भी कह जाऊँ तो बेशक गर्दन उड़ा देना।

शत्रुघ्न—यह तो हमको पहले ही उम्मेद है।

भरत— (राजा केकय से) नाना जी ! यद्यपि आपका वियोग हमें अतीव असह है, परन्तु क्या करें इस समय ठहरना भी बहुत दुःसह है, इसलिए हमारी नमस्ते लीजिये और प्रसन्नता से आज्ञा दीजिये ।

राजा केकय-(दोनों को गले लगाकर) बेटा, यद्यपि मैं तुमको एक क्षण के लिए भी अपने नेत्रों से दूर नहीं कर सकता जाते ही अपनी कुशलता की खबर पहुँचाना और अधिक इन्तजार न दिखाना ।

योधा जीत—प्यारे भानजो ! तुम्हारी संगत में दिल हर समय मसरूर रहता था और दुःख-शोक कोसों दूर रहता था । इस समय न तुमको जुदा करने को जी चाहता है और न ठहराया ही जाता है । अच्छा जाओ मगर अधिक समय न लगाना और कुछ दिन रहकर जल्दी आ जाना ।

दूत—हां महाराज में भी यही कहता हूं कि आपको जल्दी बुलाया है ।

भरत शत्रुघ्न का अयोध्या में आना और नगर की हालत को देखकर व्याकुल होना । भरत का गाना (वतर्ज,बहरे कव्वाली)

अयोध्या पै आज यह रंज के आसार कैसे हैं ॥
पड़े चारों तरफ यह राख के अम्बार कैसे हैं ॥
शाही महलों पै चीलें आज क्यों मँडला रहीं इतनी ।

सभी छोटे बड़े यह रंज में सरशार कैसे हैं ।।
यह सूर्य वंश का झण्डा हुआ खम किसके मातम में ।
नहीं कुछ समझ में आता यह बद अत्वार कैसे हैं ।।
नगर में हर तरफ मातम ही मातम है नजर आता ।
पड़े सूने अयोध्या के सभी बाजार कैसे हैं ।।
जहां हर वक्त मेले की तरह हज्जूम रहता था ।
वहां पर आदमी बैठे हुए दो चार कैसे हैं ।।
यहां से रंजो ग़म का नाम कोसों दूर रहता था ।
नगर के लोग रोते आज बे अख्त्यार कैसे हैं ।।
अजब हैरान हूं मैं देखकर हालत तुम्हारी भी ।
मिजाजे दुश्मना 'यशवन्तसिंह' सरदार कैसे हैं ।।

नाटक

हैं ! हैं ! अयोध्या की हालत ऐसी अबतर क्यों है ? तमाम गली कूँचे बिल्कुल सुनसान पड़े हैं, सारे बाजार बिल्कुल वीरान पड़े हैं। राजमहलों पर आज चीलें क्यों मँडला रही हैं। यह अपशकुनियां तो किसी भारी उपद्रव का पता बता रही हैं। न मालूम आज किस का मातम हो गया जो सूर्य वश का झण्डा भी खम हो गया। अयोध्य, के तमाम बाजार उजाड़ पड़े हैं और जिधर देखो राख के अम्बार पड़े हैं। यही अयोध्या जहां हर समय कांधे से कांधा छिलता था और प्रत्येक गुजरने वाले को बड़ी

कठिनाई से रास्ता मिलता था, वहां न केवल आता जाता ही दिखाई नहीं देता, बल्कि किसी का बोल भी सुनाई नहीं देता।

शत्रुघ्न—बेशक लक्षण तो खराब ही नजर आते हैं, आप जल्दी से पिता जी के दीवान खाने की तरफ कदम बढ़ाइये।

(दोनों का दशरथ के दीवान खाने पर पहुंचना)

भरत—(द्वारपाल से) यह क्या कारण है कि तमाम नगरी की ऐसी दुर्दशा हो रही है?

द्वारपाल—(आंसू बहाकर) अफसोस आपकी अनुपस्थिति ने सब काम बिगाड़ दिया और हरी भरी नगरी को बिल्कुल उजाड़ दिया। वह कौनसी मनहूस घड़ी थी जब आप ननिहाल को तशरीफ ले गये, गोया अयोध्या की जड़ों में बारूद का पलीता दे गए। न आप यहां से तशरीफ ले जाते और न अयोध्या पर यह मुसीबत के दिन आते।

भरत—आखिर कोई कारण भी बताइए?

द्वारपाल—महलों में तशरीफ ले जाइए, वहां सब वृतांत मालूम हो जायगा।

केकई का रनवास

मन्थरा बाई जी! सुना है कि भरत जी आ गए।

केकई—आ गए तो अब तक कहां रहे! जरा जल्दी

उन्हें मेरे पास बुला ला।

मन्थरा—(हाथ का इशारा करके) ऐ लो वह सामने ही आ रहे हैं।

केकई—(दौड़कर भरत को गले लगाकर) बेटा तुमने बहुत दिन लगाए, कहो तुम्हारे नाना मामा तो राजी हैं ?

भरत—हाँ माता जी सब प्रकार से कुशल है मगर अब तक मुझको पिता जी के दर्शन नहीं हुए वह कहां हैं ?

केकई—बेटा धैर्य करो, सफर की थकान उतारो धीरे धीरे सब मालूम हो जायगा।

भरत—मेरी थकान पिता जी के दर्शन करते ही दूर हो जायगी।

केकई—पहले कुछ थोड़ा खा पी लो, फिर धीरे-धीरे सब हाल बता दूँगी।

भरत—मैं पूछता हूं पिता जी कहां हैं ? तुम कहती हो धीरे धीरे सब हाल बता दूँगी, यह मामला क्या है ?

केकई—तो कहती तो हूं कि धीरे-धीरे सब हाल बता दूँगी ?

भरत—आश्चर्य है कि जो बात तुम कहती हो वही उलझी हुई, जो प्रश्न करता हूं उसका टेढ़ा ही उत्तर मिलता है, यह धीरे-धीरे मालूम नहीं किस बला का नाम है ?

केकई—ओ हो बेटा ! तुम बहुत जल्दबाज हो गये। न मालूम ननिहाल में जाकर तुम्हारी तबियत में इतनी तेजी क्यों आ गई, मैं कह तो रही हूं कि धीरे-धीरे सब हाल

बता दूँगी।

भरत–(कड़क कर) क्या खाक बता दोगी, आग लगे तुम्हारी इस धीरे-धीरे को, न मालूम तुम सब ने मिल कर क्या जाल बिछाया है। दूत गया तो उसने 'तुम्हें जल्द बुलाया है' के सिवा दूसरा शब्द मुख से न निकाला। तुमसे पूछता हूं तो 'धीरे-धीरे' की बड़ हांक रही हो, बस जल्द बताओ कि पिता जी कहां हैं?

कैकई–(किसी क़दर सहम कर) बेटा तुम्हें वृथा ही बाल हठ चढ़ गया, मैं कह तो रही हूं कि धीरे......

भरत–(अति क्रोधित होकर) फिर वही "धीरे धीरे" की महारानी। माता जी! अगर अब की वार यह शब्द मुख से निकला तो तत्काल अपनी हत्या कर लूँगा। जल्दी बताओ पिता जी कहां हैं?

कैकई–बेटा! शोक कि तुम्हारे पिता स्वर्ग सिधार गये, अब तुमको उनके दर्शन नहीं हो सकते।

भरत–हैं पिता जी स्वर्ग सिधार गए, शोक कि मैं अन्तिम समय उनकी सेवा न कर सका। भाई रामचन्द्र जी व लक्ष्मण जी ही भाग्यवान हैं, जिनके हाथों में पिता जी ने प्राण त्यागे। अच्छा यह तो बताओ कि रोग क्या था।

कैकई–रोग तो कुछ नहीं था, बस 'हाय राम' 'हाय लक्ष्मण'

कहते हुए प्राण त्याग दिए ।

भरत-हैं हैं ! यह क्या कहा ? भाई रामचन्द्र और लक्ष्मण जी भी यहां उपस्थित नहीं थे ।

केकई-बेटा ! वह तो पहले ही बन को चले गये थे । उन्हीं की जुदाई में तो महाराज ने प्राण दिये । तुम्हें तो बल्कि याद तक नहीं किया ।

भरत—(सिर पीटकर) हाय ऐसा अनर्थ कि चार बेटों के होते हुए अन्तिम समय एक भी पास न हुआ । रामचन्द्र ने ऐसा कौनसा अपराध किया था जो बन में जाने पर विवश हुए, जरा स्पष्ट तो बताओ ।

केकई-बेटा वास्तव में तो बात यह है कि महाराज ने रामचन्द्र को राज तिलक देने की तैयारी की थी । मुझे तो खबर तक भी न थी । भला हो बेचारी मन्थरा का उसने मुझे कुल हाल से सूचित कर दिया । मैंने किसी समय महाराज से दो वचन पूरे करने का प्रण कराया हुआ था, अस्तु अवसर को उचित जान अपने वह दोनों वचन पूरे कराने के लिए मैंने उनको मजबूर किया, अर्थात् रामचन्द्र को चौदह वर्ष का बनवास और तुम्हारे लिए राज तिलक । यद्यपि उन्होंने मुझको टालने के लिए बहुत कुछ हाथ पांव मारे, मगर मैं बदस्तूर अपनी ज़िद पर अड़ी रही, आखिर तंग

आकर उन्हें रामचन्द्र को बन भेजना पड़ा, लक्ष्मण और सीता भी साथ ही गये। भला बेटा तू यह स्वयं ही विचार कर कि मैं यह कैसे गवारा करती कि रामचन्द्र तो राज करे और मेरा बेटा इस प्रकार मारा मारा फिरे। सो बेटा मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया, अब तुम जानो तुम्हारा काम।

मन्थरा—(दिल ही दिल में) तेरे इनाम का समय भी अभी है। अब देखती क्या है? हो आगे। (भरत से) हां हां कुँवर जी! महारानी जी सच कहती हैं, अब खुशी से राज सम्भालो और अपने दिल के अरमान निकालो।

शत्रुघ्न—(तलवार सूँत कर) ओ नमक हराम बदज़ात? यह सब तेरी ही आग लगाई है। ठहर तेरी तो खबर लेता हूं और तुझे इस खैरख्वाही का इनाम देता हूं।

भरत—(शत्रुघ्न का हाथ पकड़ कर) भाई जो कुछ होना था सो हो लिया और हमें अपने कर्मों को रोना था सो रो लिया। अब तबियत को टिकाओ और स्त्री पर हाथ उठाकर अपने कुल को दाग़ न लगाओ। (मन्थरा से) ओ हरामजादी चुड़ैल! जल्दी यहां से काफ़ूर हो जा और मेरी आंखों के सामने से दूर हो जा।

भरत और शत्रुघ्न का विलाप (बतर्ज़ तुम्हें रोती है प्रजा सारी)

हाय फूटी है किस्मत हमारी रे हाय,
हाय हाय फूटी है किस्मत हमारी।
छोड़कर हमको किसके सहारे,
ऐ पिता जी किधर को सिधारे।
की अकेले किधर को तैयारी रे हा, हाय हाय०
मुँह दिखाने लायक रहा न,
हाय कोई सहायक रहा न।
बात विधना ने कैसी बिगाड़ी रे हा, हाय हाय०
फँसी ऐसी जान मुश्किल में,
रह गया यह भी अरमान दिल में।
कर सके कुछ न ख़िदमत तुम्हारी रे हा, हाय हाय०
किया किसके सुपुर्द हाय हमको,
चल दिये ऐ पिता जी अदम को।
कौन लेगा खबरिया हमारी रे हा, हाय हाय०
राम मेरी न बिल्कुल सलाह ली,
हाय तुमने भी तो बन की राह ली।
आ गई आज किस्मत की हारी रे हा, हाय हाय०
हाय ईश्वर हमें भी उठाले,
ऐ पिता पास अपने बुला ले।
ज़िन्दगी से हमें मौत प्यारी रे हा, हाय हाय०

केकई–(भरत के आंसू पोंछकर) बस कर मेरे लाल, अब अधिक न रो।

भरत–(केकई का हाथ झटक कर) बस मेरे सामने से दूर हो।

केकई–बेटा! क्या तुझे मेरे से मोह नहीं रहा?

भरत—खबरदार जो मुझे बेटा कहा।

केकई–क्या अब मेरा बेटा बनने से भी इन्कार है।

भरत—मुझे तेरा बेटा कहलाने में सख्त आर★ है?

केकई–मेरी नेकी का बदला देने का समय आया तो अब यों भागेगा।

भरत—बदला तो तुझे तब मिलेगा जब भरत भी तेरी आँखों के सामने प्राण त्यागेगा।

केकई–यह कैसा बेहूदा ख्याल है।

भरत—ताकि तुझे भी मालूम हो जाये कि माता कौशल्या के दिल पर रामचन्द्र की जुदाई का किस कदर मलाल* है।

केकई–बेटा! ज़रा मेरी तरफ देख कि मैंने तेरे लिए किस कदर खून पसीना एक किया।

भरत—(दाँत पीस कर) ओ डायन! मैं तुझे एक बार कह चुका हूं, कि मुझे बेटा कहकर कलंक न लगा।

★लज्जा। *दुःख

फिर बार बार क्यों छाती जला रही है और वृथा विष से भरे तीर सीने पर चला रही है। ओ बेरहम! पिताजी के प्राण लिये, धर्मावतार भाई रामचन्द्र जी को बनवास दिलाया, सीता जी जैसी सतवन्ती पतिव्रता भावज का सब सुख नष्ट किया, मेरे प्राण से प्यारे भाई लक्ष्मण से जंगलों की खाक छनवाई, माता सुमित्रा और कौशल्या के कलेजे को छलनी किया, तमाम अयोध्या बरबाद करदी, रघुवंश का दीपक गुल किया। ओ पापन! इस कदर पाप करके भी तू मेरी माता बनकर मुझे भी इन पाप कर्मों में शरीक करना चाहती है। मुझ में तो इन में से एक का भी फल भुगतने की सामर्थ्य नहीं, बल्कि चिंतन करने से ही आत्मा कांपती है। मगर तुझे लेश-मात्र भी ध्यान नहीं, बल्कि तुझे तो रंग पर रंग चढ़ रहा है। ओ जालिम! यद्यपि मेरा दिल पवित्र है, मगर दुनिया का मुँह कौन पकड़ सकता है। जिसके सामने जाऊँगा वह यही ताना देगा कि आ गया है केकई का बेटा! दुनियां में जब कोई पाप करेगा तो लोग यही कहेंगे कि इसने तो केकई के बेटे भरत को भी मात कर दिया। ऋषि मुनि अलग धिक्कारेंगे, जो मिलेगा वही मेरे मुख पर थूकेगा। बात बात पर लोग कहेंगे कि आखिर तो केकई का बेटा है। हाय हाय! माता कौशल्या

को भी यही निश्चय होगा कि यह सब कुछ भरत की ही शरारत से हुआ है। हाय! हाय!! ओ हत्यारी! इस से तो यही भला था कि पैदा होते ही मुझे गला घोंट कर मार देती, ताकि यह आज का दिन देखना तो नसीब न होता। हाय क्या करूँ, मुझको तो रामचन्द्र जी की नाराजगी का ख्याल है, वरना तेरी जैसी माता के साथ जो कुछ कर गुजरता थोड़ा था।

शत्रुघ्न-(धायें मार कर) हाय पिता जी! आपके मरते ही तमाम जमाना शत्रु हो गया, भाई रामचन्द्र भी उपस्थित नहीं, अब कौन है जो हमारी धीर बँधाये।

भरत-(शत्रुघ्न को गले लगा कर) प्यारे बन्धु! तुम्हारे लिए तो रामचन्द्र मैं उपस्थित हूं। रामचन्द्र नहीं तो मेरे लिए नहीं। तुम क्यों रोते हो? उठो भाई सबर करो, चलो उस बेचारी, मुसीबत की मारी, महा दुखियारी माता कौशल्या जी और सुमित्रा जी की खबर लें।

कौशल्या का महल या शोक भवन

(कौशल्या जी पड़ी हुई आहें भर रही हैं और सुमित्रा जी उनकी दिलजोई कर रही हैं कि अचानक किसी को अपने पांव पर पड़ा हुआ पाया)

कौशल्या-अरे यह कौन है?

सुमित्रा-प्यारी बहन उठो, पहचानो तो सही कि कौन है?

कौशल्या–हाय कैसे उठूँ, उठा भी जाय ?

सुमित्रा–जरा आंखें खोलो और पहचानों।

कौशल्या–(ठण्डी आहें भर कर) आह! आंखें होती तो रोना ही क्या था, अब आंखें किसकी लाऊँ :–

देखने के थे जो साधन वह तो सारे चल दिये।
खाली गोलक रह गई, आंखों के तारे चल दिये॥

भरत–(रो कर) माता जी! आपका महानीच पापी और अधर्मी बेटा भरत।

कौशल्या–(जल्दी से उठकर) हैं, हैं, भरत!

भरत–हां माता जी, नामुराद भरत।

कौशल्या–(कले लगा कर) अच्छा मेरे लाल चिरंजीव रहो, कहो बेटा कब आये ?

भरत–(हिचकियां लेता हुआ) चुप।

कौशल्या–बेटा चुप क्यों हो, कुछ मुख से तो बोलो, क्या मुझ से रुष्ट हो ?

भरत–चुप।

कौशल्या का गाना (बहरे तवील)

॥ दोहा ॥

ऐ बेटा अब चैन से जाय सम्हालो राज।
तेरे मन की कामना पूरी हो गई आज॥

अब करो चैन से राज बेटा भरत,
रामचन्द्र तो बन में पहुँचा ही दिये ।
तेरे मन की मुरादें सब पूरी हुईं,
तेरी माता ने यह गुल खिला ही दिये ।
तेरे दिल में न अब कोई खटका रहा,
रामचन्द्र का कांटा न अटका रहा ।
अब क्यों खामोश हो के ठिठका रहा,
मेरे सीने पै खंजर चला ही दिये ।
अब करो चैन से राज० ॥
यदि मेरी भी सूरत सुहाती नहीं,
तो मुझे जिन्दगी खुद ही भाती नहीं ।
क्या करूं मौत भी मेरी आती नहीं,
मैंने अपने यतन सब बना ही लिये ।
अब करो चैन से राज० ॥
रामचन्द्र को वापस अब आना नहीं,
और लक्ष्मण ने हिस्सा बटाना नहीं ।
एक मैं हूं सो मेरा ठिकाना नहीं,
मौत ने आके डेरे लगा ही दिये ।
अब करो चैन से राज० ॥
रह गई जिन्दा तो भी मरे से परे,
खौफ मेरी तरफ का न हरगिज करे ।

जो यह चाहता है कौशल्या जल्दी मरे,
जहर के घूँट क्यों न पिला ही दिए।
अब करो चैन से राज०
हो रही अब मेरी हालते जार है,
दोष कर्मों का तेरे क्या अखत्यार है।
अच्छा ईश्वर तुम्हारा मददगार है,
केकई ने तो फन्दे फैला ही दिए।
अब करो चैन से राज०
न किसी की मदद के हो मोहताज तुम,
बन गये अवध के हो महाराज तुम।
जाओ बेटा खुशी से करो राज तुम,
भेद 'यशवन्तसिंह' ने बता ही दिए।
अब करो चैन से राज बेटा भरत० ॥

नाटक

बेटा! अब तो तेरा मनोवांछित काम हो गया और अयोध्या का कुल राज तेरे नाम हो गया। जो कुछ तू चाहता था वह तुझे मिल गया और रामचन्द्र का कांटा भी तेरे दिल से निकल गया। कहो अब किस बात का विचार है, अब तू ही अयोध्या का मालिक व मुखत्यार है। हां यदि मेरी सूरत नहीं सुहाती तो मुझे जिन्दगी खुद

नहीं भाती, मगर क्या करूँ यह बेशरम जान भी निकलन में नहीं आती। अगर कुछ खाकर मरती हूं तो आत्महत्या का पाप होता है, अगर जिन्दा रहती हूं तो तेरी जान को सन्ताप होता है। मगर तसल्ली रख अब मैं अधिक दिन तक जिन्दा रहने न पाऊँगी और खुद ही ग़म में घुल घुल कर मर जाऊँगी। अगर न भी मरी तो तेरे काम में मेरे जिन्दा रहने से कोई खलल नहीं आ सकता, अगर रामचन्द्र का ख्याल हो तो वह चौदह साल से पहले किसी हालत में भी शकल नहीं दिखा सकता। जाओ मौज उड़ाओ और अपने मन के मंगल गाओ।

भरत गाना (बहरे कव्वाली)

॥ दोहा ॥

ऐ माता मेरे जिगर में मती लगावे आग।
पापन के पैदा हुआ फूटे मेरे भाग॥

तेरे चरणों की सौगन्ध माता मुझे,
इस शरारत का बिल्कुल पता ही नहीं।
यों ही इल्ज़ाम दो तो तुम्हारी खुशी,
वरना इसमें मेरी कुछ खता ही नहीं।
तेरे चरणों की० ॥

राम को भेज वन में करूँ राज मैं,

मेरे दिल का तो मुद्दआ हा नहीं।
माता कैसे दिलाऊँ मै तुमको यकीन,
बिना ईश्वर के कोई गवाह ही नहीं।
तेरे चरणों की० ॥
यों ना घायल करो बोलियां मार कर,
काट लो सिर मुझे कुछ गिला ही नहीं।
माता सिर है मेरा और खंजर तेरा,
लेना इसमें किसी की सलाह ही नहीं।
तेरे चरणों की० ॥
राम मौजूद होते अगर इस जगह,
मैं समझता पिता जी मरे ही नहीं।
एक तेरा सहारा था बाकी मुझे,
हाय तुमको भी आती दया ही नहीं।
तेरे चरणों की० ॥
त्यागता हूं प्राण अब तेरे सामने,
जिन्दगी की मुझे कोई चाह ही नहीं।
हाय एक दम मुसीबत पड़ी आन कर,
कोई दुनिया में दर्दी रहा ही नहीं।
तेरे चरणों की० ॥
मौत पड़ती है आते हुए मौत को,
मिलती इसको अयोध्या की राह ही नहीं।

जान भी तो भरत की निकलती नहीं,
हाय मुझसा कोई बेहया ही नहीं।
तेरे चरणों की० ॥
काला मुँह करके जाता वहीं से निकल,
मैंने ननिहाल में यह सुना ही नहीं।
तेरे सर की कसम यहाँ न रखता कदम,
मुझको 'यशवन्तसिंह' ने कहा ही नहीं।
तेरे चरणों की० ॥

नाटक

माता जी! न जाने भरत से कौन सा खोटा कर्म हो गया, जो आप जैसी सुशील और धर्मात्मा माता को भी मेरी निस्बत ऐसा भ्रम हो गया। माता जी! मुझको आपके चरणों की सौगन्ध है जो मुझसे कभी इस प्रकार का जिक्र अजकार भी हुआ हो या मेरी जबान से कभी ऐसे विचारों का इजहार भी हुआ हो। अगर मुझको इस षडयन्त्र का पता तक भी हो तो भी आपका कसूरवार हूं, और इस पाप के बदले जिन्दा जल मरने को तैयार हूं माता जी क्या आपको विश्वास है कि मैं भाई रामचन्द्र को बनवास दिलाऊँ और स्वयं अयोध्या में रहकर ऐश उड़ाऊँ? हाय माता जी आपको यह यकीन हो गया कि भरत का हृदय ऐसा मलीन हो गया। माता जी!

यह मेरी ही खोटी तक़दीर है जो भरत आपकी नजरों में इस कदर हकीर है। अफ़सोस पिता जी के मरते ही चारों ओर विपत्तियों के बादल छा गये और निःसन्देह अब इस कुल के अन्तिम दिन आ गये। यदि भाई रामचन्द्र जी उपस्थित होते तब भी जिन्दगी के दिन काटने आसान थे, क्योंकि वह मुझको पिता के समान थे। किन्तु शोक कि वह भी मुँह मोड़ गये और मुझ बदनसीब को यह दुःख सहने के लिए छोड़ गये। आप पर पूरी उम्मेद थी कि मुसीबत में धीर बँधायेंगी और अपना दया का हाथ मेरे सिर पर से न उठायेंगी। मगर आप तो पहले ही कड़वे करेले तोड़ रही हैं और इस सारी शरारत का भांडा मेरे ही सिर फोड़ रही हैं। अच्छा माता जी आपको अधिकार है, जो कुछ दोष लगायें भरत सब कुछ सहन करने को तैयार है। न उस पापन के पेट से पैदा होता, न मेरे बारे में आपका ख्याल ऐसा उल्टा और बेकायदा होता। मगर इस प्रकार घायल करने की बजाय अगर तलवार से मेरी गर्दन उड़ादो तो बड़ी मेहरबानी हो ताकि जान निकलने में तो आसानी हो। माता जी! परमेश्वर के वास्ते इस बेरहमी से तो मेरी जान न निकालो और ऐसे गहरे जख्म तो कलेजे में न डालो। हाय हाय मेरी मौत भी मुझ से डर रही है और इसे यहाँ आते न जाने

मौत पड़ रही है। हे परमेश्वर मुझे मौत की खैरात दो, और तो सब शत्रु हो गये मगर आप तो मेरा साथ दो। हाय पिता जी जरा अपने भरत का...

कौशल्या का विलाप करना (वह्‌रे तबील)

ऐ बेटा तुझे क्या हुआ, आंख खोल मेरे लाल,
मुझ दुखिया का इस घड़ी कहां चला गया काल।
बेटा रो रो के नाहक न जी को जला,
माता सदके तुम्हारे है वारी गई।
मैंने दिल को दुखाया तेरे लाडले,
वास्तव में अकल मेरी मारी गई।
बेटा रो रो के० ॥
मेरी आंखों का तारा दुलारा भरत,
ज़िन्दगी का सहारा हमारा भरत।
रामचन्द्र से भी मुझको प्यारा भरत,
देख तुझको विपत भूल सारी गई।
बेटा रो रो के० ॥
मैं तो पहले ही मारी हुई राम की,
जिन्दगी यह रही न किसी काम की।

*यद्यपि इस जगह गाना शब्द प्रयोग में लाना अनुचित है किन्तु इसमें केवल गद्य और पद्य का भेद बताना है।

आश थी एक बेटा तेरे नाम की,
आज वह भी मेरे से बिसारी गई।
बेटा रो रो के० ॥

क्यों पड़े हो जरा आंख खोलो भरत,
तेरी माता बुलाती है बोलो भरत।
जहर में और मत जहर घोलो भरत,
मुझ से वह ही विपत न सहारी गई।
बेटा रो रो के० ॥

लाल मेरे कहां पर बसेरा किया,
छोड़ मुझको कहाँ जाके डेरा किया।
हर तरह से मुसीबत ने घेरा किया,
एक दम फूट किस्मत हमारी गई।
बेटा रो रो के० ॥

अपने हाथों की लकड़ी दिला जा भरत,
मुझे रख कर चिता में जला जा भरत।
जी चाहे फिर वहाँ को चला जा भरत,
मेरी आंखों में क्यों धूल डारी गई।
बेटा रो रो के० ॥

बेटा मेरे लिये तो तू ही राम है,
तेरे होते मुझे सारा आराम है।

तेरे दम से अयोध्या स्वर्गधाम है,
वरना इज्जत हमारी तुम्हारी गई।
बेटा रो रो के० ॥

नाटक

हैं! हैं!! मेरे लाल तुझे क्या हुआ! बेटा मैंने व्यर्थ तेरे कोमल हृदय को दुखाया और अपनी मूर्खता से तेरी जान को इतना दुःख पहुँचाया। वास्तव में मैंने बड़ा पाप किया, जो तुझ निर्दोष को इतना दुःख दिया। परन्तु मेरे कहने का कुछ ख्याल न कर और वृथा अपनी आत्मा पर इतना मलाल न कर, क्योंकि मैं इस समय अपने होशो-हवास बिल्कुल खोये बैठी हूं और अपनी समस्त आशाओं से हाथ धोये बैठी हूं। मेरे लाडले! क्या तुम इसलिये ननिहाल से आये थे कि मेरी विपत्तियों को और भी दोबाला करो और जाती दफा भी मेरा ही मुँह काला करो! बेटा! मैं तो पहले ही अपनी किस्मत को रो रही थी, और रामचन्द्र की जुदाई में ही प्राण खो रही थी, मगर इस उम्मेद पर जीवित थी की भरत के आश्रय ही अपनी जिन्दगी के दिन गुजार लूंगी और उसके सहारे से इस सदमे को सहार लूंगी। अफसोस कि तुम मेरी रही सही जिन्दगी को तबाह कर रहे हो और न जाने कहां जाने की सलाह कर रहे हो। मेरे बछड़े! पहले अपने हाथों से मेरा

अन्त्येष्टि संस्कार कर जा, फिर जहां तेरा दिल चाहे चला जा। भरत! मेरे प्यारे भरत! बेटा जरा जबान तो हिलाओ और मुझे एक बार माता कह कर तो बुलाओ। देख तो सही तेरी दुखिया माता कितनी देर से तेरे सिरहाने बैठी रो रही है। बेटा तू तो मुझे दूर से देख कर माता माता कहकर लिपट जाया करता था और मुझे जरा सा शोकातुर देखकर तमाम दिन रोटी न खाया करता था, मगर बावजूद मेरे बुलाने के होंठ भी नहीं हिलाता। मेरे बच्चे! मुझसे अब तेरा दुःख देखा नहीं जाता। (दुपट्टे के आंचल से भरत का मुँह पोंछ कर) बेटा परमेश्वर के वास्ते मेरा अपराध माफ करो, अब तो उठकर हाथ मुंह साफ करो। (गर्दन हिलाकर) भरत! भरत! उठो बेटा! अब तो बहुत हो चुकी, (सुमित्रा से) किसी को भेजना कि शीघ्र ही वैद्य जी को बुला कर लाये, मेरे भरत की हालत तो कुछ अबतर ही होती जाती है।

सुमित्रा—(निकट आकर) नहीं नहीं, तुम वृथा इस कदर गम कर रही हो और व्यर्थ दूसरों का हौसला भी कम कर रही हो, परमेश्वर की दया से भरत बिल्कुल तन्दुरुस्त है, केवल बेहोशी के कारण नाड़ी की हरकत जरा सुस्त है। मैं अभी लखलखा बना कर सुँघाती हूं और तुम्हारे देखते ही देखते होश में लाती हूं।

कौशल्या–ज़रा जल्दी जाओ और अधिक विलम्ब न लगाओ।

सुमित्रा–(लखलखा सुंघा कर) बेटा भरत उठो! क्षत्री होकर ऐसी कायरता।

भरत–(किसी कदर आंखें खोलकर) बस माता जी क्षमा कीजिये, मुझे अब न जिन्दगी का चाह है और न मौत की परवाह है। जबकि मेरी माता के निकट मेरा जीवन नाक़ाबले ऐत-बार है, तो ऐसी बेशर्मी की जिन्दगी पर धिक्कार है।

कौशल्या–(भरत को गले लगाकर) बेटा मैंने अपनी मूर्खता का फल पा लिया और बहुत रंजोग़म उठा लिया। परमे-श्वर के वास्ते ज़रा अपनी तबियत को संभालो और इन वाहियात विचारों को दिल से निकालो।

वशिष्टजी–बेटा! पहले महाराज के शव* का अन्त्येष्टि संस्कार करना चाहिए और जिस सामान की ज़रूरत हो वह जल्दी तैयार करना चाहिए।

भरत–(क्रोधित होकर) गुरु जी! अफ़सोस है कि आप की उपस्थिति में ऐसे-ऐसे अत्याचार होते रहे, मगर न मालूम आप किस गहरी नींद में सोते रहे।

वशिष्ट जी—बेटा! जो कुछ तुम कहते हो सब सच है

---

*महाराज दशरथ के मृतक शरीर को आवश्यक जानकर भरत के आने तक रख लिया गया था।

हमारी सब चतुराई खाक में मिल गई और वही बात पूरी हुई जो कैकई की जबान से निकल गई। खैर इन गई गुजरी बातों का क्या जिकर करना है, पहले महाराज के दाह का फिक्र करना है।

महाराजा दशरथ के शव पर भरत और शत्रुघ्न का विलाप

(रागनी आशा ताल छप)

कौन बँधावे धीर पिताजी, आज हुआ चहुँ ओर अंधेरा।
दुश्मन हो गई दुनिया सारी, हाय पिता जी आज हमारी।
फूट गई तकदीर पिता जी, आज हुआ चहुँ ओर०
छोड़ा हमको किसके सहारे, सिर पर अब है कौन हमारे।
भ्राता हुए फकीर पिता जी, आज हुआ चहुँ ओर०
नहीं भरोसा हमें जान का, निश्चय ही इस खानदान का।
आ गया वक्त आखीर पिताजी, आज हुआ चहुँ ओर०
देखे कौन अब दीन अवस्था, राम लिया जंगल का रस्ता।
न रहे लछमण वीर पिता जी, आज हुआ चहुँ ओर०

नाटक

कौशल्या—बेटा! अब इस रंजोगम को दूर करो, जो मैं कहती हूं उसे मंजूर करो, तुम देखते हो इस समय अयोध्या का तख्त बिल्कुल खाली है, इसका न कोई वारिस है न वाली है। तमाम नगरी वीरान हो रही है और प्रजा अलग

परेशान हो रही है। अब रोना बन्द करो और कुछ राज का भी प्रबन्ध करो। जो कुछ हो चुका उसका अब वृथा अफ़सोस है और इसमें न कुछ केकई का दोष है। हमको अपने कर्मों का फल पाना था और उस बेचारी का तो बीच में ही बहाना था। बल्कि वह रामचन्द्र को मुझसे अधिक चाहती थी और उसके पसीने के बदले अपना खून बहाती थी। इसी तरह रामचन्द्र भी उसपर अपनी जान निसार करता था और मुझसे अधिक उसके साथ प्यार करता था। मगर भावी के चक्र ने सबके दिमाग को हिला दिया और घर को घर के चिराग ने ही जला दिया। किन्तु खैर अब तक भी कुछ नहीं बिगड़ा तुम अपनी तबियत को टिकाओ और इस कुल को आगामी विपत्तियों से बचाओ। अगर दूसरे दुश्मन सुन पायेंगे तो अवश्य मुँह में पानी भर लायेंगे क्योंकि :—

नापत, बहुपत, बालपत, पत्नी पति परदेश।
इस पुर की तो क्या कहूं, पर पुर में भी क्लेश।

अर्थात् एक तो जिसका स्वामी न हो, दूसरे जिसके अधिक स्वामी हों, तीसरे जिसका स्वामी नादान हो, चौथे जिस स्त्री का स्वामी परदेश में हो, उसको इस लोक का तो जिकर ही क्या परलोक में भी क्लेश ही रहता है।

इसलिए अब स्थिर चित से काम करो और सावधान होकर राज का इन्तजाम करो।

भरत (गाना)

जुदाई राम की हरगिज गवारा कर नहीं सकता।
बिना रघुवीर के पल भर गुजारा कर नहीं सकता॥
जिस्म और जान का सम्बन्ध है रघुनाथ से मेरा।
किसी हालत में मैं उनसे किनारा कर नहीं सकता॥
करूँ मैं ऐश महलों में भटकते वह फिरें वन वन।
कभी मन्जूर यह हृदय हमारा कर नहीं सकता॥
क़स्म है राजगद्दी पर क़दम रखना मुझे माता।
किसी हालत में यह कहना तुम्हारा कर नहीं सकता॥
अभी जाता हूं वन में खोज लेने रामचन्द्र की।
भरत को रामचन्द्र से न्यारा कर नहीं सकता॥
बनेगा जिस तरह वापिस उन्हें लाऊँ अयोध्या में।
मुझे मायूस वह मेरा प्यारा कर नहीं सकता॥
यह है विश्वास कि वह मान लेवेंगे मेरा कहना।
नहीं तो आपका दर्शन दोबारा कर नहीं सकता॥
भला ताक़त है किसकी जो नजर भर कर इधर देखे।
अयोध्या की तरफ कोई इशारा कर नहीं सकता॥
किसी प्रकार से इस पाप का 'यशवन्तसिंह' हरगिज।
जन्म जन्मान्तर में भी कुफ़ारा कर नहीं सकता॥

नाटक

माता जी! यह आप क्या फरमा रही हैं और मुझको
क्यों पाप के गढ़े में गिरा रही हैं। मैं किसी अवस्था में
भी आपकी यह आज्ञा मन्जूर नहीं कर सकता और कोई
व्यक्ति मुझको इस कार्य के लिए मजबूर कर नहीं सकता।
आप तो राज के लिए कहती हैं मगर मुझको अयोध्या में
रहना ही भार है, और एक एक पल गुजारना सख्त दुश्वार
है। राजा वह कहला सकता है जिस की जिन्दगी प्रजा के
लिए एक मिसाल हो, न कि भरत जिसके बारे में प्रजा
को पहले ही बदगुमानी का ख्याल हो। मैं देख रहा हूं
कि हर छोटे बड़े की मेरी ओर नफरत की निगाह
है, गोया उनके ख्याल में मेरी इस साजिश में पूरी सलाह
है। अगर आपके कहने पर अमल करूँ तो उनका सन्देह
विश्वास में तबदील हो जायगा और भरत सब की नजरों
में जलील हो जायगा। मेरे ऐसा करने से जो कुछ प्रभाव
प्रजा पर होगा वह साफ जाहिर है, जिसका दूर करना
मेरे अखत्यार से बाहर है। जब प्रजा को स्वयं मेरे
जीवन पर शक होगा तो मुझे उनको किसी पाप के दण्ड
देने का क्या हक होगा। इसके अतिरिक्त दूसरे राज्य मेरी
अलग तहकीर करेंगे और मेरी प्रजा के प्रत्येक पाप को मेरे
नाम से ताबीर करेंगे। बात बात में यह ताना मिलेगा कि

आखिर तो उस भरत की प्रजा है जिसने बड़े भाई का हक छीन कर बेचारे को घर से निकलवाया, इत्यादि, इत्यादि।

वास्तव में राजा के हर एक काम का प्रजा पर विशेष प्रभाव होता है और राजा के आदेशानुसार चलन प्रजा का आम स्वभाव होता है। 'यथा राजा तथा प्रजा' एक प्रसिद्ध बात है। इसके अतिरिक्त रामचन्द्र जी हर तरह से राज्य के हकदार हैं, इसलिये उनकी अनुपस्थिति में राजगद्दी पर पांव रखने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। इसी समय जंगल में जाऊँगा, यदि वे मेरे कहने पर वापिस आ गये तो बेहतर, नहीं तो चौदह वर्ष तक मैं भी आपको शक्ल नहीं दिखाऊँगा। केकई को तुरन्त बदला मिल जायगा जब कि उसका बेटा उसकी आंखों के सामने जंगल को निकल जायगा ताकि उसे मालूम हो जाये कि किसी माता को अपने पुत्र की जुदाई का किस कदर मलाल होता है और उसका इस अवस्था में क्या हाल होता है।

वशिष्ठ जी—भरत जी! निस्सन्देह आपका विचार तो अति उत्तम और पवित्र है और रामचन्द्र जी से अधिक आपका कौन मित्र है। उनका वियोग आपके लिये कोई थोड़ा दुःखदायक नहीं, क्योंकि इस समय उनके बिना आपका

कोई सहायक नहीं। इसमें भी सन्देह नहीं कि राजगद्दी का भी उन्हीं का अधिकार है और यह भी आपका बड़ा श्रेष्ठ विचार है। परन्तु उनका अब बापिस आना महान कठिन है और आपका वृथा ही प्रयत्न है। अगर वह मानने वाले होते तो हम ही बहुतेरा मना लेते और आप से भी अधिक युक्ति बना लेते। कौशल्या जी ने बहुतेरा जोर लगाया, सुमित्रा जी ने बहुत कुछ समझाया परन्तु उनके धैर्य में किंचित मात्र भी फर्क नहीं आया। महाराज ने इसी क्लेश में जान खो ली, सारी प्रजा रोती रोती पीछे हो ली। सब नर नारी रथ के आगे पड़ते जाते थे। परन्तु वह उसी वेग से आगे बढ़ते जाते थे। मन्त्री जी, शृंगवेरपुर तक साथ गये, परन्तु बापिस लाने में वह असमर्थ रहे। जब इतना परिश्रम करने पर भी वह वापिस न आये तो किसकी सामर्थ्य है जो उन्हें मना लाये? कौशल्या और सुमित्रा से अधिक आपका प्रभाव नहीं पड़ सकता। इसलिये इन विचारों को दिल से निकालिये। और चौदह वर्ष तक तो आप ही प्रजा को सँभालिये। यदि आप भी उनके साथ बन को जायेंगे तो अयोध्या को इस अवस्था में कदाचित न पायेंगे।

भरत–गुरु जी! अगर रामचन्द्र जी की निस्बत आपका ऐसा विश्वास है तो समझ लीजिये कि भरत को भी

चौदह साल के लिये बनवास है। चाहे कितना ही गया गुजरा और भ्रष्ट इन्सान हूं, मगर आखिर तो उसी पिता की सन्तान हूं। यद्यपि मैंने माता कौशल्या का दूध नहीं पिया है मगर कम से कम जन्म तो उसी घर में लिया है। अगर रामचन्द्र जी ने अपना धर्म पालन करने में इस तरह दृढ़ता दिखाई है, तो भरत भी उनका भाई है। जान पर खेल जाना मेरे लिए आसान काम है, मगर राजगद्दी पर कदम रखना बिल्कुल हराम है। आप बातों बातों में नाहक देर न कीजिये और मुझे शीघ्र ही आज्ञा दीजिये।

कौशल्या—बहुत अच्छा, अगर तुम्हारा यही इरादा है तो हम भी साथ जायेंगी और नहीं तो एक दफा उनका मुखड़ा ही देख आयेंगी।

०:—*—:०

चौदहवां दृश्य

(१) शृंगवेरपुर

एक मनुष्य—(राजा गुह से) महाराज ! आपके मित्र श्री रामचन्द्र जी का भाई भरत बेशुमार सेना लिए आ रहा है।

गुह—कुछ मालूम है किधर को जा रहा है ?

वही मनुष्य—आम तौर पर तो यही अफवाह है कि रामचन्द्र जी को वापिस लाने की सलाह है।

गुह–यदि वास्तव में इसी विचार से आया है, तो इस क़दर फ़ौज क्यों लाया है।

वही मनुष्य–बेशक! यह बात तो अवश्य गौर-तलब है, कि इस क़दर सेना को साथ लाने का क्या मतलब है? कहीं मुँह में राम बगल में ईटों वाला मामला न हो।

गुह–हां कुछ आश्चर्य नहीं आखिर केकई का बेटा है। बात प्रसिद्ध है 'माँ पर पूत पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा'। शायद पीछे से अकल आई हो या किसी ने बात सुझाई हो कि कहीं रामचन्द्र इधर उधर से सहायता लेकर चढ़ाई न कर दे और तुम्हारी वैसी ही सफ़ाई न कर दे, इसलिए यह कांटा निकाल कर ही सुख की नींद सो जाऊँ और सर्वदा के लिए निश्चिन्त हो जाऊँ।

वही मनुष्य–सम्भव है यही बात हो और उसका ख्याल ऐसा ही वाहियात हो।

गुह–खैर, कुछ भय नहीं, मैं अभी जाता हूं और उसकी मंशा दरियाफ्त करके आता हूं। तुम अपनी तमाम फौज को तैयार करो और मेरे आने का इन्तजार करो। अगर उनका दिल साफ़ है तो हमें भी उसकी नेकनीयती का ऐतराफ़ है। इसके विरुद्ध यदि उसकी नीयत में ज़रा भी खलल है, तो इस हालत में उसका

यहाँ से जिन्दा जाना सख्त मुश्किल है। एक एक का सिर धड़ से जुदा कर दूँगा. और दोस्ती का हक अदा कर दूँगा।

तमाम भील—(तलवारों के कब्जों पर हाथ रख कर) जब तक जान में जान है, एक एक भील बच्चा आपके और रामचन्द्र जी के कदमों पर कुर्बान है। केवल आपकी आज्ञा का इन्तजार है, फिर भरत की फौज है और हमारी तलवार है।

(२) भरत और गुह

गुह का गाना

कहिये भगवन किधर की तैयारी है।
किस दुश्मन पर हुई है सख्ती,
किसकी आगई आज कमबख्ती।
चली किधर को सवारी है, कहिये भगवन०॥
इतनी फौजें और यह लश्कर,
किधर चले हैं कमरें कस कर।
सेना किधर को संवारी है, कहिये भगवन०॥
मुझको कुछ सेवा फरमाइये,
हाजिर हूं इमदाद जो चाहिये,
आज्ञा की बस इन्तजारी है, कहिये भगवन०॥
ऐसे थे कहां भाग हमारे,

इस नगरी में आप पधारे ।
आज किस्मत ही अच्छी हमारी है ॥कहिये भगवन०॥
आज्ञा दो ताकि मैं जाकर,
लाऊँ अपनी फौज चढ़ा कर ।
पल पल मुझको भारी है ॥ कहिये भगवन० ॥

नाटक

भगवन् ! कहिये किधर की चढ़ाई है और किस कम्बख्त की शामत आई है, जो आपसे छेड़ छाड़ की समाई है। फौजों की संख्या साफ बता रही है कि आपकी सेना किसी भारी मुहीम पर जा रही है। यद्यपि परमेश्वर की दया से आपके पास पहले से भी ज्यादा ताकत है और मेरा किसी प्रकार की सहायता के लिये निवेदन करना एक वृथा सी हिमाकत है, तथापि तख्त अयोध्या का एक तुच्छ जांनिसार हूं और समय पड़ने पर सिर देने को तैयार हूं। आप इसी जगह कयाम कीजिये और कुछ दिनों तक इस नगरी में विश्राम कीजिये। केवल उसका नाम बता दें और वह मुकाम जतला दें। जब आपका जांनिसार हर समय सिर देने के लिए तैयार है तो आपकी किसी प्रकार की चिन्ता करना बेकार है।

भरत का गाना

आज किस्मत से अपनी लड़ाई है ॥

बाहर का नहीं दुश्मन कोई ।
कर्म गति ने हुरमत खोई,
गरदिश की हम पर चढ़ाई है ।
आज किस्मत से०

प्रारब्ध में लिखी फकीरी,
हो गई हम से विदा अमीरी ।
दुश्मन हुई सब खुदाई है,
आज किस्मत से०

पिता मरे, दुश्मन हुई माता,
साथ छोड़ गये दोनों भ्राता ।
आंखों में अन्धेरी छाई है,
आज किस्मत से०

अवधपुरी है व्याकुल सारी,
दुखिया हो रहे सब नर नारी ।
पापों ने दुरगत बनाई है,
आज किस्मत से०

चला राम को वापिस लाने,
दुनियां माने या न माने ।
दिल में यही धुन समाई है,
आज किस्मत से०

नाटक

मित्रवर ! न किसी शत्रु पर चढ़ाई है और न किसी बाहर के दुश्मन से लड़ाई है, वरन काल चक्र से भरत की किस्मत ही चक्कर में आई है। स्वयं मेरी माता ने यह पाप का बीज बो दिया और मुझे दीन व दुनियां से खो दिया। मेरी अनुपस्थिति में भाई रामचन्द्र जी को बनवास दिलवाया और उन्हें बेगुनाह घर से निकलवाया। उधर उन्होंने बन की सलाह की, इधर पिता जी ने स्वर्ग की राह ली। लक्ष्मण जी अपने भ्रातृ कर्त्तव्य को निभा गये और वह रामचन्द्र जी के हमराह गये। सब के सब मेरी रिफाकत से मुँह मोड़ गये और मुझ बदनसीब को यह दुःख सहने के लिए छोड़ गये। यदि रामचन्द्र जी का साया भी सिर पर होता तो मैं कदापि अपनी किस्मत को न रोता। मगर वह तो हर तरह से अपने आपको आजाद कर गए और मुझे सर्वदा के लिए बरबाद कर गए। इसके अलावा दुनिया की बदगुमानी अलग सितम ढा रही है और इस सारी कारस्तानी का जुम्मेवार मुझे ही ठहरा रही है। गरज कि हर तरह से जमाना दर पै आजार हो रहा है और प्रत्येक अपना बेगाना मेरी सूरत से बेजार हो रहा है। हर समय जान को क्लेश है, बल्कि जिन्दगी और मौत का सवाल दरपेश है। अब रामचन्द्र जी की सेवा में

उपस्थित होकर उन्हें अपना दुःख दर्द सुनाऊँगा और जैसे हो सकेगा उनको वापिस लाऊँगा।

गुह—आपका ख्याल निहायत मुबारिक ख़्याल है, मगर इस कदर फौज व लश्कर के लिये रास्ता मिलना सख्त मुहाल है। दूसरे इस कदर झमेलों को देख हर एक मनुष्य हैरान होता है और उसका यही गुमान होता है कि भरत के दिल में अवश्य कदूरत है, वरना रामचन्द्र जी को वापिस लाने के लिए इस कदर फौज लाने की क्या जरूरत है।

भरत—आपका फरमाना बिल्कुल सही है और आपने एक-एक बात लाख-लाख रुपये की कही है। मैंने कदापि किसी को साथ लाने के लिए नहीं कहा, वरन इस वक्त तक भी हर एक को रोकता रहा। मगर तमाम अयोध्या रामचन्द्र जी की जुदाई में ऐसी बेक़रार है कि उन्हें एक एक पल गुजारना भी सख्त दुश्वार है। अस्तु इस समय तक भी उनकी आमद का सिलसिला बदस्तूर जारी है और इस कदर हजूम को देख कर दुनियां को सच्ची बेऐतबारी है। मगर क्या करूँ खुद मजबूर हूं और इनको साथ लाने में बिल्कुल बेकसूर हूं। हां तीनों माताओं के साथ होने के कारण कुछ सेवक जरूर साथ लाये हैं, बाकी

सब लोग अपनी मर्जी बल्कि जबरदस्ती से साथ आये हैं।

गुह—क्या माताएँ भी तशरीफ लाई हैं ?

भरत—हां वे भी साथ आई हैं ?

गुह—इस कदर दूर के सफर में उनको तकलीफ देना सख्त गलती है।

भरत—यह मैं खुद भी जानता हूं, मगर मेरी क्या पेश चलती है।

गुह—तो कृपा करके मुझे भी उनके दर्शन कराइये।

भरत—बहुत अच्छा, आप मेरे साथ आइये।

गुह—(कौशल्या के पांव पकड़ कर) माता जी ! मेरे धन्य भाग हैं, जो आपने अपने पवित्र चरणों से इस भूमि का उद्धार किया।

कौशल्या—(भरत से) बेटा ! यह कौन हैं जिन्होंने आकर मुझे नमस्कार किया।

भरत—माता जी ! यह भाई रामचन्द्र जी के परम मित्र राजा गुह निषाद वाले शृङ्गवीर हैं और एक-एक गुण में अपनी आप नजीर हैं। इन्हीं के यहां भाई रामचन्द्र जी ने वास किया था और एक रात इसी जगह निवास किया था। आपके आने की खबर सुनकर दर्शनों के लिये आये हैं और बड़ी देर से तशरीफ लाये हैं।

कौशल्या—(गुह से) अच्छा बेटा चिरन्जीव रहो।

गुह–भरत जी ! मुझे तीनों माताओं के दर्शन कराइये और इनके नाम अलग अलग बताइये।

भरत–(कौशल्या की ओर संकेत कर के) यह श्रीमती कौशल्या जी, मेरे पूज्य भ्राता रामचन्द्र जी की जन्मदाता हैं, (सुमित्रा की ओर संकेत करके) यह श्रीमती सुमित्रा जी वीर लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता हैं। (केकई की तरफ संकेत करके) यह मूढ़मति जिसको न यहां सुख न परलोक में गति, केकई है जो मुझ बदनसीब की माता कहलाती है, जिसको माता कहते हुए भी मुझे लज्जा आती है। यही इस सारे फिसाद की बानी मुबानी है और इसी राक्षसिनी की कृपा से भाई रामचन्द्र जी ने जंगलों की खाक छानी है।

कौशल्या–भरत ! तुम किसी वक्त तो अपनी जबान को लगाम दिया करो और कभी तो इनका इज्जत से नाम लिया करो। हर समय इनकी निन्दा करना सख़्त नादानी है, यह सब अपने कर्मों का फल है, इस बेचारी की क्या मेहरबानी है। आगे के लिए अपनी जबान को संभालो और इनकी शान में कदापि ऐसे अनुचित शब्द मुख से न निकालो। मनुष्य से कसूर भी हो जाता है, चाहे कुछ भी हो लेकिन फिर भी यह तुम्हारी माता है, तुम्हें चाहिए कि हर तरह से इनकी इज्जत और बड़ाई का

लिहाज करो, न कि हर समय नुक्ताचीनी व ऐतराज करो। अगर फिर ऐसा कहोगे तो मैं रामचन्द्र से तुम्हारी सख्त शिकायत करूँगी और तुम्हें रोकने की हिदायत करूँगी।

भरत–माता जी! अगर मुझको भाई रामचन्द्र जी की नाराजगी का ख्याल न होता तो अब तक ऐसी माता का कुछ से कुछ हाल होता। मगर क्या करूँ दिल ही दिल में पेचोताब खा रहा हूं और अपने जोश को अन्दर ही अन्दर दबा रहा हूं।

गुह–भरत जी। वास्तव में यह आपका संताप नियम विरुद्ध है और अब गढ़े मुर्दे उखाड़ने से क्या सिद्ध है। जो कुछ हो गया उसे धैर्य से निभाइये और मेरे योग्य कोई सेवा हो तो फरमाइये।

भरत–आप कृपा करके इतना काम कर दीजिये कि हमारा गंगा पार जाने का इन्तजाम कर दीजिये।

गुह–मैं अभी जाता हूं, और नौकाएँ तैयार कराता हूं प्रभात होते ही सब काम तैयार मिलेगा और यह आपका सेवक भी साथ चलेगा।

भरत–हम तो अपनी मुसीबत सहते फिरते हैं परन्तु आप क्यों वृथा कष्ट करते हैं।

गुह—इसमें कष्ट की कौनसी बात है, बल्कि मुसीबत के समय किनारा करना बड़ा मित्र-घात है।

(३) चित्रकूट

श्री रामचन्द्र जी, लक्ष्मण जी और सीता जी अपनी कुटिया में बैठे हुए वन के प्राकृतिक दृश्यों को देख रहे हैं। सीता जी का गाना (ठोड़ी आसावरी वतर्ज—मेरे हाल दा मैंहरम तू)

तेरी क़ुदरत के बलिहार भेद न तेरा किसी ने पाया।
ऋषि मुनि गये हार। तेरी क़ुदरत०

पल में बहते अथाह समुद्र जिनका वार न पार।
पल में ढूँढा मिले न पानी लीला अपरम्पार॥
तेरी क़ुदरत०

पल में पुष्प खिले बागों में फूल रही फुलवार।
पल में पलट गई सब काया सूख गई सब डार॥
तेरी क़ुदरत०

पल में माता निज पुत्रों के करती सौ शृंगार।
पल में रोती खड़ी सिरहाने केस गले में डार॥
तेरी क़ुदरत०

पल में थे राजा कहलाते प्रजा के सरदार।
पल में भेष फ़क़ीरी करके छोड़ दिया घरबार॥
तेरी क़ुदरत०

नाटक

प्रभो ! तुम धन्य हो। तुम्हारी महिमा का कौन पार

पा सकता है परमात्मन् ! तुम्हारी लीला अपरम्पार है, तुम्हारी कुदरत के भेद सब से निराले हैं। अभी-अभी जहां अथाह समुद्र लहरें मार रहा था, वहां ढूँढ़े से पानी का घूँट भी नहीं मिलता। एक घड़ी पहले जहां अनेक प्रकार के पुष्प अपनी रंग-बिरंगी पंखड़ियों का अभिमान कर रहे थे, वहां एक हरा पत्ता भी दिखाई नहीं देता। एक पुत्रवती माता जो कुछ क्षण पहले अपने योग्य पुत्र की मांग पट्टी सँवार रही थी और उसका चांद सा मुखड़ा देख-देख कर बार-बार बलायें ले रही थी, एक पल में उसके मृतक शरीर पर धायें मार कर रोती हुई नजर आती है। एक पल पहले जिनको राज का अभिमान था, लाखों आदमी आंखों के इशारे पर अपना खून बहाने को तैयार थे, जिनके चरण छूना पृथ्वी भी अपना अहोभाग्य समझती थी, सब प्रकार के सुखों की सामग्री उपस्थित थी, आज एक रोटी के टुकड़े के मोहताज दर बदर मारे मारे फिरते हैं और कोई बात तक नहीं पूछता। (अश्रु-पूर्ण नेत्रों से) परमात्मन् ! तुम्हारी परम गति को तुम्हीं जानो।

रामचन्द्र जी—प्रिया जी ! मुझे अति शोक है कि तुम हर समय ठंडी आहें भरती रहती हो और इस प्रकार की बातें करती रहती हो, जिससे मेरी आत्मा को अति क्लेश होता

है और मेरा दुःख ख्वामख्वाह विशेष होता है। मैं पहले ही इन अवस्थाओं को देखकर डरता था और इसलिए बार बार तुम्हें साथ आने से मना करता था। क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था कि स्त्रियों के अन्दर धैर्य कम होता है और उनको तुच्छ सी बात का भी बहुत ग़म होता है तुम्हें रंज में देख कर मेरा दिल भी व्याकुल होगा और इस अवस्था में चौदह वर्ष का समय व्यतीत करना बहुत मुश्किल होगा। अस्तु वही हुआ, मगर इस में तुम्हारा भी क्या कसूर है, बलकी कुदरती स्वभाव से हर एक मनुष्य मजबूर है। बेहतर है कि तुम अब भी अयोध्या को वापिस चली जाओ और अधिक कष्ट न उठाओ। लक्ष्मण तुम्हारे साथ जायेगा और तुम्हें सुख पूर्वक वहां पहुँचा आयेगा।

सीता जी—नहीं स्वामी जी! मुझे कष्ट का लेश मात्र भी ख्याल नहीं, केवल माता जी की वृद्ध अवस्था का ख्याल आ गया था और यों ही बैठे बैठे तबियत पर मलाल छा गया था। जब आपके चरणों में मेरा निवास है, तो संसार के तमाम सुखों की सामग्री मेरे पास है। परमेश्वर के वास्ते ऐसा काम न कीजिए और इस दासी को अपने चरणों से अलग करने का नाम न लीजिए।

रामचन्द्र—(लक्ष्मण से) लक्ष्मण! आज इस जंगल के

जानवर क्यों इस प्रकार भय खा रहे हैं और ऐसी तेजी से भागे जा रहे हैं। पहले तो यह कभी इतने भयभीत न हुवे थे। ज़रा देखना तो इन पर क्या मुसीबत आई है, जो इन्होंने ऐसी भगदड़ मचाई है।

लक्ष्मण—(एक ऊँचे वृक्ष पर चढ़ कर) भाई साहब होशियार हो जाइये, सूर्य वंशी झण्डा वायु में लहरा रहा है और भरत अनगिनत सेना लिए इधर को आ रहा है।

रामचन्द्र—यदि भरत है तो तुम्हें किस बात का डर है?

लक्ष्मण—मालूम होता है कि उसकी तबियत में अभी शर है।

रामचन्द्र—यह केवल तुम्हारा ख्याल है।

लक्ष्मण—उधर वह सिर पर चढ़ा आ रहा है और इधर आपका यह हाल है।

रामचन्द्र—भरत से मुझे कदापि ऐसी उम्मीद नहीं।

लक्ष्मण—अजी महाराज उसकी ज़ात से कुछ बईद नहीं

रामचन्द्र—मुझे दृढ़ निश्चय है, कि भरत का ऐसा गिरा हुआ अखलाक नहीं।

लक्ष्मण—आप कुछ भी कहें मगर मुझे आपकी सम्मति से कतई इतफ़ाक़ नहीं।

रामचन्द्र—मेरे ख़्याल में वह किसी बुरे इरादे से नहीं

आया है।

लक्ष्मण–(जरा तुनक कर) तो इतनी सेना क्या झक मारने को लाया है ?

राम०–खैर कुछ बात नहीं आने दो।

लक्ष्मण–कृपा करो, इस भोलेपन को जाने दो।

राम०–मृत्यु से पहले ही वावेला तो ठीक नहीं।

लक्ष्मण–आपकी अगर मगर अवश्य कुछ न कुछ गुल खिलायेगी और न मालूम किन किन कष्टों का सामना करायेगी। आप अपनी इस मंतक को लेकर एक तरफ आराम कीजिये और परमेश्वर का नाम लिजिए। आपकी इस अनुचित नरमी ने इस हाल को तो पहुँचा दिये कि बिल्कुल निहत्थे और अपाहिज बना कर एक कोने में बिठा दिये। घर से बेघर बनाकर जंगलों की खाक छनवाई, परन्तु उस लालची को हमारी गुम नाम की जिन्दगी भी एक आंख न भाई। अब हमारा वैसे ही सफाया करना चाहता है और अपनी ताकत के अभिमान में सिर पर चढ़ा आ आता है (शस्त्र संभाल कर) अच्छा क्या डर है, आये और अपनी बहादुरी का जौहर दिखाये, यद्यपि हम बे-सरो-समान हैं, मगर फिर भी क्षत्री वंश की नसल और रघुकुल की सन्तान हैं। इस हालत में भी कायर के लिये मेरा एक ही वार काफी है

और इसका अभिमान तोड़ने के लिए (तलवार को हिला कर) यही काफी है।

रामचन्द्र—(लक्ष्मण के हाथ से शस्त्र छीनकर) लक्ष्मण! ज़रा सब्र करो और कुछ अपनी तबियत पर जब्र करो। उसको जरा निकट आने दो और अपना दिली भाव तो बताने दो। शस्त्र कहीं भागे नहीं जाते, सम्भाल लेना और खूब दिल के अरमान निकाल लेना, जल्दी करना अच्छा नहीं।

लक्ष्मण—बस भाई साहब! बहुत सब्र किया और बहुतेरा अपनी तबियत पर जब्र किया। आखिर कब तक खूने-जिगर खायें, जरा आप ही इन्साफ से बतायें कि अगर सब्र इसी का नाम है तो क्षत्रीय पुत्र के लिये डूब मरने का···

रामचन्द्र-(भरत को दूर से आता देख कर) लो देखो वह तो बेचारा अकेला भागा हुआ आ रहा है···

(भरत को रोते हुए रामचन्द्र जी के पांव पर गिर पड़ना और उनका उठा कर गले लगाना) रामचन्द्र जी का गाना
(मांड थेटर बतर्ज—कैसा गजब है जिद बे-सबब है)

प्यारे हमारे आँखों के तारे रोते हो क्यों जार जार।
गर्दन उठाओ मुंह तो दिखाओ सदके हूं मैं बार-बार॥
बिलख बिलख क्यों रो रहे कहो तो भाई जान!
देख तुम्हें इस हाल में हो रहे खुश्क प्राण॥

किसने सताया, किसने दुखाया, किसने पहुंचाया आजार।
प्यारे हमारे०

किस लिये छोड़ा अवध को पहुँचा कौन क्लेश,
राज पाट को छोड़कर क्यों आये परदेश।
हालत तुम्हारी बिगड़ी क्यों सारी, कैसे हैं उल्टे आसार॥
प्यारे हमारे०

शत्रुघ्न मम भ्रात को छोड़ा किसके तीर,
यहां पधारे किस लिए कहो तो मेरे वीर।
बोलो तो भाई दिल पै क्या आई, किसने किया है लाचार॥
प्यारे हमारे०

राजपाट को भरत जी आये किसे सम्भाल,
हालत क्या है अवध की कहो मुफस्सल हाल।
'यशवन्तसिंह' को सौंपा है किनको, छोड़ा क्यों अपना द्वार।
प्यारे हमारे०

नाटक

प्यारे भरत! कहो चित्त तो प्रसन्न है। हैं, हैं,! तुम रोते क्यों हो? आखिर कोई कारण तो बताओ, कुछ हाल तो बताओ। (भरत के मुँह को चूमकर) मेरे पुश्त पनाह! मेरी दाई भुजा! बताओ तो तुम्हें क्या रँज पहुँचा, जो इतने परेशान हो और बिलख बिलख कर रो रहे हो। ओ हो! तुमने तो बच्चों को भी मात कर दिया (गरदन

को ऊपर उठाकर) मेरे प्रिय ! मैं तुम्हारी यह हालत किन आंखों से देखूँ, में ता यदि कभी स्वप्न में भा तुमका उदास देख लेता था तो पसीने से तर बतर हो जाता था। हाय, हाय ! मेरी उपस्थिति में तुम्हें कोई कष्ट होता है तो धिक्कार है मेरी इस जिन्दगी पर, लानत है मेरे जीने हर ! भरत तुम्हें मेरी कसम, अधिक हैरान न बनाओ और जल्दी अपनी रंजीदगी का कारण बताओ।

भरत गाना (बहरे तवील)

चले आये भरत को आप दुनियां दीन से खो के,
गुजारू जिन्दगी के दिन मैं किसके आश्रय हो के।
विचारा आपने यह क्या बिना सोचे बिना समझे,
निकल घर से चले आये किसी के न रुके रोके।
किसी को दोष क्या दूँ दोष है अपनी ही किस्मत का,
न सुनते आप भी मैं कह रहा हूं बहुत रो रो के।
हाय किस्मत हाय तकदीर वाह रे कर्म के चक्कर,
मेरी माता ने ही मुझ से किए यह छल कपट धोके।
तुले बैठे हैं सारे ही मुझे बरबाद करने पर,
न जाने पड़ गई तकदीर पीछे हाथ क्यों धो के।
हमेशा के लिये बरबाद कर 'यशवन्तसिंह' मुझको,
किनारे हो गई जालिम वह कांटे राह में बोके।

गाना रामचन्द्र तर्ज वही)

न कुछ तुम पर गिला मेरा मुझे तेरी कसम भाई,

तेरी सुन सुन के बातें हो गया सीना भसम भाई।
तुम्हारी ओर से मुझको न कोई बदगुमानी है,
नहीं मालूम तुझको हो गया कैसा वहम भाई।
हर एक अदना व आला के लिए अज बस जरूरी है,
वही फल भोगना होगा किये हैं जो कर्म भाई।
किसी ने भी नहीं मुझको किया मजबूर था लेकिन,
पिता की फकत आज्ञा थी व ईश्वर का हुकम भाई।
इजाजत है तुम्हें मेरी तरफ से राज्य करने की,
जो होना था सो हो गुजरा करो उसका न गम भाई।
हुक्म मुझको पिता का जान से 'यशवन्तसिंह' प्यारा,
भला मैं तोड़ दूँ कैसे रघुकुल की रसम भाई।

भरत का गाना (बहरे तवील)

ऐ भ्राता भरत से खता क्या हुई,
मेरी निस्बत तुम्हें क्या भरम हो गया।
मुझे चरणों से अपने जुदा क्यों किया,
कौन सा मुझ से खोटा करम हो गया।
इस शरारत का मुझको पता तक नहीं,
आप बैठे कहीं भरत बैठा कहीं।
कर लिया आपने किस तरह से यकीं,
हाय ऐसा भरत बेशरम हो गया।
ऐ भ्राता० ॥

मैने दिल में जो ऐसा विचारा भी हो,
या उस दुष्टनी को उभारा भी हो।
या भरत का जरा सा इशारा भी हो,
तो भी बेशक मेरे से जुरम हो गया।
ऐ भ्राता० ॥
हाय सारी अवध को वियावान कर,
आ गये आप जंगल में क्या ठान कर।
एक उस नीचनी का कहा मान कर,
आपको घर में रहना कसम हो गया।
ऐ भ्राता० ॥
आप बन के रवादार क्यों हो गये,
यहां आने को तैयार क्यों हो गये।
मेरी सूरत से बेजार क्यों हो गये,
हा सितम हो गया, हा सितम हो गया।
ऐ भ्राता० ॥
मौत मेरी न जाने कहां सो गई,
सारी सुख सम्पती हाथ से खो गई।
मेरी किस्मत तो उल्टी जब ही हो गई,
जिस घड़ी केकई के जन्म हो गया।
ऐ भ्राता० ॥
न गिला है किसी पर न अफसोस है,
ऐ भ्राता न कुछ आपका दोष है।

बैठा 'यशवन्तसिंह' भी तो खामोश है,
हा जमाना विरुद्ध एक दम हो गया।
ऐ भ्राता० ॥

राम का गाना (बहरे तवील)

प्यारे भाई जरा तुम अकल तो करो,
मैं हूं हैरान तुमको यह क्या हो गया।
मैंने किस से तुम्हारी शिकायत करी,
किस तरह से तुम्हें यह शुबाह हो गया।
इस किस्म के ख्यालात छोड़ो भरत,
कौन कहता है तुम से गुनाह हो गया।
मेरी अपनी प्रारब्ध का दोष है,
जो बुरा हो गया या भला हो गया।
प्यारे भाई० ॥
राज मैंने किया तो भी क्या बात है,
और तुमने किया तो भी क्या हो गया।
इस अवस्था में भी मुझको सन्तोष है,
जो पिता का फरज था अदा हो गया।
प्यारे भाई० ॥
मुझे इलजाम दे लो चाहे जिस कदर,
मैं तुम्हारे लिए बेवफा हो गया।
मेरी माता की निस्बत कहो यह वचन,

तू भरत इस कदर बेहया हो गया।
प्यारे भाई० ॥

मुझे उम्मेद तेरे से ऐसी न थी,
तेरा ऐसा मलीन आत्मा हो गया।
जन्म दाता का तुम यों अनादर करो,
सारी तहजीब का खात्मा हो गया।
प्यारे भाई० ॥

क्षत्रीपन को धब्बा लगाओ न तुम,
क्यों तेरा ऐसा कम हौसला हो गया।
दोष तेरा न 'यशवन्तसिंह' का भरत,
मेरी तकदीर का फैसला हो गया।
प्यारे भाई० ॥

भरत का गाना (बतर्ज ऊपर वाली)

मेरे भाई दुहाई, दुहाई तेरी,
किस तरह यह नदामत गवारा करूँ।
हकदार इस तरह मारा मारा फिरे,
और मैं राज की मौज मारा करूँ।
हो गया मैं अनाथ हर तरह से हाय,
कौनसा-कौनसा दुःख सहारा करूँ।
मैं तो रोता हूं पहले ही तकदीर को,
इस गुनाह का कहो क्या कुफारा करूँ।

मेरे भाई० ॥

है मुनासिब यही आप राजा बनें,
और मैं जान तुम पर निसारा करूँ।
सारे दुश्मन न इकदम भरत के बनो,
किस तरह से मैं कहना तुम्हारा करूँ।
मेरे भाई० ॥

मारा भावी ने चक्कर में दे कर मुझे,
क्या किसी पर गिला मैं बेचारा करूँ।
तुम अयोध्या को मेरे हवाले करो,
मैं तुम्हारे से पहले किनारा करूँ।
मेरे भाई०

बेगुनाह हूं चाहे मैं गुनहगार हूं,
बख्श दो और किस से इजारा करूँ।
बस बहुत हो चुकी अब तो वापिस चलो,
आप से अर्ज ये ही दुबारा करूँ।
मेरे भाई० ॥

कोई सर पर मुरब्बी न मेरे रहा,
आश्रय बैठ जिसके गुज़ारा करूँ।
कौन 'यशवन्तसिंह' दे दिलासा मुझे,
भाई कह कर किसे मैं पुकारा करूँ।
मेरे भाई० ॥

दूसरा भाग समाप्त

❀ ओ३म ❀

आर्य्य संगीत रामायण

तीसरा भाग

चौदहवें दृश्य का शेषांश

(सिलसिले के लिए देखो दूसरा भाग)

रामचन्द्र–भरत जी ! मैं तुमको निश्चय दिलाता हूं कि मुझको न तुम्हारी निस्बत कोई शिकायत है, न माता केकई पर कुछ अफसोस है ।

भरत—हां भ्राता जी ! यह मेरे ही पूर्व कर्मों का फल है, इसमें आपका क्या दोष है ।

राम०–(सामने देखकर) ओ हो ! यह तो शत्रुघ्न जी भी भागे हुए आ रहे हैं ।

भरत–एक शत्रुघ्न क्या बल्कि माता कौशल्या जी व सुमित्रा जी और गुरू वशिष्ठ जी भी दूसरे ऋषियों सहित तशरीफ ला रहे हैं। इनके अतिरिक्त समस्त अयोध्या अलग आंसू बहा रही है और वह मेरी जन्म की शत्रु भी साथ आरही है।

शत्रुघ्न–(दौड़कर रामचन्द्र जी के पांवों में गिरकर) भ्राता जी तुम...(आंखों में आंसुओं की नदी छलक पड़ी) ।

राम०–(शत्रुघ्न को गले लगाकर और भरत से) भरत जी !

खेद है कि तुम्हें समस्त कुल को क्लेश देना ही मंजूर है।

भरत–(अश्रु-पूर्ण नेत्रों से) हां भ्राता जी यह सब मेरा ही कसूर है।

राम०–शत्रुघ्न जी! तुम इस कुटिया में अपनी भावज के पास आराम करो, मैं माताओं के स्वागत के लिए जाता हूं।

शत्रुघ्न–(हाथ जोड़कर) जैसी आज्ञा हो।

रामचन्द्र–(केकई के पाँव पकड़ कर) माता जी आपने इस दूर दराज के सफर की वृथा तकलीफ उठाई।

केकई–(गरदन झुकाए हुए) चुप।

राम०–(गले लिपट कर) मेरी माता! आप बोलती क्यों नहीं, कहिये तबियत तो अच्छी है।

केकई–(किसी कदर लज्जित होकर धीमी वाणी से) हां अच्छी हूं।

राम०–(हाथ जोड़कर) माता जी! आप अपने दिल में कदाचित किसी प्रकार का ख़्याल न करें और वृथा अपनी तबियत पर इस प्रकार का मलाल न करें। यह प्रारब्ध का चक्कर जरूर सामने आना था और आपका तो यों ही बहाना था।

केकई–(चुप)।

भरत–ओ हो! कैसी गरीब है, बेचारी के मुंह में ज़बान

भी नहीं।

कौशल्या–(रामचन्द्र और लक्ष्मण को गले लगाकर) पुत्रों! धन्य है कि दुबारा यह चांदसा मुखड़ा देखा, मगर शोक कि वह बेचारे अन्त समय में भी तुम्हारा दीदार न कर सके।

रामचन्द्र–(किसी कदर सहम कर) हैं माता जी! यह क्या कहा?

कौशल्या–(अश्रु-पूर्ण नेत्रों से) हां बेटा अब तुम्हारे सिर पर पिता का साया नहीं रहा।

राम०–हाय, हाय! यह वैसा शोक हुआ, पिता जी का कब परलोक हुआ?

कौशल्या–इधर तुम बन को पधारे, उधर वह स्वर्ग सिधारे।

राम०–क्या भरत जी न आने पाये थे?

कौशल्या–नहीं बेटा, वह भी बाद में बुलाये थे।

राम०—आह! ओ फलक कज रफ्तार! तू घर से निकाल कर भी हमको सताता रहा! हाय अफसोस कि पिता का साया भी सिर से जाता रहा!

सीता–(धायें मारकर) हाय पिता जी! आप सदा के लिए हमसे मुंह मोड़ गये, आखिर हमें किसके सहारे छोड़ गये।

लक्ष्मणजी का गाना (बतर्ज कव्वाली)

ऐ मौत तूने हमको दर दर रुला के मारा;

घर से किये थे बेघर बन में बुला के मारा।

सामान ऐश के तो सब छीन ही लिये थे।

फिर भी सबर न आया दम दे दिला के मारा॥

बन के फकीर हमने दर दर की खाक छानी।

इस खाक में ही हमको आखिर मिलाके मारा॥

अफसोस हर तरफ से करदी सफाई तूने।

हमको जगा के मारा उनको सुला के मारा॥

सारी अयोध्या तूने जालिम वीरान करदी।

बेदर्द सारे कुल को क्या विष पिला के मारा॥

चारों तरफ से इक दम घेरे मुसीबतों ने।

गरदिश के चक्करों ने चक्कर में लाके मारा॥

क्या दोष है किसी का अपने कर्म हैं खोटे।

घर के चिराग ने ही घर को जला के मारा॥

नाटक

हाय अफसोस! गर्दिश हमारे क्यों पीछे पड़ी है, जो हमको बरबाद करने पर अड़ी है। घर से निकाल कर एक कौने में बिठा दिया और अब पिता जी के प्रेम का हाथ भी सिर से उठा लिया। यतीमी सदा के लिए हमारी महमान हो गई, अब तो ज़िन्दगी वबाले जान हो गई। ओ जालिम मोत! तुझे भी अभी जब्र करना था, कम से कम चौदह वर्ष तो सब्र करना था। तू भी इसी वक्त

का इन्तजार कर रही थी और अन्दर ही अन्दर हमारी बरबादी के सामान तैयार कर रही थी।

कौशल्या—(लक्ष्मण को गले लगाकर) बेटा सब्र करो, रोने धोने से कुछ नहीं बनेगा।

लक्ष्मण—एक दुख हो तो सब्र करलें, विपत्तियों का भी तो कुछ ठिकाना नहीं।

कौशल्या–इसके सिवाय अब चारा भी क्या है ? महाराज को तो अब वापिस आना नहीं।

वशिष्ठ जी—बेटा ! जो बात एक दिन जरूर होनी है, उसका अफसोस करना ही फिजूल है, और यह एक निश्चित असूल है, जो बना है वह जरूर टूटेगा और जो घड़ा है वह जरूर फूटेगा। जो पैदा हुआ है उसे मरना है और यह सफर एक दिन हम सबको करना है। इसलिये इस वृथा सोच विचार को छोड़कर परमेश्वर का ध्यान कीजिये। (भरत से) हां भरत जी ! आप अपने मानसिक अभिप्राय को बयान कीजिये।

भरत का गाना वतज कव्वाली)

कहूं क्या दर्द दिल अपना मुसीबत का सताया हूं।
दुःखी होकर ऐ भ्राता जी तुम्हारी शरण आया हूं ॥
अभी दिन थे भरत के खेलने और खाने के।

मगर मैं इस अवस्था में ही लावारिस बनाया हूं ॥
न साया है पिता का गोद माता की छिनी मुझसे ।
जमाना हो गया दुश्मन किसी को भी न भाया हूं ॥
कहीं लानत कहीं फटकार और धिक्कार पड़ती है ।
शुरू से ही मैं गोया लेख यह लिखवा के लाया हूं ॥
हुए थे और तो सब ही मेरे दुश्मन मगर भगवन ।
दया आई न तुमको भी बहुत कुछ बिलबिलाया हूं ॥
खता कुछ और तो मेरी नजर आती नहीं मुझको ।
है केवल दोष इतना केकई पापन का जाया हूं ॥
सज़ा मेरे गुनाहों की बहुत कुछ मिल चुकी मुझको ।
किया हर तौर से बरबाद मिट्टी में मिलाया हूं ॥
चलो वापिस नहीं तो इस जगह ही प्राण दे दूँगा ।
अकेला घर पै जाने की कसम खा करके आया हूं ॥
बनो 'सरदार' अयोध्या के जगह चरणों में दे मुझको ।
करो मुझ पर दया मैं किस लिए दिल से भुलाया हूं ॥

नाटक

भ्राता जी ! जो कुछ प्रार्थना करनी थी वह कर चुका हूं, आप अधिक मुझे क्यों मारते हैं, मैं तो पहले ही मर चुका हूं । उधर से सुखों का वैसे ही खात्मा हो गया, इधर आपका कठोर आत्मा हो गया । पिता जी के बाद यों ही पालन पोषण करना था और यही हमदर्दी का दम भरना था । यद्यपि भरत आपके सम्मुख बात करने में भी

शरमाता था और कभी सामने आँख नहीं उठाता था, तथापि इन आये दिन की मुसीबतों ने मार कर चकनाचूर कर दिया और मुझको ऐसी बेबाकाना गुफ्तगू करने पर मजबूर कर दिया। मगर मैं इस गुस्ताखी के लिए मुआफी का ख़्वास्तगार हूं, और जबांदराजी पर खुद शर्मसार हूं। आशा है कि आप मेरी गुस्ताखियों को नजर अन्दाज़ फरमायेंगे और तख्त अयोध्या को अपने कदम मुबारिक से सरफराज़ फरमायेंगे।

रामचन्द्र—प्यारे भरत! तुम्हारा प्रेम जो कुछ मेरे साथ है उसे मैं खुद समझता हूं और तुम्हारे दिली अभिप्राय को भी बखूबी पहचानता हूं। मगर क्या करूँ शास्त्रों की आज्ञा और धर्म की पाबन्दियों से मजबूर हूँ इस लिए चौदह वर्ष के लिए तुम्हारी नजर से दूर हूँ। अगर ऐसा न करूँ तो न केवल मेरी आत्मा को ही कष्ट होगा बल्कि पिता जी का पुण्य प्रताप और यश हमारी बदौलत नष्ट होगा।

भरत—बहुत अच्छा! अगर आपका यही धर्म है, तो भरत के लिए भी सब से बढ़कर यही शुभ कर्म है कि आपके चरणों में निवास करूँ और खुद भी चौदह साल बनवास करूँ।

रामचन्द्र जी का गाना

होकर समझदार ऐ भाई कैसी नादानी करते हो,

पिता की आज्ञा के प्रतिकूल, चलना चाहिये हमें न मूल
रास्ता सत्य धर्म का भूल, अपनी मनमानी करते हो।
होकर समझदार० ॥
तज कर रघुवँश की रीत, हो कर वेदों से विपरीत,
उल्टे चलो न मेरे मीत, क्यों कुल की हानी करते हो,
होकर समझदार० ॥
मेरी नहीं समझ में आता, तुम भी यहीं रहे जो भ्राता,
कैसे दिन काटेंगी माता, इनकी वीरानी करते हो।
होकर समझदार० ॥
बन में आ गये अगर तमाम, राज का कौन करेगा काम,
उसको कर दोगे गुमनाम, अच्छी सुलतानी करते हो।
होकर समझदार० ॥
जाकर कर करो अवध में राज, रक्खो रघुवंश की लाज,
दे गये हुक्म यही महाराज, कैसी नाफरमानी करते हो।
होकर समझदार० ॥

नाटक

मुझे तुम्हारी इस राय से भी इखतिलाफ है क्योंकि यह ख्याल पिता जी की आज्ञा और धर्म शास्त्र के सरासर खिलाफ है। बनवास का हुकम सिर्फ राम के लिये है न कि हम तमाम के लिये है। अगर यह कहो कि लक्ष्मण क्यों, साथ आया, सो इनके लिये पिता जी ने

कोई खास हुक्म नहीं फरमाया। इसलिये यह अपनी मर्जी का मुख्तार है, जहां चाहे रहे इनको अख्त्यार है। यों तो वह चारों के पूजनीय बाप हैं, मगर इस हुकम के पाबन्द सिर्फ मैं और आप हैं। इसलिये उनकी आज्ञा के अनुकूल चलना ही सआदतमन्दी है और यही धर्म की पाबन्दी है। बिलफर्ज अगर तुम भी यहां डेरे डालोगे तो बूढ़ी माताओं को किसको सँभालोगे ? राजपाट का काम कैसे चलेगा, क्या यह बाप दादों का राज मिट्टी में मिलेगा ?

जाबाली—मुझे आश्चर्य है कि आप किस किस्म की बातें बना रहे हैं और बार बार धर्म और अधर्म का राग गा रहे हैं। इस किस्म की बातें आप भरत के सामने ही मिला सकते हैं और जिस तरह आप चाहें उन्हें फुसला सकते है, किन्तु जाबाली के सामने आपकी दाल न गलेगी और यहां आपकी युक्ति न चलेगी। ज़रा आप ही मेहरबानी करके बतलाइये कि यह कहां का धर्म है, कौन से क्षत्रियों का कर्म है कि एक लायक और निर्दोष पुत्र को घर से निकाला जाये और दूसरे को जो किसी तरह भी अधिकारी नहीं राज सँभाला जाये ! पिता का हुक्म भी उसी वक्त तक मानने योग्य है जब कि वह खुद भी धर्म का पाबन्द हो और हर तरफ से इन्साफ पसन्द हो। विपरीत इसके धर्म और न्याय के

विरुद्ध पिता का हुक्म मानना भी महा पाप है, चाहे वह पिता है या पिता का भी बाप है। इसके अतिरिक्त यह उनका पैदा किया हुआ राज नहीं था, इसलिये उनका उन्हें नाजायज़ इस्तेमाल करने का कोई मजाज़ नहीं था, बल्कि यह राज खानदान में इसी तरह वँश परम्परा से चला आता है और जो अधिकारी हो उसी को राज तिलक दिया जाता है। फिर वह तो इस कदर कामवश हो रहे थे कि उनको धर्म और अधर्म की तमीज ही नहीं थी और सिवाय विषय-वासनाओं के उनकी नजरों में और कोई चीज ही नहीं थी। आप तो बड़े शास्त्रज्ञ बने फिरते हैं और बात बात में शास्त्रों का जिक्र करते हैं। जरा बताइये तो ऐसे राजा के लिए शास्त्रों का क्या फरमान है और इनकी निवृत्ति के लिये आपके पास क्या प्रमाण है अगर कुछ है तो बता दीजिये वरना चुपके से अयोध्या की राह लीजिये।

रामचन्द्र जी—और तो पिताजी की तरफ से मुझे हर तरह सन्तोष है, मगर उनका एक कार्य मेरे नजदीक भी काबिले अफसोस है।

जाबाली–(दिल ही दिल में खुश होकर कि वह फिसल गए) हां तो महाराज की कौनसी बात है, जो आपके नजदीक वाहियात है?

रामचन्द्र जी–वह यह है कि उन्होंने तुम जैसे नास्तिक को न सिर्फ अपने राज्य में ठहराया है बल्कि राज सभा का सभासद भी बनाया है। शायद इसी वजह से हमारे खानदान पर यह मुसीबत आई है कि तुम जैसे नास्तिकों की अयोध्या में रसाई है।

जाबाली–(लज्जित होकर) चुप।

वशिष्ठ जी–ऐ बेटा! न जाबाली के ऐसे हालत हैं और न उनके नास्तिकता के ख्यालात हैं। सिर्फ तुमको वापिस ले जाने के लिए ऐसी गुफ्तगू का तरीका अख्तयार किया था और इसलिये इस कदर इसरार किया था। मगर अपने किये की सजा पा रहा है, देखते नहीं किस तरह गर्दन नीचे किये सिर को खुजला रहा है।

रामचन्द्र जी—प्यारे भरत! परमेश्वर की कृपा से हमारा खानदान आज तक बिल्कुल बेदाग रहा है और दुनियां में एक रोशन चिराग रहा है। भारी से भारी विपत्तियों में भी अपने प्रण को नहीं छोड़ा है और हम अपने इन बुजुर्गों पर जिस कदर गर्व करें थोड़ा है। महाराज अज, महाराज दलीप, महाराज दधीचि, महाराज रघु इस खानदान के चमकते हुए सितारे थे और महाराज हरिश्चन्द्र ने अपनी प्रतिज्ञा पालन करने में क्या कुछ कष्ट न सहारे थे। हमें भी उचित है कि अपने पूर्वजों के इस

यश और कीर्ति को बहाल रक्खें और उनके मान और मर्यादा का हर तरह से ख्याल रक्खें। बस यह उचित है कि तुम अयोध्या को लौट जाओ और इस मामूली सी बात के लिए अपने कुल को दाग न लगाओ।

भरत–अच्छा माता कौशल्या जी जो हुक्म दें वह तो इन्साफ है।

राम–हाँ हाँ, मुझे उनके हुक्म से कब इनहिराफ है।

भरत–(कौशल्या से) माता जी आप हमारा इन्साफ करदें और इस मामले को साफ करदें।

कौशल्या—मेरे बच्चो! मेरी खुशी इसी में है कि तुम दोनों अपने-अपने धर्म का पालन करो।

भरत–(उछलकर) बस यह फैसला बड़ा माकूल है, माता जी का हुक्म कबूल है, अब आपका अधिक हठ करना फिजूल है।

राम–भाई यह तुम्हारी भूल है, बल्कि माता जी का फैसला तो मेरे अनुकूल है, क्योंकि पिता जी की आज्ञा का पालन करना ही धर्म का पहला असूल है।

भरत–माता जी आप खुले शब्दों में फरमा दीजिए और इस झगड़े को निबटा दीजिये।

कौशल्या–बेटा! तुम दोनों कौशल्या के नेत्र हो और मेरे होनहार पुत्र हो। अच्छा था कि तुम आपस में ही फैसला कर लेते और मुझे तकलीफ न देते। किन्तु अगर मेरे

मुँह से ही कहलवाते हो और साफ शब्दों में ही सुनना चाहते हो, तो चौदह साल के लिये भरत अयोध्या में निवास करे और रामचन्द्र बनवास करे। धर्म के मुकाबले में कौशल्या झूठ न बोलेगी और व्यर्थ अपनी जान पर पत्थर न तोलेगी।

तमाम ऋषि मुनि—भरत जी! अब इस झगड़े को दूर करो और अपनी माता कौशल्या को आज्ञा मंजूर करो।

भरत—(अश्रु-पूर्ण नेत्रों से) हाय क्या कहूं, भरत को हर तरह मजबूर किया जा रहा है। बहुत अच्छा, आप इतनी कृपा कीजिये कि अपनी खड़ाऊँ मुझे दीजिये। इनको अपने साथ ले जाऊँगा और इन्हीं से तख्त अयोध्या को सजाऊँगा। मगर इस बात का ध्यान रहे कि अगर चौदह साल से एक दिन भी अधिक लगायेंगे तो भरत को कदाचित जीवित न पायेंगे।

राम—(खड़ाऊँ देकर) प्यारे भरत! इस बात का इकरार करता हूं कि चौदह साल व्यतीत होते ही तुम्हारे पास आऊँगा, और एक दिन भी अधिक न लगाऊँगा।

:o:—*—:o:

पन्द्रहवाँ दृश्य

चित्रकूट से कूंच

रामचन्द्र—लक्ष्मण जी ! अब तो बरसात का मौसम व्यतीत हो गया और वसन्त की आमद नज़दीक है, इसलिए अब यहाँ से कूँच कर देना ही ठीक है । ऋषि मुनि महात्माओं के दर्शन पायेंगे और उनके धर्म उपदेशों से लाभ उठायेंगे ।

लक्ष्मण—वेशक अब यहां ठहरना फ़िज़ूल है, क्योंकि अब ऋतु भी अनुकूल है ।

सीता—अहा ! यह बन कैसा सुहाना है, मानो क़ुदरत की खूबियों का खज़ाना है ।

अत्रि ऋषि—बेटा तुम्हारा दैवेयोग से ही इस ओर आना हो गया, थोड़ी देर के लिये हमारे आश्रम में निवास कीज़िए और हमें वार्तालाप का अवकाश दीजिए ।

रामचन्द्र—(हाथ जोड़कर) आपकी आज्ञा मँज़ूर है, किन्तु आप का आश्रम यहां से कितनी दूर है ?

अत्रि ऋषि—दूर क्या वह तो सामने ही नज़र आ रहा है ।

(तीनों का ऋषि के आश्रम में प्रवेश और अनुसुइया का सीता को उपदेश)

सीता—(अनुसुइया के पांव पकड़ कर) माता जी ! आपके दर्शन से चित्त गद गद प्रसन्न है ।

अनुसुइया-(सीता जी को गले लगाकर) बेटी तू साक्षात देवी है, तेरे माता पिता को धन्य है ।

सीता-(हाथ जोड़ कर) माता जी कोई धर्म उपदेश कीजिये जिससे हमारा उद्धार हो ।

अनुसुइया-बेटी ! तुम्हें क्या उपदेश करूँ, तुम तो स्वयं धर्म की अवतार हो ।

अनुसुइया का गाना (कव्वाली जिला)

एक पतिव्रत धर्म सदा जो जान के साथ निभाती है,
वही सुहागन बड़ भागन सतवन्ती नार कहाती है,
यही धर्म और व्रत नियम है पति पै जान निसार रहे ।
तन मन से और वाणी से निज पति की तावेदार रहे ।
दुःख में सुख में भले बुरे में पति की आज्ञाकार रहे,
परमेश्वर सम समझ पति को चरणों पर बलिहार रहे ।
त्याग पति का ध्यान गैर का सुपने में नहीं लाती है,
वही सुहागन०

बूढ़ा, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अन्धा, बहरा, अज्ञानी,
महा आलसी, मूढ़, क्रोधी, किसी अङ्ग में हो हानी ।
ऐसे पति की भी रहे दासी वही स्त्री लासानी,
करे निरादर कभी न उसका कहे कभी न कटु वाणी ।
जो बोले दुर्वचन पति को घोर नरक में जाती है,
वही सुहागन०

अधिक स्नेही शुभचिन्तक हितकारी पिता व माता हैं,
और सम्बन्धी दुनियां के जो भगनी और भ्राता हैं।
हैं सुखदायक सभी परन्तु किंचित सुख के दाता हैं,
मगर पति इस लोक और पर लोक के परित्राता हैं।
स्वप्न जाग्रत हर हालत में पति को नहीं भुलाती है,

वही सुहागन०

पति के चरणों से बढ़कर कोई तीर्थ स्थान नहीं,
मिथ्या तीर्थ व्रत करे जो उस जैसी नादान नहीं।
पतिव्रता की महिमा को वर्णन करना आसान नहीं,
और कहूं क्या अधिक तेरे से तु कोई अनजान नहीं।
मिथ्या व्रत करे जो नारी, पति की उमर घटाती है,

वही सुहागन०

नाटक

वेटी! यद्यपि जो कुछ तुझ को कहना चाहती हूं, उससे अधिक गुण पहले ही तुझ में पाती हूं, परन्तु तेरे बार बार अनुरोध करने पर स्त्री धर्म के सम्बन्ध में कुछ बातें सुनाती हूं। स्त्री के लिये पति सेवा से अलग न कोई व्रत है, न नेम है और वही स्त्री सतवन्ती है जिसका पति के चरणों में हर समय प्रेम है। पति चाहे निर्धन, रोगी और महा क्रोधी है मगर जो स्त्री ऐसे पति की विरोधी है, वह न केवल

स्वयं ही जन्म जन्मांतर तक नरक के दुःख उठाती है, बल्कि अपने माता पिता और कुटुम्ब को भी नरक का भागी बनाती है। जो स्त्री पति के नाम पर मिथ्या व्रत आदि रख कर भूखी मरती है वह समझो अपने पति की आयु कम करती है। पति के चरण कमल स्त्री का सब से बड़ा तीर्थ स्थान है और इस तीर्थ की यात्रा का फल भी महान है। तात्पर्य यह है कि पतिव्रता की महिमा का जो कुछ शास्त्रों में विस्तार है, उसका वर्णन करना अति दुश्वार है और इसके लिये अधिक समय भी दरकार है। मुझे विशेष कहने की क्या जरूरत है, क्योंकि तू तो स्वयं पतिव्रता के धर्म की साक्षात मूरत है।

सीता—माता जी! निःसंदेह आपका यह मनोहर उपदेश हृदय की गांठों को खोलने लायक है और आपका एक-एक सुन्दर बचन जवाहिरात से तोलने लायक है परन्तु मेरी जननी ने मेरे विवाह के समय मुझको यह सब कुछ बता दिया था और पतिव्रत धर्म को अच्छी तरह जता दिया था। अस्तु यह उसी उपदेश का फल है जो मुझको आप जैसी धर्मात्मा तपस्विनी देवियों के दर्शन का शुभ अवसर प्राप्त हुआ और आप का उपदेश मेरे लिये और भी सोने पर सुहागा साबित हुआ।

अनुसूया–बेटो तू वास्तव में धर्म की एक मजबूत चट्टान है, उन माता पिता को धन्य है, जिनकी ऐसी उत्तम संतान है। आने वाली पीढ़ियां तेरी चरण धूलि को मस्तक से लगायेंगी और आय स्त्रियां तेरी इस मिसाल से अपने जीवन को उच्च बनायेंगी !

सीता जी का गाना

(तर्ज—इसी तमन्ना में मर मिटे हम कभी न पूछा कि हाल क्या है)

ऐ माता मुझको न करो लज्जित,
मैं क्या हूं मेरी मिसाल क्या है।
मुझे जो देती हो उच्च पदवी,
यह मेरी निस्बत ख्याल क्या है।
न कोई ऐसा विशेष गुण है,
ने ऐसी पदवी की मुस्तहिक हूं।
धर्म पर चलना फर्ज है सबका,
मैं ही चली तो कमाल क्या है।
चरण की धूली हूं देवियों की,
पतिव्रताओं की खाक पा हूं।
करूँ जा उनकी बराबरी मैं,
भला यह मेरी मजाल क्या है।
पति के चरणां में निवास करके,
मुझे हो कोई क्लेश क्यों कर।

जो मेरे रक्षक हों साथ मुझको,

बनों में रहना मुहाल क्या है।

नाटक

माता जी, आप मुझे यों ही लजाती हैं और जबरदस्ती इस प्रकार की पदवियां मेरे साथ लगाती हैं। धर्म का पालन करने में तो मनुष्य की अपनी भलाई है, यदि मैंने अपना धर्म पालन किया तो इसमें कौनसी बड़ाई है।

अनुसुइया—बेटी ! तू मुझ से कुछ मांग, निःसन्देह तू धर्म की साक्षात मूरत है।

सीता—जब मुझको परमेश्वर ने श्री रामचन्द्र जी जैसा पति दिया है तो किसी चीज की क्या जरूरत है।

अनु०—(फूलों का हार देकर) बेटी मैं खुश होकर तुझको यह हार पहनाती हूं।

सीता—तो यों क्यों नहीं कहतीं कि उल्टी गंगा बहाती हूं।

अनु०—उल्टी गंगा कैसे बहाई ?

सीता—जब बानप्रस्थी होकर गृहस्थियों को भेंट दिखाई।

अनु०—यह कोई भेंट नहीं बल्कि अतिथि सत्कार है और इसके लिए तुम्हारा व्यर्थ इन्कार है। इसके अतिरिक्त इस समय तुम कौनसी बानप्रस्थी नहीं ? इस हिसाब से भी मेरी कोई जबरदस्ती नहीं।

सीता—(रामचन्द्र जी की तरफ कनअँखियों देखकर)

माता जी यह अनुचित है कि आप इस तरह से हमारा सत्कार करें ।

राम०–प्रियजी ! अनुसुइया जी का यह तोहफा स्वीकार करो और उनके चरणों में नमस्कार करो ।

सीता–(अनुसुइया के पांव पकड़कर) मैं आपको इस अतिथि सत्कार के लिए धन्यवाद देती हूं ।

अनुसुइया–(हार पहना कर) बेटी ! तेरा सुहाग अटल रहे, मैं तुझको आशीर्वाद देती हूं ।

०—:*:—०

दण्डक बन

रामचन्द्र जी–मालूम होता है कि इस बन में राक्षसों का ज्यादा गुजर है ।

लक्ष्मण–होने दो, हमें किस बात का डर है ।

सुतीक्ष्ण ऋषि–तुम कौन हो और तुम्हारा क्या नाम है ?

रामचन्द्र जी–इनका नाम लक्ष्मण और मेरा नाम राम है ! अयोध्या हमारा जाय कयाम है ।

सुतीक्ष्ण–अहा तो आप ही दशरथ कुमार हो ?

रामचन्द्र जी–हां मुनिवर ! आपको हमारा नमस्कार हो ।

सुतीक्ष्ण–मेरे गुरु श्री अगस्त जी के आश्रम में आपके यहां पधारने का जिक्र अकसर था और उसी रोज से आपका सख्त इन्तजार था । क्योंकि इस बन में

राक्षस लोग ऋषियों को बहुत तंग करते हैं और अपने अत्याचारों से उनकी तपस्या भंग करते हैं। जब से वह यहां आकर अनेक प्रकार के अपराध करते हैं, उसी रोज से तमाम ऋषिगण आपको याद करते हैं। ऋषियों के लिए स्वयं दण्ड देना इसलिए मुहाल है, कि उनको अपनी आयु भर की कमाई के नष्ट हो जाने का ख्याल है।

राम०—मैं हर तरह से ऋषियों का ताबेदार हूं और जो कुछ सेवा हो करने को तैयार हूं। क्षत्री का जन्म ही इसलिए होता है कि प्रजा को हर तरह से निर्भय करे और दुनियां से पाप का नाश करके धर्म की जय करे।

सीता—प्राणनाथ! मुझे आश्चर्य है कि जब ऋषि लोग अपना तप नष्ट होने से डरते हैं तो आप अपनी तपस्या को क्यों नष्ट करते हैं। आप घर से यह व्रत धार कर आये थे, कि चौदह वर्ष तक बनों में तपस्वियों का जीवन व्यतीत करेंगे न कि तीर तलवार उठाकर यह हत्या करते फिरेंगे। राक्षसों ने आपका कौनसा खेत उजाड़ा है, जो आप उनकी जान के लागू हो रहे हैं और ख्वाहमख्वाह मरने मारने को आगू हो रहे हैं।

राम—क्यों न हो, आखिर महाराज जनक की संतान हो और खुद भी पूर्ण ज्ञानवान हो। आपका प्रश्न निःसंदेह

बड़ा माकूल है, मगर इसमें थोड़ी सी भूल है। तुम्हें मालुम है कि क्षत्री का पहला तप दुष्टों को दण्ड देना और इन्साफ करना है, मलेच्छों और दुराचारियों से पृथ्वी को साफ करना है। इससे बढ़कर न कोई तप है न धर्म है और क्षत्री का यही मुख्य कर्म है। ब्राह्मण का तप क्रोध करने से भ्रष्ट होता है, किन्तु क्षत्री का तप आवश्यकता के समय क्रोध न करने से नष्ट होता है। अगर हम भी शस्त्र न सँभालें और ब्राह्मण तपस्वियों की तरह एक कोने में धूनी रमालें, तो यह मलेच्छ इन सबको हमारे सहित चुन-चुन कर खा लें। बाकी रही यह बात कि राक्षसों ने कौनसा खेत उजाड़ा है, तो तुम्हीं बताओ इन बेचारे तपस्वियों ने उनका क्या बिगाड़ा है, जो वे अकारण इनको सताते हैं, क्या ये उनके घर खाने जाते हैं? जब ऐसे महात्माओं का रहना ही उनके लिये नागवार है, तो बाकी अपराधों का तो क्या शुमार है और जो क्षत्री ऐसे जुल्म अपनी आंखों से देखता है उसकी जिन्दगी पर भी धिक्कार है, इसलिए दुष्टों को दण्ड देने का हमें हर तरह अधिकार है, क्योंकि मजलूमों की सहायता करना और जालिमों को दण्ड देना भी परोपकार है।

सीता—(हाथ जोड़ कर) नाथ! आपके उपदेश ने मेरे

तमाम भ्रम को चकनाचूर कर दिया और शंकाओं को बिल्कुल दूर कर दिया। इस गुस्ताखी के लिए आपसे क्षमा चाहती हूं और अपना सिर आपके पवित्र चरणों में झुकाती हूं।

रामचन्द्र जी—इसमें गुस्ताखी की कौनसी बात है, वरन् किसी बात की शंका का दिल में रखना भी एक प्रकार का आत्मघात है।

अगस्त आश्रम

रामचन्द्र व लक्ष्मण—(हाथ जोड़कर) मुनिवर नमस्ते! मुद्दत से आपके दर्शनों के लिये दिल बेकरार था।

अगस्त—पुत्रो! चिरंजीव रहो, मुझे भी चिरकाल से तुम्हारा सख्त इन्तजार था।

सीता—भगवन्! आपके दर्शनों से चित गद्-गद् प्रसन्न है।

अगस्त—पुत्री! तू धन्य! धन्य तेरी सहनशीलता है, संसार के अन्दर उसका यश और कीर्ति है जो धर्म मार्ग पर चलता हुआ हर प्रकार की आपत्तियां झेलता है।

रामचन्द्र जी—मुनि जी दस साल तो इस तरह बनों में भ्रमण करते रहे और आप जैसे महात्माओं के उपदेश श्रवण करते रहे। मगर अब इरादा है कि एक जगह

विश्रम करूँ और आपके चरणों में ही किसी जगह कयाम करूँ।

अगस्त—हाँ, हां। यहीं पास पंचवटी बड़ा सुन्दर स्थान है और यहां आराम आसायश का भी हर किस्म का सामान है। गोदावरी नदी का बड़ा सुन्दर जल है, मगर एक मुश्किल है कि कुछ दिनों से राक्षस लोग उधर आने जाने लगे हैं। उनकी तरफ से जरा होशियार रहना और हर तरह से खबरदार रहना।

रामचन्द्र—इस बात का हमें किंचित डर नहीं, अगर वह बदमाशी करेंगे तो हमारे हाथ में क्या शस्त्र नहीं। उनके लिये तो मेरा एक तीर ही काफी है बल्कि मेरी भी ऐसी जरूरत नहीं सिर्फ लक्ष्मण वीर ही काफी है।

अगस्त—मैं कुछ शस्त्र देता हूं। इनको अपने हाथ में ले जाना और वक्त जरूरत काम में लाना, मगर जरा सावधानी से चलाना।

रामचन्द्र जी—आपकी कृपा से तमाम शस्त्रों को अच्छी तरह पहचानता हूं और प्रायः प्रत्येक के चलाने की विधि भी खूब जानता हूं। आपका यह तोहफा जान के साथ रहेगा और आपकी आज्ञानुसार उपयोग करने में भी खास एहतयाद रहेगा।

गृद्धराज जटायु से भेंट

लक्ष्मण-भ्राता जी ! जरा सम्भल कर कदम उठाइये, बल्कि बेहतर है कि यहीं ठहर जाइये ।

रामचन्द्र जी-(ठिटक कर) क्यों क्या बात है, कुछ कारण तो बताइये ।

लक्ष्मण-(उंगली का इशारा करके) वह देखिये शायद किसी दुष्ट राक्षस की मौत आई है, जो उसने हम पर घात लगाई है । धोखा देने के लिये भेष भी* पक्षियों का बनाया है, गोया हमें काठ का उल्लू ही ठहराया है । अभी उसकी मिट्टी ठिकाने लगाता हूं और उसकी इन चालाकियों का मजा चखाता हूं ।

राम-जल्दी का काम हमेशा खराब होता है जिसका पीछे से वृथा पश्चाताप होता है । क्या मालूम कि वह कोई राक्षस काफिर है या कोई बेचारा थका मांदा मुसाफिर है । मैं जाता हूं और उसका कुछ पता लाता हूं । (जटायु के समीप जाकर) अजी आप कौन हैं और यहां बैठने का क्या प्रयोजन है ?

---

*जटायु साधारणतः पक्षियों के परों को गुदड़ी पहना करता था इसलिए सर्वसाधारण में पक्षी के नाम से प्रसिद्ध हो गया था ।

जटायु—मेरा नाम जटायु है। क्या रामचन्द्र आपका ही नाम है ?

राम—हां हां, मगर आपको मेरा नाम कैसे मालूम है ?

जटायु—बेटा ! तुम्हारे इधर आने की तो यहाँ चिरकाल से धूम है।

राम—आप अपना कुछ परिचय तो बतलाइये।

जटायु—बताता हूं, जरा मेरे पास बैठ जाइये और उन दोनों को भी बुला लाइये।

राम—(हाथ का इशारा करके) लच्मण जी ! आप सीता जी सहित यहां आ जाइये।

जटायु का गाना

मैं भी एक अयोध्या के नमक ख्वारों में हूं।
देर से रघुवंश के अदना वफादारों में हूँ ॥
बारहा दशरथ के हमराह रह चुका हूँ हम रकाब।
गर्चे मैं इस वक्त बिल्कुल ही थके हारों में हूँ ॥
इक दफा महाराज दशरथ सख्त जख्मी हो गये।
जांनिहारी की थी तब से खास गमख्वारों में हूँ ॥
उनका मेरा जभी से खास रिश्ता हो गया।
इसलिये मैं आपके भी नाज़ बरदारों में हूँ ॥
देर से ख्वाहिश थी मुझको आपके दीदार की।
इस जगह बैठा तुम्हारे ही खबरदारों में हूँ ॥
हर तरह से आपकी खिदमत बजा लाऊँगा मैं।

आपकी कृपा से मैं इस बन के 'सरदारों' में हूँ ॥

नाटक

बेटा ! मैं तख्त अयोध्या का एक तुच्छ खैरख्वाह हूं और तुम्हारे पधारने की खबर सुनकर अर्से से चश्म वर रहा हूं तुम्हें देखकर आंखों में नूर और दिल में सरूर हो गया और मेरा सब थकान दूर हो गया, क्योंकि तुम मेरे परम मित्र की सन्तान हो, इसलिये मेरे प्राणों के प्राण हो ।

राम—पिता जी से आपका यह सम्बन्ध कब से है ?

जटायु-एक बार जबकि वह राक्षसों की लड़ाई में सख्त ज़ख्मी हो गये थे तब से है ।

राम—तो आपने उन्हें कैसे बचाया था ?

जटायु -जब वह बिल्कुल मूर्छित हो गये थे, मैं उन्हें उठाकर भाग आया था ।

रामचन्द्र का गाना

शुक्र है मैं बच गया हूं आज भारी पाप से ।
वरना कुछ हासिल न था व्यर्थ पश्चाताप से ॥
शक मुझ को हो गया था है कोई यह राक्षस ।
आप जो बैठे हुये थे इस जगह चुप चाप से ॥
जल्दबाजी का नतीजा मिल गया था दू बदू ।
कहिए मैंने क्या कहा था लक्ष्मण जी आप से ?

इस गुनाह की तलाफी उम्र भर मुमकिन न थी।
आज परमेश्वर ने ही मुझको बचाया पाप से॥
आप के साथी में 'चलता तीर हाय राम का।
किस तरह मिलती रिहाई मुझको इस सन्ताप से॥
तीर चुटकी से निकल जाता तो था बस खातमा।
रोने धोने से बने था और न कुछ विलाप से॥

नाटक

भगवान! आज मुझ से तो बड़ा उत्पात हो गया था और राक्षस के धोके में आपका ही घात हो गया था। लक्ष्मण जी ने तो आपकी तरफ कदम बढ़ा लिया था, बल्कि तीर भी कमान पर चढ़ा लिया था। मगर परमेश्वर को मुझे इस महान पाप से बचाना था, वरना अगर यह हत्या कर बैठता तो मेरा कहां ठिकाना था। एक की बजाय तीनों का यहीं ढेर हो जाता और हर एक मौत की गोद में सो जाता। मेरे लिये इस पाप का प्रायश्चित अवश्य ही मौत था और मेरे साथ ही साथ लक्ष्मण भी फौत था। जब हम दोनों का यहां काल हो जाता तो सीता बेचारी का एक दम जिन्दा रहना मुहाल हो जाता और एक आन की आन में सबका कुछ से कुछ हाल हो जाता। परमात्मा का शुक्र है कि सब के सब सलामत रहे और आपका साया तो हमारे सिरों पर ता कयामत रहे, क्योंकि पिताजी तो स्वर्ग के महमान हैं, अब तो हमारे लिये

आप ही पिता के समान हैं ।

जटायु—हाय शोक मेरे मित्र का कब स्वर्गवास हुआ ?

राम०—जब से हमें बनवास हुआ ।

जटायु —बेशक इस अवस्था में तुम्हारी जुदाई का सदमा उनके लिये मुहाल था ।

रामचन्द्र—बेशक इस में तो शक ही क्या था, मगर इस बात का किस को ख्याल था ।

जटायु—खैर बेटा ! धीरज धरिये । मेरे योग्य कोई काम हो तो बता दीजिये ।

रामचन्द्र—मेहरबानी करके हमको पंचवटी का मार्ग बता दीजिये ।

जटायु—पँचवटी यहां से बिल्कुल नजदीक है, मेरी राय में भी आप का वहीं रहना ठीक है, क्योंकि वहां मैं भी तुम्हारा पासबान रहूंगा और तुम्हारी अनुपस्थिति में सीता जी का निगहबान रहूंगा ।

सोलहवां दृश्य

पंचवटी

(रामचन्द्र जी लक्ष्मण जी और सीता जी अपनी कुटिया के आगे बैठे हुए गोदावरी की लहरों का दृश्य देख रहे हैं)

लक्ष्मण जी—पंचवटी पर तो कुदरत ने अपनी खूबियों का कमाल कर दिया है ।

रामचन्द्र जी—बेशक गोदावरी के सुन्दर और निर्मल जल ने तो इसे बिल्कुल ही बे मिसाल कर दिया।

एक अपरिचित स्त्री—अजी! आप कौन हैं? अगर कुछ हर्ज न हो तो मुझको अपने वंश से परिचित कीजिये।

राम०—देवी! हम अवधपति महाराज दशरथ के जाये हैं, और चौदह साल के लिए पिता जी के हुक्म से वनों में भ्रमण करने आये हैं। यह लक्ष्मण जी हमारे छोटे भाई हैं और यह सीता जी हमारी धर्मपत्नी भी हमारे साथ आई हैं। मेरा नाम राम है, कहिये आप को हमारे से कुछ काम है? यदि अनुचित न समझें, तो आप भी अपने निवास स्थान का पता दीजिए और अपना शुभ नाम भी बता दीजिये।

वही स्त्री—(ज़रा मटक कर) मैं लंकापति रावण की हमशीर हूं, खूबसूरती और खूबसीरती में अपनी आप ही नजीर हूं। मेरे भाई खर और दूषण भी इसी जगह रहते हैं, और नाम के लिहाज से मुझको सरूपनखा कहते हैं। यद्यपि बहुत से राजकुमारों की मुझ पर तबियत आई, और उन्होंने कई बार अपनी किस्मत भी आज़माई, मगर बन्दी किसी को खातिर में न लाई।

राम०—फिर यहाँ किस लिए तकलीफ फरमाई?

सरूपनखा—इसलिये कि तुमने सरूपनखा के दिल

जगह पाई।

राम—तुम्हारी यह पहेली मेरी समझ में नहीं आई।

सरूपनखा—देखने में तो अक्लमन्द मालूम होते हो, मगर हो पूरे सौदाई, अजी आप मेरे खाविन्द मैं आपकी लुगाई, अब तो समझे मेरे बाप के जमाई।

राम—जब अच्छे-अच्छे राजकुमारों को खातिर में न लाई तो हम फकीरों से शादी करने की धुन क्यों समाई।

सरूपनखा—तबियत है जहां आई, आई, फिर कौन बादशाह और कैसी गदाई।

राम—अफसोस कि मैं तुम्हारी अभिलाषा पूरी नहीं कर सकता, क्योंकि मेरी अर्धाङ्गिनी मेरे साथ है, हां अगर लक्ष्मण जी इस बात को मंजूर करलें तो बड़ी खुशी की बात है। इसलिये आप उनके पास जाइये और उन पर अपना दिली अभिप्राय जाहिर फरमाइये। वह इस वक्त अकेला है और वैसे भी बड़ा जवान अलबेला है।

सरूपनखा—(लक्ष्मण जी के पास जाकर) अजी इन से तो मैं दिल्लगी करती थी, वास्तव में तो आपकी ही मुहब्बत का दम भरती थी, वह काला कलौटा, आबनूस का सोटा, आदमी न आदमियों की सूरत, भला मुझे उससे शादी करने की क्या जरूरत। जब तक जिऊँगी आपके चरण धो धो कर पीऊँगी।

लक्ष्मण-(व्यंग से) मेरी खुश नसीबी का क्या ठिकाना है, जब कि तुम जैसी चन्द्रमुखी, मृगनयनी की तबियत मुझ पर माइल हो गई और मेरे एक ही नेत्र बाण से घायल हो गई। रंग है कि कुन्दन की तरह चमक रहा है, सुन्दरता भी निःसन्देह लाजवाब है, तमाम जमाना क्या बल्कि सारी खुदाई का इन्तखाब है।

सरूपनखा—(ज़रा लचक कर) तो फिर किस बात का हिजाब है।

लक्ष्मण--क्योंकि मैं रामचन्द्र जी का सेवक हूं इसलिये मेरे साथ शादी करने में तुम्हारी तमाम उमर के लिये मिट्टी खराब है।

सरूप०-तो बस आप की तरफ से मुझको साफ ही जवाब है।

लक्ष्मण—हां आपकी और उनकी जोड़ी सजती है एक माह है तो दूसरा महाताब है।

सरूपनखा—मगर वह कहते थे कि दूसरी सादी मेरे लिये बायसे अजाब है।

लक्ष्मण-मजाक की तो उनकी आदत ही है, अन्यथा दिल तो उनका भी सख्त बेताब है।

सरूपनखा—(रामचन्द्र के पास जाकर) अजी आप मुझे क्यों हैरान कर रहे हैं और ख्वामख्वाह परेशान कर रहे हैं।

यह छोकरा तो बिल्कुल नादान है, भला इन बातों की उसे क्या पहचान है। आप तो कहते थे कि बड़ा अलबेला जवान है, मगर वह तो आला दर्जे का बदसूरत इन्सान है। दूर से कुछ भला मालूम होता था, शकल देखते ही दिल कोसों दूर हट गया और मारे बदबू के मेरा दिमाग फट गया (नाक चढ़ा कर) ऐसी सूरत पर तो मैं थूकती भी नहीं।

रामचन्द्र—मुझ पर तो मेहरबानी करो और जरा अपने फैसले पर दोबारा नजरसानी करो। सम्भव है कि तुमने उसके सम्बन्ध में अन्दाजा लगाने में गलती खाई हो या उन्होंने ही तुम्हें आजमाने के लिए कोई रम्ज चलाई हो। यदि तू सती है तो वह बावजूद शादी करने के भी यती है।

सरूपनखा—अजी काहे का यती है वह जितना बद शकल है उस से बढ़कर मूढ़मती है, आप तो मुझे यों ही फरेब देते हैं। (रामचन्द्र की गर्दन की तरफ हाथ बढ़ा कर) सरूपनखा के कोमल हाथ तो इसी गर्दन पर जेब देते तो।

राम०—(जरा पीछे हट कर) यह हाथा-पाई किसी और के साथ करो, जरा मुँह से बात करो।

सरूपनखा—मेरे हाथों मे काटे तो नही हैं जो आपकी गर्दन में

चुभ जायेंगे, या तीर हैं जो आपके सीने में खुभ जायेंगे। (गर्दन लचका कर) फिर क्या सलाह है ?

राम०—मैं एक बार कह चुका हूं कि मेरी न सिर्फ शादी हो चुकी है बल्कि मेरी पत्नी भी मेरे हमराह है।

सरूपनखा—शादी हो चुकी तो क्या हुआ, राजे महाराजे बावजूद शादी होने के भी बहुत सी रमणियों से मुहब्बत का दम भरते हैं।

राम०—यह धर्म के विरुद्ध है, वे महापाप करते हैं। तुम्हारी यहां कदापि दाल न गलेगी और आखिर निराश होकर टलेगी, तुम्हारी जोड़ी तो लक्ष्मण से ही मिलेगी।

सरूपनखा-(लक्ष्मण जी के करीब जाकर) अजी आपने किस जांगलू के पास भेज दिया, जिसको न बोलने का तरीका, न बात करने का सलीका। आला दर्जे का बदतमीज शकल देखो तो जैसे कई बरसों का मरीज और वैसे भी महा गलीज। तीन मील से ऐसी बदबू आई कि मैं नाक दबा कर उल्टे पांव ही भाग आई। (लक्ष्मण जी की तरफ अंगड़ाई लेकर) भला मैं आपको छोड़कर कहाँ जा सकती हूं और उस काले कलोटे को कैसे खातिर में ला सकती हूं, वह तो जिस लायक था वैसी ही काली कलौटी उस पर फिसल गई और दोनों की अच्छी जोड़ी मिल गई। अब हम और तुम, दफ्तर गुम।

लक्ष्मण जी—जो शख्स दूसरे का गुलाम हो, वह तुम जैसी सुन्दरी के साथ किस तरह हम कलाम हो। अगर तुम को नहीं तो मुझ को तो अपने रुतबे का ख्याल है, इस लिए आपके हुक्म की तामील करना मेरे लिए सख्त मुहाल है।

(सरूपनखा और लक्ष्मण का मिश्रित गाना)

थियेटर (बतर्ज—यह मान बात दासी)

सरूपनखा—बस मान मेरा कहना, पूरे करलो अरमान सदा न जोबन ने रहना, बस मान···

सरूपनखा—ऐसी क़िस्मत ने जोड़ी मिलाई।

लक्ष्मण—पीछा छोड़ो भी क्यों जान खाई।

सरूपनखा—मेरे पहलू में आ।

लक्ष्मण—पीछे हट बेहया।

सरूपनखा—हो रही यह पल पल क़ुर्बान देख तो रावण की बहिना, बस मान मेरा···

लक्ष्मण—चल परे हट अरी बेहया, क्यों हुई गले का हार, मुझे यह नखरे मत दिखला, चल परे हट···हुई ऐसी नशे में दीवानी।

सरूपनखा—कैसी जोड़ी मिली है लासानी।

लक्ष्मण—क्यों हुई बेशरम।

सरूपनखा—यह तो झूठा भरम।

लच्मण—चल भाग अरी बदकार, यहां यह फन्दे मत फैला,
चल परे हट···

सरूपनखा—बस मान मेरा कहना, पूरे करलो अरमान, सदा
न जोबन ने रहना, बस मान···

सरूपनखा—साथ फिरते हो जिसको लगाये,
लच्मण—गले पड़ती हो क्यों बिन बुलाये,
सरूपनखा—मेरे पैरों की मैल,
लच्मण—अरी बाहरी चुड़ैल।

सरूपनखा—मत कर मेरा अपमान अगर तुमने जिन्दा रहना,
बस मान मेरा···

लच्मण—चल परे हट अरी बेहया, क्यों हुई गले का हार,
मुझे यह नखरे मत दिखला, चल परे हट···

लच्मण—यह डरावा दिखाना बेसूद है।
सरूपनखा—मेरा भाई रावण तो मौजूद है।
लच्मण—जा बुला ला अभी।
सरूपनखा—पीछे रोओ कभी।

लच्मण—हम हैं हरदम तैयार, हिमायती अपने को बुलवा,
चल परे हट···

नाटक

सरूपनखा—तुम्हें मेरा कुल भी मालूम है?

लच्मण—हाँ जानता हूं कि तू रावण की बेहया और आवारागर्द
बहिन है जिसकी बदकारी की तमाम दुनिया में धूम है।

सरूपनखा-(क्रोधित होकर) बस जी बस, भौंकने सिखाई तो काटने को आई, जरा जबान को लगाम लगाओ।

लक्ष्मण-(जरा तुनक कर) जाती है या बताऊँ अभी मौत का भाव।

सरूपनखा-(दिल ही दिल में) यह छोकरा तो बड़ा नटखट है, इस पर तो तेरा किसी तरह से जादू नहीं चल सकता, रामचन्द्र के पास चल शायद वहीं कामयाबी हो। वह इसकी अपेक्षा वैसे भी नरम और सुशील है। (रामचन्द्र के पास जाकर) अजी बस क्षमा कीजिए अब तो बहुत दिल्लगी हो चुकी।

रामचन्द्र—तू तो अपनी शर्म और हया को बिल्कुल ही खो चुकी।

सरूपनखा-तालिब और मतलूब में शर्म कैसी?

राम०-तेरी ऐसी की तैसी।

सरूपनखा-तुम तो बड़े बेवफा हो!

राम०-वह काम करो जिससे लोक और परलोक का नफा हो।

सरू०-यह तो बताओ कि तुम मुझ से क्यों खफा हो?

राम०-मेहरबानी करके जल्दी यहां से दफा हो।

सरू०-क्योंकि यह निगोड़ी कालटोरी* तुम्हारे साथ है, यह

*एक पक्षी का नाम है जिसका सारा शरीर काला होता है और नाम मात्र भी सफेद बाल उसके शरीर पर नहीं होते।

मेरी इच्छा-पूर्ति में बाधक है। इसलिए जाती हूं और पहले इसी की मिट्टी ठिकाने लगाती हूं (सीता की तरफ़ लपक कर) क्यों री बेहया! तुझको शर्म नहीं आती जो वहशियों की तरह जंगल में फिर रही है, मालूम होता है कि तू बहुत सिर चढ़ रही है।

सीता-(सहम कर) मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है जो ख़्वाहमख्वाह मेरे गले पड़ रही है।

राम०-(लक्ष्मण से) इसकी रग रग से शरारत टपक रही है। हमारा पीछा छोड़ा तो अब सीता की तरफ़ लपक रही है। जब तक अपनी बदकारी की सजा न पायेगी, सीधी तरह यहां से हरगिज न जायेगी।

लक्ष्मण का गाना

क्यों फिरे है बेहया आंखों को मटकाती हुई।
इस तरफ़ और उस तरफ़ ताना सा तनवाती हुई।
सब हया और शरम को धोकर ही तूने पी लिया।
या कि उसको छोड़ आई घर पै ही आती हुई।
कोई माने या न माने तू हरएक के सिर चढ़े।
जाल अय्यारी व मक्कारी के फैलाती हुई॥
फ़खर से कहती है मैं लंकापति की बहिन हूँ।
डूब मर निर्लज्ज पत्थर को तेरी छाती हुई॥
लानत है धिक्कार उस रावण पै कि जिसकी बहिन।

फिर रही है जंगलों में ठोकरें खाती हुई ॥
उसको भी लज्जा न आई कर दिया तुझको आज़ाद ।
इसलिए ही फिर रही है फूल बरसाती हुई ॥
जब तेरा जादू न कोई और हम पर चल सका ।
आई फिर रावण के बल का खौफ दिखलाती हुई ॥
पूछा रावण ने अगर तू थी कहां कुछ तो बता ।
यों कहेगी फिर रही थी यों हो मण्डलाती हुई ॥
तेरी बातों से न शायद उसको इत्मीनान हो ।
देता हूं तुझको निशानी लेती जा जाती हुई ॥

नाटक

ओ बेहया ! बदकार शरीर ! बेशर्मी व बेगैरती की मुजस्सिम तस्वीर ? अब तू हमको अपनी ताकत का भय दिखलाना चाहती है और इस तरीके से हमको फुसलाना चाहती है । ओ बेगैरत ! ऐसी निर्लज्ज होने पर भी जबकि गैर मरदों के साथ इस किस्म की साज बाज करती है, बड़े फख्र से रावण की बहिन होने का नाज करती है ? मुझे यकीन है कि तू ज़रूर उसके पास जाकर अपनी मक्कारी के जाल फैलायेगी और उसको हमारे बरखिलाफ भड़काने के लिए तरह तरह के बहाने मिलायेगी । मगर जब वह पूछेगा कि तू वहां क्यों गई थी तो फिर क्या बतायेगी । शायद वह तेरी बातों को झूठ जाने और तेरा कहना माने या न माने ।

इसलिए तुझ को यह खुशनूदी मिजाज का सार्टीफिकट देता हूं ताकि उसको अच्छी तरह इतमीनान हो जाये और तेरी कारकर्दगी की सनद को देखकर हैरान हो जाये। (तलवार निकालते हैं)

सरूपनखा-(हैरान होकर) यह क्या करने लगे हो ?

लक्ष्मण-कुछ नहीं सार्टीफिकट पर दस्तखत करता हूँ।

(नाक का सफाया करके चेहरे का मैदान बिल्कुल सफा कर दिया)

सरूपनखा का गाना (थियेटर बतर्ज—छोड़ो छोड़ो मेरी बहियां पिया)

हाय हाय कैसा जुल्म किया,

अरे जालिम अन्याई, तेरे दिल में क्या आई।

मेरी नाक क्यों उड़ाई,

अरे हाय हाय हाय, हाय कैसा जुल्म।

मुझे यहां से जा लेने दे जरा,

तुम्हें बदी का चखाऊँगी मजा।

अरे देख तो सौदाई, करूँ तीनों की सफाई,

ठहरो ठहरो ठहरो यहीं ठहरे रहना शाम तक।

हाय हाय कैसा जुल्म किया......

लक्ष्मण जी का गाना (तर्ज वही)

यह तो थोड़ी सी ही मिली सजा,

ज़ियादा करी बकवास, लूँगा जबान भी तराश।

तेरा जाय सत्यानाश, अरी जा जा जा,

यह तो थोड़ी सी...

जाके रावण को सनद दिखा और मिर्च मसाला भी लगा, यहां करेंगे निवास, जाओ जाना जिसके पास।
चल हट परे शेखी न जता, यह तो थोड़ी सी···

(सरूपनखा का भाग जाना)

(३) भंगड़खाना

दूषण–अरे भाई खर !

खर–यस माई डियर सर।

दूषण–अरे मेरे यार ! आज तो जाम अच्छी तरह लबरेज़ कर।

एक राक्षस—(प्याला आगे करके) अरे भईया पहले मेरा प्याला भर।

दूसरा–अरे जोरू के···एक तरफ होकर मर।

दूषण—(नशे में झूम कर) अरे भइया ! बोतलों में तो खाक भी नहीं, शराब और मँगाइये।

एक राक्षस—अरे जब तक शराब आये एक दौर नसवार का ही चलाइये।

दूषण–वाह रे मेरे लाल वुझक्कड़, भला शराब और नसवार का क्या मेल ?

पहला—अरे तू इन बातों को क्या जाने, दो चार छींक आकर नशा ऐसा खिलेगा जैसे अफीम पर तेल।

तीसरा–बिल्कुल दुरुस्त है (चुटकी चढ़ा कर) आछीं, छीं,

छीं, छीं, छीं, आछां।

चौथा–आ···आ···आ···आ···आछीं, छीं छीं, आ···
आ···आ···।

एक राक्षस (दूसरे की तरफ मुँह करके) छो, छो, आछो,
आछो, आ···आ···आ···आछो।

पहला–अरे नालायक (आ···आछीं) अन्धा हो रहा (छीं,
छी) देखा नहीं (छू, छू,) मेरे मुँह पर (छीं छीं)
थूक के छींटे पड़े (आच्छीं, आच्छीं, आच्छीं)

दूसरा–हट वे उल्लू के (आच्छीं, आच्छीं, आच्छीं) हा, हा,
हा, (आच्छीं छीं छीं)

तमाम राक्षस–(एक दूसरे पर कूद कर) आच्छीं, आच्छीं,
छीं. छीं, छीं, आच्छीं, छू, छा।

खर–अरे नालायको! यह कैसा तूफान (आच्छीं, आच्छी)
वदतमीजी (छीं, छीं,) ओ मर गया रे मेरे बाप!

दूषण–मेरी मय्या आज तो नाक भी गुलगुला वन गई!
(आच्छीं, आच्छीं आच्छीं) ओ हो, हो, हो, हो, हो!

एक आवाज–हाय मेरे भाई! दुहाई, दुहाई, दुहाई!!

एक राक्षस–अरे यह वेढ़ंगी सी आवाज कहां से आई?

दूसरा–(जोर से पुकार कर) कौन है भाई, यह वे वक्त कैसी
आफत (आच्छीं, आच्छीं) मचाई?

एक औरत—(करीब आकर) अरे बेशर्मों! तुमने तो हया और शर्म सब बेच खाई।

एक राक्षस—अरे यह तो सरूपनखा है। कहो मौसी! आज तो खून में बड़ी लत पत होकर आई, यह नया शिकार कहां से मार लाई?

सरूपनखा—हाय हाय निगोड़ो! तुम्हें मखौल सूझता है, मेरी नाक कट गई।

राक्षस—कौन मूर्ख कहता है? यह तो नसवार की वजह से छींक आ रही थीं मगर अब तो वह भी हट गई। (आछीं आछीं)

सरूपनखा—(मुँह पर से कपड़ा हटा कर) अरे बेगैरत! ले देख आंखें खोल कर देख, सत्यानाशी!

राक्षस—अरे, रे, रे, यह तमग़ा कहां से ले आई मेरी मासी?

दूसरा—अरे एक तो फायदा हो गया कि नजला ज़ुकाम से तो मिली खलासी।

तीसरा—अच्छा हुआ, यह मक्खियों का अड्डा उड़ गया, अब उन्हें बैठने के लिये न जगह पायेगी और न कोई मक्खी तुम्हें सतायेगी।

सरूपनखा—ओ तुम्हारा मुँह काला, मखौल करने के लिये भी यही वक्त निकाला।

चौथा—(जरा नजदीक जाकर) अजी नहीं हमारी खाला,

तुम से मखौल करे कौन साला......मगर यह तो बताओ कि यह मुँह है या खरसी परनाला ?

सरूपनखा—(तमाम राक्षसों के पीछे लपक कर) अरे तुम्हारा खालूँ कलेजा, तुम्हें यहां किस मुण्डी काटे ने भेजा।

तमाम राक्षस—(कभी सरूपनखा के आगे और कभी पीछे दौड़ते हुए) आछीं आच्छीं, छीं, छीं, छीं, छू, छू, छू, छा, आ, आ, आच्छीं, आच्छी, थू, थू, थू !

खर—(सबको डांट कर) खामोश खामोश, अगर ज्यादा शोर मचाओगे, तो सख्त सजा पाओगे।

एक राक्षस—ले भय्या अब तो बड़ी सरकार भी पोरू-पोस करने लग पड़ी है।

खर गाना (लावनी जिला)

नाक कटा नकटी हो आई चेहरा लहू लुहान हुआ।
बता तो बहिना सरूपनखा यह क्या ऐसा घमसान हुआ।
किस ज़ालिम ने की यह हरकत किसके सिर पर मौत चढ़ी।
जीने से बेजार कौन है किसकी आई बुरी घड़ी।
सांप के मुँह में अँगुली देवे किसकी इतनी जुरअत बढ़ी।
अदम के रस्ते कौन चला और मौत से किसकी आंख लड़ी॥
कौन है जिनको अपने बाहुबल का यह अभिमान हुआ।

बता तो बहिना०

सरूपनखा (तर्ज वही)

बैठे बैठे दिल उकताया यों ही सैर को जाती थी,
करती फिरती मटर गश्त में अपना दिल बहलाती थी।
चलते फिरते यों ही अचानक पंचवटी पर जा अटकी,
नजर पड़े दो बनवासी झट देख उन्हें मैं भी ठिटकी।
हुई मैं जिस दम उनके सामने उनकी आंखों में खटकी,
बुरी नजर से लगे देखने आपस में कुछ गिट पिट की।
वह चाहते थे फुलसाना मैं खातिर में नहीं लाती थी,
करती फिरती०

खर

वह बनवासी सत्यानाशी कौन हैं और किस के जाये,
मेरे इलाके में वह अहमक बिना इजाजत क्यों आये।
मेरे हुक्म बिन पंचवटी में किसने हैं वह ठहराये,
करें यहां आकर खूँरेजी खौफ न कुछ दिल पर लाये।
निश्चय ही अब उनके वास्ते मौत का सब सामान हुआ,
बता तो बहिना०

सरूपनखा

वह बनवासी अवधपुरी के राजकुमार कहलाते हैं,
नाम एक का राम दूसरे का लक्ष्मण बतलाते हैं।
उनकी जो मँजूर नजर सीता कह उसे बुलाते हैं,

हुस्न जवानी देख चांद सूरज तक भी शर्माते हैं।
नाक उडा दिया मेरा जब मैं अपना आप बचाती थी,
करती फिरनी०

खर

अभी चखाऊँ मजा उन्हें मैं राजकुमार कहलाने का,
मेरे इलाके में आकर मुझ पर ही हाथ उठाने का।
पता लगेगा अभी उन्हें इस तेरे खून बहाने का,
जब तक न लूँ बदला उनसे रोटी तक नहीं खाने का।
देख तेरी यह हालत मेरे पार जिगर के तीर हुआ।
बता तो बहिना०

नाटक

हां हां मालूम हो गया कि यह बनवासी, सत्यानाशी, मौत के मुतलाशी, दही के धोके में कपास खा गये हैं और खुदबखुद मौत के मुँह में आ गये हैं। इसी वक्त अपने शूरवीरों को हुक्म देता हूं और तुम्हारे देखते-देखते उनको जँजीरों में बांध कर तीनों का सिर इसी जगह मँगवा लेता हूं।

सरूप०—नहीं नहीं, मैं खुद साथ जाऊँगी और उनका खून पीकर अपने कलेजे की प्यास बुझाऊंगी।

एक राक्षस—ऐसी बहादुर थी, जभी तो नाक कान कटवा आई, उस वक्त यह दिलेरी न दिखाई, अब यहां आकर बन गई तीस मार खां की ताई।

खर-(डांट कर) चुप रह सौदाई, अगर ज्यादा बक बक लगाई तो समझले कि तेरी कजा भी उनके साथ आई।

वही राक्षस-हां भाई सच्ची सुनाई तो हमारी कजा आई, तुम्हारे इस दम दिलासे ने तो यह इस कदर आवारा गर्द बनाई।

खर-(एक सेनापति से) इसी वक्त अपनी फौज लेकर जाओ और अपराधियों का सिर या तीनों को गिरफ्तार करके हमारे पास लाओ।

सेनापति-हां मेरे बहादुरो, फौरन तैयार हो जाओ।

(३) रामचन्द्र और लक्ष्मण जी की आपस में बात चीत

रामचन्द्र जी-यह सामने जो इतनी गर्दोगुबार छा रही है, मालूम होता है वह बदकार अपने हिमातियों को सहायता के लिये ला रही है। तुम सीता को यहां से ले जाओ और किसी सुरक्षित स्थान पर जाकर छिपाओ क्योंकि यह उनको देख कर डरेगी और वृथा हमारा भी हौसला कम करेगी।

लक्ष्मण-मैं आपको अकेला छोड़ कर हरगिज न जाऊँगा, बल्कि आपके पहलू ब पहलू लड़ता हुआ एक-एक राक्षस को जहन्नुम पहुँचाऊँगा।

राम-तुम हर एक बात में जिद न किया करो, किसी का कहना भी मान लिया करो। अब अधिक देर का

वक्त नहीं और तुम्हारा यहां ठहरना उचित नहीं।

लक्ष्मण-(सीता सहित रवाना होकर) दिल तो नहीं चाहता मगर आज्ञा उल्लंघन का साहस नहीं।

तमाम राक्षस-(हुल्लड़ मचाकर) पकड़ लो, पकड़ लो, देखते क्या हो, बस मुश्कें जकड़ लो।

एक-(रामचन्द्र से) क्यों बे उल्लू के चरखे, यहां क्यों आया है? क्या तेरे बाबा का राज है।

दूसरा—अजी किससे बात करते हो, इसका तो आसमान पर मिज़ाज है।

रामचन्द्र-चुपके चुपके चले जाओ वरना मेरे पास तुम्हारा इलाज है।

तीसरा—हर एक को सरूपनखा न समझना!

राम—तुम भी ज़रा आगा पीछा देखकर उलझना।

चौथा—अगर जान अज़ीज़ है तो सीता को सरूपनखा के चरणों पर गिरा दे, हम सिफारिश करके तेरा कसूर मुआफ करा देंगे।

राम०—जिन हाथों ने उस बदकार को सजा दी है, वही हाथ तुमको भी जहन्नुम में पहुँचा देंगे।

राक्षस—ले सम्भल जा अब मेरा वार आता है।

राम०—(पैंतरा बदल कर) यह देख खाली जाता है।

राक्षस—ले दूसरा सम्भाल।

राम०—(तीर से काट कर) खूब अच्छी तरह दिल के अरमान निकाल।

राक्षस—यह तीसरा वार बिल्कुल बे-खता है।

राम०—(चोट बचाकर) यह देख वह भी अदम पता है। होशियार होजा, अब मेरा वार आता है।

राम०—(तीर छोड़ कर) चल बुजदिल जहन्नुम रसीद।

राक्षस—(जमीन पर गिरकर) हाय मर गया, अरे जालिम तेरी मिट्टी पलीद।

राम०—(तीरों की वर्षा करते हुए) मेरा एक एक बाण मुजस्सिम काल है और तुम में से एक का भी जिन्दा बच कर जाना अमरे मुहाल है। जाओ जाओ, जहन्नुम की हवा खाओ।

(तमाम राक्षसों का खातमा हो जाना, सरूपनखा का
भाग कर खर दूपण के पास जाना और कुल
वृतान्त सुन कर खर और दपण का
स्वयं युद्ध के लिए आना)

सरूपनखा—भाई गजब हुआ, तमाम राक्षस वहीं ढेर हो गये, इसी वजह से वह मुए और भी दिलेर हो गये।

खर—क्या हुआ, मैं अपनी खास सेना लेकर जाता हूं और उनको अभी अदम आबाद पहुँचाता हूं।

(४) खर दूषण की चढ़ाई और दोनों की सफाई

खर—(ललकार कर) खबरदार हो, तेरी मौत का पैग़ाम आया।

राम०—अब तेरी कमर रही है, लश्कर तो तमाम काम आया।

खर—शायद इसी हौसले पर फूल रहा है!

राम०—जरा आगे हो, दूर खड़ा क्यों फूल रहा है।

खर०—अरे बेगैरत तूने मेरी बहन की इज्जत पर हाथ क्यों डाला?

राम०—यह तो खुद ही जली भुनी फिरती थी, बड़ी मुश्किल से यहां से टाला। ऐसी बहन का करो मुँह काला, अब असल माजरा क्यों नहीं बतलाती बेगैरत दल्लाला, शैतान की खाला!

सरूप०—मेरे भाई मेरी पाकदामनी को अच्छी तरह जानते हैं, वह तेरी इन बेहूदा बातों को कब मानते हैं? अब मौत दिखाई देने लगी तो बातें बनाता हैं और अपने आपको बेकसूर बताता है। (अंगूठा दिखाकर) जली भुनी फिरती होंगी तेरी अगली पिछली।

राम०—अच्छा यह तो बता तेरा हमारे पास आने का क्या काम था?

सरूप०—(लज्जित होकर) भाई खर! जरा देना इसका जवाब मुआ बहुत सिर पर चढ़ रहा है।

खर—खामोश! ऐ शरारत के पुतले खामोश! क्यों अपनी कजा को पुकारता है?

राम०—ओ बदलगाम! तू क्यों अपनी सरकोबी के लिए मुझको उभारता है?

खर का गाना

(तर्ज—जाओ जी जाओ किस नादान को बहकाने आए)

लड़के नादान इस मैदान में तू नाहक आया।
करली है मौज बहुतेरी, आगई अब शामत तेरी।
मरने में कुछ नहीं देरी, करले कुछ हेरा फेरी।
जालिम बदकार तू किस बिरते पर इतना इतराया॥

लड़के नादान०

पंजे में मौत के आकर तू गिरफ्तार हुआ,
जिन्दगी बोझ हुई जीने से बेजार हुआ।
मेरे हाथों से तेरा मुर्दा यहां ख्वार हुआ।
क्यों कजा का तू ऐ नादान तलबगार हुआ॥
देखे क्या छाती ताने, कर दूँगा अकल ठिकाने।
जिन्दा न दूँगा जाने, क्यों बे बदमाश तूने,
कैसे उसका नाक उड़ाया॥ लड़के नादान०

रामचन्द्र जी का गाना इसी तर्ज में)

चल बे हैवान, बेईमान तेरा सिर खुजलाया।
आई क्यों तेरी शामत, करदूँगा अभी हजामत॥
आती नहीं तुझे नदामत, आंखों के आगे आमत।
हामी तिर्लज्ज तू किस बेगैरत का बनके आया॥

क्यों बे हैवान०

तुझसा बेशर्म है न दुनिया में जिनहार कोई।
बेहया पाजी व बेगैरत व बदकार कोई।
बाकी अब जिन्दा नहीं तेरा मददगार कोई।
भेजा था जिसको न बाकी रहा सरदार कोई॥
नकटी ने करी शिकायत, उसको न करी हिदायत।
उल्टा तू करे हिमायत, मरजा तू नाक डुबोकर,
सन्मुख होके मुख दिखलाया॥ क्यों वे हैवान०

नाटक

खर–ओ मगरूर! मरने के लिए तैयार हो जा।
राम०–(तीर छोड़कर) ओ ना पाक रूह! इस जिस्म से फरार हो जा।
खर–(चिल्लाकर) हाय मर गया, मेरी मय्या।
दूषण–घबराओ मत मेरे भैया।
राम०–इसको तसल्ली पीछे देना, पहले अपनी जान बचा।
दूषण–क्या डर है, जरा मुकाबले पर आ।
राम०–(तीर छोड़कर) एक, दो, तीन, चार! चल दफा हो बदकार।
दूषण–(चीखकर) अरे जालिम यह क्या आग लगा दी!
खर–हाय मेरे जिस्म में तो एक ही तीर ने चिंगारी सी सुलगा दी।

तमाम राक्षस–(कराहती हुई आवाज से) अरे यह लड़ाई है या ठट्ठा, जालिम रग देखे न पट्ठा।

(खर और दूषण की साथियों सहित समाप्ति)

लक्ष्मण जी–(हाथ जोड़कर) धन्य हो! धन्य हो!! तीर चलाने में निःसन्देह कमाल किया और एक एक राक्षस को बुरी तरह हलाल किया।

सीता–(रामचन्द्र जी के पांव पकड़ कर) मेरे सरताज, मेरे लोक परलोक की लाज! क्षत्रीय धर्म की जिन्दा तस्वीर, प्यारे लक्ष्मण के बहादुर वीर। आप थक गये होंगे जरा आराम कीजिए और इस दासी को चरण-सेवा का सौभाग्य दीजिए।

राम०–(जल्दी से सीता को उठाकर हँसते हुए) नहीं प्रिया जी! मुझे तो लेश-मात्र भी थकान नहीं।

तमाम ऋषि—(फूल बरसाकर) जय हो, जय हो, रघुकुल भूषण! निस्सन्देह तुम्हारे से मुकाबला करना आसान नहीं।

सरूपनखा का गाना (तर्ज—तेरी छलबल है प्यारी)

मेरे योद्धा तमाम, आये भाई भी काम,
बड़ी मुश्किल में आई हमारी जान।
हुई नाहक जलील, मैं कहलाई रजील,
मेरे बिल्कुल ही मारे गये हैं औसान।

हाय हाय भाई जान, सोये क्या लम्बी तान,
छोड़ूंगी इनका मिटाकर निशान ।
*जाऊँ रावण के पास, करूँ इनका विनाश, तो बूझेगी प्यास
अरे हाय हाय हाय, हाय हाय हाय, हाय हाय हाय,
मेरे योद्धा तमाम०

०—:※:—०

सत्रहवाँ दृश्य

रावण का दरबार

रावण—(आप ही आप) मुझसा तेजस्वी, प्रतापी, बलवान, दिलेर, बहादुर, शेर, जिसकी भुजा-बल का सारा संसार भय मानता है और जिसके नाम को हर एक छोटा बड़ा जानता है, जिस राज का हुक्मरां हो, उसको असम्भव है कि कभी स्वप्न में भी खिजां हो । हां मैं वह रावण हूं कि जिसने अच्छे-अच्छे अभिमानी सिरों को एक क्षण में कुचल डाला, सिर मेरी गदा ने बहुत से सरकशों का कचूमर निकाला । जिसकी तरफ मेरी नजरें अताब हुई, फतह व मुसर्रत कदम चूमती हुई मेरे हम रकाब हुई । मैं वह रावण हूं कि जिसकी धाक ने जमीन व असमान को हिला दिया और जिसने बड़े-बड़े छत्रधारियों को क्षण भर में खाक में मिला

दिया:—

बे शुमारों को तहे खाक मिलाया मैंने।
मौत की गोद में लाखों को सुलाया मैंने।
शर्बत मर्ग करोड़ों को पिलाया मैंने।
मनुष्य क्या चीज, खुदाई को हिलाया मैंने॥
जिस तरफ पड़ गया बस उसको मिटाकर छोड़ा।
झुलस दिया फूँक दिया खाक बनाकर छोड़ा।

एक छत्रधारी—महाराज का जाहो जलाल, बलन्दिये इकबाल बेशक बदर्जे कमाल है और हजूर के आगे सिर हिलाने या आंख उठाने की किसकी मजाल है। महाराज के चरणों की बदौलत जो अरूज लंका की राजधानी ने पाया, वह दूसरी राजधानी को स्वप्न में भी नजर नहीं आया, जिसे देखकर दूसरे हम असरों को ईर्षा की अग्नि ने जलाकर खाक बनाया:—

कोई दुश्मन न कभी सामने आने पाया।
आगया भूल के तो जिन्दा न जाने पाया॥
कोई सरकश न कभी सिर को हिलाने पाया।
सामने आपके न आँख उठाने पाया॥
कोई बलवान हुआ बल से दबाया उसको।
जो कि बल से न दबा छल से दबाया उसको॥

रावण—(हंसकर) हा, हा, हा, हा ! कहां लँका की शहन-शाही और कहाँ इन मामूली रियासतों की बादशाही ? निस्सन्देह ! हमारी इस उन्नति को देख कर बहुत से हासिदों के सीने पर सांप लोटता होगा मगर जब हमारे तेज का सितारा…।

अंगपन—(बात काट कर) महाराज गजब हुआ ! खर और दूषण अपनी सेना सहित रामचन्द्र के हाथ से मारे गये।

रावण—(चौंक कर) हैं ! हैं !! क्या कहा ? खर और दूषण से शूरवीर सेना सहित एक तरफ, और रामचन्द्र अकेला एक तरफ ! अकल से बात कर कमजर्फ। झूठ, बिल्कुल झूठ, बकवास, केवल बकवास, अरे तेरा सत्यानाश ! भला कभी ऐसा हो सकता है ! तू बिल्कुल झूठ बकता है।

सरूपनखा—(चिल्लाती हुई) हाय मैं लुट गई, हाय मैं मर गई।

रावण—(हैरान होकर) हैं ! हैं !! तुझे क्या हो गया, जो इस कदर खून से भर गई।

सरूपनखा—(जोर से चिल्ला कर) हाय री मेरी मय्या, मैं मर गई मेरे भय्या, उई, उई, उई,……

रावण—अरी बात क्या है ! कुछ मुँह से तो बोल।

सरूप०—(सिर पीट कर) बोलूँ क्या खाक़, सिर पर बाल रहे न मुँह पर नाक।

रावण—अरे तेरी यह दुर्गति किसने बनाई, वह था कौन मौत का खरीदार ?

सरूप०—वही मुण्डी काटे बदकार, अयोध्या के राजकुमार, जिनको बाप ने भी बद् चलन समझ कर घर से निकाल दिया। दर बदर भटकते फिरते हैं और लोगों की बहू-बेटियों को तकते फिरते हैं।

रावण—मगर उन्होंने तेरी नाक क्यों उड़ाई ?

सरूप०—भाई यों ही मैं घूमती फिरती पँचवटी की तरफ आई, तो मेरी सुन्दरता और यौवन को देखकर उनके दिल में बेईमानी समाई, मगर मुश्किल से मैंने उन से अपनी आबरू बचाई। रामचन्द्र की स्त्री सीता जिसकी खूबसूरती के आगे सूरज भी मात है, वह आफ़त का परकाला भी उनके साथ है। मैंने सोचा कि उनको तो नजरे बद उठाने का मजा चखाऊँ और किसी तरह उसको उनके पास से उड़ाकर भाई रावण की पटरानी बनाऊँ। ज्यों ही मैंने उसकी तरफ क़दम बढ़ाया, मुए लच्मण ने रामचन्द्र के इशारे से मेरा नाक उड़ाया। मेरी हिमायत में खर व दूषण भी मारे गये और सेना सहित मौत के घाट उतारे गये।

रावण–(कड़क कर) आह, आह! सीता, सीता! मेरी जान व ईमान की मालिक सीता! सीता तू निःसन्देह सीता है मगर मेरी जान का फजीता है (कलेजे पर हाथ रखकर)

दिल में इक दर्द उठा आंखों में आंसू भर आये,
बैठे बिठलाये न जाने हमें क्या याद आया

(पागलों की तरह) आह सीता, ओ सीता, क्या प्यारा नाम है, सीता आह जालिम सीता! यद्यपि मैंने तुझको स्वयंम्बर में नहीं जीता, मगर अब अवश्य जीती जायेगी और अपने शरबते दीदार के जाम अपने नाज़ुक और हिनाई हाथों से रावण को पिलायेगी। निःसन्देह अब तू रावण की पटरानी कहलायेगी और तेरी मनोहर सुन्दरता की छवि लंका के सुनहरे महलों में ही जगमगायेगी। (सीने पर हाथ रखकर) ऐ मेरे बेकरार दिल सब्र कर, सब्र कर। इतना न उछल, इस कदर न मचल। मगर इसमें भी तेरा क्या कसूर है बल्कि उस प्यारे नाम में ही कुछ ऐसा सरूर है, जिसको सुनकर आज तू भी बुरी तरह धड़क रहा है, मानो वक्त से पहले ही उसके स्वागत के लिए फड़क रहा। (माथे पर हाथ रख कर) ओ मेरी क़िस्मत! बेदार हो। ऐ मेरी प्रारब्ध! मेरी सहायता के लिए तैयार हो। ऐ तक़दीर! आज तेरी परीक्षा की जायगी और निश्चय

ही तू मुझे निराशा का मुँह न दिखायेगी। (कुछ सोच कर) सरूपनखा! तुम महलों में विश्राम करो, मेरे शूरवीर सरदारो! तुम भी आराम करो।

सरूपनखा–मुझे तो आराम तब मिलेगा, जब उन दोनों का जनाजा मेरी आंखों के सामने निकलेगा।

रावण–(कड़क कर) जाओ जाओ, ज्यादा शोर न मचाओ।

(२) दरबार का बरखास्त हो जाना और रावण का पलंग पर लेटे हुए नजर आना।

रावण–(स्वयं) ओ जालिम तूने यहां भी मेरा पीछा न छोड़ा और बैठे बिठाये मेरे दिल को बुरी तरह मरोड़ा। तेरे हुस्न के शोले मुझे यहां भी आकर जलाते रहे और तेरे नाम के चर्चे मुझको हमेशा खाक में मिलाते रहे। मगर याद रख कि अब तू अयोध्या को लौट कर कदाचित न जायेगी और निःसन्देह रावण की पटरानी कहलायेगी। ताकत से, बल से, कपट से, छल से, धोके से, फ़रेब से, दगे से, चालाकी से, अय्यारी से, मक्कारी से, सितम रानी से, बेईमानी से, गर्जे कि जिस तरह हो सकेगा, तुझे उड़ाऊँगा और तेरी अपूर्व सुन्दरता की रोशनी से अपने महलों की रौनक बढ़ाऊँगा।

मगर कोई ऐसा उपाय बनाऊं कि जिससे बगैर लड़ाई भिड़ाई के ही अपना काम निकाल लाऊं। (कुछ सोच कर) ठीक ठीक, बिल्कुल ठीक, ऐसा ही करना चाहिए, क्योंकि रामचन्द्र से मुकाबिला करना लोहे के चने चबाना है, मैंने अपना काम निकालना है न कि झगड़ा फैलाना है। मगर अकेले से यह काम बनना दुश्वार है, अगर एक साथी और मिल जाये तो बेड़ा पार है। एक दो ग्यारह, बस फिर तेरे पौ बारह। आह खूब याद आया! मारीच, मारीच! वाह रे मारीच! वह बड़ा तजरुबेकार है, आला दर्जे का अय्यार है और हर एक फन में यकताये रोजगार है। (उछलकर) अभी जाता हूं और उसको अपना हमराज बनाता हूं:—

अभी जाकर उसे अपना दिली मुद्दा बताता हूं

कपट से फरेब से छल से उस गुले तर को उड़ाता हूं।

अगर्चे मैं स्वयम्बर में पशेमां होकर आया था।

मगर इस बार फिर अपना मुकद्दर आजमाता हूं॥

बहुत से खुदसरों की खाक में इज्जत मिलाई है।

मैं वह रावण हूं जिससे कांपती सारी खुदाई है॥

(३) मारीच की झोंपड़ी

रावण—मारीच! मारीच! मेरे बहादुर मारीच!

मारीच-(चौंक कर) आइये महाराज, मेरे सिर के ताज।

रावण-अगर्चे मैं महाराज हूं, अधिराज हू, मगर इस वक्त तेरी मदद का सख्त मौहताज हूं।

मारीच-मेरी जान और जिस्म आपके चरणों पर कुर्बान है, कहिए क्या फ़रमान है।

रावण-शाबाश, शाबाश, मेरे बहादुर! तू बड़ा दिलेर है, आखिर शेरों का शेर है। उठ मेरे साथ चल, तुझे एक काम बताऊं, तेरी माता और तेरे भाई का इन्तकाम दिलाऊं।

मारीच-(अचम्भित होकर) क्या काम, कैसा इन्तकाम? आपकी बात तो अजीब पेचदार है।

रावण-अरे तू तो बिल्कुल गंवार है। अहमक! तेरे माता पिता और तेरे भ्राता के कातिल रामचन्द्र और लक्ष्मण पंचवटी में आये हैं और उस सौन्दर्य की देवी सीता को भी साथ लाये हैं। अगर तू ज़रा साहस करे तो तुझको तो बदला मिलता है और मेरा काम निकलता है, किसी न किसी तरह सीता को उड़ा लायेंगे और वे भौंदू योंही जंगलों में भटक भटक कर मर जायेंगे।

मारीच-(सहम कर) हैं, हैं, राम और लक्ष्मण!

रावण—क्यों पेशाब क्यों निकल गया।

मारीच का गाना (बहरे कव्वाली)

कब्र में पाँव मरने के लिये तैयार बैठा हूं,
बुढ़ापा आ गया सरकार हिम्मत हार बैठा हूं ॥
जवानी की उमँगें तो जवानी में ही रहती हैं,
मगर अब तो मैं जीने से ही खुद बेज़ार बैठा हूं ॥
मैं खुद मोहताज हर इक बात में औरों का रहता हूं,
सहारा क्या किसी को दूँ कि खुद लाचार बैठा हूं ॥
जवानी हो गई रुखसत बुढ़ापा आ गया जब से,
किनारे फैंककर सब तीर और तलवार बैठा हूं ॥
न वह ताकत न वह जुरअत न वह फुरती न चालाकी,
अगर्चे जान है लेकिन मिसल दीवार बैठा हूं ॥
न ख्वाहिश है कि लूँ बदला न हिम्मत युद्ध करने की,
लड़ूँ क्या खाक क्योंकि खुद बहालत ज़ार बैठा हूं ॥
न होगी कामयाबी इस इरादे को तरक कर दो,
मैं उनके आजमाये हाथ और हथियार बैठा हूं ॥
अगर मानो बहुत बेहतर न मानो आपकी मर्जी,
मगर मैं तो यहीं पर ऐ मेरे 'सरदार' बैठा हूं ॥

नाटक

महाराज! मैं आपका ताबेदार हूँ और हर तरह से आप की खिदमत करने को तैयार हूँ, मगर क्या करूँ अब

क़बर में पाँव लटकाये मरने को तैयार हूँ। गर्दिशे जमाना से हर मनुष्य मजबूर है, इसमें न आपका जोर चल सकता है न मेरा कसूर है; क्योंकि यह रोग ही लाइलाज है, फिर वह मनुष्य आपकी क्या सहायता कर सकता है जो खुद दूसरे की मदद का मोहताज है। वह फ़ुरती, वह चालाकी, वह हिम्मत और दिलेरी सब चोंचले जवानी अपने साथ ले गई और जाते हुए यह साढ़े तीन हाथ की लकड़ी हाथ में दे गई। न मालुम क्या २ दुःख भर रहा हूँ सच पूछो तो जिन्दगी के दिन पूरे कर रहा हूँ। मजबूर हूँ लाचार हूं, इसलिये मुआफ़ी का ख़्वास्तगार हूँ बल्कि बेहतरी इसी में है, कि आप इस नापाक इरादे से बाज आ जायें और ख्वामख्वाह यह सोती राड़ न जगाये। मैं तो उनके हाथों को अच्छी तरह आज़मा चुका हूं और उनके सामने जाने की क़सम खा चुका हूं।

रावण-(कड़क कर) अच्छा देख मैं तेरी क़स्म तोड़ता हूं।

मारीच-अपनी जान और माल के सदके, मुझे मुआफ़ कर दें, मैं आपके आगे हाथ जोड़ता हूं।

रावण-अरे पाजी! केवल तू ही इन्कार करता है, वरना हर एक सरदार मेरे इस फ़ैसले के अनुकूल है।

मारीच-यह आपकी भूल है और जिसने आपको यह सम्मति दी है, वह परले सिरे का नामाक़ूल है।

रावण—तुझे मालूम नहीं मैं कौन हूँ। मैं रावण हूँ रावण !

मारीच—माना कि आप रावण हैं, मगर यह याद रखिये कि आप एक हैं तो वह इक्यावन हैं।

रावण का गाना (बहरे कव्वाली)

तअज्जुब है तेरी हालत अरे बदकार कैसी है।
तरीके गुफ्तगू क्या है तर्ज गुफ्तार कैसी है॥
नसीहत तु करे मुझको अरे अहमक गधे जाहिल !
यह टालमटोल लेतो लाल अरे बदकार कैसी है॥
मेरी नरमी के बाइस ही तुझे इतनी हुई जुरअत।
हुक्म जब दे दिया तुझको तो फिर इन्कार कैसी है।
पड़ा रहने से नाकारा बदन में आ गई सुस्ती।
बताता हूँ अभी तुझको तेरी रफ्तार कैसी है॥
राम का नाम सुनते ही हवाइयां लग गई उड़ने।
हुई तेरी शक्ल सूरत मिसल मुरदार कैसी है॥
डुबोया राक्षसों का नाम भी तूने अरे बुजदिल।
यह छाई मुरदनी मुंह पर अरे अय्यार कैसी है॥
खड़ा हो साथ चल मेरे बहाने मत बना कायर।
पड़ी तुझ पर अरे पाजी खुदा की मार कैसी है॥
दोबारा गर किया इन्कार तो टुकड़े बना दूँगा।
नजर आती नहीं तुझको कि यह तलवार कैसी है।

नाटक

ओ बेहूदा मक्कार ! पाजी नाहन्जार !! गर्दन जदनी ज़बान दराज !! न हमारी इज्जत का पास, न रुतबे का लिहाज़। अपने नजदीक हर एक बात बड़ी पुर दलायल कर रहा है, मगर वास्तव में जबान को छुरियां बांध कर मुझे घायल कर रहा है। (तलवार खींच कर) उपदेशक के बच्चे ! ठहर मैं तुझको नसीहत करना सिखलाता हूं और तुझे इस इन्कार का मजा चखाता हूं। अरे नातहकीक ! तू ने राक्षसों का नाम भी खाक में मिला दिया, बेकारी और हरामखोरी ने तुझको बिल्कुल सुस्त बना दिया। चन्द दिनों में ही तेरा सारा बल अदम पता हो गया। लानत, धिक्कार, नाम डुबो कर मर जा बदकार ! अरे बेगैरत अगर पैदा होते ही मरजाता तो सारे खानदान के माथे पर कलंक का टीका न आता। खैर तुझे एक मौका और देता हूँ और अपनी तलवार को म्यान में कर लेता हूँ सोच ले, विचार ले और नतीजे पर अच्छी तरह नजर मार ले। अगर अब भी इन्कार है तो तेरा सिर है और मेरी तलवार है।

मारीच—(दिल ही दिल में) अफ़सोस ! यह बिन बुलाये की आफत और जान की शामत ! न किसी से

झगड़ा न तकरार आ बैल मुझे मार। फँसा और बड़ा बेढब फँसा। दोनों तरफ मौत का शिकार, उधर रामचन्द्र के तीर और इधर इस कम्बखत की तलवार। इनकार करूँ तो मौत, इकबाल करूँ तो मौत। कोई जीते कोई हारे, मगर बच्चू तुम तो स्वर्ग सिधारे। किसी का झगड़ा किसी की लड़ाई मगर घर बैठे मौत हमारी आई। यारो, यह अजब तमाशा है कि इश्कबाजी तो सरूपनखा करे और बिना आई मौत बेचारा मारीच मरे। खीर खावे ब्राह्मणी और फांसी चढ़े शेख, नहीं देखा हो तो यहां आकर देख। बड़ी मुश्किल हुई, यह दुष्ट न खुशामद से मानता है न किसी की...

रावण—अरे कम्बखत ! जल्दी जवाब दे, क्या सोचता है ?

मारीच—जरा ठहर जाइये। सोच समझ कर जवाब देंगे आखिर मरना है मखौल तो नहीं :—

रफ्ता-रफ्ता जवाब देंगे, मरना है कुछ हँसी नहीं है।

रावण—मैं इससे ज्यादा इन्तजार नहीं कर सकता, जल्दी बता जो कुछ तेरी समझ में आता है।

मारीच—भई वाह ! यह अजीब जबरदस्ती है, अजी

जनाब दस मिनट की मोहलत तो फाँसी के मुजरिम को भी मिल जाती है।

रावण–यह कैसी बेहूदा हँसी है ?

मारीच–आपके नजदीक हँसी होगी, मुझ से पूछो जिसकी जान मुसीबत में फँसी है।

रावण–अरे अहमक ! यह वक्त दिल्लगी करने का है ?

मारीच–नहीं जनाब यह वक्त तो हमारे मरने का है !

रावण–मरना है तो सीधी तरह मर, यों पागल क्यों बना है ?

मारीच–मरती तो सारी दुनियाँ है, मगर यह उल्टा सीधा मरना आप से ही सुना है।

रावण—(झुँझलाकर) ओ बद जबान ! तू मेरी नरमी का नाजाइज फायदा उठा रहा है और कैंची की तरह जबान चला रहा है। अब तेरी बातों का जबाब मेरी जबान नहीं बल्कि तलवार देगी और तेरा यह नशा पल भर में उतार देगी।

मारीच—(दिल ही दिल में) यह पाषाण हृदय अपनी हट को न छोड़ेगा, अब ज्यादा इनकार करूँगा तो पहले मेरी गर्दन तोड़ेगा। अच्छा जो हो सो हो मरना तो आ ही गया, फिर कायर भी क्यों कहलाऊँ और इस दुष्ट के हाथ से तो जान न गवाऊँ, यद्यपि

रामचन्द्र का निशाना अचूक है, सम्भव है कि उसके हाथ से बच जाऊँ। लेकिन यह तो इसी वक्त तलवार लिए तैयार है।

रावण—(डांट कर) अरे शैतान! तेरा किस तरफ ख़्याल है तूने मेरी बात का अभी तक कोई जवाब नहीं दिया।

मारीच—हुक्म अदूली करने की मेरी क्या मजाल है, मगर यह तो बताइए कि आपने अपनी कामयाबी के लिए क्या उपाय सोचा?

रावण—(पीठ ठोंक कर) शाबाश! शाबाश!! मेरे बहादुर सिपहसालार शाबाश!! अगर तू मेरे साथ है तो उसका उड़ा लाना तो बिल्कुल मामूली बात है। कुछ अरसे पंचवटी के पास रिहायश अख्त्यार करेंगे और किसी मौके का इन्तजार करेंगे। बस जिस वक्त सीता को अकेली पायेंगे, उठाकर रफू चक्कर हो जायेंगे।

मारीच—इतना काम तो आप अकेले भी कर सकते हैं, फि: मेरी क्या जरूरत है।

रावण—तू भी निरा धूर्त है। अरे भले मानस! यह तो सर्वथा असम्भव है कि वह सीता को बिल्कुल अकेली छोड़ जायें और एक ही वक्त में दोनों गैरहाजिर

पायें इसलिए उन में से कोई भी वहाँ से जरा कदम उठा ले, बस सीता मेरे हवाले, फिर देखूँ मुझ से कौन छुड़ाले।

मारीच—जब आप खुद जानते हैं और दोनों की गैरहाजिरी वहां से असम्भव मानते हैं, फिर हम उनको वहां से किस तरह हटा लेंगे और आप कैसे मैदान खाली पा लेंगे?

रावण—अगर वहां से किसी तरह न टले तो फिर और तरकीब बनायेंगे। मेरे पास एक बड़ा खूबसूरत और सुन्दर मृग* है उसको अच्छी तरह सिधायेंगे और सीता की फुलवाड़ी के पास छोड़कर वहीं छुप जायेंगे। वह मृग ही ऐसा है कि सीता उसे देखते ही मोहित हो जायेगी, जब वह उसके हाथ न आयेगा तो मजबूरन रामचन्द्र को पीछे दौड़ायेगी। जब रामचन्द्र कुछ दूर निकल जाये, तो लक्ष्मण को तू (कान में कुछ कह कर) रामचन्द्र की आवाज में बुलाये। बस

---

*यद्यपि रामायण के प्राय सभी लेखक तथा रचयिता इस बात पर सहमत हैं तथा वाल्मीकि रामायण भी इस को मानती है कि मारीच मृग रूप बनाकर सीता जी की फुलवारी के पास आया, जिसको देखकर सीता जी का मन लल-

वह वहाँ से दफा हो और हमारे लिए मैदान सफा हो।

मारीच—(आहिस्ता से उठकर) या बेईमानी तेरा आसरा।
चलिए महाराज !

अठारहवाँ दृश्य

(१) सीता हरण

सीता का गाना

(वतर्ज—जामे गदाई हाथ में लेकर शाम सवेरे फिरते हैं)

एक वर्ष बाकी है केवल लौट अयोध्या जाने में।
तेरह साल खतम हैं गोया एक आंख झपकाने में।
हम जल्द अयोध्या जायेंगे और खुशी के मंगल गायेंगे।
फिर भरत जी मिलने आयेंगे, खूब होगी धूम जमाने में॥
एक वर्ष बाकी है···

चाया और रामचन्द्र जी से उसके पकड़ने का आग्रह किया इत्यादि इत्यादि। मगर हमारा इरादा है कि इस पर कुछ विशेष विचार किया जाये और इसको तर्क वितर्क द्वारा बुद्धि व युक्ति से बिल्कुल साफ कर दिया जाये। अस्तु इसके सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें विचारनीय हैः—

(१) कोई मनुष्य अपना रूप बादल करके कभी पशु योनि में नहीं आ सकता। अलबत्ता ऐसा होता है कि किसी हैवान की खाल पहन कर किसी हद तक स्वांग बना ले मगर उसकी रविश और चाल ढाल से फौरन पहचाना जा सकता है। फिर हिरन और इन्सान के अंगों में क्या निस्बत है?

माता के दर्शन पाऊंगी, चरणों में शीश झुकाऊँगी।
सब बातें उन्हें सुनाऊँगी, जो देखी यहां तक आने में॥
एक वर्ष बाकी···
नगरी के लोग लुगाइयों को, लक्ष्मण के दोनों भाइयों को।
सब अपनी और पराइयों को, देखेंगे ठीक ठिकाने में॥
एक वर्ष बाकी···
जब निकट अयोध्या जायेंगे, लोग हमको लेने आयेंगे।
नगरी को खूब सजायेंगे, खूब होगा जशन 'टोहाने' में॥
एक वर्ष बाकी···

(२) यदि इन सब बातों को मान भी लिया जाय तो कोई बुद्धिमान इस बात को नहीं मान सकता कि इन्सान चौपाया बन कर उसी तेजी से दौड़ सकता है कि जिस तरह हैवान। इस हालत में एक अच्छे तेज चलने वाले इन्सान को एक छोटी आयु का बच्चा या एक वृद्ध मनुष्य भी बड़ी आसानी से पकड़ सकता है, क्योंकि कुदरत ने हर एक जीव के अन्दर तमाम गुण उनकी अवस्था के अनुसार रक्खे हैं। न कोई चौपाया मनुष्य की तरह दो पाँव से चल सकता है और न कोई दो पाया मानिन्द हैवान चार पाँव से दौड़ सकता है। यदि विश्वास न हो तो आजमा कर देख लीजिए। इस परीक्षा के लिए सामान की भी आवश्यकता नहीं।

(३) अब सवाल बाकी रह जाता है कि वाल्मीकि जी ने इस बुद्धि विरोध को जो अकल और दलील के सरासर खिलाफ है किस तरह मान लिया अस्तु इसकी छानबीन के लिए अगर आप थोड़ी देर के बाल्मीकि रामायण पढ़ने की तकलीफ गवारा करेंगे तो निश्चय ही

प्राणनाथ ! अब तो तेरह साल खत्म हो गये, गोया बातों बातों में ही कम हो गये। बस एक साल और यहां गुजारेंगे और अगले साल अयोध्या को पधारेंगे।

रामचन्द्र–हां प्रिय जी ! ईश्वर की कृपा से यह दिन अच्छी तरह कट गये और हँसी खुशी में तेरह साल घट गये।

लक्ष्मण–अयोध्या में तो हमारा अभी से इन्तजार होगा और भाई भरत तो···

सीता—(उँगली से इशारा करके) स्वामी जी ! देखना कैसा सुन्दर मृग फिर रहा है।

राम०–बेशक मृग तो बड़ा सुन्दर है अपना आनन्द लेता हुआ जंगल में विचर रहा है।

आपका सन्देह भी बड़ी आसानी से दूर हो सकता है।

प्रश्न केवल यह है कि मौजूदा वाल्मीकि रामायण आदि से अन्त तक वाल्मीकि जी की रचित भी है या नहीं, मगर इसका जवाब हमको बाल्मीकि रामायण से ही मिलता है। स्वयं बाल्मीकि जी अपनी रचित पुस्तक मे लिखते हैं, "मैने इस रामायण को चौवीस हजार श्लोंको और पांच सौ सर्गों में लिखा है" (देखो वाल्मीकि रामायण बाल काण्ड) जिसके तीस हजार श्लोक और छः सौ तैतालीस सर्ग हैं। अब न मालूम कि छः हजार श्लोक और एक सौ तैतालीस सर्ग कहां से आये गये। अस्तु ज्ञात हुआ कि इतनी वृद्धि बाद में की गई और यही बात वृद्धि के अनुसार

सीता–यह मृग मुझे पकड़ दो। कैसा खूबसूरत है, गोया सोने की मूरत है ?

रामचन्द्र जी–हमारे पास हो तो फिर रहा है, पकड़ने की क्या ज़रूरत है ?

सीता–मैं इसे पालूँगी और अच्छे अच्छे जेवर इसके गले में डालूँगी और हरी हरी घास इसे खिलाया करूँगी और इससे अपना दिल बहलाया करूँगी।

राम०—मुमकिन है कि वह भाग जाये और हमारे हाथ न आये।

सीता–हाथ न आयेगा तो भगकर कहाँ जायेगा ?

राम–(हँसकर) भागने की तुमने अच्छी कही !

सीता–आप कोशिश तो करें, अगर जिन्दा हाथ न आये तो मृगछाला ही सही।

रामचन्द्र जी–बहुत अच्छा मैं जाता हूं। लक्ष्मण जी ! तुम यहां होशियार रहना और जरा अच्छी तरह खबरदार रहना।

ठीक है, क्योंकि जब हम देखते है कि छोटी से छोटी पुस्तक भी मुखालिफों या मुआफिकों के हाथ से महफूज न रह सकी तो यह कब मुमकिन था कि वे रामायण जैसी प्रसिद्ध और प्रचलित पुस्तक पर अपना हाथ साफ न करते। खैर यह तो एक मामूली सी बात है। वाल्मीकि रामायण पढ़ने से आप

(२) शरारत का आरम्भ

एक दर्शनाक आवाज—भाई लक्ष्मण ! जल्दी आओ, मेरी जान बचाओ ।

सीता–(सहम कर) लक्ष्मण ! सुनते हो, यह कैसी आवाज आई ?

लक्ष्मण जी–हाँ जानता हूँ किसी ने मेरा नाम लेकर आवाज लगाई ?

सीता–किसी की किसकी ? तुम्हारे भाई की आवाज है ।

को और भी ऐसी बाते मिलेंगी जिनको पढ़कर आपको मजबूरन यह मानना पड़ेगा कि या तो यह पुस्तक बाल्मीकि जी रचित नहीं है और अगर हैं तो वाल्मीकि कोई विद्वान नहीं था। मगर नहीं इसी वाल्मीकि रामायण से आपको वह अनमोल मोती और हीरे मिलेगे जो दूसरे ऐतिहासिक ग्रन्थों में आज स्वप्न में भी नहीं देख सकते और न प्रलय तक देखने की आशा है। यह सब दगावाज, जमाना-साज और खुद-गर्ज लोगों की करतूत है जिन्होंने अपनी गर्ज के लिए जहां आर्यवर्त की अन्य माननीय पुस्तकों पर कुल्हाड़ा चलाया, वहां रामायण को भी कलंकित किये विना न रहे। हां तो वह सवाल ज्यों का त्यों वना रहा कि वास्तव में यह बात क्या थी और उसकी वास्तविकता क्या थी? चुनांचे बुद्धि अनुमान और तर्क से यह बात प्रकट होती है कि या तो रावण वा मारीच एक काल तक उनके पीछे लगे रहे और जब रामचन्द्र जी को वहां से अनुपस्थित पाया तो लक्ष्मण जी को मारीच ने किसी चालाकी या बहाने से अलग कर दिया और रावण सीता को लेकर रफू-चक्कर हो गया। या ऐसा भी सम्भव है कि उन्होंने किसी

लक्ष्मण जी–तुम्हें मालूम नहीं कि इसके अन्दर क्या पोशीदा राज है।

सीता–तुम्हारे भाई को राक्षसों ने अकेला समझ कर आ दबाया है और उन्होंने तुमको सहायता के लिये बुलाया है।

लक्ष्मण जी-नहीं नहीं, यह तुम्हारा ख्याल है, राक्षसों की उनके सामने आने की क्या मजाल है?

सीता–लक्ष्मण! तुम विपत्ति के समय भाई के काम न

हिरन को सिधाया हो जैसा कि मदारी लोग एक चुहिया को सिखाते हैं और कहते हैं कि स्वामी लिये पानी का घड़ा भरला और जरा सी चुहिया अपने गले में बंधी हुई रस्सी को शप शप खींचने लग जाती है। जब कहा कि एक डोल सास के लिये भी निकाल दे, मुँह दूसरी तरफ किया और जल भुन कर बैठ गई पति की रोटियां पकाने को कहा तो बड़ी फुरती से हाथ चलाया, जहां सास के लिए एक रोटी की सिफारिश की तो सांप सूंघ गया। इसी तरह कलन्दर बानरों को, सपेरे सांपों को और सरकस वाले अन्य चौपायों को यहां तक कि शेर जैसे खूंखार और हाथी जैसे बड़े जानवरों से वह खेल कराते और ऐसा नाच नचाते हैं कि बाज बक्त बेचारे पशुओं की काबिले रहम हालत देखकर ख्वाहमख्वाह हमदर्दी करने को दिल चाहता है। बस गुमान गालिब है कि रावण ने भी किसी सिधाये हुए या सधे मृग से अपनी मतलब बरारी की हो वरना एक इन्सान का यह पापड़ बेलना अकल से दलीलसे, फितरत से, कानून कुदरत से, प्रमाण से, अनुभव से, कयाफ से, गर्जेकि किसी तरह भी मानने योग्य

आओगे, तो फिर क्या फोड़े पर लगाये जाओगे। हाय हाय, तू इतना बेदर्द हो गया और तेरा खून इस कदर सर्द हो गया कि भाई सहायता के लिये पुकारे और तू बैठा बातें बघारे।

लक्ष्मण–भाई की तरफ से मुझे इतमीनान है, मगर यह तो बताओ कि अगर मैं चला गया तो तुम्हारा यहां कौन निगाहबान है?

सीता–मुझे यहाँ क्या मौत पड़ रही है?

लक्ष्मण–आपको यों ही ज़िद चढ़ रही है।

सीता जी का गाना (बहरे तवील)

तू अभी जाके भाई की इमदाद कर,
मौत मुझको यहां कोई खाती नहीं।
पासबानी की मेरी जरूरत नहीं,
मैं यहां से कहीं भागी जाती नहीं।
तू अभी जाके०

नहीं है। जहां तक मुमकिन था मैंने इस मुख्तसिर सी बहस में इस मामले को साफ करने की कोशिश की। मगर मै अपने इस फैसले को कतई फैसला नहीं कह सकता। अगर कोई महाशय इस विषय में शेष वाकफियत बहम पहुंच कर तसल्ली बख्श जवाब देगे तो मै अपनी राय बदलने के लिए हर वक्त तैयार हूं।

(ग्रन्थ कर्त्ता)

हाय भाई ही भाई का दुश्मन हुआ,
क्या करूँ पार मेरी बसाती नहीं।
हैं बनी के मददगार तो सैकड़ों,
कोई बिगड़ी का दुनिया में साथी नहीं।
तू अभी जाके०
साथ आया था शायद इसी वास्ते,
कि यहां तो यह मुँह से बुलाती नहीं।
तेरी पहली सी आंखें नहीं अब रही।
तेरी नियत नज़र साफ़ आती नहीं
तू अभी जाके०
तेरा होगा न पूरा इरादा कभी,
गर्द तक भी तुझे मेरी पाती नहीं।
नहीं मालूम समझा है क्या तू मुझे,
बेहया तेरी आखें लजाती नहीं।
तू अभी जाके०
अभी कर दूँगी अपना यहीं ख़ात्मा,
जिंदगी बिन श्रीराम भाती नहीं।
तू यहां से चला जा जहां दिल करे,
तेरी सूरत मुझे अब सुहाती नहीं।
तू अभी जाके०

नाटक

लक्ष्मण! तुम व्यर्थ बहाने बना रहे हो और बेफायदा

यदा इधर उधर की बातें सुना रहे हो। मैं तुम्हारे मतलब को खूब जान रही हूं और देर से तुम्हारी आंखों को पहचान रही हूँ। तुम धोखा देकर भाई को मरवाना चाहते हो और मुझे खुद उड़ाना चाहते हो। अब मालूम हुआ कि तुम्हारा साथ आने का क्या सबब था और इससे तुम्हारा क्या मतलब था। याद रक्खो कि तुम मेरी तरफ नज़र तक नहीं उठा सकोगे और मेरी गर्द तक को न पा सकोगे। जीवन है तो श्रीराम के साथ है, अन्यथा जान पर खेल जाना मेरे लिए मामूली बात है। जहां तुम्हारी तबियत चाहे चले जाओ और मुझे मुँह न दिखाओ। (आँखों में आंसू भर कर) शोक! दुनियां अपने मतलब की यार है, मुसीबत के वक्त कौन किसी का मददगार है।

लक्ष्मण का गाना (बहरे तवील)

मेरी माता तुम्हें आज क्या हो गया।
किस किस्म की यह बातें सुनाती मुझे॥
आज दिल में तुम्हारे ये क्या हो गया।
बेगुनाह हाय तोहमत लगाती मुझे॥
मेरी माता०
सब करा और धरा मिल गया खाक में।
आप बदमाश कहकर बुलाती मुझे॥

आज अपने ही कानों से क्या सुन रहा ।
मौत भी तो नहीं हाय आती मुझे ॥
मेरी माता०
साथ आया था बेशक इसी वास्ते ।
ऐसी बातें सुनाकर रुलाती मुझे ॥
खूब की परवरिश खूब बदला दिया ।
खूब दे दे के लोरी सुलाती मुझे ॥
मेरी माता०
हर जगह जान कुरबान करता रहा ।
तुम दगाबाज उल्टा बताती मुझे ॥
अगर ऐसा ही था खौफ मुझ से तुम्हें ।
तो यह बेहतर था न साथ लाती मुझे ॥
मेरी माता०
अच्छा माता तुम्हारा ही क्या दोष है ।
मेरी क़िस्मत ही धक्के दिलाती मुझे ॥
बेशरम, बेधर्म, बेरहम, बेहया ।
बेवफा, बेनवा तक कहलाती मुझे ॥
मेरी माता०

नाटक

माता जी ! आप किस क़िस्म की बातें सुना रही हैं और कैसे अनुचित दोष मेरे जिम्मे लगा रही हैं। क्या मेरी

वफ़ादारी का यही सिला है, जो मुझको आप की तरफ से मिला है। साथ लाकर यही गुल खिलाने थे और ऐसे ही वाहियात इलजाम लगाने थे। घर से चलते वक्त माता ने मुझको पुत्रों की तरह तुम्हें सँभाला था, न कि यह ताने सुनने के लिए घर से निकाला था। (आंसू लाकर) अच्छा देवी! किसी पर क्या अफसोस है, यह मेरी प्रारब्ध का दोष है। मुसीबत के दिन आये, तो तुमने भी डंक चलाये।

वही आवाज—भाई लक्ष्मण जल्द आओ और मेरी जान बचाओ।

सीता का गाना (बहरे तवील या रागनी कालंगड़ा ताल चंचल)

पेश चलती नहीं नाथ मजबूर हूं,
कोई इस दम तुम्हारा सहैया नहीं।
तुम पुकारो हो किसको मदद के लिए,
राम का कोई दुनियां में भैया नहीं।
पेश चलती नहीं० ॥
आप किस्मत से अपनी जियो या मरो,
कौन से भाई के प्यार का दम भरो।
आप उम्मेद जिससे मदद की करो,
वह तो मरते को पानी पिलैया नहीं।
पेश चलती नहीं० ॥

आप जिनको समझते मददगार थे,
बेहया, बेशरम, मतलबी यार थे।
सब दिखावे छलावे के ग़मख्वार थे,
कोई दुःख सुख तुम्हारा सुनैया नहीं।
पेश चलती नहीं० ॥
हुई लाचार कुछ पेश चलती नहीं,
जो कि होनी है हरगिज वह टलती नहीं।
क्या करूँ जान मेरी निकलती नहीं,
पास कोई दिलासा दिलैया नहीं।
पेश चलती नहीं० ॥
मेरी अपनी ही गरदिश ने मारा मुझे,
आपके बिन न कोई सहारा मुझे।
और सूझे न कोई किनारा मुझे,
मेरी नैया का कोई खिवैया नहीं।
पेश चलती नहीं० ॥

नाटक

प्राणनाथ! आप किसको बुला रहे हैं? क्यों ख्वामख्वाह इस क़दर चिल्ला रहे हैं? यहां आपका कौन ग़मख्वार है जिसे आप भाई समझ रहे हैं वह पूरा मतलबी यार है। अपनी किस्मत से जियो या मरो, मगर इस भाई से मदद की कोई उम्मीद न करो। मैं औरत जात आपकी क्या सहायता कर सकती हूं और किस तरह तलवार पकड़ कर

आपके शत्रुओं से लड़ सकती हूं। यह आपकी दासी हर तरह मजबूर है, हां इतनी बात जरूर है कि अगर आप जीत गये तो मैं भी आपको जीती पाऊँगी, अन्यथा यहीं से अग्नि विमान पर चढ़कर स्वर्ग में आप से पहले जाऊँगी और वहां भी आपके चरण दबाऊँगी।

लक्ष्मण—देवी यह तुम्हारा कसूर नहीं, आज होनी कुछ न कुछ गुल खिलायेगी और निःसन्देह हम पर कोई न कोई मुसीबत लायेगी। जब आपकी जबान से ऐसे बुरे ख्यालात का इज़हार हो रहा है, तो जरूरी है कि हमारे लिए कोई नया बखेड़ा तैयार हो रहा है। जो पवित्र आत्मा १३ वर्ष तक लक्ष्मण की तरफ से बिल्कुल पाक रही, उसने हरगिज ऐसी बातें अपनी मरजी से नहीं कही। यह सब कुछ भावी करा रही है और आपके मुँह चढ़कर ऐसी बातें सुना रही है। बहुत अच्छा, जाता हूं और इस साजिश का पता लगाता हूं। मगर इतनी मेहरबानी करना कि मेरे आने तक कुटिया से बाहर कदम न धरना।

(लक्ष्मण जी का चला जाना)

अनोखा साधू

गाना (वतर्ज—जैसी करनी वैसी भरनी)

अलख जगाना हरिगुण गाना साधु सन्त कहाते हैं,

परमार्थ परउपकारों में अपनी उमर लगाते हैं।
बनवासी सन्यासी उस अविनाशी के गुण गाते हैं,
दुनियां को तज बैठ बनों में अपना योग कमाते हैं।
करते हरि भजन, हर दम यही लगन, रहते सदा मगन,
पड़ता नहीं विघन, रहता यही मनन, पापों का हो हनन।
दुष्टों का हो दलन, सब का हो शुभ चलन,
अलख हो...अलख हो...अलख...अलख......।

नाटक

सीता-योगीराज! आप कौन हैं और कहां से पधारे हैं?

साधु-सुन्दरी! मैं इसका जवाब क्या दूँ तुम्हारे सवाल ही दुनियां से न्यारे हैं।

सीता-आखिर आपका नाम! कोई रहने का मुकाम?

साधु-फकीरों का क्या नाम और कहां उनका मुकाम, जहां रात पड़ गई वहीं विश्राम।

सीता-फिर यहां किस तरह दर्शन दिये?

साधु-भिक्षा के लिए।

सीता-अहो भाग्य, जो कुछ कन्दमूल उपस्थित हैं, ग्रहण कीजिए।

साधु-भिक्षा तो पीछे लूँगा पहले अपना नाम और पता बता दीजिये।

सीता-भगवन्! सीता मेरा नाम है और मिथिलापुरी

पैदायशी मुक़ाम है। श्री रामचन्द्र जी की अर्धाङ्गनी और महाराज जनक की दुलारी हूं, पिता की आज्ञा से मेरे स्वामी चौदह वर्ष के लिए वनों में आए हैं, उन की सेवा के लिए मैं भी साथ ही पधारी हूं। मेरे देवर लच्मण जी जो मेरे सौतेली सास के जाए हैं, वह भी हमारे साथ आए हैं। तेरह साल से इन वनों में भ्रमण कर रहे हैं और आप जैसे महात्माओं के उपदेश श्रवण कर रहे हैं। इस वन के तमाम ऋषि मुनियों की हम पर बड़ी मेहरबानी है और यह हमारी संक्षिप्त सी राम कहानी है।

साधु – सुन्दरी! तुम्हारी वार्ता बेशक निराली और दिल को हिला देने वाली है। यह हुस्न और यह जवानी, जिसके होते हुए भी तुमने जंगल की खाक छानी। तुम्हारी काबिले रहम हालत देख कर मेरा दिल पिघल रहा है और कलेजा सीने से निकल रहा है। तुम तो इस लायक थी कि किसी राजा महाराजा के महल को आबाद करतीं, न कि इस तरह जंगलों में फिरती हुई अपनी जिन्दगी और जवानी को बरबाद करती।

सीता—महात्मन्! आपकी जबान से ये शब्द शोभा नहीं देते मैं बूढ़ी हूं, या जवान हूं, लेकिन क्या बलिहाज

उमर और क्या बलिहाज मर्तबा आपकी पुत्रियों के समान हूं, साधू संन्यासियों के लिए ऐसी गुफ़्तगू बाइसे शर्म है और जिसकी वजह से मुझे आपके साधु होने में भी भ्रम है।

साधु—तुमने मुझे पहचानने में कमाल किया और अपनी चतुराई से असल भेद को निकाल लिया। बेशक न मैं साधु हूं न संन्यासी हूं बल्कि (बनावटी दाढ़ी और जटा उतार कर) महाराज रावण लंका निवासी हूं।

सीता—(सहम कर) मेहरबानी करके आप यहां से तशरीफ़ ले जाइये।

रावण—बहुत अच्छा तो फिर आइये।

सीता—मैं कहां आऊँ।

रावण—मैं तुम्हें छोड़कर कहां जाऊँ।

सीता—जहन्नुम में।

रावण—हां अब मालूम हुआ कि तेरी केवल शक्ल ही शक्ल है, दर असल तू आला दरजे की बेअक़्ल है। अरी नादान तू सोच तो सही, कि इस तरह कब तक अपने जीवन का निर्वाह करेगी और कब तक इस बेनवा के साथ अपनी जिन्दगी तबाह करेगी। चौदह साल का तो एक बहाना है, वरना इस विचारे का तो इन्हीं

जंगलों में ठिकाना है। इसी तरह भटक-भटक कर मर जायेगा, आखिर तुझे एक दिन रांड कर जायेगा। मेरे साथ चलेगी तो रावण की पटरानी कहलायेगी और सारी लंका तेरे पांवों के नीचे आंखें बिछायेगी।

सीता का गाना (बतर्ज कव्वाली)

अरे ओ नफ्स के कुत्ते, यह क्या बकवास करता है,
नशे में हो रहा अंधा, नहीं पापों से डरता है।
लगाऊँ आग लंका को, झुलस दूँ मुँह तेरा जालिम,
न मरने को जगह पाई, यहां पर आके मरता है।
बना कर भेष मुनियों का, किया बदनाम उनको भी,
अरे निर्लज्ज किस करतूत पर इतना बिफरता है।
ताज्जुब है अभी तक क्यों नहीं उजड़ी तेरी लंका,
अन्धेरा ही वहां रहता है या सूरज भी चढ़ता है।
अगर राजा हो ऐसे नीच कर्मों का लगा करने,
नहीं मालूम प्रजा पर जुल्म क्या क्या गुजरता है।
तेरे जैसा महा बदमाश हो जिस राज का मालिक,
तो ऐसा राज निश्चय हो बहुत जल्दी उजड़ता है।
धर्म ही की वजह से यह मनुष्य अफजल कहलाता है,
नहीं तो अपनी योनि में गधा भी पेट भरता है।
चला जा भागजा वरना अगर स्वामी जी आ पहुँचे,
न छोड़ेंगे तुझे जिन्दा जो तू इतना अकड़ता है।

शर्म आती नहीं तुझको यही लक्षण हैं राजा के,
बदल कर रंग गिरगट की तरह बन में विचरता है।

नाटक

(क्रोध में आकर) आग लगे तेरी लंका को, चूल्हे में पड़े तू ! ओनफ्स के कुत्ते ! यह क्या बकवास कर रहा है और क्यों अपनी मौत को तलाश कर रहा है। ओ पापी ! तूने मुझे क्या समझा है, जो ख्वामख्वाह मेरे साथ उलझा है। उस राज के नष्ट हो जाने में क्या कलाम है, जिसका मालिक तेरे जैसा पतित और विषयों का गुलाम है। राजा होकर ऐसा कर्म डूब मर बेशर्म।

रावण—(कड़क कर) ओ मुँह जोर बेबाक ! मुट्ठी भर हड्डियां और इतनी तमतराक ! तेरी जबान बहुत निकल रही है जो कैंची की तरह चल रही है आखिर तू जंगल की रहने वाली वहशी है, इसलिए तेरी तमीज भी ऐसी ही है मुँह में आया सो बक दिया, हाथ में आया सो पटक दिया। तू क्या जाने कि एक राजा के साथ किस तरह कलाम करना चाहिये और उसको किस तरह से प्रणाम करना चाहिए।

सीता—ताज्जुब है कि आप एक जांगलू, वहशी, बेतमीज औरत के साथ क्यों कलाम कर रहे हैं ?

रावण—मैं तुझे अपने साथ ले जाऊँगा और तुझे अक्ल

और तमीज सिखा कर वहशी से इन्सान बनाऊँगा।

सीता–चला जा, चलाजा क्यों खोपरी खुजला रहो है ?

रावण–(सीता का हाथ पकड़ कर) ओ बदजबान ! तू खुद अपनी मौत बुला रही है। (जोर से झटककर) अब बता तेरा रक्षक कौन है ?

सीता–मेरा धर्म।

रावण–वह कौनसी ताकत है जो मेरे सामने आये ?

सीता–तेरा पाप।

रावण–पुकार अपने सहायक को, जो तुझे मेरे जबरदस्त हाथ से छुड़ाये।

सीता–पुकारने की जरूरत नहीं, वह परमेश्वर जो तुझ में और मुझ में व्यापक है, न सिर्फ तेरे इस जुल्म को देखता है, बल्कि तेरे अन्तःकरण के पापों को भी जानता है, वह मुझको तेरे नापाक हाथों से ही नहीं बचाएगा बल्कि तुझ जैसे पापी को मलियामेट करके तेरा नामोनिशान इस दुनिया से मिटायेगा।

रावण—(सीता को जबरदस्ती उठाकर) बहुत अच्छा ! देखा जायगा, जब वह तुझको मेरे हाथ से छुड़ा ले जायगा।

सीता–(चिल्ला कर) परमेश्वर ! तेरी दुहाई है, एक तरफ बेबस मजलूम है, दूसरी तरफ जालिम कसाई है।

प्राणनाथ ! बचाओ, वीर लक्ष्मण तुम ही सहायता के लिये आओ। देखो तो मैं कितनी देर से चिल्ला रही हूं, मगर तुम्हारा क्या दोष है, अपनी मूर्खता का फल पा रही हूं। हाय हाय मैंने तुझ बेगुनाह पर वह दोष लगाये जो कभी देखने और सुनने में नहीं आये। बिलाशक मैं तेरी गुनहगार हूँ मगर हाथ जोड़कर मुआफी की ख्वास्तगार हूं। परमेश्वर के वास्ते मेरी उन बातों को तबियत पर न लाना और कहीं मुझ से बदज़न न हो जाना।

(रावण का सीता को उठाकर रफूचक्कर हो जाना)

रामचन्द्र का बन से वापिस लौटना और मार्ग में लक्ष्मण जी का मिलना

राम०—लक्ष्मण ! मैं तुम्हें वहां पर बिठा कर आया था।

लक्ष्मण—मगर यहां भी तो आपने ही बुलाया था।

राम०—(तअज्जुब से) किसने और कब ?

लक्ष्मण—आपने और कब ?

राम०—मालूम होता है कि तुम किसी के धोके में आ गए और सख़्त गलती खा गये।

लक्ष्मण—मैं न तो किसी के धोके में आ सकता हूं और न ग़लती खा सकता हूँ। मगर जो होनी है उसको किस तरह मिटा सकता हूं ? किसी ने आपकी आवाज में मुझको सहायता के लिये पुकारा, कि भाई लक्ष्मण

जल्द आओ वरना मै मरा, जिसे सुनकर जानकी जी रोने लगीं और वहीं प्राण खोने लगीं। मुझे भेजने के लिये बहुत कुछ इसरार किया, जब मैंने इन्कार किया तो मुझे बदनियत बताया, दग़ाबाज ठहराया और इस किस्म का बेहूदा इल्जाम मेरे जिम्मे मढ़ा, जिसे सुनकर मुझे मजबूरन यहां आना पड़ा।

राम०—यह सरासर जालसाजी है और किसी राक्षस की चालबाजी है। मैंने आती दफा तुमको इतना समझाया मगर अफसोस कि तुम्हारी समझ में कुछ नहीं आया! दुश्मन मौका पाकर अपना वार चला गये और मुझको हमेशा के लिए खाक में मिला गये।

लक्ष्मण—आप पहले ही इस कदर न घबराइये, जरा पञ्चवटी की तरफ तो आइये।

राम०—यह तुम्हारी खामख्याली है, पंचवटी तो बिल्कुल खाली है।

(दोनों का पंचवटी पर आना)

राम०—(कुटिया खाली देखकर) अफसोस! वही हुआ, जिसका मुझे पहले ही ख्याल था और सीता का राक्षसों के हाथ से महफूज रहना अमरे मुहाल था।

लक्ष्मण—महाराज! आप घबरा क्यों रहे हैं आपकी तबियत में तो बड़ा इस्तकलाल था।

राम०—मेरा सब इस्तकलाल खाक में मिल गया, गोया जिस्म है मगर कलेजा सीने से निकल गया।

लछमण—मुसीबत के वक़्त घबराना गोया अपनी मुसीबत को बढ़ाना है जो कुछ हो चुका उसके लिये रोना फिजूल है, उसके इन्सदाद की तदबीर करना अकलमन्दों का असूल है। देखेंगे, भालेंगे, ख्वाह वह आसमान पर चढ़ जाये या पाताल में उतर जाय लेकिन अगर दम में दम है तो उसको वहीं से ढूँढ निकालेंगे।

रामचन्द्र जी का गाना (रागनी सोहनी)

हर रोज की गर्दिश से गर्दिश में जमाना हो गया।
ऐश और आराम सब इक दम रवाना हो गया॥
घर छुटा बे घर हुए बे ज़र हुए बे पर हुए।
छोड़ सब सामान जंगल में ठिकाना हो गया॥
अब नहीं ताकत रही लछमण जी मुझमें ज़ब्त की।
नागहानी ग़म से मैं बिल्कुल दिवाना हो गया॥
अब अयोध्या में भी जाने की नहीं सूरत रही।
आह यह बन ही मुझे अब जेलखाना हो गया॥
कोई तो मर कर मरा हम जिन्दगी में मर मिटे।
मेरा मरना और जीना एक फिसाना हो गया॥
शौक से जाओ अयोध्या में इजाजत है तुम्हें।

रामचन्द्र का खत्म अब आबोदना हो गया।
क्या किसी को दोष दूँ मेरी अक़ल मारी गई।
आपका तो बीच में यों ही बहाना हो गया॥

नाटक

आह! वही पञ्चवटी जिसमें जिन्दगी बड़े ऐशो-आराम से कटी, अब बिल्कुल नहीं भाती है, गोया मुँह फैलाये खाने को आती है। ओ मनहूस पञ्चवटी, तूने ऐसा जुल्म अपनी आंखों से देखा, मगर तेरी छाती न फटी। ओ जालिम तूने मेरी प्राण प्यारी को खा लिया या किसी जगह छुपा लिया। ऐ ऊँचे-ऊँचे दरख्तो! अरे बेरहम कम्बख्तो! तुम्हीं कुछ पता दो और कहीं प्राण प्यारी को देखा हो तो बता दो। ओ सीता की फुलवारी के नन्हे बूटो! अरे बेदर्दो कुछ तुम ही मुँह से फूटो। अफसोस हर जगह सन्नाटा, चारो तरफ खामोशी (अश्रुपात होकर) आह बेवफाओ कोई तो जबान खोलो, कुछ तो मुँह से बोलो! (दीवानावार) हां मालूम हो गया कि इस साजिश और शरारत में तुम शामिल हो और इसलिये 'जवाबे जाहिलां बाशद खामोशी' पर आमिल हो। मगर याद रक्खो कि तुम्हें शरारत का मजा चखा दूँगा, (तलवार खींच कर) और एक एक का नामो निशान मिटा दूँगा।

लक्ष्मण—भ्राता जी जरा होश करो। कहां आपका वह बेनजीर इस्तकलाल और कहां यह दीवानों का हाल! आप किस क़िस्म की बातें कर रहे हैं? और क्यों इस क़दर ठण्डे सांस भर रहे हैं? जरा इस्कलाल कीजिये और अपनी तबियत को बहाल कीजिये। वरना अगर आपका यही हाल है तो फिर सीता जी की तलाश सख्त मुहाल है।

रामचन्द्र का गाना (टोड़ी बतर्ज—मेरे निकसे जात प्राण)

वीर अब कैसे धारूँ धीर०

विपत काल दुःख सुख की साथी रही न वह भी तीर॥

वीर अब कैसे०

अवधपुरी में जाओ भइया, तुम क्यों हो दलगीर,
नहीं किसी का दोष मेरा ही उल्ट गई तकदीर॥

वीर अब कैसे०

बैठे बैठे आन अचानक लगा कलेजे तीर।
न घर के न रहे घाटे के यहीं मरे आखिर॥

वीर अब कैसे०

क्या जाने वह किसी दरिन्दे ने ही दी हो चीर।
मुश्किल है मिलना अब उसका लाख करो तदबीर॥

वीर अब कैसे०

न दिल में अब रहा सब्र है न नैनों में नीर।
क्या रोयें अपने कर्मों को रह गये वही फ़कीर॥

इनने ताव दिये गर्दिश ने जिनकी नहीं नजीर।
मर कर भी यह खाक हमारी बन जायेगी अकसीर॥
वीर अब कैसे०

नाटक

प्यारे लक्ष्मण! तुम अयोध्या चले जाओ और राज-काज में भरत का हाथ बटाओ। मेरा तो अब इन्हीं जंगलों में ठिकाना है और एक रोज यहीं भटक भटक कर मर जाना है। मैं अयोध्या कैसे जा सकता हूं, और माता जी को कैसे सूरत दिखा सकता हूं, क्योंकि उन्होंने पहले ही कह दिया था कि अगर आओ तो तीनों आना वरना तू अकेला मुझे हरगिज मुँह न दिखाना। आह! महाराज जनक जब अपनी पुत्री का हाल पूछेंगे तो उन्हें क्या बताऊँगा और कौनसा मुँह लेकर उनके सामने जाऊँगा। हाय, हाय! श्रीमती धरणी जी इस सदमे को कैसे सहारेंगी वह तो सुनते ही दीवारों से टक्करें मारेंगी। हाय, हाय! जब इन बातों का ध्यान आता है तो कलेजे में एक तीर सा चुभ जाता है।

लक्ष्मण—भ्राता जी! तसल्ली रखिये जिस तरह इकठे आये थे, अगर जायेंगे तो तीनों जायेंगे वरना अकेले दुकेले हरगिज मुँह न दिखायेंगे। अब ज्यादा देर न लगाइये और जल्दी उनकी खोज लगाईये।

रामचन्द्र—(ठंडी सांस भरकर) चलो भ्राता, अब तो इस मनहूस जगह की तरफ देखने को भी दिल नहीं चाहता।

(५) रावण और जटायु

सीता जी का गाना (गजल कव्वाली ताल चंचल)

मित्र मेरे ससुर के तुम ही मुझे बचाओ,
पंजे से बेरहम के जल्दी मुझे छुड़ाओ।
सुनता न कोई कब से मैं बिलबिला रही हूं,
ईश्वर के वास्ते तुम मेरी मदद को आओ।
अबला समझ के मुझको और देखकर अकेली,
पकड़ा है बेशर्म ने इसको शर्म दिलाओ।
बिपता पडी है मुझ पर कोई नहीं सहायक,
गर हो सके तो तुम ही अपना प्रण निभाओ।
दुखड़ा किसे सुनाऊँ अपनी मुसीबतों का,
रक्षक है कौन मेरा यहां पर तुम्हीं बताओ।
कुछ भी न कर सको गर इतनी दया तो करना,
मेरे प्राणपती को जल्दी खबर पहुँचाओ।

नाटक

जटायु—महाराज! यह काम आपकी शान के खिलाफ है और मुझको आपकी इस कार्रवाई से सख्त इख्तलाफ है।

रावण—तु कौन है जो मुझको टोकता है और ख्वामख्वाह

मेरा रास्ता रोकता है, गोया जान बूझकर अपने आपको मौत के मुँह में झोंकता हैं।

जटायु–मौत का सामान तो खुद साथ लिये जाते हो और दूसरों को मौत का तलबगार बताते हो।

रावण–(लापरवाही से) बहुत अच्छा, जब तुझे इमदाद के लिये बुलाऊँ तो मत आना।

जटायु–जाते कहां हो जरा सम्भल कर कदम उठाना।

रावण–मुझे रोकने की तेरी क्या मजाल है?

जटायु–बगैर मरे मारे नहीं जाने दूँगा आपका किस तरफ ख्याल है।

रावण और जटायु का सम्मिलित गाना

(वतर्ज—जाओ जी जाओ किस नादान को बहकाने आये)

रावण—क्यों बे बदजात मेरे साथ क्या झगड़ा फैलाया, हो रही किस्मत वर्गश्ता, रोका क्यों मेरा रस्ता, आफत में नाहक फँसता, बुड्ढे खुर्राट मेरे हाथों से मरने आया क्यों बे बदजात ०

रावण–अरे मरदूद तेरे सिर पर कजा छाई है।

जटायु—मौत तेरी ही तुझे खींच यहां लाई है।

रावण—तेरा इससे क्या ताल्लुक, न समझ आई है।

जटायु—राम लक्ष्मण का पिता मेरा धर्म भाई है।

रावण–आगे से हट नालायक, जिसका तू बना सहायक, दशरथ

का होकर पायक, मर बे कम्बख्त तूने नाहक कुल को दाग लगाया। क्यों बे बदजात०

जटायु-बिल्कुल न समझा, तुझको बेगैरत इतना समझाया, फिरता है बहुत अकड़ता, नाहक सर चढ़ता, जाता आगे को बढ़ता, टुकड़े ही कर दूंगा जो आगे तूने क़दम बढ़ाया।

बिल्कुल न समझा०

जटायु-कहां जाता है, ठहर जरा न जाने दूंगा।

रावण-हाथ सीता के बदन को न लगाने दूंगा।

जटायु-जीते जी उस पै कभी आंच न आने दूंगा।

रावण-एक ही बार में गर्दन न उठाने दूंगा।

जटायु—लानत है सत्यानाशी, करता फिरता बदमाशी, आती नहीं हया जरा सी, लानत है तुझको पर त्रिया को चोरी करके लाया। बिल्कुल न समझा०

नाटक

रावण-ठहर जा तुझे अदम का रास्ता दिखाता हूं।

जटायु-ओ बुजदिल! खबरदार हो, तुझे चोरी करने का मजा चखाता हूं।

रावण-(तलवार का एक भरपूर हाथ चलाकर) चल कम्बख्त जहन्नुम की हवा खा।

जटायु-(वार बचाकर) ऐसे चक्रमें किसी और को दिखा।

रावण-इस तरह कब तक जान बचायेगा?

जटायु-(भाला चलाकर) मेरे एक ही वार से तेरा भेजा खुल जायेगा। (रावण का ताज सिर से उड़ गया)

रावण-(क्रोध में आकर बराबर आक्रमण करता हुआ) एक दो तीन! यही पड़ा रह मलीन।

जटायु-(जमीन पर गिर कर) अरे जालिम बुरी तरह घायल किया, अफ़सोस कि दिल का अरमान भी न निकालने दिया।

(रावण का जटायु को तड़पते हुये छोड़कर चले जाना)

(६) सीता जी की तलाश और जख्मी जटायु की लाश

रामचन्द्र-लक्ष्मण जी, अफ़सोस सीता जी का अभी तक कुछ सुराग नहीं मिला।

एक दुखित शब्द-अरे कोई रामचन्द्र जी तक खबर पहुँचाओ और उनको मेरे पास तक तो बुला लाओ।

राम०-जरा सुनना भाई, यह आवाज किधर से आई।

लक्ष्मण-ऐसा मालूम होता है जैसे कोई दर्द की वजह से कराह रहा है और शायद आपका नाम लेकर बुला रहा है।

राम०-चलो शायद यहीं से कुछ सुराग चले और सीता जी का पता मिले।

लक्ष्मण–(सहम कर) हाय ! हाय ! भाई गजब हो गया, यह तो महात्मा जटायु घायल हुये पड़े हैं।

राम०–देवता ! हम तो अपनी किस्मत को रोते फिरते ही थे मगर आप किस जालिम के हत्थे चढ़े हैं ?

जटायु—बेटा ! ज़रा मेरे नजदीक आओ, और थोड़ा सा जल मेरे मुंह में टपकाओ।

राम०–(जटायु का सिर अपनी जांघ पर रख कर) भगवन ! आपकी यह दुर्दशा किस दुष्ट ने बनाई ?

जटायु–वही रावण बदमाश, उसका जाये सत्यानाश। बेईमान सीता को जबरदस्ती उठाये लिए जाता था, इत्तफ़ाकन मैं भी सामने से आता था। मुझको देख कर सीता ने शोर मचाया और मुझे इमदाद के लिये बुलाया। मैंने उस बेशर्म को हरचन्द समझाया, मगर···हाय···मर···गया···जरा···पानी (पानी टपकाया गया) बजाय समझने के उल्टा मारने को आया। मैंने भी अच्छी तरह मुकाबिला किया और उसको तुर्की बतुर्की जवाब दिया। मगर वह हथियारों के साथ और मैं बिल्कुल खाली हाथ, हाय...जान...निकली...पानी (पानी टपकाया गया) आखिर जालिम का वार चल गया और मेरी यह हालत करके साफ निकल गया। पानी···पानी

(जटायु का मूर्छित हो जाना)।

रामचन्द्र–आह इस जगह हमारा एक ही ग़मख्वार था और सच्चा जांनिसार था, मगर अफसोस कि इस मुसीबत के वक्त वह भी साथ छोड़ रहा है और कैसी बुरी तरह जान तोड़ रहा है! (मुँह में पानी डालकर) महात्मा ज़रा इस्तक़लाल करो, मैं उस ज़ालिम से बदला लेकर छोड़ूंगा।

जटायु–(किसी कदर आंखें खोलकर) बेटा! मुझे न बदला लेने की अभिलाषा है और न अब जीने की आशा है। मेरे लिए आंसू न बहाओ, मगर जितनी जल्दी हो सके सीता को उस ज़ालिम की कैद से छुटकारा दिलाओ। मुझे अपनी तरफ से हर तरह इतमीनान है और अब तो मेरा ईश्वर···के···चरणों में···ध्यान है।

(प्राण त्याग देना)

रामचन्द्र–(आँसू बहाकार) अफसोस! हमारे ग़मख्वार हम से जुदा हो गये और हमेशा के लिए सुख की नींद सो गये, (लक्ष्मण से) चलो भाई जंगल से लकड़ियां चुनकर लायें और इनका दाह संस्कार तो कर जायें।

:o:–*–:o:

उन्नीसवाँ दृश्य

सुग्रीव से भेंट

सुग्रीव–हनुमान ! वह सामने दो शस्त्रधारी कौन आ रहे हैं ?

हनुमान–आपको क्या वहम हो गया, जो ख्वामख्वाह घबरा रहे हैं ?

सुग्रीव—मुझे शक है कि यह भाई बाली के दूत हैं ।

हनुमान–उनको दूत भेजने की क्या जरूरत है, जबकि वह स्वयं आपसे मजबूत हैं ।

सुग्रीव–कुछ भी हो मगर तुम इनका भेद जरूर निकालो, और अहतियातन अपना कोई भेष बनालो । यदि वास्तव में बाली के गुप्तचर हुए तो मुझको फौरन बता देना और किसी इशारे से जता देना । मैं अपने आपको छिपालूंगा और किसी न किसी तरीके से अपनी जान बचा लूंगा ।

हनुमान–बहुत अच्छा ! मैं जाता हूं और अभी इनका भेद निकाल कर लाता हूं । आप मेरी तरफ ध्यान रखना और मेरे इशारों की पहिचान रखना ।

हनुमान रामचन्द्र जी से (गाना लावनी जिला)

कौन ग्राम क्या नाम देवता कहां से आप पधारे हैं ।
जाहिर में तो हो तपस्वी फिर शस्त्र क्यों धारे हैं ॥

इधर तुम्हारी युवा अवस्था उधर फ़क़ीरी बाना है।
क्या कारण बन में फिरने का असली कौन ठिकाना है ॥
इधर जलाल अजब चेहरे का सूरत शकल शाहाना है।
उधर हवाइयां उड़ रहीं मुँह पर इसका भेद न जाना है।
उत्तम कुल और क्षात्रपन के वस्फ़ आप में सारे हैं।
कौन ग्राम०
रामचन्द्र—क्या पूछो हो महाराज हम प्रारब्ध के मारे हैं।
कहने को तो हम दोनों दशरथ के राजदुलारे हैं।
लेकिन अब तो अर्से से दर पै आजार ज़माना है।
बेपर बेज़र बेघर बेदर न कोई खास ठिकाना है।
सूरत से बेज़ार हो रहा अपना और बेगाना है।
फिरें काटते दिन गर्दिश के इसी तरह मर जाना है।
साथ मेरे ये छोटे भाई लक्ष्मण प्राण प्यारे हैं ॥ क्या० ॥
हनु०—कहो मुफस्सिल हाल कुँवर जी क्या विपता तुम पर आई।
हो गया ऐसा क्या कारण घर से निकले दोनों भाई ॥
असल हक़ीक़त वजह उदासी की अब तक नहीं बतलाई।
हो रही हालत क्यों अबतर क्यों चेहरे पर जरदी छाई ॥
पड़ी मुसीबत सख्त कोई जो उड़े औसान तुम्हारे हैं।
कौन ग्राम० ॥
लक्ष्मण—राम पिता की आज्ञा से बन भ्रमण करने आये थे।
इस सेवक और सीता जी को भी अपने संग लाये थे।

फिरते फिरते बनों में हमने नौ दस साल बिताये थे।
कुछ अर्से से पंचवटी में डेरे आन लगाये थे॥
सीता को हर ले गया रावण ढूँढ ढूँढ हम हारे हैं।
क्या पूछो० ॥

राम०—महाराज! हमने अपना सब हाल जताया मगर आपने अब तक अपना परिचय न बताया।

हनु०—(बनावटी बालों को उतार कर) मैं न ब्राह्मण हूं, न भिकारी हूं, बल्कि एक क्षत्री शस्त्रधारी हूं। मेरा नाम हनुमान है और आजकल यह सेवक राजा सुग्रीव वालिये किष्किन्धा का निगाहबान है। वह भी आपकी तरह गर्दिशे जमाने का सताया है और अपने भाई के हाथों सख्त तंग आया है। उन्हीं के हुक्म से दरियाफ्त हाल के लिए आपकी खिदमत में आया था और ब्राह्मण का भेष बनाया था। अगर आप सुग्रीव के पास तशरीफ़ ले चलें तो बड़ी मेहरबानी हो और मुमकिन है कि एक दूसरे की मदद से दोनों का काम बनने में भी आसानी हो।

रामचन्द्र जी—(लक्ष्मण जी से) हनुमान की एक एक बात से सच्चाई, शराफत और इन्सानियत की बू आ रही है! बोलने का तरीका व गुफ्तगू का सलीका ऐसा बाकायदा है कि सुनने वाला ख्वाहमख्वाह उनका शैदा है। न

आंख का मटकाना, न हर वक़्त हाथों का नचाना, न बातों को चबा-चबा कर बोलना, न मुँह को बेफ़ायदा खोलना, न सिर को डोरू की तरह हिलाना, न बार-बार नाक और भवों को चढ़ाना, जैसा कि मूर्ख आदमियों का दस्तूर है, मगर यह एक-एक अवगुण हनुमान जी से कोसों दूर है। जिससे मालूम होता है, कि न यह सिर्फ़ बलवान हैं बल्कि वेद शास्त्र और व्याकरण के भी पूरे विद्वान हैं।

लक्ष्मण—बेशक, आदमी तो बड़े लायक हैं और हर एक बात में पूरे फायक़ हैं। ऐसे मुकम्मिल इन्सान ढूँडे से भी नहीं पाते है और कभी-कभी ही देखने में आते हैं। इसलिये ऐसे आदमी को हाथ से नहीं गँवाना चाहिये और इन्हें जरूर अपना हमदर्द बनाना चाहिये।

हनुमान—क्या मेरी प्रार्थना स्वीकार है ?
राम०—चलिये महाराज हमें कब इन्कार है।

ऋष्यमूक पर्वत

हनुमान०—(सुग्रीव की तरफ इशारा करके) यही महाराज सुग्रीव किष्किन्धा के सरदार हैं, जो कि अपने सगे भाई के हाथों जिन्दगी से बेज़ार हैं।

सुग्रीव—हनुमान जी ! मुझे भी आप से परिचत कराइये,

और आपका नाम और निवास स्थान बताइये।

हनुमान—यह दोनों होनहार महाराजाधिराज रघुकुल भूषण अयोध्यापति श्री दशरथ जी के राजकुमार हैं, जो आपकी तरह जमाने के हाथों सख्त लाचार हैं। (रामचन्द्र जी की तरफ इशारा करके) इनका शुभ नाम रामचन्द्र जी उचारते हैं। (लक्ष्मण की तरफ इशारा करके) इनको लक्ष्मण जी के नाम से पुकारते हैं।

सुग्रीव—(हाथ जोड़ कर) मेरा सौभाग्य है जो आपका दर्शन हो गया, गोया मेरा आज उद्धार हो गया और बिलाशक सुग्रीव मँझधार से पार हो गया।

राम०—(सुग्रीव से लिपटकर) आपकी मुसाफिर नवाजी से मेरा सिर आप पर निसार हो गया और सच्चे दिल से आपका मददगार हो गया।

सुग्रीव—मुझे अपनी राम कहानी तो सुनाइये और वजह उदासी की बताइये। यद्यपि हनुमान जी ने इशारतन कुछ बताया मगर मुफास्सिल हाल न सुनाया।

राम०—मेरी सौतेली माता ने पिता जी से किसी समय अपने दो वचन पूरा करने का इकरार लिया था, चुनांचे उन्हें पूरा करने के लिये मेरे लिये चौदह साल का बनवास और छोटे भाई भरत के लिए राजतिलक का इसरार किया था। मैंने खुशी से उनका हुक्म मंजूर किया

इधर भाई लक्ष्मण और मेरी पत्नी सीता जी ने साथ आने के लिये मजबूर किया। तेरह साल इसी तरह बनों में घूमते-घामते निकाल दिये और चौदहवां साल शुरू होते ही पञ्चवटी में आकर डेरे डाल दिये। एक रोज दुष्ट रावण हमें धोखा दे गया और मेरी तथा लक्ष्मण की अनुपस्थिति में सीता जी को चुरा ले गया। उनकी तलाश में मैं आवारा फिर रहा हूं, और जंगलों में मारा मारा फिर रहा हूं।

सुग्रीव—हां हां अभी चन्द रोज हुये एक स्त्री हाय राम हाय लक्ष्मण कहती हुई जा रही थी और बड़े जोर से चिल्ला रही थी। उस दुष्ट को बेशुमार ताने देती थी और अपने नज़दीक तक न आने देती थी। अगर मुझको पहले से मालूम होता तो उस अधर्मी को कब जाने देता और सीता जी को तत्काल छुड़ा लेता। मगर अज्ञानता की वजह से खामोश रहा, जिसका मेरे दिल में भी सख्त अफसोस रहा। अलबत्ता उन्होंने मुझे देखकर कुछ जेवर मेरी तरफ गिरा दिये थे, जो मैंने उठा लिए थे। (जेवर पेश करके) आप इनकी पहिचान कीजिये और अपना अच्छी तरह इतमीनान कीजिये।

रामचन्द्र का गाना (गजल कव्वाली ताल चंचल)

अफसोस दिन हमारे गर्दिश में आ रहे हैं।

जेवर तेरे प्यारी मुझको रुला रहे हैं ॥
चम्पाकली ने दिल की मुरझा दिया कली को ।
यह करण फूल मुझको बहरा बना रहे हैं ॥
नथ और कील ने इस सारे जिस्म को कीला ।
कण्ठा व हार मेरे कण्ठे सुखा रहे हैं ॥
जुगनी जड़ाऊ बिन्दनी करती जिगर को घायल ।
मिट्टी में इसके मोती मुझको मिला रहे हैं ॥
यह बाजूबन्द जिसने तोड़े हमारे बाजू ।
चूड़ी के नक्श मेरा नक़्शा मिटा रहे हैं ॥
यह आरसी जिगर में है आरसी चुभोती ।
छल्ले मेरा कलेजा छलनी बना रहे हैं ॥
हंसली तेरी ने मेरी सारी हँसी भुलाई ।
बे सर के फूल मुझको बेसर बना रहे हैं ॥
बाले को देखता हूँ होता है ग़म दो बाला ।
पहुँची के नक़्श मुझको यह गम पहुँचा रहे हैं ॥
इन तेरी बिजलियों ने बिजली गिराई दिल पर ।
बिछुवे बने हैं बिच्छू खाने को आ रहे हैं ॥
होशो हवास कायम हो तो इन्हें पहचानूँ ।
यह आठ-आठ आंसू उल्टा रुला रहे हैं ॥

नाटक

सुग्रीव—महाराज ! जरा तबियत को संभालिये और इस

किस्म का रुदन करके मेरे कलेजे में भी नाखुर न डालिये। क्योंकि मैं भी आपकी तरह जख्म खाये बैठा हूं और प्राण प्यारी को हाथ से गंवाये बैठा हूं। वरना मुसीबत के लिहाज से मेरी तकलीफें आप से ज्यादा हैं, क्योंकि आपकी जिन्दगी के दिन तो बाकायदा हैं। मगर यहां तो हर एक सांस जहर का कतरा है और हर वक्त अपनी जान का खतरा है। लेकिन वह न्यायकारी परमात्मा हमारे साथ जरूर इन्साफ करेगा और ऐसे दुष्टों से दुनिया को जल्दी साफ करेगा।

रामचन्द्र का गाना (बहरे तवील)

॥ दोहा ॥

भाई लच्मण देख तू करके जरा ध्यान।
जेवर यह आगे पड़े, कर इनकी पहचान।
भाई लच्मण जरा तू ही पहचान कर।
कि यह सीता का गहना भी है या नहीं॥
देख ले भाल ले खूब अच्छी तरह।
कभी उसने यह पहना भी है या नहीं।
जितने जेवर, रतन और जड़ाऊ जडे।
हार माला व बिंदी व जुगनी कड़े॥
जो हैं सारे तुम्हारे अगाड़ी पड़े।
उसके माथे का चीना भी है या नहीं॥

भाई लच्मण०

जेवर तेरे प्यारी मुझको रुला रहे हैं ॥
चम्पाकली ने दिल की मुरझा दिया कली को ।
यह करण फूल मुझको बहरा बना रहे हैं ॥
नथ और कील ने इस सारे जिस्म को कीला ।
कण्ठा व हार मेरे कण्ठे सुखा रहे हैं ॥
झुमनी जड़ाऊ बिन्दनी करती जिगर को घायल ।
मिट्टी में इसके मोती मुझको मिला रहे हैं ॥
यह बाजूबन्द जिसने तोड़े हमारे बाजू ।
चूड़ी के नक्श मेरा नक़्शा मिटा रहे हैं ॥
यह आरसी जिगर में है आरसी चुभोती ।
छल्ले मेरा कलेजा छलनी बना रहे हैं ॥
हंसली तेरी ने मेरी सारी हँसी भुलाई ।
वे सर के फूल मुझको बेसर बना रहे हैं ॥
बाले को देखता हूँ होता है ग़म दो बाला ।
पहुँची के नक़्श मुझको यह ग़म पहुँचा रहे हैं ॥
इन तेरी बिजलियों ने बिजली गिराई दिल पर ।
बिछुवे बने हैं बिच्छू खाने को आ रहे हैं ॥
होशो हवास कायम हो तो इन्हें पहचानूँ ।
यह आठ-आठ आंसू उल्टा रुला रहे हैं ॥

नाटक

सुग्रीव—महाराज ! जरा तबियत को संभालिये और इस

किस्म का रुदन करके मेरे कलेजे में भी नासूर न डालिये। क्योंकि मैं भी आपकी तरह जख्म खाये बैठा हूं और प्राण प्यारी को हाथ से गंवाये बैठा हूं। वरना मुसीबत के लिहाज से मेरी तकलीफें आप से ज्यादा हैं, क्योंकि आपकी जिन्दगी के दिन तो बाकायदा हैं। मगर यहां तो हर एक सांस जहर का कतरा है और हर वक्त अपनी जान का खतरा है। लेकिन वह न्यायकारी परमात्मा हमारे साथ जरूर इन्साफ करेगा और ऐसे दुष्टों से दुनिया को जल्दी साफ करेगा।

रामचन्द्र का गाना (बहरे तवील)

॥ दोहा ॥

भाई लछमण देख तू करके जरा ध्यान।
जेवर यह आगे पड़े, कर इनकी पहचान।
भाई लछमण जरा तू ही पहचान कर।
कि यह सीता का गहना भी है या नहीं॥
देख ले भाल ले खूब अच्छी तरह।
कभी उसने यह पहना भी है या नहीं।
जितने जेवर, रतन और जड़ाऊ जडे।
हार माला व बिंदी व झुगनी कड़े॥
जो हैं सारे तुम्हारे अगाड़ी पड़े।
उसके माथे का बीना भी है या नहीं॥

भाई लछमण०

देखते हो मगर फिर भी खामोश हो।
कौन सी बात का करते अफसोस हो॥
किस तरह से भला मुझको सन्तोष हो।
हाल मेरे से कहना भी है या नहीं॥
भाई लच्मण०

मुझे जेवर यह सुग्रीव ने हैं दिये।
और कहा जाता था रावण उसको लिये॥
ताने सीता ने उसको यहां तक दिये।
कि तेरी माता बहिना भी है या नहीं॥
भाई लच्मण०

मेरे होश हवास ठिकाने नहीं।
इसलिये मैंने जेवर पहचाने नहीं॥
और जौहरी अयोध्या से आने नहीं।
कुछ जवाब इसका देना भी है या नहीं॥
भाई लच्मण०

अगर तहकीक रावण ने ऐसा किया।
नाम उसका जमाने से दूंगा मिटा॥
कहो लच्मण तुम्हारा इरादा है क्या।
इन्तकाम उससे लेना भी है या नहीं॥
भाई लच्मण०

छिप जाय अगर छिपना है उसको कहीं ।
शीश काटूंगा पापी का जाकर वहीं ॥
मुझे 'यशवन्तसिंह' यह भी परवाह नहीं ।
कि मेरे साथ सेना भी हैं या नहीं ॥
भाई लच्मण०

लक्ष्मण का गाना (बहरे तवील)

॥ दोहा ॥

झूठी मैं कैसे कहूं, तुम से ऐ मम भ्रात ।
मेरी तो कुछ समझ में, नहीं आई यह बात ।
भाई पहचान इनकी मैं कैसे करूं,
कुछ समझ में मेरे बात आई नहीं ।
जिसे पहचान सकता बखूबी, मुझे,
इनमें जेवर वह देता दिखाई नहीं ॥
भाई पहचान इनकी ०

यह जो सर और गले के हैं जेवर पड़े,
और चेहरे के भूषण हैं सारे धरे ।
इनकी पहचान मुश्किल है मेरे लिए,
अकल मेरी की यां तक रसाई नहीं ॥
भाई पहचान इनकी ०

क्योंकि मैंने उमर भर में अपनी कभी,
माता सीता के चेहरे को देखा नहीं।
जिस वक्त वह कभी मेरे सन्मुख हुईं,
मैंने ऊपर नजर तक उठाई नहीं॥
भाई पहचान इनकी ०

कोई पांव का जेवर हो उनके अगर,
लूंगा पहचान फौरन से भी पेश्तर।
भला चेहरे व गर्दन का तो क्या जिकर,
आज तक उनकी देखी कलाई नहीं॥
भाई पहचान इनकी ०

जब प्रातः ही उठकर के आता था मैं,
शीश चरणों में उनके झुकाता था मैं।
उस समय गहना वह देख पाता था मैं,
कुछ जताता तुम्हें पारसाई नहीं॥
भाई पहचान इनकी ०

अगर रावण ने है फैल ऐसा किया,
फिर यहां देर किस बात की है भला।
बस समझ लो कि मौत उसकी पहुँची है आ,
उसने सोची भलाई बुराई नहीं।
भाई पहचान इनकी ०

खाक में शीश जब तक न उसका मिले,
उसे धिक्कार है जो यहां चैन ले ।
बाण लक्ष्मण के 'यशवन्तसिंह' जब चले,
शीश रावण का देगा दिखाई नहीं ।।
भाई पहचान इनकी ०

नाटक

भ्राता जी ! न मैं इन जेवरों को जान सकता हूं और न इनमें से किसी को पहचान सकता हूं । हां अगर कोई उनके पांव का जेवर हो तो लाइये और मुझको दिखलाइये, उनको मुझे अच्छी तरह पहचान है और इन चेहरे के जेवरों का मुझे क्या ज्ञान है, क्योंकि जब मैं प्रातः ही सीता जी के पास जाता था और अपना सिर उनके चरणों में झुकाता था, तो उस वक्त पांवों का वह जेवर मुझको नजर आजाता था । अन्यथा मैंने आज तक उन के सन्मुख ऊपर नजर नहीं उठाई, इसलिए इन जेवरों की निस्बत मेरी समझ में कोई बात नहीं आई ।

रामचन्द्र-(एक पाजेब दिखाकर) अच्छा, इसकी पहचान करो कि कभी यह सीता जी ने पहना है ?

लक्ष्मण-बिला शक यह सीता जी के पांव का गहना है ।

सुग्रीव–लक्ष्मण जी ! तुम धन्य हो ! आपकी इस शर्म लज्जा का क्या कहना है । यह भी भाई है, जिसने प्रेम भक्ति कि वह मिसाल पैदा कर दिखाई जो आज तक देखने और सुनने में भी नहीं आई । इधर वह मुझ कम्बख्त का भाई जिसको अपने छोटे भाई की स्त्री ही भाई और मुझको घर से निकाल कर जंगलों की खाक छन-वाई । आश्चर्य यह है कि आप दोनों सौतेले भाई हैं जिनकी शत्रुता के जमाना गीत गाता है और वह कम्बख्त मेरा सगा भाई कहलाता है ।

रामचन्द्र–मगर इस दुश्मनी की कोई वजह तो होनी चाहिए जरा पूरा हाल सुनाइये ।

सुग्रीव का गाना (विशनपद की तर्ज)

सुनो भगवन टुक देकर ध्यान,

असल वजह इस नाचाकी की तुम से करूँ बयान ।

सुनो भगवन ०

धुन्दवी नामी दैत्य से हुआ हमारा जंग,

हमने उसे हरा दिया किया काफिया तंग ।

बचाई भाग कर उसने जान,

सुनो भगवन ०

आगे आगे धुन्दवी पीछे मैं और बाल,

एक गुफा के बीच में छुप गया वह तत्काल ।

नहीं जब बचते देखे प्राण,

सुनो भगवन० ॥

मुझको तो यह कह गया रहना यहां मौजूद,

खुद बाली उस गुफा में गया उसी दम कूद।

बाद का मुझे नहीं है ज्ञान,

सुनो भगवन० ॥

एक रोज उस गुफा से बही खून की धार,

समझा मैंने दैत्य ने बाली को दिया मार।

मुझे भी मारेगा अब आन,

सुनो भगवन० ॥

शिला उठाकर वहीं से किया गुफा को बन्द,

छोड़ दिया उह जगह को आ पहुँचा किष्कंध।

रात दिन रहने लगा हैरान,

सुनो भगवन० ॥

राज सभा ने एक दिन किया मुझे मज्बूर,

काम सम्हालो राज का करो रंज गम दूर।

राज को क्यों करते वीरान,

सुनो भगवन० ॥

आखिर को मैं राज का करने लग गया काम,

अंगद को युवराज कर जारी किए अहकाम।

रंज के दूर किए सामान,

सुनो भगवन० ॥

बाली उसको मार कर थोड़े दिन के बाद,

सही सलामत आ गया कर उसको बरबाद।

हुआ मैं चरणों में कुरबान,

सुनो भगवन० ॥

नजर ज्योंही मुझ पर पड़ी दिया क्रोध ने भून,

आंखों से उसकी तभी लगा बरसने खून,

सैकड़ों मारे घूँसे तान,

सुनो भगवन० ॥

राज पाट सब छीन कर घर से दिया निकाल,

रोमा मेरी स्त्री अपने घर ली डाल।

नहीं कुछ सूझा लाभ और हान,

सुनो भगवन० ॥

नाटक

रामचन्द्र–यह भाई है या जालिम कसाई, बेशर्म को ऐसा काम करते लज्जा नहीं आई। हम हर तरह से आपके मददगार हैं और हर वक्त आपकी सहायता करने को तैयार हैं।

सुग्रीव–अगर आप मुझ पर इतना अहसान कर देंगे तो मैं और मेरे साथी भी सीता जी के छुटकारे के लिए अपनी जानें कुर्बान कर देंगे।

रामचन्द्र जी–आप जाकर बाली को पुकारो और युद्ध के लिए ललकारो। जब वह आकर आपसे हाथ मिलायेगा तो मेरा तीर तीरे कजा बन कर उसको मौत का पैगाम पहुँचायेगा।

सुग्रीव–जाने को तैयार हूं मगर उसकी शक्ति से अच्छी तरह वाकिफकार हूं, मगर आपकी ताकत का कुछ अनुमान हो जाए तो मेरा अच्छी तरह इतमीनान हो जाए।

रामचन्द्र जी–अगर आप उसकी ताकत का अन्दाजा बतायें तो मुमकिन है कि हम आपका यह शक भी मिटायें।

सुग्रीव–जब वह पूरी ताकत से तीर चलता है तो एक ही तीर दो-दो तीन-तीन वृक्षों के पार निकल जाता है।

रामचन्द्र जी–(तीर चला कर) जिस कदर वृक्ष मेरे तीर की सीध में आयेंगे, उनमें से एक दो नहीं बल्कि सबके सब विंध जायेंगे।

हनुमान—भगवान ! कमाल किया, एक ही तीर को सात वृक्षों में से निकाल दिया।

सुग्रीव–अब मैं हर दशा में और हर समय उससे मुकाबिला करने को तैयार हूं और इस गुस्ताखी के लिए मुआफी का ख्वास्तगार हूं।

बीसवां दृश्य

बाली का दरबार

—०:*:०—

बाली–(अपने मन्त्री से) बदबख्त सुग्रीव तो उस रोज़ के बाद बिल्कुल अदम पता है।

मन्त्री–(हाथ जोड़कर) उस पर रहम कर दिया जाय तो बेहतर है, क्योंकि वह बेचारा बिल्कुल बे-खता है।

बाली–मालुम होता है कि तुमने उससे कुछ रिश्वत खाई है।

मन्त्री–नहीं महाराज ! सिर्फ इसलिए कि वह आपका भाई है।

बाली–उस नाहिंजार को मेरा भाई बनाकर तुमने मेरी इज्जत घटाई है।

मन्त्री—यदि कसूर भी है तो काबिले मुआफी है।

बाली–ऐसे नालायक को मुआफ करना भी नाइन्साफी है।

सुग्रीव–(ललकार कर) भाई साहब ! जरा आ जाइये, आज मैं रोज रोज का झगड़ा ही मिटाऊँगा। या तो आपकी जान लूंगा, या अपना सिर कटाऊँगा।

बाली—जरा ठहर ! आज मैं अच्छी तरह तेरी मरम्मत बनाऊँगा।

सुग्रीव–जरा मैदान में आओ और वहीं बैठे बातें न बनाओ।

युद्ध स्थल

(वाली और सुग्रीव का गाना)

वाली—गया नाम वाली का शायद तू भूल,
मेरे सामने आया ओ नामाकूल।
सुग्रीव—जरा सामने हो न शेखी जता,
बताऊँ तुझे वीरता का पता।
वाली—चला जा चला न बकवास कर।
मेरे मरतबे का तो कुछ पास कर।
सुग्रीव—पड़े भाड़ में तू तेरा मर्तबा,
अभी हड्डियां तेरी लूंगा चबा।
वाली—अगर जान तुझको है अपनी अजीज,
चला जा यहां से अरे बेतमीज।
सुग्रीव—यहां से उसी वक्त ही जाऊँगा,
तुझे मारूँ या आप मर जाऊँगा।
वाली—समाया है सिर में तेरे क्या फितूर,
न खो जान अपनी अरे बेशऊर।
सुग्रीव—मैं तेरे मजालिम से तंग आ गया,
तो मजबूर होकर वजंग आ गया।
वाली—बताता है जालिम मुझे बेशरम,
किया था मेरे साथ कैसा करम।

सुग्रीव-किया मैंने आगे मेरे आयेगा,
नहीं तो तेरा नाश हो जायगा।

नाटक

बाली—मालूम होता है आज तेरी खाल खुजला रही है।

सुग्रीव—क्या मालूम मेरी खाल खुजला रही है, या तुम्हारी मौत तुम को बुला रही है।

बाली—(घूँसा तानकर) बदजात ! ज्यादा सिर ही चढ़ता गया।

सुग्रीव—(एक के बजाय दो लगाकर) मेरी नरमी की वजह से तुम्हारा हौसला इतना बढ़ता गया।

बाली—तू अब करले सख्ती।

सुग्रीव—बस ! अब आगई तेरी कम्बख्ती।

(दोनों का देर तक आपस में कुश्ती लड़ते रहना और आखिर बाली का सुग्रीव को नीचे दबा देना)

बाली—अब बता मरदूद, कर दूँ एक के दो।

सुग्रीव—(इधर उधर देखकर दिल ही दिल में) अफसोस व्यर्थ किसी के दम झांसों में आकर अपनी जान गँवाई, उस भले मानस ने तो अब तक शक्ल न दिखाई। कोई ऐसी तरकीब निकालूँ जो अब की दफा इस जालिम से प्राण बचालूँ। (जल्दी से नीचे से निकल कर भागते हुए) हड्डियां तो सुरमा बन गईं; सिर्फ जान निकलने की कसर है।

बाली—ओ बुजदिल ! कुछ शर्म भी आई, आखिर भाग कर ही जान बचाई ।

(३) रामचन्द्र जी से शिकवा शिकायत

सुग्रीव का गाना (वतर्ज—जाओ जी जाओ किस नादान को बहकाने आए)

धोखे में देकर तुमने नाहक मुझे जलील कराया ।
अच्छी दुर्गत करवाई, हड्डी पसली तुड़वाई ॥
अब तक भी होश न आई, मुश्किल से जान बचाई ।
वाह-वाह महाराज तुमने खूब ही अपना प्रण निभाया ॥
धोखे में देकर०

कौनसा मैंने भला आपका अपराध किया ।
बैठे बिठलाये मुझे आपने बर्बाद किया ॥
याद है आपने मुझ से क्या इरशाद किया ।
मेरी तकलीफ का क्या अच्छा इन्सदाद किया ॥
लातें और मुक्के दस-दस, मारे जो घूँसे कस-कस ।
दुखती है मेरी नस-नस, करती है चमड़ी चस-चस ॥
अच्छी इमदाद की, उल्टा उससे मुझको पिटवाया ।
धोखे में देकर०

रामचन्द्र जी का गाना (वतर्ज वही)

देखा हरचन्द लेकिन मैंने तुमको नहीं पहचाना,
दोनों की शक्ल तुम्हारी, मिलती आपस में सारी ।

मुझको थी यही लाचारी, अपनी सी की होशियारी,
कोशिश की लेकिन मैंने दोनों में कुछ भेद न जाना ॥
देखा हरचन्द०

आर्य पुरुष कभी धोखा किया करते हैं,
जब जबां देदी कहीं पीठ दिया करते हैं।
जो कि स्वार्थ से फक़त काम लिया करते हैं,
ऐसे कम्बख्त भी दुनियां में जिया करते हैं।
बिन देखे तीर चलाता, धोखे से तू मर जाता,
मुझ पर यह पातक आता, मित्र घातक कहलाता।
मेरा तो दुनियां में फिर कुछ नहीं रहा था कोई ठिकाना,
देखा हरचन्द०

नाटक

यह तुम्हारे दिल का भ्रम है, वरना मित्र-घात से बढ़कर भी दुनियां में कोई अधर्म है? मुझे आप से ऐसी कौनसी कदूरत थी, फिर धोखा देने की क्या जरूरत थी। वास्तव में यह बड़ी खराबी है कि तुम दोनों की शक्ल एक दूसरे से बिल्कुल मिलती है, इसलिए मैं बावजूद कोशिश करने के भी तुम्हारी पहचान न कर सका और मुतलक अपना इतमीनान न कर सका।

लक्ष्मण हुआ क्या आप तो बहुत ही घबरा रहे हैं और बड़े तैश में आ रहे हैं।

सुग्रीव—हां साहब ! मुँह से ही कह देना है, कुछ करना धरना थोड़ा ही पड़ता है। आपके नजदीक कुछ हुआ ही नहीं मेरा एक एक अंग अब तक दुखता है।

रामचन्द्र जी—आप बिल्कुल न घबराइये और इस बार अपने वस्त्र बदल कर जाइये।

सुग्रीव—देखना अगर अब भी लापरवाही से काम लिया तो वह मुझे जान से मार देगा और सारे नशे एक दम उतार देगा।

रामचन्द्र जी—नहीं नहीं, वह मैदान में आते ही अपनी जान गँवायेगा और अधिक देर जीवित न रह पायेगा।

(४) बाली और तारा

सुग्रीव—(ललकार कर) वाह अच्छी बहादुरी दिखलाई और कुछ न बन पड़ा तो घर में घुस कर जान बचाई, जरा बाहर आ जाओ भाई।

बाली—(कड़क कर) अरे सौदाई मालूम होता है कि तेरी खोपड़ी फिर खुजलाई।

सुग्रीव—बाहर भी आयेगा या घर में ही बैठा बातें बनायेगा।

बाली—(जल्दी से उठकर) ओ शैतान ! तू इसी तरह जबान चलायेगा और अपनी शरारत से बाज न आयेगा।

तारा—(बाली का हाथ पकड़ कर) स्वामी जी जरा ठहर जाइये, और मेरी प्रार्थना पर भी गौर फरमाइये।

बाली–बेहतर तो यह है कि तुम चुप ही रहो, वरना जो कुछ कहना है जल्दी कहो।

तारा–प्राणनाथ! सुग्रीव आपका भाई है, जिस माता का आपने दूध पिया है उसी गोद में उसने परवरिश पाई है। आप दोनों की दुश्मनी प्रजा पर बुरा प्रभाव डालेगी और आपकी प्रजा भी इसी तरह छोटे भाइयों का हक छीन-छीन कर घर से निकालेगी। घर की नाचाकी से घर का नक्शा पलट जाता है, लेकिन राजा की बेइन्साफी से तमाम राज का नक्शा उलट जाता है। आप महज ग़लत फ़हमी का शिकार हुए हैं और व्यर्थ उस बेचारे की सूरत से बेजार हुए हैं। अन्यथा वह तो आपके आते ही आपका फरमांबरदार हो गया था और दिलोजान से आपके चरणों पर निसार हो गया था इसलिए मुनासिब यही है कि उसका हक उसको सम्भाल दें और इस वैर भाव को दिल से निकाल दें।

बाली–हां हां, मैं समझ गया कि हसद की आग ने तुझको मजबूर कर रक्खा है और प्यारी रोमा के सौतिया डाह ने तेरा सीना चकना चूर कर रक्खा है, इसलिये यह बातें बना रही है और इधर उधर के मसले सुना रही है, ताकि यह खटकता हुआ कांटा किसी तरह कलेजे से निकले और तुझे सुख की नींद सोना मिले।

मगर मैं तेरी यह फजूल बातें सुनने के लिए हरगिज तैयार नहीं और किसी हालत में भी उस आदमी की शक्ल देखने का रवादार नहीं ।

तारा-मैं आपके चरणों की सौगन्ध खाती हूं और आपको विश्वास दिलाती हूं कि मेरा दिल ऐसे कमीने ख्यालात से बिल्कुल पाक है, सिर्फ इसलिये रोकती हूं कि यह लड़ाई आपके लिये सख्त खतरनाक है। चाहे वह गुनहगार है या बेगुनाह है, मगर इसमें शक नहीं कि कोई जबरदस्त ताकत उसकी पुश्त पनाह है। अभी अभी अँगद ने मुझे बताया है कि अयोध्या के राजकुमार को उसने अपना मित्र बनाया है और उन्होंने उसको उकसाया है जो इतनी मार खा कर भी दोबारा मुकाबले के लिये आया है। अन्यथा यह तो आप पर बखूबी अयां है, कि उसकी स्वयं इतनी ताकत कहां है इसलिए इस खानदान की बेहतरी और भलाई इसी में है कि आप सब द्वेषों को दिल से निकाल दें और उसको अपना भाई समझ कर गले से लगा लें।

बाली-बस, बस, अधिक बक बक न लगा और मेरे आगे से हट जा। न मैं उससे डरता हूं, न उसके किसी हिमायती की परवाह करता हूं। क्या तू मुझे ऐसा

कायर बनाना चाहती है, किसी की ताकत का खौफ दिखा कर घर में छिपाना चाहती है। एक हिमायती क्या अगर हजार हिमायती भी आयें तो भी बात ही क्या है और उन नादान छोकरों की तो औकात ही क्या है। अगर ज्यादा जबान चलायेगी तो तू भी सख्त सजा पायेगी।

तारा का गाना (वहरे तवील)

मैं हूं दासी तुम्हारी मेरे प्राणपति,
जो सजा दो खुशी से गवारा करूं।
मानलो वीनती मेरी इतनी मगर,
आप से अर्ज यह ही दुबारा करूँ।
आप रोमा से बेशक मुहब्बत करो,
मैं यों ही बैठी घर में गुजारा करूँ।
आपके दर्शनों की तलबगार हूं,
और सब झँझटों से किनारा करूँ।
लोंडी बन कर मुझे रहना मँजूर है,
कसम है जो कभी कुछ इशारा करूँ।
जिस जगह पर बिठा दोगे बैठी रहूं,
काम घर के तुम्हारे संवारा करूँ।
हाथ जोड़ू कहा मान लो यह मेरा,
जो कहोगे मैं कहना तुम्हारा करूँ।

आज आसार अच्छे न आते नजर,
क्या करूँ और किससे इजारा करूँ।

बाली का गाना (वहरे तवील)

चल परे हट न बक बक ज्यादा लगा,
बात करने की तुझ में लियाकत नहीं।
खौफ किसका दिखा कर डराती मुझे,
कर सकेंगे वे मेरी हलाकत नहीं।
छोड़ दामन मेरा दिक ज्यादा न कर,
तेरी भाती मुझे यह नजाकत नहीं।
क्यों लगाती यह बट्टा मेरे नाम को,
बे अक्ल क्या यह तेरी हिमाकत नहीं।
अरी भाई बताती जिसे तू मेरा,
मेरी उससे जरा भी रिफाकत नहीं।
एक चप्पा जमीं का न दूँगा उसे,
राज में उसकी कोई शराकत नहीं।
तू ने बकवास इतनी की है मगर,
तेरी बातों में मुतलक सदाकत नहीं।
मैं कजा का भी रोका हुआ न रुकूँ,
और तेरी तो कोई भी ताकत नहीं।

नाटक

बाली—तुम मेरा दामन छोड़ दो, मुझे ज्यादा हैरान न करो।

तारा–परमेश्वर के वास्ते इस जिद को छोड़ दो और मुझे नाहक वीरान न हो।

बाली–मैं तुम्हारे कहने से अपने आपको बट्टा नहीं लगा सकता।

तारा–मान जाओ, गया वक्त फिर हाथ नहीं आ सकता।

बाली–उसकी मुझ से मुकाबला करने की क्या ताकत है जो एक अर्से तक मफरूर रहा है।

तारा–इन्हीं बातों से पाया जाता है कि वह किसी हौसले पर कूद रहा है।

सुग्रीव–(ललकार कर) घर में बातें बनाओगे या बाहर भी आओगे।

बाली–(तैश में आकर और हाथ छुड़ाकर) छोड़, छोड़, तू सुनती नहीं कि वह मुझे किस तरह ललकार रहा है!

तारा—(जमीन पर गिरकर) प्राणनाथ! यह सुग्रीव नहीं बल्कि उसे कोई और ही उभार रहा है।

(५) दोबारा लड़ाई और बाली की सफाई

बाली—अरे बेशरम उस वक्त भागकर जान बचाई, अब दोबारा मुँह दिखलाते हुए गैरत न आई।

सुग्रीव—मेरा हक मुझे दे दो बात गई आई, न झगड़ा न लड़ाई।

बाली–सिवाये आवारा गर्दी के तेरा कोई हक नहीं।

सुग्रीव—तो आज तुम्हारी मौत में भी कोई शक नहीं।
बाली–न जिन्दा जायेगा आकर मेरी तलवार के नीचे।
सुग्रीव–तू चल कर आज खुद आया छुरी की धार के नीचे।
बाली–तू किस शेरे बबर के सामने ओ बे अक्ल आया।
सुग्रीव–किया जिसने तकब्बर एक दिन वह सिर के बल आया।
बाली–तू आया किस भरोसे पर मुझे नीचा दिखाने को ?
सुग्रीव–तेरा ही पाप काफी है तेरी हस्ती मिटाने को।
बाली–सम्भल जा अब तेरे सिर पर मेरी शमशीर उल्टी है।
सुग्रीव–नहीं शमशीर उल्टी यह तेरी तकदीर उल्टी है।
बाली–भूत लातों के नहीं बातों से माना करते।
यार डण्डे के नहीं नरमी को जाना करते॥
सुग्रीव–और दुनिया तो बेगानों को बनाती अपना।
तुझ से कम्बख्त जो अपनों को बेगाना करते॥
बाली–(घूँसा मार कर) अरे ओ पापी! इतनी जबान दराजी, अभी करता हूं तेरी मेहमां नवाजी।
सुग्रीव–(तुर्की-ब-तुर्की जवाब देकर) तुम्हारी दस्तदराजियों ने मुझे जबान-दराज जरूर कर दिया और तुम्हारी पैदा करता मुसीबतों ने मुझे लड़ाई के लिये मजबूत कर दिया।

(दोनों का आपस में गुत्थम गुत्था होना)

वाली—मगर तू ने अपनी मुसीबतों को और भी दोबाला...
(उछल कर जमीन पर गिर गया) अरे यह कौन अन्याई,
जिसने छुप कर चोट चलाई ?

राम०—किसी का क्या दोष है तेरी करनी तेरे आगे आई।

वाली—ओ पापी! मेरी और सुग्रीव की तो एक अर्से से दुश्मनी थी या रकाबत थी, मगर तेरे साथ मेरी कौन सी अदावत थी ? सुग्रीव तुझ को क्यों इस कदर प्यारा था और मैंने कौनसा तेरे बाप का खेत उजाड़ा था। अगर सीता की रिहाई के लिए इससे दोस्ती डाली है तो यह तेरी खामख्याली है, जो मनुष्य अपनी रक्षा के लिये दूसरों की मदद का मोहताज है, उससे किसी किस्म की मदद की उम्मेद रखने वालों की बेवकूफी का क्या इलाज है। हां अगर तू मेरे पास आता तो मैं सीता को क्या बल्कि अगर चाहता तो उसकी दूसरी रानियों सहित रावण को एक आंख के इशारे में यहां मंगवाता, क्योंकि वह भी मेरे हाथ से बहुत कुछ सदमे सह चुका है और अर्सें तक मेरी कैद में रह चुका है, मगर सुग्रीव के भरोसे पर यह उम्मेद रखना सरासर हिमाकत है, इस बेचारे की उसके सामने जाने की क्या ताकत है।

रामचन्द्र जी—इसमें शक नहीं कि तुम्हारी एक-एक बात जले हुए दिल से निकलती है, मगर धर्म के असूलों को सोचने में तुम्हारी बहुतसी गलती है। जरा सोचो तो कि छोटे भाई की स्त्री के लिए शास्त्र क्या हिदायत करते हैं मगर आप बजाय अपनी गलती तसलीम करने के उल्टा शिकायत करते हैं। छोटे भाई और बेटे की स्त्री, अपनी बहिन और पुत्री इन चारों का दर्जा एक समान है और उनकी तसदीक के लिए शास्त्र का एक-एक पृष्ट प्रमाण है। उनको बुरी नज़र से देखना बड़ा नीच कर्म है और ऐसे मनुष्य को मार देना पाप नहीं बल्कि धर्म है। चूँकि तुमने अपने छोटे भाई की स्त्री को न सिर्फ नज़रे-बद से देखा बल्कि उसको अपने घर में डाला और उस बेचारे को मार पीट कर घर से निकाला। अस्तु ऐसे दुष्टों को दण्ड देकर अनाथों की रक्षा करना क्षत्री का मुख्य धर्म है और जो क्षत्री अपने फर्ज की अदायगी से किनारा करता है, वह आला दर्जे का बेशर्म है। नीज सीता जी की रिहाई के लिए हमको किसी की सहायता की जरूरत नहीं, क्योंकि हम कोई दूध पीते बच्चे या मिट्टी की मूरत नहीं। एक रावण क्या अगर हजार रावण भी हों तो भी क्या बात है, इसलिए तुम्हारा यह ख्याल बिल्कुल

वाहियात है।

बाली–अच्छा जो कुछ गुजरा, उसका अब क्या अफसोस है और मुझे अपनी तरफ से तो हर तरह सन्तोष है, मगर आप से एक ताकीद करता हूं और उम्मेद करता हूं कि आप इस रंजिश को दूर करेंगे और मेरी प्रार्थना को मंजूर करेंगे।

राम०–मुझे आपसे कोई दिली कदूरत नहीं, इसलिये मेरी निस्बत आपको किसी किस्म का शक शुबाह रखने की जरूरत नहीं। मेरी तरफ से आप बेफिक्र रहिये और जो बात कहनी हो बिना तकल्लुफ कहिये।

बाली–यद्यपि मैं सख्त गुनाहगार हूं मगर इस अन्तिम समय में आप से सिर्फ एक बात का ख्वास्तगार हूं कि सुग्रीव तारा व अङ्गद को बिल्कुल न सताये और इन पर किसी प्रकार का जब्र न करने पाये।

राम०–सुग्रीव बड़ा समझदार और दूरबीन है और उसकी जात से मुझे कामिल यकीन है कि वह हरगिज इस किस्म का निकम्मा ख्याल न करेगा और हरगिज ऐसे ओछे हथियार इस्तेमाल न करेगा, हालांकि आपने उसपर हद से ज्यादा ज़ुल्मो सितम किये और जो कष्ट न देने थे वह उसको दिये, मगर इस हालत में भी वह दिलो जान

से आपका फरमाबरदार था और आपके पसीने के बदले अपना खून बहाने को तैयार था, ताहम अगर तारा अथवा अंगद को जरा भी तकलीफ पहुँचायेगा तो बिला-शक अपने किये की सजा पायेगा।

वाली—(सामने की तरफ देखकर) आह, आह! शायद वह सामने मेरी प्राण प्यारी तारा मेरे लख्ते जिगर अंगद को साथ लिए आ रही है। आप उसको ज्यादा न रोने देना और अंगद को भी व्याकुल न होने देना।

(बाली का बेहोश हो जाना)

तारा का गाना (मांड मारवाड़ी ताल दादरा)

मेरे स्वामी सिर के ताज मुख से बोलो तो सही,
जिसके बल से कांपते धरती और आकाश।
पड़ा धरन पर तड़पता ले रहा लम्बे सांस,
मुख से बोलो तो सही०
छोड़ मुझे मँझधार में सो रहे लम्बी तान,
क्यों होती यह दुर्दशा जो लेते कहना मान।
मुख से बोलो तो सही०
जिसका मुझको खौफ था वही हुआ आखीर,
अंगद मेरे लाल की कौन बँधावे धीर।
मुख से बोलो तो सही०

क्या बिगड़ा सुग्रीव का फूटे मेरे भाग,
एक आन की आन में हो गया नष्ट सुहाग।
मुख से बोलो तो सही०
करूँगी किसके आसरे मैं अपनी गुजरान,
अंगद मेरा लाडला है खुद ही नादान।
मुख से बोलो तो सही०
सुग्रीव का आपसे था पहले ही वैर,
मुझ पर और मेरे लाल पर कब गुजरेगी खैर।
मुख से बोलो तो सही०
कहा मेरा माना नहीं बहुत मचाया शोर,
होनी अपने बल चली चला न मेरा जोर।
मुख से बोलो तो सही०
कब से खड़ी पुकारती बोलो तो एक बार,
सोते हो किस नींद में जाग मेरे 'सरदार'।
मुख से बोलो तो सही०

नाटक

आह, मेरे सरदार! मेरे प्राणों के आधार! आप मुझ से क्यों मुँह मोड़े जाते हैं और मुझको किसके सहारे छोड़े जाते हैं। मुझे अपनी जिन्दगी की चन्दाँ परवाह नहीं, जिस तरह होगा निभा लूँगी, या आपके साथ ही स्वर्ग की राह लूँगी, (अंगद को गोद में लेकर) मगर इस जिगर के टुकड़े को किसे सम्भालूँगी? जिसे बड़े

लाड़-चाव से पाला था और कभी घर से बाहर भी कदम न निकाला था, अब न मालूम कहाँ कहां ठोकरें खायेगा और किस किस के जूते चटकायेगा। (अङ्गद का मुँह चूमकर) मेरे लाल! आह तेरी क़िस्मत फूट गई और पिता की प्रेम भरी गोद तुझसे छूट गई।

रामचन्द्र जी–देवी! यद्यपि यह दुःख तेरे लिए बड़ा सख्त है और वह कौन कम्बख्त है जिसको तेरी इस हालते जार पर रहम न आता हो और जो तेरे इस रुदन को सुनकर हमदर्दी के आंसू न बहाता हो। मगर अब सब्र करने में ही दानाई है और इसी में तुम्हारी और अङ्गद की भलाई है। बाली का तुम्हारे साथ इतना ही सम्बन्ध था और कुदरत की तरफ़ से तुम्हारे संयोग का इस कदर ही प्रबन्ध था।

तारा—(झुंझला कर) तुम अपनी दानिस्त में धर्मात्मा जरूर हो, मगर मेहरबानी करके जरा मेरी आंखों के सामने से दूर हो। अरे बेरहम अन्याई! किसी से झगड़ा, किसी से लड़ाई, मगर तुमको बिना वजह हत्या करते गैरत न आई। भाई भाइयों का आपस में तकरार था मगर तुझे बीच में कूदने का क्या अधिकार था?

बाली–(किसी कदर आंखें खोल कर) आह प्यारी तारा!

यद्यपि तुमने मुझे समझाने के लिए बहुत मगज मारा मगर अफसोस मैंने तेरी नसीहत से कुछ फायदा न उठाया, जिसका नतीजा अब आँखों के सामने आया। न सिर्फ तेरी नेक राय के ही बरखिलाफ रहा बल्कि तुमको बहुत कुछ सख्त सुस्त भी कहा, मगर बजाये इसके कि किसी पर गिला या अफसोस करो, बेहतरी इसी में है कि जिस तरह से हो सके सब्र और सन्तोष करो। मुझको अपनी बुराइयों का नतीजा मिला है, रामचन्द्र जी पर तुम्हारा फिजूल गिला है।

(अंगद का गाना (कानी कालंतड़ा ताल दादरा या ठेका तलवाड़ा)

कौन बंधाये धीर हमारी कौन करेगा प्यार पिता,
कोई सहारा नजर न आये डूब चले मँझधार पिता।
न कुछ खेला न कुछ खाया न कुछ ऐश आराम किया,
पड़ी यतीमी पल्ले मेरे लुट गये सब सिंगार पिता।
सब सुख नष्ट हुए अब मेरे आन दुखों ने घेर लिया,
बिठा गोद में अङ्गद पर अब कौन होगा बलिहार पिता।
क्या उम्मेद चचा से मुझको वह मेरी इमदाद करें,
वह तो मेरी सूरत तक से हो शायद बेजार पिता।
खबर नहीं क्या हालत होगी धक्के क्या-क्या खायेंगे,
नहीं ताज्जुब कि हमसे छिन जाये यह घरबार पिता।

नाटक

बाली—(अंगद को छाती पर बिठा कर) आह! मेरे

लाल ! सब्र कर, सब्र कर, मेरे जिगर के टुकड़े ज्यादा न रो और इस कदर अधीर न हो। मेरे बच्चे जरा इस्तकलाल कर और मेरी हालते जार की तरफ ख्याल कर। तेरा रुदन मेरे कलेजे को चकनाचूर कर रहा है और मेरी आत्मा को समय से पहले ही निकलने के लिये मजबूर कर रहा है। इस वक्त तुम्हारा रोना धोना बिल्कुल बेसूद है क्योंकि अब मेरी जिन्दगी सिर्फ चन्द सांसों तक महदूद है। न मालूम किस वक्त मर जाऊँ इसलिये बेहतर है कि अपने जीते जी तुझको तेरे चचा के सुपुर्द कर जाऊँ। वह बड़ा समझदार और लायक है और मेरे बाद तेरा वही सरपरस्त और सहायक है। हर तरह से उसकी आज्ञा पालन करना और कभी उनके हुक्म से बाहर कदम न धरना। (सुग्रीव को पास बुलाकर) मेरे प्यारे भाई ! यद्यपि तुम्हें मुँह दिखाने को दिल नहीं चाहता, मगर इस वक्त तुम्हारे सिवाय मुझको कोई नजर नहीं आता, जिसको अङ्गद का हाथ पकड़ाऊँ और अपने आखिरी फर्ज से सुबुकदोश हो जाऊँ। मुझे उम्मेद है कि तुम पुराने वैर को दिल से निकालोगे और मेरी दुश्मनी का बोझ अंगद पर न डालोगे। यह जैसा बेटा मेरा है वैसा तुम्हारा है और इस वक्त इसे आपका ही सहारा है। परमेश्वर इसकी उमर दराज करे, राक्षसों

की लड़ाई में वह हाथ दिखायेगा कि उन्हें छटी का दूध याद आ जायेगा। नीज तुम्हारी भावज बड़ी समझ-दार है, आला दरजे की दूर अन्देश और तजुर्बेकार है। अफसोस कि अगर मैं उसके कहने पर अमल करता, तो आज इस तरह बिन आई मोत न मरता। इसकी भी हर तरह से धीर बंधाना और इसके नेक मशवरे से फायदा उठाना।

सुग्रीव-(भड़भड़ाती हुई आवाज़ से) भ्राता जी! मैंने बड़ा उत्पात किया, जो चन्द रोज की जिन्दगी के लिये बड़े भाई का घात किया। बावजूद मुझ से जबरदस्त और ताकतवर होने पर भी आपने कभी मेरी जान लेने का इरादा नहीं किया, सिर्फ मामूली सा दण्ड देकर छोड़ दिया। मगर मैं आपके लिये मौत का पैगाम लेकर आया और मुझ कम्बख्त की बेवकूफी ने ही इस घर को खाक में मिलाया। मैं इस राज को लेकर क्या सुख पाऊँगा और परमेश्वर के सामने क्या मुँह लेकर जाऊँगा। इसलिये आप कुल काम अंगद के ही सुपुर्द कीजिये और मुझे इस पाप का प्रायश्चित करने की आज्ञा दीजिये।

बाली-जरा अपनी तबियत को सँभालो और यह कायरपन के ख्याल अपने दिल से निकालो। यदि यह ही

कायरपन दिखाओगे, तो रामचन्द्र जी से जो वायदा किया है, उसे किस तरह निभाओगे ? आखिर बेवफा और कृतघ्न ही कहलाओगे। खबरदार ऐसा निकम्मा ख्याल हरगिज अपनी तबियत में न लाना और जो प्रतिज्ञा उनसे कर चुके हो उसको पूरा करने के लिए अपनी जान पर खेल जाना, मगर कृतघ्नता का दाग़ कुल को न लगाना। मेरी अन्तिम घड़ी नजदीक आ रही है और जालिम मौत मेरे सिर पर मंडला रही है, इसलिये अब मेरे अन्त्येष्टि संस्कार का सामान करो, (हिचकी लेकर) हे जगदीश्वर—मुझ पापी का भी कल्याण करो।

(प्राण त्याग दिए)

(ठोडी आसावारी ताल दादरा वतर्ज—किथे कीता दिल जानियां डेरा)

जाग मेरिया सिर दिया साइयाँ।
न कर एड़ियाँ वे परवाहियां॥
कोई दर्दी न बिच संसार दे।
सारे साथी हैं अपने व्यवहार दे॥
डुब चलियां विच मंझधार दे!
केहड़ियां देखियां मेरियां बुराइयाँ॥
जाग मेरिया०

केहड़े खोट ते मुखों न बोल दे।
पई कूकाँ न आखियां खोल दे॥
मेरी ज़िन्दगी विच बिष घोल दे।
नहीं चँगियां लुक सिचाइयां॥
जाग मेरिया०

रोंदी पिटदी नूँ मैंनू छड़ के।
मेरी जिन्दड़ी लै चलियां कढ के॥
हाल किन्हूं सुनावाँगी सद्द के।
सारी सख़्तियां मेरे सिर आइयां॥
जाग मेरिया०

हाल होऊ की अंगद नादान दा।
सुख वेखया न कोई जहान दा॥
फिरू जंगलां दी खाक छान दा।
तावेदारियां करू पराइयां॥
जाग मेरिया०

आंवदी खान नूँ महल ते माड़ियां।
ऐत्थों वसदी वसांदी उजाड़ियां॥
किबे कट्टा हिजर दी दिहाड़ियां।
मेरी जान नूँ पा गिया फाहियां॥
जाग मेरिया०

प्रण कीता सी तोड़ निभान दा।
पास रख तां अपनी जबान दा॥
कौन दिल दी 'यशवन्तसिंह' जान दा।
किन्हूं दस्सा मैं देके दुहाइयां॥
जाग मेरिया०

नाटक

रामचन्द्र जी—देवी! सब्र करो तुम्हारा यह फिजूल रोना है, क्योंकि वाली को तो जिन्दा नहीं होना है। बजाय इसके कि तुम इस कदर आहो जारी करो बेहतर है कि इसके अन्त्येष्ठि संस्कार की तैयारी करो।

(वाली का अन्त्येष्टि संस्कार करके सब का चुपचाप हो जाना आखिर हनुमान का जबान हिलाना)

हनुमान—(रामचन्द्र जी से) महाराज आप किष्कन्धा में पधार कर नगर निवासियों को भी दर्शन दीजिए और राज तिलक भी अपने शुभ हाथों से कीजिए।

रामचन्द्र जी—जाने को मुझे कब इन्कार था, मैं बड़ी खुशी से चलने को तैयार था, मगर पिता जी की आज्ञा और अपनी प्रतिज्ञा को नहीं भुला सकता, इस लिये बगैर चौदह साल खतम किये किसी बस्ती में नहीं जा सकता। आप लक्ष्मण को ले जाइये और धूम धाम से राजतिलक की रस्म कराइये।

सुग्रीव—इन बातों का अभी क्या जिकर करना है, पहले सीता जी की रिहाई का फिक्र करना है।

रामचन्द्र जी—अब मौसम बरसात का आगाज़ है और इस मौसम में सफ़र करना अक़्लमन्दों के नजदीक काबिले ऐतराज है। आप कुछ दिन आराम करो और अपनी राजधानी का इन्तजाम करो, कार्तिक का महीना बिल्कुल नजदीक है और उसी मौसम में चढ़ाई करना ठीक है।

—०:※:०—

इक्कीसवां दृश्य

राम की बेकरारी और सुग्रीव की इन्तजारी

(रामचन्द्र का गाना रागनी कौंसिया तीन ताल)

नित तड़पत हूं दिन रैन हिजर में देखत हूं मुख मोर मोर
जिस तन लागी सो तन जाने, क्या जाने कोई दर्द बेगानें,
जख़्म पड़े हैं ठौर ठौर। —नित तड़पत हूं...
कोयल कूक कूक तड़पावत, पी पी करत पपीहा आवत,
फिरत मचावत शोर मोर। —नित तड़पत हूं...
चार पहर का रैन बिछोड़ा, चकवा चकवी जलें सो थोड़ा,
मरत फिरत सिर फोर फोर। —नित तड़पत हूं...

जिन्हें विछोड़ा हो हमेश का, कौन कथन उनके क्लेश का,
सांस गिनत दिल तोर तोर–नित तड़पत हूं···

नाटक

बरसात खतम हो चुकी, मौसम बहार अपने पूरे यौवन पर आ रहा है, सारा जंगल परमात्मा की कुदरत की महिमा दिखला रहा है। तमाम जीव-जन्तु खुशी से मग्न हो रहे हैं, इधर हम हैं कि एक अर्से से अपनी किस्मत को रो रहे हैं। मगर आज तक कोई बेहतरी की सूरत नजर नहीं आई, ताज्जुब तो यह है कि उस रोज के बाद सुग्रीव ने भी शक्ल नहीं दिखाई। राज को पाकर ऐसा नशे में शरसार हो गया कि उसका यहां तक आना भी दुश्वार हो गया। आह! सुग्रीव ऐसा अहसान फरामोश हो गया कि अपना काम निकालते ही रूपोश हो गया। निस्सन्देह यह बड़ा जमाना साज निकला और परले दर्जे का दगाबाज निकला। सच है मतलबी यार किसके, काम निकला और खिसके।

लक्ष्मण–मुझे तो उसकी बातों से पहले ही नजर आता था, वह महज अपनी मतलब बरारी के लिए इस कदर सब्ज बाग दिखाता था। अपना मतलब निकाल लिया और हीले बहाने बनाकर गया हुआ राज सम्भाल लिया।

इसके अतिरिक्त अगर उसमें कुछ हिम्मत होती तो बाली से ही क्यों जान छिपाता फिरता और क्यों आपके चरणों में आकर गिरता। बाली यद्यपि विषयी था और हद से ज्यादा विषयों में ग्रस्त था तथापि वह मन का उदार और बात का धनी था। खैर क्या हुआ एक दफ़ा तो उसे भी हाथ दिखा दूँगा और उसकी इस कृतघ्नता का अच्छी तरह मजा चखा दूँगा। सिर्फ आपके हुक्म का इन्तज़ार है और लक्ष्मण इसी वक्त किष्किन्धा जाने को तैयार है।

रामचन्द्र जी—उम्मेद तो नहीं कि सुग्रीव इस क़िस्म की लापरवाही करे और खास कर हम से भी बेवफाई करे। संभव है कि हमें बेसबरी और बेक़रारी की वजह से ही बदगुमानी हो और बाद में ख्वाहमख्वाह की परेशानी हो। इसलिए तुम किष्किन्धा जाकर सिर्फ याद दिला आना मगर अपनी जिह्वा पर कोई ऐसा वैसा शब्द कदापि न लाना, क्योंकि मित्र से अगर कोई कसूर भी हो जाये तो भी उसे नरमी से समझाना चाहिए।

(लक्ष्मण का रुखसत हो जाना)

सुग्रीव का दीवानखाना

हनुमान—महाराज आपने जो रामचन्द्र जी से वायदा किया था वह भी याद है?

सुग्रीव–हां, हां, मगर बरसात के अन्त तक खामोश रहने के लिए उन्हीं का इरशाद है।

हनुमान–आपका हिसाब कमाल का है, गोया आपके नजदीक बरसात का मौसम दो चार साल का है।

सुग्रीव–(कुछ सोच कर) वाकई बरसात का मौसम खतम हो गया, अब तो बरसाती नदियों का पानी भी कम हो गया। खैर मैं तो भूल गया था मगर आपने इस अर्से में क्या काम किया और सीता जी की तलाश का क्या इन्तजाम किया?

हनुमान–मेरे दूतों को भी गये हुए बहुत दिन गुजर गये, मगर वह कम्बखत भी न मालूम कहां जाकर मर गये।

सुग्रीव–यद्यपि आपका यह इन्तजाम भी माकूल है, मगर अब उनका इन्तजार करना फिजूल है। आप जल्दी आक्रमण की तैयारी कीजिये और अभी जाकर वानर सरदारों के नाम आज्ञा जारी कीजिए कि वह अपनी पूरी शक्ति और तैयारी के साथ आयें और नियत तारीख पर हाजिर हो जायें।

(हनुमान का शाही प्रणाम करके चले जाना)

सुग्रीव–(स्वयं) वाकई मैंने बड़ा अपराध किया कि इस अर्से में उनको भूल से भी न याद किया। यही नहीं कि उनका दुःख दर्द न बटा सका, बल्कि उनके दर्शनों के

छिए भी न जा सका। रामचन्द्र जी को इस बात का सख़्त मलाल होगा, और न जाने मेरे विषय में उनका क्या ख्याल होगा ?

अङ्गद–चाचा जी ! आप यहां अपने ख्याली पुलाव पका रहे हैं, उधर लक्ष्मण जी बड़ी देर से तशरीफ ला रहे हैं। क्रोध के मारे आँखों का रंग बड़ा बेढब है, न मालूम उनकी नाराजगी का क्या सबब है, मस्तक पर सैंकड़ों बल पड़ रहे हैं, बातें करते हुए भी गोया मुंह से अङ्गारे झड़ रहे हैं।

सुग्रीव–(सहम कर) अफसोस ! अब क्या बनाऊँ और किस तरह उनके सामने जाऊँ। सम्भव है कि मुझे देख कर उनका क्रोध और भी विशेष हो जाये और ख्वामख्वाह का क्लेश हो जाये।

तारा–आप कुछ फिकर न करें। मैं जाती हूं और उनको मोम बना कर आपके पास ले आती हूं।

सुग्रीव–मगर जरा जल्दी जाओ और किसी तरह उनके गुस्से की आग को बुझाओ।

तारा और लक्ष्मण

तारा का गाना (मांड थियेटर ताल दादरा, बतर्ज—जैसा गजब है)

ऐ मेरे देवर, बिगडे क्यों तेवर,
आंखें हुई हैं क्यों लाल।

भावज तुम्हारी तुम पर बलिहारी,
कैसा है दिल पर मलाल।

मस्तक पर बल पड़ रहे चढ़ा क्यों इतना जोश,
क्या कारण है क्रोध का खड़े हो क्यों खामोश।
आओ बे खटके, यां पर क्यों अटके,
किस बात का है ख्याल।
ऐ मेरे देवर०

कौन खता हम से हुई हो रहे इतने तेज,
अन्दर जाने से किया क्यों इतना परहेज।
कैसी शर्म है, कैसा भ्रम है,
अन्दर चलो नौनिहाल।
ऐ मेरे देवर०

धन्य धन्य दिन आज का यहां पधारे आप,
अगर ताज्जुब है मुझे खड़े हो क्यों चुपचाप।
यहां क्या विचारो, अन्दर पधारो,
गुस्से को दीजे निकाल।
ऐ मेरे देवर०

भैया तुम्हें बुला रहे कब से कर रहे याद,
चल कर दर्शन दीजिये क्षमा करो अपराध।

आते को रोके, जाते को टोके,
किस की भला है मजाल।
ऐ मेरे देवर०

नाटक

वीर लक्ष्मण! आप धन्य हैं, कहिये मिजाज तो प्रसन्न हैं? मुझे आश्चर्य है कि आप यहां क्यों खड़े हैं और आपके तेवर इस क़दर क्यों चढ़े हैं। जरा गुस्से को मारिये और महलों में पधारिये। आप अन्दर चलने से क्यों गुरेज कर रहे हैं और हम लोगों से क्यों इस क़दर परहेज कर रहे हैं। (लक्ष्मण का हाथ पकड़ कर) आइये, आखिर यह भी तो आप ही का घर है, फिर आपको अन्दर आने में किस बात का डर है?

सुग्रीव-(अपनी जगह से उठ कर) वीर लक्ष्मण! कहिये मिजाज़ तो खुश हैं, आइये तशरीफ लाइये।

लक्ष्मण-आपकी बला से आप अपना आनन्द मनाइये।

सुग्रीव-आखिर इस नाराज़गी की कुछ वजह तो बताइये।

लक्ष्मण-आप अपने दिल ही से दरियाफ़्त फ़रमाइये।

सुग्रीव-जहाँ तक मैं ख्याल करता हूं मेरा कोई ऐसा अपराध नहीं।

लक्ष्मण-आपका ख़्याल ठिकाने हो तो उसमें कुछ

समाये, जब ख्याल ही आसमान पर चढ़ रहा हो तो उस ख्याल में कोई बात क्यों कर आये। आपके ख्याल में तो उस वक्त आता था, जब जंगलों में खाक उड़ाते फिरते थे। अब वह कांटा आपके दिल से निकल गया, अगर अब भी तुम्हारा ख्याल ठीक रहे तो दुनियां में धन को अन्धा कौन कहे।

सुग्रीव का गाना (वहरे तवील)

आप नाहक शरमसार करते मुझे,
मैंने अपने प्रण को भुलाया नहीं।
भेज रक्खे हैं जासूस चारों तरफ,
लौट कर कोई उनमें से आया नहीं।
आप नाहक०
भूल जाऊँ तुम्हारे जो अहसान को,
मैं रजीलों कमीनों का जाया नहीं।
मैं हूं उनकी नसल कि जिन्होंने कभी,
कौल से पाँव पीछे हटाया नहीं।
आप नाहक०
राज भी आपका जान भी आपकी,
मैंने दोनों को अपना बताया नहीं।

आपके बिन न कोई स्नेही मेरा,
मेरे सिर पर कोई और साया नहीं।
आप नाहक०
यों न तानों के बानों से घायल करो,
जाता सदमा यह मुझसे उठाया नहीं।
मेरे सिर को खुशी से क़लम कीजिए,
मेरा जीना जो तुमको सुहाया नहीं।
आप नाहक०
जो न कहना था मुझको कहा आपने,
कौन सा दोष मुझ पर लगाया नहीं।
जो कहा था खुशी से मैं सहता रहा,
आपके सामने सिर हिलाया नहीं।
आप नाहक०

नाटक

अव्वल तो मेरा कसूर काबिले मुआफी है, अगर न भी हो तो मेरे लिए इतनी सजा काफी है, कि नाक़ाबिले बरदाश्त ताने सुन रहा हूं और अपने दिल ही दिल में जल भुन रहा हूं। आपके बारे अहसान से न तो गर्दन ऊपर उठाई जाती है और न आंख से आँख मिलाई जाती है। चाहे जो कहें आप को अधिकार है मगर

सुग्रीव तो रामचन्द्र का सच्चे दिल से फरमां बरदार है।

लक्ष्मण का गाना (बहरे तवील)

इन्हीं बातों ने धोखे में डाला हमें,
आपको पेश्तर आजमाया नहीं।
चालबाज आप जैसा कोई दूसरा,
देखने में हमारे तो आया नहीं।
इन्हीं बातों ने०
काम अपना निकाला किनारे हुए,
यार अपना किसी को बनाया नहीं।
जो कहा भी किसी ने तो झट कह दिया,
यह हमारे गुरू ने पढ़ाया नहीं।
इन्हीं बातों ने०
आज परवाह किसी की तुझे क्या रही,
तेरा उजड़ा हुआ घर बसाया नहीं।
न ही अहसान तुझ पर किसी ने किया,
राज तुझको किसी ने दिलाया नहीं।
इन्हीं बातों ने०
भूल बैठा है जल्दी से उस रोज को,
मौत के मुँह से तुमको बचाया नहीं।

मुँह छिपाते फिरो आज तुम इस तरह,
कोई गैरत का मादा रहा या नहीं।
इन्हीं बातों ने०
वह चुके मुँह से मित्र तुम्हें इक दफा,
इसलिये हाथ जाता उठाया नहीं।
नाम भी मेरा लच्मण नहीं था अगर,
तेरा करता यहीं पर सफाया नहीं।
इन्हीं बातों ने०

नाटक

अगर आप में ये बातें न होतीं, तो हम आपके झांसे में कब आते और आपकी तरह हम भी दूर से ही धत्ता बताते। इन चिकनी चुपड़ी और मीठी-मीठी बातों ने तो हमको धोखा दिया। कहां तो वह गर्म जोशी और कहां यह रूपोशी। सीता जी की तलाश तो दूर किनार है, अब तो आप को शकल तक दिखाने में भी आर है। आप जैसे कृतघ्न के कौल फेल का क्या ऐतबार, जिनके मुँह में राम और बगल में तलवार।

सुग्रीव का गाना (बहरे तवील)

बस बहुत हो चुकी न जलाओ मुझे,
कुछ मेरे हाल पर मेहरबानी करो।

यह पड़ा राज चाहे जिसे दीजिये,
या खुशी से खुद ही हुक्मरानी करो।
बस बहुत हो चुकी०
हो चुकी जान अर्पण श्री राम के,
आप मुझसे यों ही बद गुमानी करो।
देखो मेरी तरफ़, मेरे कुल की तरफ़,
फ़ैसले पर जरा नजरसानी करो।
बस बहुत हो चुकी०
राज मिलने न मिलने पे क्या मुनहसिर,
ऐसी बातें न अपनी जबानी करो।
मैं तो मारे शरम के गरक हो गया,
आप नाहक मुझे पानी पानी करो।
बस बहुत हो चुकी०
मारना ही विचारा है गर आपने,
जाँ निकलने में तो कुछ आसानी करो।
इक तरफ फ़ैसला मेरा करदो मगर,
इस तरह से न मेरी वीरानी करो।
बस बहुत हो चुकी०
आपने जो कहा मैंने सब कुछ सहा,
हर तरह से तो न मेरी हानी करो।

इस झमेले को छोड़ो भी 'यशवन्तसिंह'
बस करो अब खतम यह कहानी करो।
बस बहुत हो चुकी०

नाटक

लक्ष्मण जी! मुझे मुआफ कीजिये और मेरे साथ कुछ तो इन्साफ कीजिये। आप यकीन रखिये कि मैं आप के काम से मुतलक बेफिकर न था और ऐसा कौनसा वक्त था जबकि मेरी जबान पर सीता जी की रिहाई का जिकर न था। बल्कि अभी आपके तशरीफ लाने से थोड़ी देर पहले हनुमान जी से यही जिकर अज़कार था और वानर सरदारों की तलबी का विचार था। अस्तु उनके नाम अरजन्ट (जरूरी) आज्ञा जारी कर चुका हूं और अपनी मुकम्मल तैयारी कर चुका हूं। सुबह शाम ही आपको इस बात का इम्तिहान हो जायेगा और आपको अच्छी तरह इतमीनान हो जायेगा।

लक्ष्मण–बहुत अच्छा, आप मेरे साथ चलने की तकलीफ कीजिये और रामचन्द्र जी को भी तसल्ली दीजिये।

सुग्रीव–(अंगद से) मैं रामचन्द्र जी की खिदमत में जाता हूं, तुम हनुमान और जामवन्त वगैरा को अभी बुलवाओ और उनको साथ लेकर जल्दी वहां पहुँच जाओ।

(दोनों का रुखसत होकर रामचन्द्र जी के पास पहुंचना)

सुग्रीव–(रामचन्द्र जी के पांव पकड़ कर) भगवन कई कारणों से आपकी सेवा में हाजिर न हो सकने से सख्त शर्मसार हूं, जिसके लिए मुआफी का ख्वास्तगार हूं।

रामचन्द्र जी–(सुग्रीव को उठाकर) शुक्र है कि आप के दर्शन तो हो गये, न मालूम आप यहाँ से जाकर जिस गहरी नींद में सो गये। इन्तजार करते करते आँखें पक गईं और राह देखते-देखते टांगें थक गईं। अब भी अगर लछमण जी न जाते तो आप काहे को तशरीफ लाते।

(सुग्रीव का गाना (वतर्ज—क्या कोई गावे क्या सुनावे)

न कोई मेरा स्नेही यहां एक,
तुम्हीं दुनियाँ में हो प्रतिपाल।

यह है शर्मसारी मुझे आप भारी,
तुम्हारी तरफ से मुदाम।

न शर्मिन्दा कीजे, गुनाह बख्श दीजे,
मैं चरणों का हरदम गुलाम।
न कोई मेरा०

तुम्हारे ही दम से व बख्शिश कदम से,
मिली रंज ओ गम से नजात।

हुई मेहरबानी, मिली जिन्दगानी,
यह है आपकी ही खैरात।
न कोई मेरा०

न घर था न दर था, न ज़र था न पर था,
न सर था न धड़ था, न जान।
अगर था तो डर था, खतर था नशर था,
न था मेरा कोई पासबान।
न कोई मेरा०

न था कुछ ठिकाना, था सारा जमाना,
व अपना बेगाना बेज़ार।
तुम्हारी दया से मैं छूटा बला से,
किया मेरा तुमने उद्धार।
न कोई मेरा०

नाटक

महाराज ! सिर्फ आपकी तरफ़ से ही इनकार था वरना यह सेवक तो उसी वक्त चढ़ाई करने के लिए तैयार था। मुझे तो खुद ही पल-पल भारी था, ताहम इस अरसे में भी गुप्त रीति से उनकी तलाश का सिलसिला जारी था। मगर अफ़सोस कि कोई तसल्ली बख्श नतीजा जहूर में न आया और इसी वजह से मैं इतने दिन तक आपके हजूर में न आया। अब आखरी तजवीज यही समझ में आई कि ऐलाने जंग किया जाये और उस पापी का हर

तरह से काफिया तंग किया जाये। अगर वह सीधी तरह मान जाय तो बेहतर है, वरना एक दम अपनी फौज चढ़ा देंगे और लंका की ईंट से ईंट भिड़ा देंगे। अस्तु मैं अपना कुल काम मुकम्मल और अखराजात जंग मंजूर कर आया हूं और हनुमान जी को वानर सरदारों की तजवीज़ के लिये खास तौर पर मामूर कर आया हूं।

रामचन्द्र जी—प्यारे मित्र मुझे आपसे ऐसी ही उम्मीद थी और लक्ष्मण जी से मेरी बार बार यही ताकीद थी कि कभी ऐसे शब्द जबान पर न लायें जो आपको किसी क़िस्म का रंज या सदमा पहुँचायें। क्योंकि इनकी आदत मुझ पर अच्छी तरह जाहिर है, कि इनकी तबियत खुद अपने अख्तियार से भी बाहर है। इसलिये अगर इन्होंने आपकी शान में कुछ गुस्ताखी की हो तो इसका तबियत पर ख्याल न लाना और उनको अपना छोटा भाई समझ कर माफ फरमाना।

सुग्रीव—(हाथ जोड़कर) भगवन्! मुझे तो अपनी क़िस्मत पर रश्क आता है, जब कि लक्ष्मण जी जैसा बहादुर व दूर-अन्देश तजुर्बेकार जान निसार और वफादार इन्सान आपका भाई कहलाता है। इस उम्र में ही हर-एक बात में वह कमाल है- कि इन पर किसी

किस्म का हर्फ़ रखने की किस की मजाल है। आप फरमाते हैं कि इनकी तबियत जरा तेज है, मगर मेरे ख्याल में तो इन्हें ऐसी वैसी बातें करने से सख्त परहेज है क्योंकि जितना अर्सा मेरे साथ बात करते रहे, मानों मुँह से फूल झड़ते रहे।

हनुमान जी-(सुग्रीव से) महाराज! बहुत से वानर सरदार सेना सहित तशरीफ ला रहे हैं और जो बाकी हैं वह भी आ रहे हैं। उनकी आमद का सिलसिला इस वक्त तक बदस्तूर जारी है और हर एक की अपनी ताक़त, हिम्मत और एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर तैयारी है।

रामचन्द्र जी-पूर्व इसके कि यहां से कूच किया जाये बेहतर है कि पहले अच्छी तरह से इतमीनान कर लिया जाये। मेरे ख्याल में भिन्न-भिन्न दिशाओं में भिन्न-भिन्न होशियार और तजुर्बेकार दूत भेजे जायें जो इस बात का पुख्ता पता लायें। यद्यपि हम सब का लंका की निसबत गुमान भी है और वाक़यात की बिना पर कुछ इतमीनान भी है, मगर बगैर पुख्ता पते के शायद नाकामयाब आना पड़े और ख्वाहमख्वाह की परेशानी और नुकसान उठाना पड़े, क्योंकि कयासिया बातों का ऐतबार हमेशा नक्श बर आब होता है और जल्दबाजी

का नतीजा अमूमन खराब होता है।

जामवन्त–वाकई यह आपकी दूर अन्देशी और पेशबन्दी है क्योंकि बगैर निशान के तीर चलाना कहां की अक़्लमन्दी है?

सुग्रीव–(कुछ सोचकर हनुमान से) दूसरी दिशाओं में तो और भी दूत भेज दिये जायेंगे, मगर लंका के लिए खास तुमको तईनात करता हूं और अङ्गद तथा जामवन्त को सहायता के लिए तुम्हारे साथ करता हूं, क्योंकि तुम इसमें खूब होशियार हो और लंका के हर एक गली कूचे से भी अच्छी तरह वाकिफ़कार हो।

रामचन्द्र जी–आपने गोया मेरे मुँह की बात छीनी है, बेशक अगर हनुमान जी खुद इस कदर तकलीफ गवारा करें तो हमारी कामयाबी यकीनी है।

हनुमान–(हाथ जोड़ कर) भगवन्! जिसे आप तकलीफ कह रहे हैं, वह मेरे लिये ऐन राहत है, मगर इस में एक बड़ी भारी कबाहत है, कि माता जी ने मुझे आज तक नहीं देखा है, वह मुझे कैसे पहचानेंगी और मेरी बात का क्यों कर यकीन मानेंगी। मिसल मशहूर है कि दूध का जला छाछ फूँक-फूँक कर पीता है और उनके साथ तो अभी यह हादसा बीता है। इसलिए आप इतनी मेहरबानी कीजिये कि मुझे अपनी कोई

निशानी दीजिये, जिसकी उन्हें बख़ूबी पहचान हो, ताकि मेरी निस्बत उनको हर तरह इतमीनान हो।

रामचन्द्र जी का गाना (बहरे कव्वाली)

तसल्ली के लिये काफी है केवल दास्तां मेरी।
सुना देना उन्हें इक बार विपता मेहरबां मेरी॥
यह है ऐसी निशानी कि न गुम होने का खटका है।
यहां है यह जबां तेरी वहां होगी जबां मेरी॥
किया जिस दम ज़रा भी तजकरा मेरी मुसीबत का।
शक्ल है अब यहां तेरी तो फिर होगी वहां मेरी॥
बज़ाहिर तो यहां मौजूद है गरचे जिस्म मेरा।
मगर उस जाने जानां के तसव्वर में है जाँ मेरी॥
हमेशा रात दिन मुझको फिकर उनका ही रहता है।
भुला दूँ जो उन्हें इतनी भला ताकत कहां मेरी॥
सुना जिस वक्त उसने नाम मेरा आपके मुँह से।
तो आजायेगी फौरन सामने शक्ले निहां मेरी॥
निशां तो मिट गया मैं आपको अब क्या निशानी दूँ।
न जाने और बरबादी करे क्या आसमां मेरी॥
हिजर में प्राण प्यारी के बहुत सदमे सहे मैंने।
हुई 'यशवन्तसिंह' अब तक नहीं मुश्किल आसां मेरी॥

हनुमान का गाना (बहरे कव्वाली)

यह बिल्कुल रास्ती पर है मेरे भगवन् गुमां मेरा,

बताइए कौन वाकफिकार बैठा है वहां मेरा।
उठाऊँ सब तरह तकलीफ और फिर नाकामयाब आऊँ,
तो जाना और न जाना जायगा सब रायगां मेरा।
न वह पहचानती मुझको न मेरी रू-शनासी है,
नहीं मालूम है मुतलक उन्हें नामो निशां मेरा।
तसल्ली दूँ उन्हें चाहे मैं कसमें लाख खा जाऊँ,
लगीं वह मानने ऐसे भला कहना कहां मेरा।
मुबादा हो भ्रम उनको कि है यह दूत रावण का,
न आयेगा यकीं हरगिज उन्हें सुनकर बयां मेरा।
अगर वह अजनबी ही जानकर कुछ शोर कर बैठीं,
तो जिन्दा लौटकर आना नहीं फिर आसां मेरा।
मिली है एक माह तक लौटने की कुल मुझे मौहलत,
मुनासिब अब नहीं ठहरना ज्यादा यहाँ मेरा।
यह हर प्रकार से 'यशवन्तसिंह' की खुशनसीबी है
जो होवे आपके अर्पण अगर —

महाराज ! यद्यपि
देना सूरज को चिराग
जैसे मन्दबुद्धि वाले की
को क्या मजाल है तथा
देना मेरा फर्ज है, इसलि

में अर्ज है कि आप मेरी प्रार्थना पर गौर कीजिये और जो कुछ निशानी देनी हो वह फिलफौर दीजिए क्योंकि मुझे एक मास के अन्दर वापिस आना है, जो इतने दूर सफर के लिए बहुत थोड़ा जमाना है।

सुग्रीव–वाकई हनुमान जी का यह सवाल जरा गौर तलब है और जो जो दिक्कतें उन्होंने बयान की हैं उनका सामने आना भी क्या अजब है? बिलफर्ज अगर वहां यह सवाल दरपेश हो गया, तो इनकी जान को सौ क्लेश हो गया। फिर यही नहीं कि यह आपकी कोई निशानी नहीं दिखा सकेंगे, बल्कि आसानी से वापिस भी नहीं आ सकेंगे।

रामचन्द्र का गाना (बह्रे तवील)

ऐ पवन सुत दिलावर हनुमान जी,

आप इमदाद इतनी हमारी करें।

लीजिए यह अंगूठी निशानी मेरी,

आप चलने की जल्दी तैयारी करें।

ऐ पवन सुत०

यह असम्भव है अब जानकी जी कभी,

जो कहो आप बे ऐतबारी करें।

यह खड़ा है विमान आपके सामने,

आप जल्दी से इसमें सवारी करें।

ऐ पवन सुत० ॥

लीजिए साथ सामान अपना सभी,
और कब्जे में खंजर कटारी करें ।
सीधे लंका में जाना जरूरी नहीं,
बस यहीं से तलाश आप जारी करें ।

ऐ पवन सुत० ॥

जानकी जी को कहना मेरी ओर से,
कि वह हरगिज न अब आहोजारी करें ।
अब मुसीबत का होने को है खात्मा,
चन्द दिन तक जरा इन्तजारी करें ।

ऐ पवन सुत० ॥

यह जरूरी है कि इस कठिन काम में,
आप अपनी सी खूब होशियारी करें ।
दास 'यशवन्तसिंह' की भी है यह दुआ,
जाओ जगदीश रक्षा तुम्हारी करें ।

ऐ पवन सुत० ॥

हनुमान जी का गाना (बहरे तवील)

साथ मेरे है आशीर्वाद आपका,
तो मैं लंका को जड़ से हिलाकर हटूँ ।

झुलस दूँ फूँक दूँ आन की आन में,
खाक मिट्टी में उसको मिलाकर हटूँ।
साथ मेरे० ॥
जो हुक्म हो तो रावण को कुनवे सहित,
मैं लगा आग जिन्दा जला कर हटूँ।
जो कहो तो पकड़ लाऊँ जिन्दा यहां,
या वहीं पर उसको सुला कर हटूँ।
साथ मेरे० ॥
जो मददगार हो उस महा दुष्ट का,
शर्बते मर्ग उसको पिला कर हटूँ।
एक ही वार से उस मददगार को,
मैं हिमायत का बदला दिला कर हटूँ।
साथ मेरे० ॥
सामने आ गया मेरे कोई अगर,
खून के साथ उसको निहला कर हटूँ।
की किसी ने मेरे साथ हुज्जत अगर,
तो वहीं पर कुछ गुल खिला कर हटूँ।
साथ मेरे० ॥
छान मारूँगा आकाश पाताल तक,
सारी तदबीर अपनी चला कर हटूँ।

जान में जान जब तक है 'यशवन्तसिंह',
मैं पता जानकी जी का ला करके हटूँ ।
साथ मेरे० ॥

लेखक गाना (बहरे तवील)

ले अँगूठी पवन सुत श्री राम की,
कर नमस्ते वहां से विदा हो गये ।
जामवन्त अङ्गद को ले संग में,
एक दूजे के पुश्त पनाह हो गये ।
हो बगलगीर दे धीर रघुवीर को,
तीर तरकश से सज खुशनुमा हो गये ।
ज्यों उठाई नजर यह गये वह गये,
आन की आन में लापता हो गये ।
कर रवाना हनुमान जी को सभी,
जन विदा हुये आरामगाह हो गये ।
नामुनासिब समझ कर वहां ठहरना,
कर नमस्कार हम भी हवा हो गये ।
फिर मिलेंगे अगर जिन्दगनी रही,
तीन हिस्से फरज के अदा हो गये ।
आपकी चरण सेवा से 'यशवन्तसिंह',
कुछ दिनों के लिए अब जुदा हो गये ।

। तृतीय भाग समाप्त ॥

❀ ओ३म ❀

आर्य्य संगीत रामायण

चतुर्थ भाग

इक्कीसवें दृश्य का शेषांश

(घटना क्रम के लिए तीसरा भाग देखिये)

(हनुमान जामवन्त और अंगद आदि का समुद्र के किनारे बैठे नजर आना)

जामवन्त—जिन जिन स्थानों का सुग्रीव ने पता दिया था, सब का खोज निकाला, बल्कि उनके अलावा और भी बहुत सी जगह देखा भाला, मगर अफसोस कि फिर भी अपना काम न निकला और इतनी मेहनत व कोशिश का कोई सन्तोष-जनक परिणाम न निकला। भाई हम तो अपनी जान से हाथ धो बैठे और आखिर यहीं के हो बैठे। किष्किन्धा में गये तो सुग्रीव की तलवार, यहां रहे तो किसी व्याध का आहार। मौत तो हमारे लिए ब-हर सूरत है फिर सामने जाकर शरमिन्दगी उठाने की भी क्या जरूरत है। इससे तो यही अच्छा है कि यहीं अपनी जान दे दें, या समुद्र में ही कूद कर प्राण दे दें।

अङ्गद—हम से तो जटायु ही भाग्यवान था, जो अपनी मित्रता निभा गया और इन हमेशा के झगड़ों से

छुटकारा पा गया, उधर ढूँढते ढूँढते पांव में छाले पड़ गये। इधर अपनी जान के लाले पड़ गये। मेरा तो जहां तक ख्याल है अपने प्रयोजन की सफलता सख्त मुहाल है।

हनुमान—शोक कि आप इतने ही कष्ट से चकरा गये, इस में सन्देह नहीं कि आपको सफर के कारण कष्ट तो जरूर है, पर अभी तो लंका बहुत दूर है। इधर उधर साधारण सी तलाश करके कामयाबी की उम्मीद रखना बिल्कुल बेसूद है, दरअसल तो लंका ही हमारी मंजिले मकसूद है। हां यदि आपका यही पौरुष और पराक्रम है तो इस दशा में हमारे लिए सफलता का मुख देखना एक बच्चों जैसा भ्रम है। आप महात्मा जटायु के सौभाग्य पर मायल हैं किन्तु हम तो उनके पौरुष और वीरत्व के कायल हैं, जिसने अपने नाम पर कृतघ्नता का धब्बा न आने दिया और जीते जी सीता जी को कदापि न ले जाने दिया। अन्यथा यदि न्याय से देखा जाय तो उनकी आयु अब इस योग्य न थी कि वह रावण जैसे महा सशक्त पुरुष से जोर आजमाई करते और बिल्कुल निहत्था होते हुए भी उससे हाथा-पाई करते। मगर वाह रे वीर जटायु, यह पुरुषार्थ और यह वृद्ध आयु!

एक अजनबी–भाई ! तुम्हारी यह कोई साधारण बात है या जटायु से तुम्हारी कोई मुलाकात है ?

जामवन्त–(हनुमान के कान में चुपके से) इसको एकाएकी भेद जताना ठीक नहीं, सम्भव है यह रावण का कोई दूत हो।

हनुमान–(उस बूढ़े अजनबी से) महात्मन् ! आपका क्या नाम है और जटायु का हाल दरयाफ्त करने से आपका क्या परिणाम है ?

वही अजनबी–बेटा ! मेरा नाम सम्पाती है और मुझे तुम्हारी बातों से इन्सानियत और शराफत की बू आती है, क्योंकि तुमने अपने वार्तालाप में कई बार भाई जटायु का नाम लिया जिसने स्वभावतः मेरे लिए अमृत का काम दिया। कुछ काल से उसका पंचवटी में निवास था और सुना है कि रामचन्द्र जी का और उनका आश्रम पास ही पास था किन्तु अब बहुत दिनों से न उन्होंने शक्ल दिखलाई है और न कोई कुशलता की खबर पहुँचाई है। क्या करूँ वैरी बुढ़ापा पल्ले पड़ रहा है जिसके कारण यहां तक आने में भी इस प्रकार सांस चढ़ रहा है। यदि आपको मेरे भाई का कुछ हाल मालूम हो तो बता दीजिये, या उनके निवास स्थान का ही पता दीजिये।

हनुमान–महात्मा जी क्या कहूं, न कुछ कहा ही जाता है और न बिन कहे रहा ही जाता है। शोक कि आपका बाज़ू टूट गया और आपके भाई का सदैव के लिये आप से सम्बन्ध छूट गया।

सम्पाती–(सहम कर) हैं! हैं!! यह क्या कहा आपकी बात सुन कर तो मेरा कलेजा पाश पाश हो गया। क्या सच-मुच मेरे भाई जटायु का स्वर्गवास हो गया? हाय! हाय!! बड़ा गजब हुआ, आखिर उसकी मौत का क्या सबब हुआ?

हनुमान–महाराज कदाचित आपको ज्ञात हो कि महात्मा जटायु के परम मित्र महाराजा दशरथ के दोनों सुपुत्र श्री रामचन्द्र जी व लक्ष्मण जी सीता जी सहित चौदह वर्ष के लिये बन यात्रा को आये थे और उन्होंने कुछ समय से पंचवटी में डेरे लगाये थे। एक दिन दुष्ट रावण उन्हें धोखा दे गया और दोनों भाइयों की अनुपस्थिति में सीता जी को चुरा कर ले गया। जब वह सीता जी को उठाये ले जा रहा था, तो दैब गति से जटायु भी सामने से आ रहा था। उन्होंने हर चन्द उस पापात्मा को समझाया किन्तु वह समझने के बदले उल्टा मरने मारने को आया। दोनों देर

तक लड़ते रहे और अपने अपने दांव पेच करते रहे। मगर कहां रावण और कहाँ जटायु, वह हट्टा कट्टा जवान और इनकी वृद्ध आयु। सारांश यह कि वह जटायु का काम तमाम करके सदैव के लिये पृथ्वी पर सुला गया और स्वयं सीता जी को लेकर न जाने किधर चला गया। अस्तु उन्हीं की खोज में हम भी भागे भागे फिर रहे हैं और अपना घर बार त्यागे फिर रहे हैं। मगर न तो कुछ पता ही चलता है और न आगे को किसी जगह का खोज ही निकलता है।

सम्पाती का गाना (रागनी सोहनी)

यह खबर सुन कर दिगरगूँ हाल मेरा हो गया,
फट गया सीना जिगर आंखों अँधेरा हो गया।
मौत से बदतर है तेरी मौत मेरे वास्ते,
बैठे बैठे जान को यह क्या बखेड़ा हो गया।
हाय हाय मिल गया मेरा बुढापा खाक में,
इस उमर में आनकर मंझधार बेड़ा हो गया।
काम नेकी का किया और यह मुझे बदला मिला,
आह दम भर में तेरा परलोक डेरा हो गया।
जिन्दगी के दिन मेरे अब किस तरह होंगे बसर,

रोते रोते दिन छिपा और फिर सवेरा हो गया।
हाय ईश्वर इस अवस्था में मुझे यह दुख दिया,
कौन सा मुझ से भला अपराध तेरा हो गया।

नाटक

आह भाई! यह कौन से जन्म का पाप आगे आया जो अन्तिम समय में तुमसे मिलने भी नहीं पाया। तुम स्वयं तो अपना कर्तव्य निभा गये किन्तु मेरा बुढ़ापा तो मिट्टी में मिला गये। ओ निर्लज्ज रावण! महा अन्याई तुझे निहत्थे और वृद्ध जटायु पर वार करते लज्जा न आई। निस्सन्देह तुझे अब तेरे अत्याचारों के फल मिलने वाले हैं और तेरे प्राण जटायु की तरह शीघ्र निकलने वाले हैं।

हनुमान—(रोते हुये सम्पाती को थाम कर) महात्मन! धैर्य धरो, वास्तव में उसकी मृत्यु समीप आ रही है जो उसके हृदय में इस भाँति दुष्टता समा रही है।

सम्पाती—(कुछ सम्भल कर) मन तो चाहता है कि उस नीच से भाई का बदला लेकर छोड़ूँ और उसका एक एक अँग अपने हाथों से तोड़ूँ परन्तु क्या करूँ बुढ़ापे के कारण सब काम खराब हो रहा है और अब तो एक एक सांस का हिसाब हो रहा है।

हनुमान—भाई का बदला लेने के लिये आपको परिश्रम करने की जरूरत नहीं, आप विश्वास रखिये कि

अब रावण के जीवित बचने की कोई भी सूरत नहीं। रामचन्द्र जी को केवल हमारा इन्तजार है, फिर रावण का सिर है और उनकी तलवार है। हां यदि हो सके तो इतनी कृपा कीजिए कि यदि सीता जी का कुछ पता सुराग आपको ज्ञात हो तो बता दीजिये। हमने अपनी तरफ से बहुतेरा खोज निकाला और जिन जिन स्थानों पर रावण का आना जाना बताया जाता है, अच्छी तरह देखा भाला, किन्तु जिसके लिये इतनी आपत्ति उठाई उसके सुराग की कहीं बू तक न पाई।

सम्पाती–यह तुम्हारी भूल है और इन स्थानों पर ढूँढना बिल्कुल फिजूल है। यदि अपनी सफलता चाहते हो तो शीघ्र लंका में जाओ और इधर उधर व्यर्थ समय न गँवाओ। मुझे पूरी उम्मेद है कि सीता जी खास लंका ही में कैद हैं।

हनुमान–(जामवन्त से) यद्यपि हमको एक दूसरे से बढ़कर इजतराबी है, परन्तु हम सब का लंका में जाना हमारे लिए मूजिबे खराबी और बाइसे नाकामयाबी है। इसलिये आप राजकुमार अङ्गद सहित इसी जगह विश्राम कीजिये और मुझे लंका जाने की आज्ञा दीजिये।

जामवन्त–बहुत अच्छा, अगर आपका यों ही इरादा है तो अब देर करना बे-फायदा है, किन्तु जहां तक हो सके जल्दी वापिस आना और ज्यादा राह न दिखाना।

बाईसवाँ दृश्य
(१) अशोक वाटिका

(एक शस्त्रधारी सैनिक बाग के फाटक पर पहरा दे रहा है)

सिपाही—(ललकार कर) 'हाल्ट...हू...कम्स...देयर' क्या तुझे अपनी जान अजीज नहीं ?

हनुमान—भाई ! जिस काम के लिये मैं आया हूं, उसके सामने जान कोई चीज नहीं ।

सिपाही—अरे मूर्ख ! तू कहीं खफ़कान का तो मरीज नहीं ?

हनुमान—अरे भले मानस ! तुझे तो बोलने की भी तमीज नहीं ।

सिपाही—मालूम होता है कि तू आज मुझ से मौत का भाव पूछने आया है ।

हनुमान—भाई मैं पहले ही कह चुका हूं कि जबसे मैंने इस काम का बीड़ा उठाया है, तब से जीवन मृत्यु के प्रश्न को बिल्कुल भुलाया है ।

सिपाही—आखिर मुझे भी तो ज्ञात हो कि वह कौनसा काम है ?

हनुमान—मुझे केवल सीता जी से मिलना है और यही मेरे यहां आने का परिणाम है ।

सिपाही—(झुँझलाकर) बहुत ठीक, तेरे नजदीक तो यह

साधारण सा काम है, किन्तु मेरे लिये तो मौत का पैगाम है।

हनुमान—भला तुम्हारी मौत क्यों कर आ गई, यह तुम्हारा ख्याले खाम है।

सिपाही-(बिगड़ कर) अरेमूर्ख जब तूने सीता जी से बातचीत कर ली तो मेरी मौत में क्या कलाम है? तुझे क्या मालूम कि महाराज लंकापति के इसकी बाबत क्या हुक्म अहकाम हैं।

हनुमान-(बे परवाही से बाग की ओर कदम बढ़ा कर) चाहे कुछ भी हो, मगर वापिस लौटकर जाना तो मेरे लिये भी हराम है।

सिपाही-(धक्का देकर) इस तरह मुँह उठाये जाता है जैसे बाबा जी का राज है।

हनुमान-(तलवार का भरपूर हाथ मार कर) बस यहीं पड़ी रह, यही तेरा अन्ति इलाज है।

(२) खोज

हनुमान-(मन ही मन में) रात्रि बहुत व्यतीत हो चुकी। प्रातः-काल होने में केवल कुछ घंटे बाकी रह गये, वाटिका का कोना-कोना छान मारा, सब मकानात ढूँढ लिये, यहां तक कि वृक्षों के पत्तों तक को भी उलट पलट कर दिया परन्तु खेद कि सब परिश्रम व्यर्थ गया। यह भी ठीक

विदित नहीं कि सीता जी जीवित भी हैं या नहीं। सम्भव है कि रावण ने उन्हें अपने बश में न आते देख कर वैसे ही काम तमाम कर दिया हो या सीता जी ने रावण की दस्त दराजियों से तंग आकर स्वयं ही अपना खात्मा कर लिया हो। हैरान हूँ कि अब क्या करूँ, कहां जाऊँ किधर ढूंढूँ। दिन निकलने से पहले तो मुझे यहां से निकल जाना चाहिए, क्योंकि प्रातःकाल होते ही सिपाही की लाश को देखकर चारों ओर शोर मच जायेगा और तू यहां से कदाचित ही जीवित जाने पायेगा। (आकाश की ओर देखकर) परन्तु अभी तो रात बहुत बाकी है, यहां खड़े-खड़े सोचने से तो कुछ लाभ नही, अभी इस बाग का बहुत सा भाग देखना है, (एक ओर को देखकर) हैं! यह वृक्षों का झुण्ड सा कैसा है, चलकर देखना चाहिए शायद यहीं से कुछ पता चले। (निकट जाकर) अहा! कैसा सुन्दर और निर्मल जल है। (उछल कर) देख लिया, ढूँढ लिया! पा लिया, बजाय इधर उधर व्यर्थ टक्करें मारने के बेहतर है कि इसी जगह डेरा लगा दूं, क्योंकि धर्म और कर्म की जानने वाली सीता यदि जीवित है तो इस स्थान पर संध्या करने के लिये अवश्य आयेगी और यहां तेरी अभिलाषा पूर्ण हो जायेगी।

सीता

गाना (तिलंग बतर्ज—मुसलमान होने को ऐ किबला)

कब से बैठी हूं यहां चाक गिरेबां होकर,
आज तक ली न खबर तुमने मेहरबां होकर।
हाय जगदीश मुझे तुम भी भुला बैठे हो,
कौन सा पाप किया आप से पिनहां होकर।
जान भी मेरी निकलने में नहीं आती है,
पलट जाते हैं मेरी मौत के सामाँ होकर।
प्राणपति मेरी खता माफ करो मैं हारी,
मैं क्षमा मांगती हूं नालां और गिरियाँ होकर।
वरना अब मौत ही छुटकारा दिलावेगी मुझे,
ठान बैठी हूं यह मायूस और हैरां होकर।
मेरे मरने का कोई शोक न करना हरगिज,
अलविदा कहना मुझे खन्दां व शादां होकर।
आपका दोष नहीं दासी ही इस लायक थी,
कैद तन्हाई में जलती जो शमाँ होकर।

नाटक

परमात्मा! अब तो मेरे पापों का बहुत कुछ प्रायश्चित हो चुका, जिस प्रकार का मेरे साथ अनर्थ हो रहा है उसको सहन करने में यह शरीर बिल्कुल असमर्थ हो रहा है। जिस की शक्ल देखने की रवादार न थी, उसके असभ्य ताने

सुन सुन कर लहू के घूँट पी रही हूं, और निर्लज्जता के जीवन में जी रही हूं। नीच स्त्रियाँ हर समय मुझ पर लपकती रहती हैं और जो मुँह में आता है बकती रहती हैं। इधर रावण ने अपनी बकवास को कम किया तो उधर इन दुष्ट राक्षसियों ने मेरा नाक में दम किया। सायँकाल से बकते-बकते अब मुश्किल से इनको मौत नसीब हुई, तो उस कम्बख्त के आने की घड़ी करीब हुई। आराम तो गया चूल्हे में मुझको इतना भी अवसर नहीं मिलता कि किसी जगह अकेले बैठ कर चार आँसू ही बहा लूँ और इस प्रकार ही अपने मन की भड़ास निकालूँ। हे नाथ! दया करो, मुझ अनाथ पर दया करो।

हनुमान–(चौंक कर) हैं! हैं!! यह आवाज किधर से आ रही है, एक एक शब्द की तर्ज अदा साफ बता रही है कि कोई दुखिया अपनी विपत्ति को याद करके कराह रही है। (प्रफुल्लित होकर) परमात्मन्! तू बड़ा बेनियाज है मेरा मन भीतर से साक्षी देता है कि निःसन्देह यह सीता जी की आवाज है। (शीघ्रता से कदम बढ़ाता हुआ) बस बस, अब इस ओर जाता हूं और अपना रहा सन्देह मिटाता हूं।

(हनुमान का वृक्षों के झुंड में छिप जाना)

विकटा–अरी दुर्मुखी निगोड़ी तुझे तो ऐसी नींद आई है

मानों मुर्दों से शर्त लगाई है।

दुर्मुखी–(मचल कर) ऊँ ऊँ, मैं नहीं खाती।

विकटा–अरी खाने को क्या मेरे पास कलाकंद रक्खा है ?

दुर्मुखी–(करवट बदल कर) बस बस रहने दो, मैंने इसका स्वाद कई बार चक्खा है।

विकटा–(जोर से कंधा हिलाकर) अरी निर्भाग ! महाराज के आने का समय आ गया, अब तो जाग।

दुर्मुखी–(अँगड़ाई और जम्हाई लेती हुई आँखें मल कर) तो फिर क्या करूँ, उस कम्बख्त को कभी मौत भी आयेगी ?

विकटा—(धप्पा लगाकर) हाय तेरा सत्यानाश ! अरी बदजात तू आप तो मरेगी, परन्तु साथ में मेरी भी खाल उतरवायेगी।

*त्रिजटा–अरी दुर्मुखी ! तू क्या शोर मचा रही है, तुझे नजर नहीं आता, कि सामने महाराज की सवारी आ रही है।

दुर्मुखी–अजी हां मैं भी महाराज के गुण गा रही थी, शोर शराबा तो कुछ नहीं था, केवल विकटा को जगा रही थी !

लेखक—वाह वाह ! खूब सूझी।

(रावण का एक खासे जमघट के साथ वाटिका में आना और सीता जी का अपने शरीर को साड़ी से समेट कर वृक्ष के सहारे बैठजाना)

---

*कदाचित यह स्त्री उन सब राक्षस स्त्रियों की अफसर थी जो सीता जी की रक्षा कर रही थी।

रावण–(सीता जी को सम्बोधित कर) सीता मुझे आशा है कि तुमने ऊँच नीच को सोचकर कोई नेक नतीजा निकाला होगा।

सीता–ओ अधर्मी न जाने तेरा यहां से कब मुँह काला होगा।

रावण–प्यारी! परमेश्वर के वास्ते मेरी दशा पर रहम कर।

सीता–ओ जालिम! परमेश्वर से डर और अपनी सख्तियां को कम कर।

रावण–आखिर तू कब तक अपनी हठ निभायेगी?

सीता– जब तक यह आत्मा शरीर से न निकल जायेगी?

रावण–जिनकी ओर तेरा ध्यान है, उसके तो फरिश्ते भी यहाँ पर कदम नहीं धर सकते।

सीता–अगर यहां पर कदम नहीं धर सकते तो स्वर्ग का मार्ग तो आप बन्द नहीं कर सकते।

रावण–मुझे तो तुम्हारी दशा पर दया आती है, जरा अपने परिणाम को अच्छी तरह विचारो।

सीता–बजाय मेरी दशा पर दया करने के अच्छा है कि अपनी दशा को सुधारो।

रावण–आखिर मुझे कठोरता से ही काम लेना पड़ेगा, नम्रता से तेरा जनून नहीं निकल सकता।

सीता—तेरा तो सामर्थ्य ही क्या है, परमेश्वर भी मेरे इस ख्याल को नहीं बदल सकता।

रावण—हुआ हूं मोहित तुम्हारे मन से,
खुदी को अपनी भुला भुला कर।
ज़रा दया कर ओ संगदिल तू,
न मार मुझको जला जला कर।
सीता—खड़ी सिरहाने अजल यह कहती,
है शाना तेरा हिला हिला कर।
न पायेगा सुख कभी तु हरगिज़,
किसी के जी को जला जला कर।
रावण—नहीं तू समझी कि कौन हूं मैं,
डराती टसवे बहा बहा कर।
खड़ी हैं तुझ सी बहुत सी आगे,
सिरों को अपने झुका झुका कर।
सीता—अरे ओ पापी न ऐंठ इतना,
किसी को नाहक सता सता कर।
यह तेरे बल सब निकाल देगा,
चरख चरख पर चढ़ा चढ़ा कर।
रावण—यह देख खंजर समझ जा अब भी,
कहूं मैं तुझको सुना सुना कर।
यहीं दरिन्दों को डाल दूँगा,
मैं तेरे टुकड़े बना बना कर।

सीता—मिटाले अपना भ्रम खुशी से,
तू जोर अपना लगा लगा कर।
अरे ओ कायर ! भला तू किसको,
डराता खंजर दिखा दिखा कर।

रावण–सीता ! तू फूल है मगर तुझ में बू नहीं।

सीता–तू विद्वान है मगर तुझ में इन्सानियत की बू नहीं।

रावण–तेरे पहलू में दिल नहीं, बल्कि एक पत्थर का टुकड़ा है।

सीता–हां हां, वह पत्थर का टुकड़ा अच्छा है तेरे जैसे हजारों भ्रष्ट दिलों से जिनमें एक-एक लहू की बूँद को जगह मनो जहर भरा हुआ है। यह पत्थर का टुकड़ा मुबारिक है उस दिल से जिसकी गैरत का मादा मरा हुआ है। शोक कि तेरे पहलू में भी बजाय इस भ्रष्ट दिल के एक पत्थर का टुकड़ा ही रखा जाता, ताकि तू बावजूद इतना विद्वान होने के भी गधा न कहलाता।

रावण–(कड़क कर) बस बस ओ बद-लगाम ! जरा अपनी जबान को थाम।

सीता–मैंने अपनी जबान को बहुत सँभाला और आज तक कोई शब्द अपने मुँह से न निकाला। जो कुछ तूने कहा वह मैंने ठण्डे दिल से सहा। जो कुछ तूने किया वह मैंने शर्बत के घूँट की तरह पिया। मगर

कहां तक और कब तक ? आखिर सहन करने की भी तो सीमा होती है, जब यह तेरी खरमस्ती किसी तरह भी दूर न हुई तो तंग आकर मैं ऐसी वार्ता पर मजबूर हुई, जिसे मैं खुद भी मायूब* समझती हूं परन्तु इसके साथ ही यह भी खूब समझती हूं कि नम्रता और आधीनता से तेरा दिल नहीं पिघल सकता, क्योंकि जहां तू चोर उचक्का है, वहां निर्लज्ज भी पक्का है। तेरे जैसे कपटी कामी, बेगैरत, हमारी और निर्लज्ज आसामी के साथ जब तक सख्त कलामी का बर्ताव न किया जायेगा और तेरा यथा योग्य आदर भाव न किया जायेगा, तब तक तुझसे किसी भलाई की आशा रखना न केवल मुहाल है, बल्कि बच्चों का सा ख्याल है।

रावण का गाना (बहरे तवील)

॥ दोहा ॥

सीता अब भी मान ले, हठ यह तेरी फिजूल।
अब तू मेरी कैद से, छुट कर जाय न मूल॥
अरी सीता तू अब भी कहा मान ले,
अपनी हट से कभी बाज आऊँ नहीं।

*दूषित

मैंने देखी हैं तुझ सी बहुत सी चतुर,
तेरे रोने की खातिर में लाऊँ नहीं।
इन फकीरों के पीछे तू मरती फिरे,
बन के पटरानी तू ऐश क्यों न करे।
रामचन्द्र जो सौ बार जन्मे मरे,
तो भी सूरत मैं तेरी दिखाऊँ नहीं।
अरी सीता तू अब भी०

सीता का गाना (बहरे तवील)

दोहा—रावण क्यों बक बक करे, गन्दी करे जबान।
कामी कपटी कायरे बुजदिल बेईमान॥
रावण हट जा मेरे सामने से ज़रा,
मुझको अपनी तू सूरत दिखावे मती।
तेरी सुन ली हैं बातें नरम और गरम,
मेरे दिल को तू ज्या दुखावे मती।
अब तो आंखों में सूरत बसी राम की,
मैं रवादार तक न तेरे नाम की।
मुझको परवाह नहीं दुःखो आराम की,
यहां लालच के फन्दे फैलावे मती।
रावण हट जा०

रावण—रामचन्द्र जो होता कुछ लायक अगर,
राज करता हा न अपने घर बैठ कर।

क्यों जलावतन* हो डोलता दर बदर,
उस गदागर+ का मैं खौफ खाऊँ नहीं।
अरी सीता तू अब भी०

सीता—जिस समय राम ने की चढ़ाई इधर,
खाक कर देंगे लंका तेरी फूँक कर।
तेरा गलियों में रुलता फिरेगा यह सर,
सर तरफ आसमां के उठावे मती।
रावण हट जा०

रावण—तेरी खातिर रमाई थी सिर में भस्म,
छोड़कर लोक लाज और कुल की रस्म।
मुझे तेरी कस्म तेरे सर की कस्म,
तुझे रानी जो अपनी बनाऊँ नहीं।
अरी सीता तू अब भी०

सीता—चल निकल दूर हो मेरे आगे से हट,
वरना दूँगी अभी तेरी काया पलट।
ओ अधर्मी ओ पापी बेईमान शठ,
हाथ मेरे जिस्म को लगावे मती।
रावण हट जा०

रावण—वरना टुकड़े बना दूँगा तलवार से,
सिर कटेगा तेरा एक ही वार से।

*देश निर्वासित +फकीर।

बाज आजा तू अब भी इस इसरार से,
राम के पास मैं भी पहुँचाऊँ नहीं।
अरी सीता तू अब भी०

सीता—मुझे ताने व महने सुनाता है क्या,
मौत का भय मुझे तू दिखाता है क्या।
ले के तलवार चढ़ चढ़ के आता है क्या,
मौत अपनी को नाहक बुलावे मती।
रावण हट जा०

रावण—मेरी शक्ति तुझे सारी मालूम है,
कुल जमाने में जिसकी पड़ी धूम है।
रामचन्द्र अभी कल का मालूम है,
ऐसे बच्चों को तो मैं पढ़ाऊं नहीं।
अरी सीता तू अब भी०

सीता—जो तुझे अपने बल का बंधा है भरम,
तो स्वयंम्बर से क्यों भागा था नो कदम,
डूब मर चुल्लू पानी में ओ बेशरम,
जरा शेखी के चिल्ले चढ़ावे मती।
रावण हट जा०

रावण—मैंने जितनी भी तेरी खुशामद करी,
और तू उलटा सर पर चढ़ती गई।

बस समझले कजा तेरे सर पर खड़ी,
तुझे मारे बिना यहां से जाऊँ नहीं।
अरी सीता तू अब भी०
सीता–क्यों सताता है आकर मुझे हर घड़ी,
मैंने सुन ली जो बकवास तूने करी।
तेरी जल जाय जालिम जबां विष भरी,
बे हयाई के फिकरे सुनावे मतो।
रावण हट जा०
रावण–जा नहीं सकती जिन्दा तू यां से कहीं,
अब बनेगी चिता तेरी आखिर यहीं।
नाम 'यशवन्तसिंह' मेरा रावण नहीं,
जो मैं सीता के टुकड़े बनाऊँ नहीं।
अरी सीता तू अब भी०
सीता–अपने मन में तू यह निश्चय ही जानले,
राम पहुँचे लड़ाई का सामान ले।
अब भी 'यशवन्तसिंह' का कहा मान ले,
शेर सोये हुए को जगावे मतो।
रावण हट जा०

नाटक

रावण–सीता! तू सौदाई* न बन।
सीता–तू राजा होकर इस प्रकार अन्याई न बन।

*पागल।

रावण–मेरे न्याय की तो सारे संसार में धाक है।

सीता–यों कहो कि जुल्म और सितम* का बाजार गर्म है, इन्साफ क्या खाक है ?

रावण—(मन ही मन) मैं हैरान हूं, कि आज मेरा खँजर क्यों बेकार हो रहा है, जबकि मेरी शान में ऐसे भ्रष्ट और अपमानित शब्दों का व्योहार हो रहा है। एक साधारण औरत, उसकी यह हिमाकत ! इधर मैं और यह सहन की ताकत ! मेरा खँज़र तो जिसकी ओर झुका, फिर उसके प्राण लिये बिना न रूका। परन्तु आज मेरा हाथ तलवार के दस्ते पर पहुँचते ही न जाने क्या भांप जाता है, जो मेरा दिल खुद बखुद कांप जाता है और ऐसा मालूम होता है कि मानो छाती पर से सांप जाता है। औरत तो औरत अच्छे अच्छे वीर पुरुषों को भी जुरअत* न हो सकी और किसी की जबान में इस कदर सुरअत* न हो सकी। इस समय भी मेरे महलों में स्त्रियों की एक बड़ी तादाद है और यह भी मुझको अच्छी तरह याद है कि उनमें से सिवाय चन्द एक के सबकी सब इसी तरह आई हैं न कि मैंने सहरे बांधकर ब्याही हैं। किसी को लालच

*अत्याचर *साहस *तेजी, जल्दी

देकर फुसलाया, किसी को जबरदस्ती उठाया। कोई मेरे ऐश्वर्य को देखकर ही मायल हो गई। कोई मेरे रूप और योवन को देखकर घायय हो गई। गर्जेकि सबके साथ यही हाल बीता है और सबको अपने बल और बुद्धि से जीता है, परन्तु यह अजीब तरह की सीता है जिस पर मेरा कोई भी जादू नहीं चलता और किसी युक्ति से इसका मन नहीं पिघलता न नम्रता से मानती है न कठोरता को जानती है जैसा शब्द मुँह से निकलता है, उसका वैसा ही घड़ा घड़ाया उत्तर मिलता है। ज्ञात होता है कि मेरा जाहो जलाल बरूए जवाय* है, वरना एक औरत की क्या मजाल है, जो मेरी शान में ऐसे लफ्ज इस्तेमाल करे और मेरी इज्जत और मर्तबे का कुछ भी न ख़्याल करे। (कुछ सोचकर) नहीं नहीं यह सिर्फ त्रिया हठ निभा रही है और मुझे आज्मा रही है। बेशक उसने तो मुझे बहुत आजमाया मगर मुझे भी रावण कौन कहेगा, जो इसे सीधा न बनाया। बिलफर्ज मुहाल अगर किसी तरह न मानेगी तो न सही मगर यहाँ से जाने से तो रही। जब हर तरह मजबूर और लाचार होगी तो झक मार कर आप

*नष्टता की ओर

मेरे चरणों पर निसार होगी। थोड़ी देर के लिए इसकी मुहब्बत का ध्यान दिल से निकाल कर ऐसे उपाय इस्तेमाल कर, जिससे तंग आकर तेरा कहना मंजूर करे फिर तू इनकार करे और यह तुझको शादी के लिए मजबूर करे। (प्रगट में सीता से) ओ अभागी और अज्ञान स्त्री! ज्ञात होता है कि मौत तेरे सिर पर मण्डला रही है जो कैंची की तरह जबान चला रही है।

सीता—ओ निर्लज्ज और पापी आत्मा! तेरी थरथराती हुई जीभ स्पष्ट बता रही है, कि तेरे भीतर से तेरे लिए सदाए मलामत* आ रही है।

रावण—नहीं मालूम कब तेरी खतम गुफ्तार होवेगी,
समझ जा, मान जा वरना बहुत ही ख्वार होवेगी।

सीता—नहीं मालूम कब तेरी खतम तकरार होवेगी,
तू अब सुन ले या फिर सुन ले मेरी इन्कार होवेगी।

रावण—तेरी जैसी बहुत सी सरकशों को आजमाया है,
मेरे कदमों पै तू कुरबान आखिरकार होवेगी।

सीता—उधर जो राज हठ है तो इधर भी हठ है त्रिया का,
भला देखूँगी दोनों में से किस की हार होवेगी।

*धिक्कार का शब्द।

रावण—तू जिद करले या हठ करले मगर एक दिन जरूरी है,
भुजा रावण की तेरे इस गले का हार होवेगी।
सीता—दो ही चीजें लग सकती हैं जो सीता की गर्दन से,
भुजा रघुवीर की होगी या तेरी तलवार होवेगी।
रावण—किया इजहार मैंने आज तक जिससे मुहब्बत का,
कहा, ऐसी मेरी किस्मत कहां सरकार होवेगी।
सीता—पतिव्रता नहीं जो आ गई हो जाल में तेरे,
कोई ऐसी गई गुजरी महा बदकार होवेगी।
रावण—इसी में बेहतरी है मान ले अब भी मेरा कहना,
नहीं तो शीघ्र ही *सवा सरे बाजार होवेगी।
सीता—जुल्म करता है अबला जानकर तू जिस कदर मुझ पर,
कोई दिन में तेरी नैय्या पड़ी मझधार होवेगी।
रावण—यह निश्चय है मुझे नरमी से तू बिल्कुल न मानेगी,
मेरे खंजर से ही सीधी अरी मक्कार होवेगी।
सीता—तेरे नापाक हाथों से तो मैं मर भी नहीं सकती,
तेरे खंजर से मेरी मौत क्या मुरदार होवेगी।
रावण—नहीं मालूम कब तू नींद से बेदार होवेगी।
सीता—कि जब सिर पर तेरे आकर कजा असवार होवेगी।
रावण—सीता! यद्यपि मैं तेरे कठोर से कठोर शब्दों को सहता,

*अपमानित

हूं, परन्तु विश्वास रख कि फिर भी तेरी बेहतरी और भलाई में रहता हूं और जो कुछ कहता हूं तेरे भले की कहता हूं।

सीता—अरे निर्लज्ज! यदि कोई लज्जा वाला होता तो इतनी लानत सुनकर नाक डुबोकर मर जाता और जीवित किसी को मुँह न दिखाता। मगर न मालूम तुझको परमेश्वर ने किस मिट्टी से बनाया है कि शर्म और हया को तूने कोसों दूर भगाया है। पापी मूढ़। आखिर तू बहू बेटियों वाला है, या किसी ने गिरा पड़ा ही उठा कर पाला है।

रावण-(तलवार खींच कर) ओ काल की अभिलाषी! जरा अपनी जबान सम्भाल ले।

सीता-ओ सत्यानाशी! तू अपना यह अन्तिम अरमान भी निकाल ले।

रावण—न जाने तेरे अन्दर कौन बोल रहा है?

सीता-मेरे भीतर वह बोल रहा है, जिसके भय से बार बार खड्क उठाने पर भी तेरा पतित आत्मा डोल रहा है।

रावण और सीता का (सम्मिलित गाना)

रावण-क्या करूँ यह मेरा दिल दिवाना हुआ,
मान ले कहना अब भी अरी बे अकल।

सीता–जा चला जा न मुझ को दिखावे शकल।
रावण–क्या करूँ चैन पड़ती नहीं एक पल।
सीता–तेरी करनी का चाहिये था ऐसा ही फल।
तुझे कर्मों का फल भी तो पाना हुआ।
रावण–क्या करूँ यह मेरा दिल दिवाना हुआ ॥१॥
प्यारी कर तू मेरे हाल पर कुछ रहम।
सीता–तुझे आती नहीं बेहया कुछ शरम।
रावण–तेरा खंजर के नीचे ही निकलेगा दम।
सीता–तू मिटा ले खुशी से यह अपना भरम।
तेरी शक्ति को मैंने है जाना हुआ।
रावण–क्या करूँ यह मेरा दिल दिवाना हुआ ॥२॥
तुझे फायदा नहीं कोई इन्कार में।
सीता–तुझे फायदा ही क्या है इस इसरार में।
रावण–सिर उड़ा दूँगा मैं एक ही वार में।
सीता–ताकत इतनी कहां तेरी तलवार में।
तू जानानों के पीछे जनाना हुआ।
रावण–क्या करूँ यह मेरा दिल दिवाना हुआ ॥३॥
अरी बे दर्द मुझ पर जरा तरस कर।
सीता–अरे जालिम कहर* से तू ईश्वर के डर।

*कोप।

रावण–हो चुका है यह दिल बस तुम्हारी नजर।
सीता–तुझे मरना ही है तो परे हो के मर।
तेरा निश्चय खतम आबो दाना हुआ।
रावण–क्या करूँ यह मेरा दिल दिवाना हुआ॥४॥
हुई दिवानी तू किन पर न घर है न दर।
सीता–नहीं घर है जो उनका तुझे क्या फिकर।
रावण–नहीं मालुम करते हैं कैसे गुजर।
सीता–मांगने तो तेरे घर न आते मगर।
तुझे इस बात का भी क्या ताना हुआ।
रावण–क्या करूँ यह मेरा दिल दिवाना हुआ॥५॥
जान मेरी मुसीबत में आई बड़ी।
सीता–पड़ो चूल्हे में तो फिर मुझे क्या पड़ी।
रावण–नहीं मालूम आयेगी कब वह घड़ी।
सीता–मौत होगी सिरहाने पै तेरे खड़ी।
बस समझ तू अदम को रवाना हुआ।
रावण–क्या करूँ यह मेरा दिल दिवाना हुआ॥६॥
भला कब तक तू देवेगी रूखे जवाब।
सीता–तेरे पापों का होगा कभी तो हिसाब।
रावण–तू जवानी को अपनी न कर यों खराब।
सीता–आने वाला है तुझ पर भी कोई अजाब।
बदी करते भी तुझ को जमाना हुआ।

रावण—क्या करूँ यह मेरा दिल दिवाना हुआ ॥७॥
अरी बकती है क्या तू ज़बां को सम्भाल ।
सीता—तू भी ऐसी न बातें जबां से निकाल ।
रावण—मेरे रुतबे का भी कुछ न करती ख्याल ।
सीता—तेरा रुतबा ही क्या है परे हट कङ्गाल ।
तू उचक्का जमाने का माना हुआ ।
रावण—क्या करूँ यह मेरा दिल दिवाना हुआ ॥८॥
बस बहुत हो चुकी दे जबाँ को लगाम ।
सीता—तू चला जा न कर ज्यादा मुझसे कलाम ।
रावण—ऐसी बातों का न होगा अच्छा अंजाम ।
सीता—यही कहती हूं मैं भी बुरा है यह काम ।
ज़हर अपने ही हाथों से खाना हुआ ।
रावण—क्या करूँ यह मेरा दिल दिवाना हुआ ॥९॥
मेरे उजड़े हुए दिल को आबाद कर ।
सीता—अरे पापी जरा मौत को याद कर ।
रावण—मेरा बसता हुआ घर न बरबाद कर ।
सीता—खौफ ईश्वर का तो ऐ बेदाद कर ।
क्यों कज़ा का तू नाहक निशाना हुआ ।
रावण—क्या करूँ यह मेरा दिल दिवाना हुआ ॥१०॥

नाटक

रावण–(तलवार खींच कर) मैं अब तेरा काम तमाम करता हूं और तुझको सदा के लिए गुमनाम करता हूं।

धनपालनी*—महाराज जरा शान्ति से काम लीजिए और तलवार को म्यान में कीजिये। स्त्री जाति पर शस्त्र चलाना आप जैसे शूरवीरों की शान के खिलाफ़ है, बल्कि इसे क्षमा कर देना ही इन्साफ़ है। इस निर्भाग की प्रारब्ध में रोना ही लिखा है, सो रोती रहेगी और इस तरह अपनी जवानी को खोती रहेगी। मगर आपको क्या गरज़ कि इसके साथ अपना सिर खपायें और वृथा अपनी तबियत को रंज पहुँचायें। कुछ दिनों में इसकी यह हठ दूर हो जायेगी तो झख मार कर खुद बखुद आपका हुक्म मानने पर मजबूर हो जायेगी।

रावण—विचार तो यही था कि जब तक इसकी यह हवा मस्तक से न निकालता, तब तक तलवार को म्यान में न डालता, किन्तु तुम्हारे कहने से अपने इरादे को बदल देता हूं और दो मास का और अवकाश

*यह स्त्री भी किसी समय सीता की भांति जबरदस्ती लाई गई थी और आजकल रावण की विशेष प्रिय थी।

देता हूं। या तो इस अवधि में मेरा कहना मान लेगी, नहीं तो दो मास के पश्चात यही खड्ग इसके प्राण लेगी।

सीता—जो कुछ तुझको दो महीने पीछे करना है वह आज ही करले, क्योंकि मेरा तो दो महीने पश्चात भी यही जवाब होगा, परन्तु तेरे लिये इतने अर्से का इन्तजार बाइसे अजाब होगा। इसके सिवाय यह जीवन एक नापायदार जिन्दगानी है, जिसके लिए इतने दिन का वायदा करना सख़्त नादानी है। सम्भव है कि काल तुझको आज ही आ दबाये और यह तेरी आकांक्षा भी मन की मन में रह जाये। इसलिये :—

दोहा

कल करन्ती आज कर, आज करन्ती अब।
पल में प्रलय होयगी, फिर करेगा कब॥

रावण-(राक्षस स्त्रियों से) मेरे समझाने से तो बात बढ़ती है, ज्यों ज्यों मैं समझाता हूं इसे अधिक हठ चढ़ती है। तुम मेरी अनुपस्थिति में इसे समझाना, कुछ लालच और भय दिखाना, किन्तु खबरदार अधिक क्रूरता को काम में न लाना।

त्रिजटा-(हाथ जोड़कर) आप कुछ चिन्ता न करें, इसे मैं विशेष युक्ति द्वारा समझाऊँगी और सब प्रकार के

उतार चढ़ाव दिखाऊंगी, बल्कि त्रिया चरित्र को भी काम में लाऊँगी, सारांश कि जिस प्रकार भी हो सकेगा इसे बिल्कुल मोम बनाऊँगी।

रावण—यदि तुम यह काम बनाओगी तो मुँह मांगा इनाम पाओगी।

(रावण का अपने जमघट के साथ वापिस चले जाना)

सीता का गाना

न ताकत इतनी रही जिस्म में,
सहूंगी आखिर अजाब कब तक।
मैं कैद खाने में बे-हया के,
करूँगी जीवन खराब कब तक।
अनाथ बेकस अजान अबला,
न कोई मेरा सहारा ईश्वर।
हे नाथ! तुम भी बिसार बैठे,
रहेगा मुझ पर अताब कब तक।
कभी न देखे थे ख़्वाब में जो,
यहां वह सदमे उठा चुकी हूं।
अधर्मी पापी की सख्तियों का,
न होगा आखिर हिसाब कब तक।
प्राणनाथ अब तुम्हारे दर्शन,
नहीं किसी तौर से भी मुमकिन।

वह दुष्ट कर देगा फैसला अब,
सुनेगा रूखे जवाब कब तक।

नाटक

परमात्मन् ! क्या मैं संसार में इसीलिये आई थी, और क्या यह सब आपदायें मेरे लिये ही बनाई थीं। जबसे होश आई, एक दिन भी हंसी से न गुजारने पाई। प्राणनाथ ! यद्यपि मैं एक अर्से से इस दुष्ट के बन्धन में कैद थी, तथापि मुझे यह उम्मेद थी कि जब मेरा रक्षक मेरा परमात्मा है तो एक न एक दिन सब कष्टों का खात्मा है। जब अपने प्राण प्यारे के दर्शन पाऊँगी तो इन सब विपताओं को एक क्षण में भूल जाऊँगी। परन्तु खेद कि अब तो उन सब आशाओं से हाथ धो चुकी, क्योंकि आज मेरी मृत्यु की तिथी भी निश्चित हो चुकी, मगर मैं उस तिथि से प्रथम ही अपने आपको परमात्मा के हवाले करूँगी और उस अधर्मी के हाथों कदापि न मरूँगी। प्यारे लक्ष्मण मेरा अपराध क्षमा करना, मैं अपनी मूर्खता पर खुद पशेमान हूं और संसार में केवल थोड़े दिनों की महमान हूं, तुझ निर्दोष पर दोष लगाने का फल पा लिया और उसका बदला इसी जन्म में उठा लिया।

त्रिजटा–मुझे हैरानी है कि तूने अपने मन में यह क्या ठानी है। महाराज रावण तेरी मुहब्बत का

इजहार करे और तू उल्टा इन्कार करे। बे अक्ल न बन जरा अपने अन्जाम को विचार और आगे पड़ी हुई थाली को ठोकर न मार। अन्यथा रोयेगी, पछतायेगी और यह घड़ी फिर हाथ न आयेगी।

सीता–(चुप)

विकटा–मूर्ख तो संसार में और भी बहुत होंगे परन्तु इससे कम, जिसको न अपने भविष्य की चिन्ता न जीवन का गम। जब महाराज रावण इसको अपनी पटरानी बनाते हैं तो न मालूम और यह क्या चाहती है, कि बावजूद खुशामद करने के भी उल्टी ऐंठी जाती है। ज्यों-ज्यों वह समझाते हैं, तो यह नवाबजादी उल्टी ही चलती है यदि सच पूछो तो यह उनकी ही गलती है, कि एक रजील और कम हैसियत स्त्री के पीछे मर रहे हैं और व्यर्थ इसकी खुशामद कर रहे हैं। भला जिसने सारी उम्र टुकड़े माँग कर खाये, उसे पका पकाया भोजन क्यों कर भाये। चल री कहीं की कंगाल, यह मुँह और मसूर की दाल! (सीता की गर्दन को जोर से झटककर) अरी कम्बख्त! तेरा भाग्य तो फूट गया, मगर कुछ जवाब तो दे, मुँह तो नहीं टूट गया।

सीता—(चुप)

दुर्मुखी–अरी निर्बुद्ध ! महाराज रावण से तेजस्वी और प्रतापी राजा को छोड़कर तू किस खानाबदोश और जिलावतन के पीछे अपना जीवन बरबाद कर रही है। ऐसे-ऐसे निर्धन तो लंका में न मालूम किस कदर ठोकरें खा रहे हैं और महाराज रावण की खैरात से परवरिश पा रहे हैं।

सीता–(झुँझला कर) जरा अपनी जिह्वा को सम्भाल और ऐसी बेहूदी बातें मुँह से न निकाल। मुझे जिस तरह तुम चाहो मता लो या अभी कच्ची को खालो, किन्तु मेरे स्वामी के विरुद्ध कोई शब्द मुंह से न निकालो। अन्यथा अभी कोई गुल खिला दूंगी और यह सारी चर्व जवानी एक पल में भुला दूंगी। बेदर्दो, कुछ तो परमेश्वर का भय करो और मुझ दुखिया की आहों से डरो। (वहां से उठकर) यह लो अगर मेरा बैठना भी तुम्हें नहीं भाता, तो मुझ से आप ही यहाँ नहीं बैठा जाता।

सब राक्षसी–(साथ ही उठ कर) जहाँ तेरा जी चाहे चल हम भी तेरे साथ ही जायेंगी और वहां भी तेरी इसी तरह जान खायेंगी।

त्रिजटा—(सब राक्षसियों को डांट कर) बस-बस तुम यहीं बैठी रहो और इसको कुछ न कहो। इसे कहीं अलग बैठकर रो लेने दो और जरा हलकी हो लेने दो।

(सीता का उठकर एक अशोक वृक्ष के नीचे जा कर बैठ जाना)

सीता जी का गाना (बतर्ज—कव्वाली)

महीने दो रहे बाकी मेरी इस जिन्दगानी के,
खतम हो जायेंगे लक्षण सभी मेरी निशानी के।
अभी तक तो मुझे उम्मीद थी अपनी रिहाई की,
लहू के घूंट मैं पीती रही बदले में पानी के।
मेरा नामो निशां संसार से मिट जायगा यों ही,
रहेंगे बस जहां में तजकरे मेरी कहानी के।
रहा अरमान यह भी आपके चरणों में दम निकले,
मगर ऐसे कहां थे भाग्य मुझ जैसी निमानी के।
दिये हैं जिस क़िस्म के दुःख मुझे इस दुष्ट रावण ने,
करूं क्या तजक़रे मैं उस ज़ुल्म और बेईमानी के।
प्यारे लक्ष्मण! यह वक़्त था इमदाद करने का,
हुये नाराज तुम उल्टा बजाये मेहरबानी के।
नहीं कुछ दोष दे सकती तुम्हें अपनी मुसीबत का,
मिले हैं फल मुझे ये सब मेरी ही बदगुमानी के।

तेरे अल्फाज में इक्-इक् से बिजली सी निकलती है,
अरे 'यशवन्तसिंह सदके तेरी जादू बयानी के ।

नाटक

परमात्मा ! मैं बहुत कुछ सदमे उठा चुकी और हर घड़ी की विपत्तियों से तंग आ चुकी। हर तरह से मजबूर और लाचार हो गई और आखिर निराश और विवश होकर प्राण देने पर तैयार हो गई। प्राणनाथ यद्यपि मैं अपनी सब आकांक्षाओं और कामनाओं का हनन किये जाती हूं तथापि इतना शुकर है कि अपने धर्म को जान के साथ लिये जाती हूं, किन्तु आपको किस प्रकार विश्वास आयेगा, शायद आप इसलिये मुझको छोड़ बैठे हैं कि मेरे चाल चलन की निस्बत कुछ बदगुमानी हो गई, जिसके कारण आपके मन में इस दासी की ओर से ग्लानी हो गई। खैर परमेश्वर ही इस बात का गवाह है कि आपकी दासी गुनहगार है या बेगुनाह है। (इधर उधर देखकर) इस समय सब राक्षसियां सो रही हैं और बिल्कुल बेसुध हो रही हैं। ऐसा अवसर फिर हाथ न आयेगा और इस समय कोई देखने भी न पायेगा (सिर के दुपट्टे को फाड़कर) बस इसकी एक रस्सी बना लूंगी और यह फांसी अपने गले में डाल कर स्वर्ग की राह लूंगी।

(सीता का अपने सिर के दुपट्टे को फाड़ कर, रस्सी बनाना
और उसका एक सिरा वृक्ष से बांध कर दूसरा सिरा
हाथ में लेना और रामचन्द्र जी और लक्ष्मण जी
व आत्मीयजनों को याद करके विलाप करना)

सीता जी का गाना (लावनीं जिला)

॥ दोहा ॥

हे ईश्वर कृपा करो दो न कष्ट विशेष।
दिन दिन दुख पड़ते नये कब तक सहूं ...
कब तक सहूं क्लेश न इतनी ताकत रही हमारी है।
सहते सहते कष्ट आज तक इतनी उमर गुजारी है।
इक दिन का रोना होता तो रोकर ही करलेती सबर।
रोते रोते आंखें पक गई छाती हो गई है पत्थर।
पड़ी कैद में जालिम के सब छूट गया है घर और दर।
छूट गये सारे सम्बन्धी मात पिता और सास ससुर।
सभी तरह से तंग आ गई हुई बहुत लाचारी है।
सहते सहते कष्ट आज तक०
यों तो जब से होश सँभाला दुःखों से चकनाचूर हुई।
मेरी मुसीबत कुल दुनियां में एक मसल मशहूर हुई॥
लेकिन जब से प्राणपति के चरण कमल से दूर हुई।
सहे न क्या क्या क्लेश आखिर मरने पर मजबूर हुई॥
और न दो संताप नाथ अब जीना पल पल भारी है॥
सहते सहते कष्ट आज तक०

वीर लक्ष्मण ! मैंने तुम पर जो इलज़ाम लगाये थे।
बेशक ऐसे दोष आज तक सुनने में नहीं आये थे।
मूर्खता वश मैंने तेरे सब अहसान भुलाये थे।
उसी पाप का मिला यह फल जो इतने कष्ट उठाये थे।
क्षमा करो अपराध अगर्चे कसूर मेरा भारी है।

सहते सहते कष्ट आज तक०

प्राणनाथ ! इक बार देखजा हालत अपनी दासी की।
तुम बिन लेवे खबर कौन मुझ भूखी और प्यासी की।
व्यथा कहूं मैं किससे अपने गम की और उदासी की।
कौन निकाले आकर मेरे गले से रस्सी फांसी की।
क्या कारण जो मेरी शक्ल से हुई तुम्हें बेजारी है॥

सहते सहते कष्ट आज तक०

पिता आपने मेरी खातिर बहुत मुसीबत झेली थी।
आ भाई अम्मां जाये मैं तेरी बहन अकेली थी।
मिल लो सखियो गले कभी मैं साथ तुम्हारे खेली थी।
याद करोगी एक रोज कि क्या सूरत अलबेली थी।
ऐ माता तेरी पुत्री की अब चलने की तैयारी है॥

सहते सहते कष्ट आज तक०

नाटक

(हाथ जोड़कर और रस्सी गले में डाल कर)

हे परमात्मन् ! मैं आये दिन के कष्टों से तंग आकर खुशी से

मरना मंजूर करती हूं, किन्तु अन्तिम बार आप से इतनी प्रार्थना जरूर करती हूं, कि यदि मैंने सारी उमर में कुछ धर्म किया हो, या ऐसा कोई शुभ कर्म किया हो, जिससे मेरी कुछ सद्गति हो तो अगले जन्म में भी श्री रामचन्द्र जी मेरे पति हों।

एक आवाज–देवी! परमेश्वर का नाम ले और जरा धैर्य से काम ले।

सीता–(हैरानी से इधर उधर देखकर) हैं! हैं! यह आवाज किधर से आ रही है और इस पाप भूमि पर कौन ऐसी पवित्र आत्मा है, जो मेरी दशा पर दया खा रही है। भाई तु कौन है जरा सामने आ और मुझे अपनी शक्ल तो दिखा।

हनुमान–(सामने आकर हाथ जोड़कर) माता जी! आप क्या कर रही हैं? इतनी समझदार और धर्मात्मा हो कर ऐसी बुरी मौत मर रही हैं? माना कि इस समय आपकी जान को महा सन्ताप है किन्तु आत्मघात करना भी तो महा पाप है।

सीता–भाई तुम्हारा क्या नाम है? मेरी तो तुमसे न जान है न पहचान है।

हनुमान–माता जी! मैं रामचन्द्र जी का एक छोटा सा सेवक हूं और मेरा नाम हनुमान है।

सीता–मगर मैंने तुमको कभी उनके पास आते जाते भी नहीं देखा, जरा समीप होकर अपनी शक्ल तो दिखाओ।

हनुमान–(कुछ समीप आकर) निःसन्देह आपका कहना यथार्थ है, आपकी उपस्थिति में मेरी उन तक कोई रसाई न थी किन्तु आपकी खोज करते समय हमारे राजा वानरराज सुग्रीव को उन्होंने अपना मित्र बनाया और उसी समय से यह सेवक भी...

सीता–(तुरन्त पीछे हट कर) दूर! दूर!! ओ कपटात्मा दूर!!! मैंने तुझको जान लिया और भली प्रकार पहचान लिया। अरे दुष्ट वह वही समय था जो मैं गलती खा गई और तेरे धोखे में आ गई, किन्तु अब तू लाख बातें बना और हजार भेष बदल कर आ। अब तो मैं मिट्टी को भी सूँघ कर बता दूँगी कि यह बेईमान रावण की कबर है और तेरी इन चालाकियों की मुझे सब खबर है।

हनुमान–माता जी! आपको भी सच्ची बदगुमानी है, परन्तु आपके विश्वास के लिये मेरे पास रामचन्द्र जी की खास निशानी है। (अँगूठी देकर) लीजिये इसकी पहचान कीजिये और भली प्रकार इतमीनान कीजिए।

सीता–(अंगूठी को लेकर और उसे ध्यान से देख कर)

चूमकर और हृदय से लगा कर) आह! मेरे प्राण प्यारे की अंगूठी! मेरे भाग्य के साथ तू भी मुझ से ऐसी रूठी। तुझको मेरी अवस्था पर कुछ दया न आई और इतने काल के पश्चात आज शक्ल दिखाई। ऐ मेरे प्राणपति की निशानी और मेरे लिये बायसे ज़िन्दगानी! मेरा मन इस समय बहुत बेताब है, क्या मैं सचमुच तुझको देख रही हूं, या यह कोई ख़्वाब है।

हनुमान–माता जी! अब इन बातों को जाने दीजिए, और मेरी ओर ध्यान दीजिये।

सीता–ओ हो बेटा क्षमा करना, मुझसे बड़ी भूल हो गई और मैं तो अपने ही विचारों में ऐसी मग्न हो गई कि तुम से बात करना भी भूल गई और अंगूठी को देख देखकर ही ऐसी फूल गई। अभिशाप के कारण जो अनुचित शब्द मेरे मुख से निकल गये उनके लिए मत्यन्त शर्मसार हूं और तुमसे हाथ जोड़ कर माफ़ी की ख़्वास्तगार हूं।

हनुमान–मुझे आप विशेष लज्जित न कीजिये, मैं तो आपका तुच्छ खिदमतगार हूं और आपके लिए प्राण तक देने को तैयार हूँ।

सीता–(अश्रुपूर्ण नेत्रों से) आह कभी वह समय था कि जिन

से मैं साधारण सा काम भी लेती थी, उनको सहस्रों रुपये इनाम देती थी, किन्तु शोक कि इस समय ऐसी निर्धन और नादार हूं कि अपने हितैषी का किसी प्रकार का सत्कार करने से भी लाचार हूं, यहाँ तक कि वह वस्त्र भी पर्याप्त नहीं जिनसे अपना शरीर ढाँप रही हूँ और मारे शीत के थर थर काँप रही हूँ।

हनुमान–देवी! अब विपत्ति के दिन व्यतीत हो गये, पिछली बातों को मन से भुलाओ और इस प्रकार रुदन करके मुझे भी व्यर्थ न रुलाओ। अब सिर्फ मेरे लौटने का इन्तजार है और वानर द्वीप का एक-एक बच्चा सिर हथेली पर रक्खे मरने मारने को तैयार है। क्योंकि मुझे अब वापिस जाने की शिताबी है और मेरा यहाँ अधिक ठहरना भी बाइसे खराबी है। इसलिये मुझे शीघ्र विदा कीजिये और अपनी कोई विशेष निशानी प्रदान कीजिये।

सीता–(एक ठण्डी सांस लेकर) मैं हैरान हूं कि इस समय तुमको क्या निशानी दूँ, दरिद्रता का तो यह हाल है कि शरीर ढकने के लिये वस्त्र प्राप्त होना भी मुहाल है और सब प्रकार इफलास* ही इफलास है अलबत्ता

*दरिद्रता ही दरिद्रता।

एक वस्तु इस समय मेरे पास है (हाथ से चूड़ी उतार कर) और तो सब आभूषण मैं मार्ग में ही फेंक आई थी, केवल यह चूड़ामणि बतौर एक खास निशानी के साथ लाई थी। जब कभी अधिक उदास हो जाती थी तो इसे देखकर अपना मन बहलाती थी। यद्यपि इसका होना मेरे लिए बाइसे जिन्दगानी है, किन्तु इसके सिवाय मेरे पास और क्या निशानी है, जो तुम ले जा सको और स्वामी जी को दिखला सको। विवश इसे अपने से अलहदा करती हूँ और तुम्हारे कहने से दो मास तक जिन्दा रहने का वायदा करती हूँ। इससे अधिक और कुछ नहीं कह सकती कि यदि उन्होंने इस अवधि में मेरी खबर न ली, तो सीता कदापि जीवित नहीं रह सकती।

हनुमान–अब अधिक समय नहीं लगेगा, या तो कुछ दिन इन्तजारी कीजिये, अन्यथा इसी क्षण मेरे साथ चलने की तैयारी कीजिये।

सीता–मैं तुम्हारी इस मेहरबानी की मशकूर हूं, किन्तु पराये मनुष्य के साथ जाने से मजबूर हूँ। जाऊँगी तो अपने पति के साथ जाऊंगी अन्यथा इसी जगह अपने प्राण गँवाऊँगी, किन्तु यह धब्बा अपने नाम के साथ न लगाऊँगी।

हनुमान-बहुत अच्छा, इसके जाने की आज्ञा दीजिये किन्तु मुझको भूख ने बहुत सताया है क्योंकि मैंने कई दिन से कुछ नहीं खाया है, यदि आज्ञा हो तो इस बाग से कुछ फल तोड़ कर खालूं और अपनी क्षुधा बुझा लूँ।

सीता—मेरी ओर से तो तुम्हें सब प्रकार का अधिकार है, किन्तु इस बात का ख़्याल रखना कि यहाँ हर एक राक्षस बड़ा खूंख्वार है।

हनुमान-उनकी तो परवाह नहीं, केवल आपकी आज्ञा दरकार है।

(हनुमान का मजे से फल तोड़ कर खाना और एक बागवान का उसको देखकर क्रोध में आना)

बागवान-(ललकार कर) अरे तू कौन है ? जो या तरह बाग को उजारत है, या बाग़ मां तो पखेरू भी पर नाहीं मारत है।

हनुमान-क्यों मेंढक की भांति टर्रा रहा है और अकारण ही सिर पर चढ़ा आ रहा है।

बागवान-या भलो भयो, उल्टा मौज से फल तोर तोर खावत है, और हम पूछत हैं तो उल्टा हमको धमकावत अरे तोहे कछु नजर नहीं आवत है ?

हनुमान-(लापरवाही से) जाओ जाओ मेरे कान न खाओ।

बाग़बान–अरे तोर कान न भयो कछु और भयो, हम आदमी का तोर पूछत हैं, आप सिर पर ही चढ़तो गयो।

दूसरा बाग़बान–ज्ञात भयो कि तौन बहरो है, पर तौन नहीं जानत कि यहां कैसो सख्त पहरो है।

तीसरा–भइया! यह तुम्हारी घसड़ फसड़ हमका नहीं भावत है, हमारे ज्ञान मां तो यही आवत है कि याको और कछु न कहो, याको रस्सी से बांध के बन्दीखाने ले जात रहो।

वही पहला–अरे हमका तो नगीच नाहीं आने देत, तौन कहत हैं कि रस्सी से बांध लेत।

दूसरा–या कहां को ऐसो ढीठ भयो, जरा रस्सी हमका देव। (हनुमान के समीप होकर) हम तोहे अभी बतावत है और फल खावत का मजा चखावत है।

हनुमान–अच्छा है कि तुम यहां से चले जाओ और व्यर्थ अपने प्राण न गँवाओ।

बाग़बान–अरे हमका मौत का भय दिखावत है, भला हम तलक कौन बात की पावत है। (हनुमान का हाथ पकड़ कर) हम देखत है कि तौन भाग कर कहां जावत है।

हनुमान–(एक घूँसा लगा कर) भाग कर कहीं नहीं जाऊँगा बल्कि तुमको और तुम्हारे सहायकों को यहीं

से यम लोक पहुँचाऊँगा।

(हनुमान का समस्त बागवानों की मरम्मत करना, कइयों का मर जाना, कइयों का घायल होना और शेष का गिरते-पड़ते रावण के दरबार में पहुँच कर हाय दुहाई मचाना।)

—०:※:०—

तेईसवाँ दृश्य

रावण की राजसभा

रावण—दिन प्रतिदिन तबियत का हाल बद से बदतर होता जाता है और मेरा हमेशा प्रफुल्लित एवं प्रसन्न रहने वाला मन व्याकुलता का घर होता जाता है। यह भौंरा ऐसे फूल पर मस्त हुआ, जिसमें केवल जाहिरा रंगत ही रङ्गत है किन्तु प्रेम की गन्ध उससे कोसों दूर है, परन्तु इसमें इस विचारे का भी क्या कसूर है इस कम्बख्त का आदि काल से यही स्वभाव और यही दस्तूर है। मिसल मशहूर है कि 'भौंरा फँस गया रूप ने रस का रहा न ज्ञान।' (एक ठण्डी सांस भर कर):—

दिल जिसे हमने दिया साफ सितमगर निकला।
मोम हम समझे थे जिसको वही पत्थर निकला॥

एक मन्त्री—नजरे बद दूर, आज किस बात का ख्याल है,

जो दुश्मनों की तबियत पर इस कदर रंजो मलाल* है ?

रावण—मेरी तबियत पर जिस बात का मलाल है, वह बड़ा पेचीदा सवाल है और तुम से उसका सुलझना सख्त मुहाल** है।

मन्त्री—(मन ही मन में) मैं इस दशा को खूब पहचानता हूं और जिस बात के लिये आहोजारी है, उसे भी अच्छी तरह से जानता हूं। (प्रगट में रावण से) आप तबियत को रन्जीदा न बनाइये, नृतकाओं को तलब फरमा कर राग रङ्ग से अपना मन बहलाइये। चोबदार ! जाओ और शीघ्र उनको बुला लाओ।

(चोवदार का तुरन्त चले जाना)

(नृतकाओं का आना तथा नाचना और गाना)

गाना (वतर्ज—तेरे पुत्र हमेशा रहें शादमां)

बार बार सभी सिर को झुकाते यहां बार बार,
आते हैं सिर को झुकाते हैं।
पाते दिल की मुरादें ले जाते इनाम,
अदना आला ताकत वाला,
करते सिर को खम खम खम ॥
राजन पति महाराज आप का,
राज रहे यह जम जम जम ॥
बार बार......

*दुख शोक। **अति कठोर।

कीर्ति गाते हैं, खुशी मनाते हैं,
झण्डे लहराते खुशी के हरदम।

तन से, मन से, दिल से, धन से,
रहे निछावर हम हम हम॥

निस दिन ही गुण महाराज के,
गायें नाचें छम छम छम॥

नाटक

रावण-अहा! दुनियां में अगर कोई जादू है तो गाना है, अगर कोई गाने वाला भी सुरीला हो तो फिर इसके आनन्द का क्या ठिकाना है। एक टप्पे ने ही दिल ऐसा मसरूर* कर दिया कि सब रन्जोगम एक क्षण में दूर कर दिया। अच्छा कोई वक्त की चीज गाओ या कोई भैरवी तराना हो......

सब बागवान-(वावेला करते हुये) दुहाई महाराज की, सगरी अशोक वाटिका उजर गई और हमरी भी बुरी दुर्गत भई। काहू को सिर फूट गयो, काहू को मुंह टूट गयो।

रावण-किस दुष्ट की मृत्यु आई, जो यहां आकर आफत मचाई? फिर अशोक वाटिका तक वह कैसे जाने पाया। क्या पहरेदार भी ऐसे असावधान हो गये कि

*प्रफुल्लित

बिल्कुल बे सुध होकर सो गये ?

बागवान–महाराज ! क्या पूछत हो, वह तो, तो ढोढ़ ही बड़ो है जौन वक्त हम इधर आत रहे, तो देखो कि सन्तरी वेचारो भी फाटक पर मरो पड़ो है ।

रावण–अक्षयकुमार ! तुम अभी जाओ और उस दुष्ट को फौरन गिरफ्तार करके हमारे सामने लाओ ।

अक्षयकुमार–अभी जाता हूं ।

अक्षयकुमार और हनुमान का मुकाबला

अक्षयकुमार–(ललकार कर) खबरदार ! अब जाने न पायेगा ।

हनुमान–(गर्ज कर) मुझे भी तुम्हारा ही इन्तजार था, अब जरा दो हाथ दिखाने का मजा भी आयेगा ।

अक्षयकुमार–या तो सीधी तरह मेरे साथ चला चल अन्यथा यह समझ ले कि मेरा नाम अक्षयकुमार है ।

हनुमान–यदि तू मुझे गिरफ़्तार न करे तो तेरे जीवन पर धिक्कार है ।

अक्षयकुमार–(तलवार खैंचकर) चलता है या बातें ही बनायेगा ।

हनुमान–(उसीकी तलवार से उसका काम तमाम करके) यदि तेरे जैसे छोकरे मुझको गिरफ्तार कर लेंगे तो मुझको हनुमान कौन कहेगा ?

अक्षयकुमार का मारा जाना और उसके साथियों का रावण के पास जाकर दोहाई मचाना, बेटे की मृत्यु सुनकर रावण का उत्तेजित होना और मेघनाद को बुलाकर हनुमान को पकड़ने के लिये भेजना।

मेघनाथ का गाना

(बतर्ज—जाओ जी जाओ किस नादान को बहकाने आये)

क्यों बे बदकार तूने यह कैसा झगड़ा फैलाया,
तेरा क्या यहां अजारा, क्यों आकर बाग उजाड़ा।
पहरेदारों को मारा, अक्षय का शीश उतारा,
मुझको बतला तो दे तू फिरता है किसका बहकाया।
क्यों बे०

क्या सबब है बता तेरा यहां आने का।
ये समझ ले तू अब जिन्दा नहीं जाने का॥
अब चखाऊँगा मजा बाग के फल खाने का।
जानता हूं कि तू नरमी से नहीं मानेगा॥
तुझे तेरे घर जाकर लाई है मौत बुलाकर।
आफत में फँस गया आकर, देखे क्या मुँह फैलाकर।
बतला तो किसने तुझको धोखे में देकर मरवाया।
क्यों बे० ॥

हनुमान का गाना बतर्ज वही

आगे को आ जा, ताकि तेरा भी करूँ सफाया।
वहीं खड़ा हाथ नचाता, आगे को क्यों नहीं आता।

पीछे क्यों हटता जाता, क्यों खाली गाल बजाता।
होजा हुश्यार बच्चू, अब के तेरा नम्बर आया॥
आगे को०
आजा आगे जरा, कब से बुलाऊँ तुझको।
भाई के पास ही ले जाके सुलाऊँ तुझको॥
हाथ देखूँ मैं तेरे और दिखाऊँ तुझको।
तू चखाता है मजा या मैं चखाऊँ तुझको॥
अपना सारा जोर लगाले, सारे हथियार चलाले।
जिसको जी चाहे बुला ले, अपना सारा भ्रम मिटाले।
जिन्दा न छोडूँगा, जब मैंने अपना वार चलाया।
आगे को०

मेघनाद–क्या तू यहाँ से जीवित जाने की भी आशा रखता है ?

हनुमान–यदि जाना चाहूं तो मुझे रोक कौन सकता है ?

मेघनाद–जरा कदम तो उठा, या मुँह से ही बकता है।

हनुमान–जरा आगे हो, छिनाल औरत की तरह वहीं खड़ा क्यों मटकता है और मेरे मुँह की ओर क्या तकता है।

(दोनों का देर तक दाव पेच खेलते रहना और एक दूसरे को धकेलते रहना, अन्त में मेघनाद का थक जाना और हनुमान की ओर एक कमन्द चलाना और हनुमान का उस मे फंस जाना।]

हनुमान—अरे बेईमान आखिर यही धोखा करना था ?

मेघनाद—और तेरे साथ हाथा पाई करके क्या मैंने मरना था ?

हनुमान—अच्छा चलिये अब तो रावण से ही बातें करेंगे,
और यदि अवसर मिला तो उससे भी दो हाथ करेंगे ।

रावण और हनुमान

रावण—(अपने मन्त्री से) कुछ मालूम हुआ कि अशोक वाटिका को उजाड़ने और अक्षयकुमार को मारने वाला कौन बेईमान है ?

प्रहस्त—जी हां मालूम हो गया, वह पवन का बेटा हनुमान है

रावण—(आश्चर्य से) हैं ! हैं !! क्या कहा । पवन का बेटा हनुमान !

प्रहस्त—हां कृपा निधान, पवन का बेटा हनुमान ।

रावण—क्या तुमने धोखा तो नहीं खाया ।

प्रहस्त—नहीं महाराज, वह देखिये मेघनाद उसे पकड़ ही जो लाया ।

मेघनाद—(हनुमान को सन्मुख करके) अक्षयकुमार को वध करने वाला उपस्थित है, जैसी आज्ञा हो इसको दण्ड दिया जाये ।

रावण—दण्ड देने से पहले अच्छा है कि इसके अपराध का कारण दरयाफ्त कर लिया जाये ।

प्रहस्त—(हनुमान से) जरा बताइये कि मन में क्या

समाई जा लंका में आकर आफत मचाई, कदापि मृत्यु नजर नहीं आई ?

हनुमान-(चुप)।

प्रहस्त-चुप रहने से प्राण नहीं बचेंगे, जरा मुँह खोल, कुछ जबान से बोल।

हनुमान—क्योंकि बन्दा इस वक्त अमीरे सुनतानी* है इसलिए किसी ऐरे गैरे के साथ बात करने में मेरी बहुत हानि है। जब कोई पूछने वाला पूछेगा, तो जवाब देंगे और पाई पाई का हिसाब देंगे—

पड़ा हो शेर पिंजरे में मगर वह बू नहीं जाती।
दिलावर की कजा के सामने भी खू नहीं जाता॥

रावण—रस्सी जल गई मगर बल नहीं जला।

हनुमान—जले बल किस तरह मेरा मुझे किस बात का गम है,
वही तु है वही मैं हूं वही दम है वही खम है।

रावण—अरे निर्लज्ज! यह नीच कार्य स्वीकार करने से तो अच्छा था कि डूब कर मर जाना, जिससे पवन और प्रह्लाद विद्याधर के नाम पर तो तेरे जैसे कुपुत्र के कारण यह कलंक का टीका न आता।

हनुमान—अभी तक भी है तेरा वक्त पश्चाताप करने का।
किया है काम ही तूने विनाशक डूब मरने का॥

---

*राजबन्दा।

रावण—अरे निबुद्धि ! तुझे इस दशा में देखकर मेरी गर्दन मारे लज्जा के झुकी जाती है, परन्तु शोक कि तुझको शर्म न आई ?

हनुमान—अभी तक तो झुकी है यह तुम्हारे ही झुकाये से।
कोई दिन में जमीं से भी न उठेगी उठाये से॥

रावण—हनुमान ! आज तुम निराले ढंग की बातें कर रहे हो, क्या प्राचीन सम्बन्धों को एक दम ही भुला दिया।

हनुमान—कदापि नहीं, बल्कि उन सम्बन्धों ने मुझको यहां तक आने का साहस दिया, हनुमान आपका वैसा ही वफादार है और योजनानुसार है हर प्रकार से सहायता करने को तैयार है।

रावण—इसमें क्या सन्देह, यदि तेरे जैसे पांच चार और वफादार हों तो मेरा बेड़ा पार है। यह अच्छी वफादारी है, समस्त वाटिका को तोड़ा, सिपाही ने रोका तो उसका सिर फोड़ा, बागवानों ने टोका तो उनको पकड़ कर मरोड़ा, अक्षयकुमार गया तो उसको जीवित न छोड़ा। वाह रे मेरे वफादार ! मैं तुझ पर बलिहार।

हनुमान—मैं गया था कौनसा उसको बुलाने के लिए।
आप ही आये थे वह झगड़ा फैलाने के लिए॥
काम किस आते हैं फल आखिर थे खाने के लिए।

था जुर्म जो बांध लेता घर ले जाने के लिए।
नाहक़ इतनी बात पर वह पीछे मेरे पड़ गये।
मारने आने थे मुझको आप लेकिन मर गये॥

रावण—प्रश्न तो यह है कि तुझको कहा किसने था वहां जाने के लिये ?

हनुमान—कहा था रामचन्द्र जी और सुग्रीव ने और गया था सीता जी की खबर लाने के लिए ?

रावण—(चौंक कर) हैं! हैं!! सीता जी की खबर!

हनुमान—हां हां, सीता जी की खबर!

रावण—परन्तु सुग्रीव का रामचन्द्र से क्या सम्बन्ध ?

हनुमान—जब वह सीता जी को खोजते हुये ऋष्यमूक पर्वत पर आये, तो वहां दोनों ने परस्पर मित्रता की प्रतिज्ञा करके आपस में हाथ मिलाये। जिस बाली ने आपको बीसियों बार क़ैद किया, उसको रामचन्द्र जी के एक ही बाण ने दुनियां से नापैद किया। अब उनके बल का अनुमान आप लगा लें और जिस प्रकार हो सके इस आने वाली बर्बादी को अपने सिर से टालें। इसका सबसे सरल मार्ग यही है कि आप सीता जी को लेकर रामचन्द्र जी के चरणों में जा पड़ें और उनसे क्षमा की प्रार्थना करें। वह बड़े उदार हैं, मुझे पूरी आशा है कि वह तुम्हारी प्रार्थना अवश्य मंजूर करेंगे और शत्रुता

के ध्यान को मन से दूर करेंगे। अन्यथा तुम्हारा ऐंठ क्षण में निकल जायेगी और यह हरी भरी लंका आन की आन में मिट्टी में मिल जायेगी, क्योंकि वानर द्वीप का एक एक बच्चा मरने मारने को तैयार है और उन्हें केवल मेरे पहुँचने का इन्तजार है।

रावण—(उत्तेजित होकर) अरे मूढ़! जरा जबान को सम्भाल और सोच समझकर बात मुँह से निकाल। जब तू यहां पर कैद है और मेरे हाथ में तेरा सियाह और सफेद है, तो क्या तुझे वापिस जाने की भी उम्मेद है। सीता की आशा तो दूर किनार, अब तो वे तेरी तरफ से भी हाथ धो चुके और समझ ले कि तुझे आज रो चुके, क्योंकि तुम निस्सन्देह काल के महमान हो चुके और इस खैरख्वाही में अपनी जान खो चुके। जिनकी महिमा के तू भाटों की भांति गीत गा रहा है और बार बार डेढ़ फुट चौड़ा मुँह फैला रहा है उनको मैं अच्छी तरह जानता हूं। प्रथम तो वनवासी रामचन्द्र और लक्ष्मण दूसरा साथ कौन मिला सुग्रीव, बुद्धि का दुश्मन। अपनी स्त्री के लिये तो आज तक रोता फिरा, जङ्गलों

में हैरान होता फिरा। ऐसा वीर था, तो उस समय क्यों न तलवार सम्भाली और बाली से अपनी स्त्री क्यों न छुड़ाली। कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा। सौ पचास आदमी इधर उधर से इकट्ठे किए और रावण से मुकाबला करने के मनसूबे बांध लिए। अरे मतिमन्द! उन पर तो मैंने लंका का एक कुत्ता भी छोड़ दिया तो भागने को जगह न पायेगी।

हनुमान—सच है जब किसी मनुष्य की बुरी घड़ी आती है तो उसकी समझ भी आप से आप उल्टी हो जाती है, 'विनाश काले विपरीत बुद्धि'। यद्यपि विषयी पुरुष और उपदेश का विशेष वैर है, उसको इस बात की पहचान नहीं रहती, कि यह अपना है या गैर है, तथापि मैं हैरान था कि सारी लंका में कोई आदमी भी ऐसा नहीं जो तुझे इस नाशकारी मार्ग से हटाये और किसी प्रकार इस झगड़े को मिटाये, किन्तु अब विदित हुआ कि यहां तो बसते ही कुत्ते हैं, कौन समझाये और किसे समझाये, सोये को सोया हुआ कैसे जगा सकता है। मगर याद रख आखिर रोयेगा, पछतायेगा, किन्तु यह समय हाथ न आयेगा। मैं नहीं चाहता कि तू किसी मनुष्य से डर, किन्तु परमात्मा का तो भय कर,

और इस प्रकार निन्दित हो कर न मर। दण्ड देने के लिए परमात्मा स्वयं नहीं आते हैं बल्कि जब किसी तेरे जैसे पापी का नाश करना होता है, तो कोई न कोई कारण ऐसा बनाते हैं। अतः जिस समय रुद्ररूप परमात्मा की आज्ञा पाकर रामचन्द्र जी वानरी सेना को लेकर यहां आयेंगे, (समस्त सभासदों की ओर इशारा करके) तो तेरे यह कुत्ते भौंकते ही रह जायेंगे, बल्कि ढूंढ़े भी न पायेंगे और तेरी इस अहँकार भरी खोपड़ी को कौवे ही नोच-नोच कर खायेंगे।

रावण का गाना (बह्रे तवील)

अरे बेहूदे बक बक लगाई है क्या,
तू शरारत से क्यों बाज आता नहीं।
तेरी ज्यादा ज़बां ही निकलती गई,
तू किसी को भी खातिर में लाता नहीं।
मैं तो नरमी ही नरमी पकड़ता गया,
तू ज्यादा ही ज्यादा अकड़ता गया।
अरे पाजी तू सर पर चढ़ता गया,
मुझे सम्मान से भी बुलाता नहीं।
अरे बेहूदे०
बोलने का तुझे कुछ तरीका नहीं,
बात करने का बिल्कुल सलीका नहीं।

तूने कोई इल्म भी तो सीखा नहीं,
आदमी तू किसी को बताता नहीं।
अरे बेहूदे०
जो तुझे जान देने का ही चाव है,
आ बताऊँ कि क्या मौत का भाव है॥
अरे मूँछों पै क्या दे रहा ताव है,
आज जीता यहां से तू जाता नहीं।
अरे बेहूदे०
मैं न जाने कि क्यों दर गुजर कर गया,
तूने समझा कि मुझसे ही डर गया।
इसलिये ही तेरा हौसला बढ़ गया,
तेरी नजरों में कोई समाता नहीं॥
अरे बेहूदे०

हनुमान का गाना (बहरे तवील)

आप अपनी कजा का फिकर कीजिये,
मौत मेरी का मुझको फिकर ही नहीं।
मुझे मारे यह किसकी है ताकत भला,
फिर जबां पर ये लाना जिकर ही नहीं।
यह तो निश्चय हुआ कि नसीहत का अब,
होगा तुझ पर जरा भी असर ही नहीं
तेरे जैसा कोई बेशरम बेहया,

मैंने दुनियां में देखा बशर* ही नहीं।
आप अपनी कज़ा०
काल आने से पहले हर इन्सान की,
ज्ञान इन्द्रिय रहती स्थिर ही नहीं;
नहीं कानों से देता सुनाई उसे,
सूझता कुछ भला और बुरा ही नहीं।
आप अपनी कज़ा०
ऐन हालत यही आपकी हो रही,
फर्क इसमें जरा रत्ती भर ही नहीं।
आंख अन्धी हुई, कान बहरे हुए,
तेरे मरने में कोई कसर ही नहीं।
आप अपनी कज़ा०
छोड़ हठ को, मैं तेरे भले की कहूं,
तुझे वाजिब बढ़ाना शरर+ ही नहीं।
कर चुका फ़र्ज़ 'यशवन्तसिंह' तो अदा,
फिर न कहना कि मुझको खबर ही नहीं।
आप अपनी कज़ा०

नाटक

हनुमान–तेरा यह फ़िजूल ख्याल है, मेरी ओर उङ्गली उठाने की किसकी मजाल है? शायद तू इसलिये फूल रहा है कि

*मनुष्य +उपद्रव

मेघनाद मुझको पकड़कर लाया और जाते ही जोरों से जकड़ लाया। मगर यह तेरी सरासर हिमाकृत है और मेघनाद बेचारे की कहां ताकत है। यदि चाहता तो इन जंजीरों को एक झटके में तोड़ देता और तेरे इस वीर को वहीं पकड़ कर झिंझोड़ देता। किन्तु मैं स्वयं चाहता था कि किसी प्रकार तुझ तक पहुँच जाऊँ और तुझको समझा बुझा कर इस नाशकारक पथ से हटाऊँ परन्तु शोक है कि मेरी यह सब मेहनत व्यर्थ ही गई और बात वहीं की वहीं रही। सत्य है कि जब मनुष्य की मृत्यु निकट आती है, तो उसकी प्रत्येक ज्ञानेन्द्रिय आप से आप शिथिल हो जाती है। न आंखों से दिखाई देता है, न कानों से सुन सकता है और जो कुछ मन में आता है जिह्वा से बकता है। निस्सन्देह तेरी भी यही दशा होने वाली ही नहीं बल्कि हो रही है और मौत सिरहाने खड़ी तेरी जान को रो रही है। केवल प्राचीन सम्बन्धों के कारण मैं आपसे हमदर्दी* कर रहा हूं और इतनी देर से सिर दर्दी कर रहा हूं अन्यथा हमें क्या भाड़ में पड़े तुम्हारी लंका और चूल्हे में पड़ो तुम।

रावण—नहीं शरारत से बाज आता, जबान इतनी चला रहा है,
मेरी इज्जत व आबरू को तू खाक में यूं मिला रहा है।

*सहानुभूति

हनुमान—

इज़्ज़त हुरमत तो आप खोई क़सूर मेरा बता रहा है।

अजब तमाशा है यह भी यारो जमाना कैसा यह आ रहा है।।

रावण—

अरे नालायक़ बता तो मुझको तू खौफ किसका दिखा रहा है।

मैं वह बला हूं कि जिसके भय से काल खुद खौफ खा रहा है।।

हनुमान—

लोग खुद ही यह देख लेंगे तू इतना क्यों तलमला रहा है।

कल जो खाता था खौफ जिसका वह आज उसको भी खा रहा है।।

रावण—

हुआ मैं जितना नरम तू उतना जमीन सिर पर उठा रहा है।

अरे वेहूदे तू उल्टा मुझपर तसल्लुत* अपना जमा रहा है।।

हनुमान—

तेरे जैसा पतित जो अपनी उम्र विषयों में गँवा रहा है।

यह है ताज्जुब कि वह भी मुझको वेहूदा कहकर बुला रहा है।।

रावण—

न मैंने जब तक उठाया खंजर तभी तलक चहचहा रहा है।

तू अपने हाथों से अपनी खातिर अदम का रस्ता बना रहा है।।

हनुमान—

चन्द दिन में यह होगी चर्चा वह दिन भी नजदीक आ रहा है।

कहेगी दुनियां यह देखो लोगों जनाजा+ रावण का जा रहा है।।

---

*अधिकार +अर्थी

रावण–(तलवार उठाकर) अरे नावकार शरीर! रावण के सामने ऐसी वेहूदा तकरीर! मैंने हरचन्द खूने जिगर पिया, बहुतेरा तेरे बुजुर्गों का लिहाज किया, मगर अब मेरी तलवार ही तुझे खामोश करायेगी और तुझको हमेशा के लिए सुख की नींद सुलायेगी।

विभीषण–(रावण की तलवार पकड़ कर) भाई साहब! जरा तहम्मुल* कीजिए, यह काम आपकी शान और राजनीति के सरासर खिलाफ है, भला दूत का वध करना कहाँ का इन्साफ है? ऐसा करने से सदैव के लिए समस्त राज्यों से आपका सम्बन्ध टूट जायेगा और आगामी के लिए कोई दूत आपकी सभा में न आयेगा।

रावण–(झुँझला कर) हट, हट! मेरा हाथ छोड़। यह तुम्हारा ख्याल झूठ है! कौन कहता है कि यह दूत है?

विभीषण—जब यह अपने स्वामी का सन्देश लेकर आया है, तो इसके दूत होने में क्या शक है।

रावण–किन्तु इसको ऐसी वेहूदा बकवास करने का क्या हक है?

विभीषण–जो कुछ इसने कहा वह इसके मालिक की जबानी है।

रावण–मुझे हैरानी है कि तुमने यह विना फीस की

---

*धैर्य।

वकालत क्यों ठानी है ?

विभीषण—यह राजनीति का असूल है।

रावण—यह बहाना फ़िज़ूल है, बल्कि इस हिमाकत की कोई खास वजह माकूल है।

विभीषण—यह आपकी भूल है, मेरी प्रार्थना करने का केवल यह अभिप्राय है कि दूत का वध करना राजनीति और धर्मशास्त्र के सर्वथा प्रतिकूल है।

(रावण और विभीषण का देर तक उलझे रहना और समस्त सभासदों और हनुमान के रक्षक सिपाहियों का ध्यान उस ओर आकर्षित हो जाना और सुअवसर जानकर हनुमान का ब्रह्म फांस और जंजीरों को धीरे धीरे खोल देना और छलांग मार कर सबसे स्वतन्त्र हो जाना)

हनुमान—(रावण के बराबर खड़े होकर) यदि तू मुझको वध न करे तो तेरे जीवन पर भी धूल है।

रावण—(ललकार कर) पकड़लो ! पकड़लो ! सावधान ! जाने न पाये।

हनुमान—किस की हिम्मत है, तो जरा सामने आये।

कई राक्षस—(लपक कर) अरे भाग कर कहां जायेगा।

नोट:—लंका दहन के विषय में भिन्न भिन्न रचित्ताओं ने विभिन्न प्रकार की कल्पनायें की हैं यथा—

(१) हनुमान की पूंछ पर बहुत सी रूई और तेल डालकर आग लगाकर छोड़ दिया, जिससे उसने लंका में आग लगा दी।

हनुमान—(एक सिपाही की तलवार छीनकर) जो मेरे सामने आयेगा वह कदापि जिन्दा न जाने पायेगा। और व्यर्थ ही अपने प्राण गँवायेगा।

(हनुमान का समस्त राक्षसों को काटते छांटते और तलवार घुमाते हुए साफ निकल जाना और रावण का मुँह देखते रह जाना)

जामवन्त तथा अंगद की बेकरारी और हनुमान की इन्तजारी

अङ्गद—जामवन्त जी! नियत अवधि तो समाप्त होने वाली है किन्तु हनुमान जी अब तक वापिस नहीं आए।

जामवन्त—हां कुँवर जी, दिन तो अधिक हो गए, परमेश्वर उन्हें सकुशल लाये।

(२) हनुमान की एक बनावटी पूंछ बना कर आग लगादी।

(३) बहुत सी रूई इकट्ठी की गई कि इसमें आग लगाकर हनुमान को बीच में डाल दिया जाये और जिस प्रकार उसने मेरा हृदय दग्ध किया है उसी प्रकार आप धीरे धीरे जलकर मरे। परन्तु हनुमान ने राक्षसों को ही पकड़ पकड़ कर उस आग में डालना आरम्भ कर दिया जो उस प्रज्वलित रूई के ढेर से निकल भागे, उनके जलते हुए कपड़ों से अन्य स्थानों में भी आग लग गई।

(४) हनुमान को रात्रि के समय लंका में भिन्न भिन्न बाजारों और गली कूचों में उपेक्षित तथा लज्जित करने के अभिप्राय से फिराया जा रहा था किन्तु हनुमान उनके फन्दे से निकल गया और एक मशालची उसको पकड़ने को दौड़ा, तो हनुमान ने उसकी मशाल

अङ्गद–आखिर हम उनका कब तक इन्तजार करेंगे ?

जामवन्त–तो जाने को कहां ठिकाना है, यदि वह लौट कर न आये तो हम भी यहीं मरेंगे।

छीन कर उसको मारना आरम्भ किया जिससे एक मकान या दूकान में अग्नि की चिनगारियां गिर गईं और वह चलने लगी और आग भड़कते भड़कते सारी लंका में फैल गई, इत्यादि इत्यादि।

परन्तु मुझको इस बात को स्वीकार करने में कि लंका इस प्रकार जलाई गई संकोच है। सबसे बड़ी शंका जो इसके सम्बन्ध में उत्पन्न होती है वह यह कि हनुमान जी जैसा विद्वान तथा धार्मिक पुरुष एक ऐसे पापयुक्त कार्य को करे कि जिससे लाखों निर्दोष और पाप-रहित मनुष्य जल कर राख का ढेर हो जायें। दोष था तो रावण का न कि लंका निवासियों का जिन में से प्राय बहुतेरों को रावण की इस करतूत का कदाचित ज्ञान भी नहीं था। इस पर आश्चर्य यह है कि सम्पूर्ण लंका जलकर राख हो जाये और विभीषण के मकान को आंच भी न आए। अथवा जब समस्त लंका में प्रलयकाल उपस्थित हो, कोई घर जलने से न बचे, स्त्री और बालकों के आर्त-नाद से पृथ्वी और आकाश गूंज उठे, किन्तु प्रहस्त मन्त्री रावण से यह कहे कि मैं तो उस समय अपने घर में विश्राम कर रहा था, मुझे यह बात बिल्कुल ज्ञात नहीं, कैसी विचित्र बात है।

यदि उपरोक्त कल्पनाओं को भी ध्यान-पूर्वक देखा जावे तो कुछ प्रमाण जनक नहीं, स्वतः उनसे कई प्रकार की शंकायें उत्पन्न होती हैं। अब हम उनमें से प्रत्येक का विचार स्वतन्त्रता से

अंगद—उनके आने की आशा दिन बदिन निराशा में परिणित होती जाती है।

जामवन्त–निराशा होने का तो कोई कारण नहीं अभी तो...

अंगद–(चौंक कर) यह अलारम का शब्द किधर से आया?

जामवन्त–(लक्ष पूर्वक आकाश की ओर देखकर) लो मुबारिक हो, हनुमान जी आ गये।

करते हैं:—

(१) वर्तमान काल में किसी को भी यह स्वीकार करने में इंकार नहीं कि हनुमान जी एक विद्वान धर्मात्मा और वीर पुरुष थे न कि बन्दर। अतः न उनकी कोई पूंछ थी न उस में आग लगाई गई।

(२) हनुमान को एक बनावटी पूंछ लगा कर और उस पर बहुत से वस्त्र लपेटकर आग लगा दी जावे और फिर उनको स्वतन्त्र भी कर दिया जावे एक भ्रम पूर्ण बात है क्योंकि एक शत्रु के हाथ में हानि पहुंचाने वाली वस्तु देकर बुद्धिमान व्यक्ति इतनी स्वतन्त्रता छोड़ इतना अवकाश भी नहीं दे सकता कि वह अपनी इच्छा से जहां चाहे चल फिर सके।

(३) किसी मनुष्य को जलाने को तेल की एक दो बोतल काफी हो सकती हैं जैसा कि आजकल भी ऐसी घटनायें सुनने में आई हैं कि अमुक स्त्री ने मिट्टी के तेल की बोतल अपने वस्त्रों पर डाल कर आग लगा ली और आत्महत्या करली, किसी पर अकस्मात जलता लैम्प गिर गया और सब शरीर के वस्त्रों में आग लग जाने से बहुत सी मृत्युयें हुई हैं फिर

अंगद–(उसी ओर देखकर) आपने कैसे जाना कि यह हनुमान हैं ?

जामवन्त–निश्चय ही यह हमारा विमान है ।

अंगद–आपको इसकी क्या पहचान है ?

जामवन्त–इसके आगे जो झंडा लगा हुआ है, यह खास हमारा ही निशान है ।

समझ में नहीं आता कि अकेले हनुमान को जलाने के हेतु सहस्रों मन रूई एवं तेल का क्या प्रयोजन था । इसके सिवाय यह काम कैसा घृणित तथा असभ्यता-पूर्ण है । माना कि रावण असीम विषयी था किन्तु इससे यह प्रकट नहीं होता कि वह इस प्रकार पाषाण हृदय और दया-रहित भी था । एक दोष को सामने रखकर उसके गुणों पर पानी फेर देना सर्वथा अनुचित है । प्रथम तो यह दण्ड कैसा असभ्यता पूर्ण है फिर यह बर्ताव किया भी किसके साथ जावे एक दूत के साथ, जिससे समस्त सहयोगी राष्ट्रों में उसकी उपेक्षा हो, कदापि मानने योग्य घटना नहीं ।

(४) किसी पुरुष को अपमानित करने के लिए दिन का समय उपयुक्त हो सकता है जिस समय सारा संसार उसको और वह सारे संसार को देख सके, न कि रात्रि का अन्धकारमय समय जब कि समस्त संसारी जीव अपने अपने घरों में विश्राम कर रहे हों। रात्रि का अंधकार किसी का दोष छिपाने में सहायक हुआ करता है न कि उसको विख्यात करने में, इसलिए प्रायः चोरी छिपे के काम रात्रि के समय ही किए जाते हैं । फिर समझ में नहीं आता कि रावण ने हनुमान को उपेक्षित करने में क्यों रात का समय अच्छा समझा । यद्यपि घटना से स्पष्ट है कि हनुमान

अंगद-निस्सन्देह अब तो मुझे भी इतमीनान है (सीटी बजाकर तथा रूमाल को जोर से हिलाकर) हो, हो, हो, हिला, हिला, हि······

हनुमान-(विमान में से ही रूमाल हिलाकर) बोलो सीता

प्रातः पकड़ा गया और उसी समय रावण के सम्मुख उपस्थित किया गया फिर न जाने दिन भर क्या ताने तनते रहे तथापि यह भी मान भी लिया जाय कि हनुमान को सायकाल ही पकड़ा गया अथवा उन्हें आपस में झगड़ते-झगड़ते सांझ हो गई तो रावण कोई खानाबदोश तो था नहीं कि उसके पास हनुमान को रात भर रखने के लिये कोई बन्दीगृह आदि न था। तात्पर्य रात का समय तो किसी पुरुष को सजा के लिये किसी प्रकार भी उचित नहीं हो सकता फिर हनुमान जैसे मन चले मनुष्य के लिये जो रावण के साथ भरी सभा में इस प्रकार निर्भयता से बातें करता रहा हो। इस पर आश्चर्य यह है कि हनुमान अपने संरक्षकों से छूट कर भागता है तो उसको पकड़ने के लिये पीछे कौन दौड़ता है? एक मशालची! कैसी उपहास पूर्ण बात है।

वास्तव में यह अलंकार है, केवल अग्नि से जलने का नाम जलना, अथवा तलवार बर्छी से घायल होने का नाम घायल होना नहीं बल्कि जलना जलाना, घायल होना तथा घायल करना कई प्रकार का है किसी की मान मर्यादा को देखकर द्वेषाग्नि से जलना सौतिया डाह से जलना किसी की ताने भरी बात सुनकर जलना, जिव्हा की नोक से घायल करना, नयनों के बाण से घायल होना इत्यादि।

अस्तु सचमुच बात यह है कि हनुमान की निर्भयता-पूर्ण बातें सुन रावण जल भुन कर कोयला हो और जब वह भरी सभा में इस

पति श्री रामचन्द्र जी की जय ! लक्ष्मण यती की जय !

जामवन्त—(उछलकर) शुक्र है कि हनुमान सीता जी की सुध ले आये।

अंगद—आपने पहले ही यह अनुमान कैसे लगाया ?

जामवन्त—यदि यह असफलता के साथ आता तो इस प्रकार आनन्द न दिखाता, बल्कि चुपके से आकर बैठ जाता।

हनुमान—(विमान से उतर कर उछलते कूदते हुए) जय रघुवीर की, जय सुग्रीव की।

जामवन्त और अंगद—(हनुमान को गले लगाकर) जय रघुवीर की, जय महावीर की, सुनाओ कुछ समाचार सुनाओ।

हनुमान—आपके आशीर्वाद से सीता जी की खबर ले आया हूं, किन्तु भूख बहुत लग रही है, कुछ हो तो खिलाओ।

जामवन्त—(कुछ फल आदि देकर) लीजिये, खूब पेट भर कर खाओ।

प्रकार उसको अपमानित कर सब की आंखों में धूल झोंक कर साफ निकल गये तो वह बिल्कुल ही राख हो गया—

लकड़ी जल कोयला हुई कोयला जल भई राख।
रावण तू ऐसा जला कोयला रहा न राख।

बस यही लंका के जलाने की कथा थी अन्यथा वास्तव में लंका जलाई नहीं गई।

अङ्गद—परन्तु साथ कुछ बातें भी सुनाते जाओ।

हनुमान-(हँसकर) वाह वाह, खूब कही, भला मुख से खाऊँ या आपको बातें सुनाऊँ।

जामवन्त—नहीं नहीं, तुम पहले अच्छी तरह पेट भर लो बल्कि कुछ विश्राम भी करलो।

हनुमान-(फल खाकर) अब तो किष्किन्धा में ही जाकर विश्राम करेंगे। मेरे साथ विमान में बैठ जाइये, रास्ते में आपको खूब बातें सुनाऊँगा।

अंगद—हां अब तो चलना ही चाहिए, क्योंकि अवधि भी समाप्ति के निकट है।

हनुमान—तो अब हमारा यहाँ क्या काम है?

जामवन्त—(अंगद सहित विमान में बैठ कर) भाई तुम्हारी कृपा से किष्किन्धा में मुख दिखाने योग्य रह गये अन्यथा हमारा तो इन्हीं जंगलों में ठिकाना था और किस को किष्किन्धा में जाना था—

मुबारिक हो मुबारिक आपका फिर लोट कर आना।
मुबारिक आपको होवे खबर सीता की ले आना॥
मुबारिक आपकी हिम्मत, मुबारिक काम मर्दाना।
मुबारिक हम सबों का लौटकर किष्किन्ध में जाना॥
मुबारिक हो तुझे यह कौम की खिदमत बजा लाना।
तेरा "यशवन्तसिंह" कायम रहे आबाद "टोहाना"॥

किष्किन्धा में हनुमान का इन्तजार

रामचन्द्र जी का गाना [बहरे कव्वाली]

न आया आज तक कासिद× न आने की खबर आई ।
नहीं कुछ अनकरीब* आने की दे उम्मीद दिखलाई ।।
महीने के खतम होने में कल का रोज बाकी है ।
उसे जाते समय भी थी यही तारीख बतलाई ।।
बड़ी मुश्किल से गिन-गिन कर यह दिन मैंने गुजारे थे ।
न दिन को चैन आया था न शब को नींद ही आई ।।
न थी उम्मेद पहले और न अब उम्मेद है मुझको ।
असम्भव है कि हाथ आये हमारे अब जनक जाई ।।
न जाने किस जगह पर वह भटकता फिर रहा होगा ।
उसे भी ख्वाहमख्वाह मैंने यों ही तकलीफ दिलवाई ।।
इसी इमरोजो फरदा** में गुजारा इस कदर अरसा ।
मगर अब भी मेरे मन की कली खिलने नहीं पाई ।।
मेरे जैसा कोई दुखिया जहाँ में और भी होगा ।
हुआ रुसवा जमाने में बना दुनियाँ में सौदाई ।।
तुम्हारी मेहरबानी के हैं हम सुग्रीव जी ममनूँ ।
हमारे वास्ते जो आपने तकलीफ फरमाई ।।
मेरी दानिस्त में तो इन्तजार उनका है बे फायदा ।

×दूत । *शीघ्र । **आजकल । समय । कृतज्ञ । समझ ।

चलो क्या सोचते हो अब यहां लछमण भाई ॥
यह निश्चय ही समझ अब आगई तेरी कजा रावण।
न छोड़ूंगा तुझे जिन्दा अरे ओ दुष्ट अन्याई ॥

नाटक

यह मास भी समाप्त हुआ, किन्तु हनुमान अभी तक बे पता है, यह सब अपनी प्रारब्ध का दोष है, उस बेचारे की क्या खता है, बल्कि यह सब मेरी ही भूल है, जो उस बेचारे को घर से निकाला और बैठे बिठाये उसकी जान को आफत में डाला। ईश्वर न करे कहीं रावण पर उसका भेद प्रकाश हो गया, तो न केवल हमारी आशाओं का ही नाश हो गया, बल्कि उसका जीवन भी भय से खाली नहीं, क्योंकि उस बेचारे का तो वहाँ कोई भी वारिस वाली नहीं। सुग्रीव जो! जो कुछ आपने मेरे लिए कष्ट उठाये, उसका मशकूर हूं किन्तु अब यहां ठहरने से मजबूर हूं। इसलिए आप अपना काम कीजिए और हमें प्रसन्नता से आज्ञा दीजिये। क्योंकि जहां हर रोज की इन्तजारी से हमारी तबियत नासाज हो रही है, वहाँ हमारी उपस्थिति न केवल आपके आराम विश्राम बल्कि राज्य प्रबन्ध में भी खलल अन्दाज* हो रही है।

सुग्रीव—(हाथ जोड़कर) भगवन, आखिर उनको एक महीने तक वापिस आने के लिए कहा है, किन्तु इस अवधि

*बाधक

में भी कल का दिवस शेष रहा है। एक तो सफ़र इस क़दर दूर दराज है, दूसरे जो काम उनको सौंपा गया है, वह बड़ा नाज़ुक और क़ाबिले राज है। इन सब बातों को देखते हुए यदि दो चार दिन अधिक भी लग जायें। तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह बिल्कुल ही न आयें। तथापि कल का दिन और इन्तज़ारी करेंगे, यदि वह न आये तो परसों यहां से कूच की तैयारी करेंगे। फिर जो आपने मेरे सम्बन्ध में फ़रमाया यह आपकी जबरदस्ती है, मेरे पास जो कुछ है वह सब आपका ही दिया हुआ है, वरना इस नाचीज की क्या हस्ती है। आपके अहसान से इस जन्म में तो क्या जन्म जन्मान्तर में भी उऋण नहीं हो सकता, और मैं ऐसा कृतघ्न अथवा उपकार-घातक भी नहीं हो सकता। जब तक जान में जान है सुग्रीव का तन, मन, धन, सब आपके चरणों में क़ुर्बान है:—

राज्य जाये भाड़ में इसकी मुझे कुछ चाह नहीं।
साथ लाया था न इसको जायेगा हमराह नहीं॥
जब तलक रावण को मिलता दण्ड खातिरख्वाह नहीं।
हाथ आये जानकी तो जानकी परवाह नहीं॥
जब तलक उस दुष्ट का करदूँ न मैं खाना खराब।
तब तलक यह आपका सेवक रहेगा हम रकाब॥

रामचन्द्र—अच्छा कल का दिन और बाट देख लीजिए यदि वह कल भी न आये तो परसों को यहां से...

एक चोबदार—महाराज की जय हो। श्री हनुमान जी राजकुमार अङ्गद तथा जामवन्त जी सहित तशरीफ़ ले आये हैं।

सुग्रीव—लीजिए महाराज मुबारिक हो। (चोबदार से) तुम अभी जाओ और उनको यहां बुला लाओ।

चोबदार—बहुत अच्छा महाराज!

(हनुमान का अंगद व जामवन्त सहित आना और दोनों ओर से जयकारों के उत्तेजित शब्दों का गूंज जाना तथा एक दूसरे के गले मिलना, सारे कैम्प में आनन्द मंगल के बाजे बजना।)

हनुमान—(रामचन्द्र जी के चरणों में झुक कर) भगवन्! नमस्ते।

रामचन्द्र—(हनुमान को हृदय से लगाकर) महावीर! तुम धन्य हो, कहो कुशल से तो आये?

हनुमान—(हाथ जोड़कर) जब आपका आशीर्वाद मेरे साथ है तो कब सम्भव है कि मुझे कुछ कष्ट होने पाये।

सुग्रीव—सुनाओ, कुछ सीता जी की खबर लाये?

जामवन्त—महाराज यह कब सम्भव है कि हनुमान जाये और असफलता से आये।

हनुमान—मैं किस लायक था। पराक्रम और सहायता तो आप की थी, मैं तो केवल सहायक था।

जामवन्त—यह आपका हुस्ने लियाक़त है परन्तु सच तो यह है कि हम में ऐसे नाज़ुक काम करने की कहां ताक़त है।

रामचन्द्र जी—ख़ैर इस कसर नफ़्सी को जाने दो, अब जरा मतलब की बातें सुनाने दो।

हनुमान—भगवन ! मैं विविध स्थानों में खोज करता हुआ लंका पहुँचा। वहां हर जगह देखा भाला, अन्त में बड़ी कठिनता से मैंने उनका सुराग निकाला। सीता जी अशोक वाटिका में कैद हैं और सब प्रकार अपने जीवन से ना उम्मेद हैं। कुछ रावण के ज़ुलम से, कुछ आपके विरह के गम से, कुछ उस दुष्ट के अत्याचारों से, कुछ उन राक्षसनियों के कटु व्यवहारों से। जो कुछ उनकी दशा हो रही है वह मुझ पर तो ज़ाहिर है किन्तु उसका वर्णन करना मेरी सामर्थ के बाहर है। एक साधारण सी साड़ी से वह शरीर को ढांप रही थीं और मारे शीत के थर थर कांप रही थीं। सारे शरीर का सूख कर यह हाल हो गया कि मुझे एका एकी उनकी निस्बत अपना इतमीनान करना मुहाल* हो गया। अभी इस उधेड़बुन में ही था, कि इतने में वहां रावण आया और सीताजी को बहुत कुछ धमकाया। कुछ

*कठिन।

देर तो वह चुप रहीं, अन्त में तंग होकर उन्होंने जबान खोली और जो कुछ मन में आया सो बोलीं, जिसे सुन कर उस दुष्ट ने तलवार निकाली, परन्तु एक स्त्री ने बीच में पड़ कर सीता जी की जान बचाली। अस्तु उसका यह अन्तिम अरमान मन का मन में ही रह गया और जाता हुआ कह गया कि दो मास और सब्र करूँगा और जिस तरह होगा अपनी तबियत पर जब्र करूँगा। अगर फिर भी इसी प्रकार हुज्जत मिलायेगी तो मेरा क्या लेगी अपनी जान से जायेगी। उसके जाने के पश्चात जिस वृक्ष पर मैं बैठा था संयोग वश वह उसी के नीचे आईं और अपने सिर की साड़ी को बीच से फाड़ कर एक रस्सी बना कर वृक्ष की टहनी में लटकाई। मैं आश्चर्य में था कि यह क्या करने लगी हैं, किन्तु फिर समझ में आया कि यह तो आत्मघात करके मरने लगी हैं। आखिर जब रस्सी का फँदा उन्होंने अपने गले में डाला, तो मैंने झट वहीं से कूद कर उनको सम्भाला और फांसी को उनके गले से निकाला। पहले तो उन्होंने मुझको रावण समझकर बहुत कुछ बुरा भला कहा, परन्तु जब मैंने आपकी निशानी दिखाई तो उनका सन्देह जाता रहा। मैंने आत्महत्या का कारण दरयाफ्त किया तो उन्होंने उत्तर दिया कि यद्यपि यह महा पाप है तथापि मैंने अपने निर्दोष देवर पर जो झूठा दोष लगाया

था उसका यही पश्चाताप है। आखिर मैंने उन्हें समझाया और लक्ष्मण जी की ओर से भी सब प्रकार विश्वास दिलाया। तात्पर्य इसी प्रकार देर तक बातचीत होती रहीं, किन्तु वे इसके बीच में बेतहाशा रोती रहीं। चलते समय मैंने उनसे कुछ निशानी देने के लिए प्रार्थना की तो उन्होंने (चूड़ामणि सन्मुख करते हुए) यह चूड़ामणि बतौर निशानी दी।

रामचन्द्र जी-(चूडामणि देखकर) निस्सन्देह यह मेरी प्राण प्यारी की निशानी है, किन्तु यह तो बताओ कि तुम्हारी सिर्फ उनसे ही बात हुई या रावण से भी मुलाकात हुई।

हनुमान-हां मैं रावण से भी मुलाकात कर आया हूं और उसके बहादुरों से भी दो हाथ कर आया हूं। कइयों को पछाड़ा, कइयों को जान से मारा, तात्पर्य यह कि उनको भली प्रकार मजा चखा आया हूं और उसको भी सभा में नीचा दिखा आया हूं।

रामचन्द्र-बजाय इसके कि तुम उसको इस भांति नीचा दिखाते अच्छा था कि तुम उसे समझा बुझा कर सीधे मार्ग पर लाते।

हनुमान-महाराज! मैंने अपना सारा बल लगाया, किन्तु उस अभिमानी ने मेरी बातों को मखौल में ही उड़ाया

यहां तक कि मेरे मारने के लिए तलवार भी उठाई किन्तु उसके भाई विभीषण ने बीच में पड़कर मेरी जान बचाई। जब मैंने उसको अपने बध करने पर तैयार पाया, फिर जो कुछ मुझसे बन सका सो बनाया। अब इन बातों को जाने दीजिये और जितनी जल्दी हो सके सीता जी के छुड़ाने का यत्न कीजिये, क्योंकि उनकी जान को बड़ा संताप हो रहा है और जितनी देर हो रही है उतना ही काम खराब हो रहा है।

राम०—प्यारे हनुमान! आपने जो कष्ट मेरे लिये सहन किया है मैं आपका तहे दिल से मशकूर हूं, किन्तु अभी आपके इस अहसान से उऋण होने से मजबूर हूं, बल्कि इसका बदला तो मैं जीवन पर्यन्त न दे सकूँगा और किसी दशा में भी...

हनुमान-(बात काट कर) भगवन्! बस रहने दीजिये और मुझे अधिक लज्जित न कीजिये। जो कुछ आप मेरे विषय में फरमा रहे हैं यह आपका अनुग्रह और मेहरबानी है और मैंने जो कुछ किया है वह मेरा फर्ज इन्सानी है।

राम०-(सुग्रीव से) सुग्रीव जी! कहो अब क्या विचार है?

सुग्रीव-हमें अब किस बात का इन्तजार है, उधर रावण का

सिर है और उधर हमारी तलवार है।

राम०–परन्तु नल* से पूछना चाहिये कि पुल के लिये क्या क्या सामान दरकार है?

सुग्रीव–पुल के लिये न केवल सब मसाला प्रस्तुत है बल्कि उसका बहुत सा भाग तो बनकर भी तैयार है।

राम०–किन्तु शेष भाग भी शीघ्र तैयार कर लेना चाहिये क्योंकि पुल की तैयारी पर ही हमारे कूच का इनहिसार है।

---

*नल उस जमाने का प्रसिद्ध कलाकार (इन्जीनियर) था जिसने बिना किसी स्तम्भ के पत्थरों को आपस में मिलाकर इतना लम्बा पुल दिनों में तैयार कर दिया, जिसके खण्ड अब सेतबन्धु रामेश्वर के नाम से विद्यमान हैं, जो स्वयं अपने रचियता की इस अद्वितीय कला की प्रशंसा कर रहे हैं, जिनको देखकर इस जमाने में बड़े बड़े इन्जीनियरों के मस्तिक भी चकित हो रहे हैं। वे उसके अनुमान लगाने में भी असमर्थ हैं कि यह पुल कितने मनुष्यों ने कितने समय में, कितने व्यय से बनाया होगा और इसकी रचना के तत्व को तो यह कदाचित प्रलय तक भी न समझ सकेंगे। आह भारतवर्ष! तेरी किस किस कला को याद करके रोयें और तेरे किस-किस कौशल पर आँसू बहायें। अब तो हमारे पास केवल 'पिदरम सुलतान बूद' (मेरा बाप राजा था) की महारनी रह गई है अन्यथा वतमान काल में हम से बढ़कर असभ्य, अशिक्षित, मूर्ख और गंवार जमाने भर में कोई नहीं। शोक कि स्वर्ग के निवासियों को आज नरक से भी नादेवेंसी (स्थान नहीं) का शब्द आ रहा है। माता क्या वे दिन फिर कभी आयेंगे, एक दफा जब कि तेरे लाल बा-कमाल फिर तेरी गोद पवित्र करेंगे और भारत के तेतीस कोटि कीटाणुओं की गणना भी मनुष्यों में होगी।

चौबीसवां दृश्य

रावण की परेशानी

रावण—न जाने वह कौनसी मनहूस घड़ी थी, जबकि यह बलाये नागहानी मेरे गले पड़ी थी। जिसे मैं आरामे जान समझा वह मेरे लिये आफते जान हुई, जिसको अमृत समझा वह विष के समान हुई। धोखा हुआ, कपट हुआ, छल हुआ, किन्तु अब तो इस आफत से निकलना सख्त मुश्किल हुआ। सांप के मुँह में छछून्दर—खाये तो कोढ़ी, उगले तो कलंकी। अब उसे छोड़ूँ तो निदामत, रक्खूँ तो शामत। जब से उस मनहूस को चुराकर लाया, न नींद भर कर सोया, न पेट भर कर खाया। या तो उसके विरह में तड़पता रहा या उसको जली कटी बातें और कोरे करारे जवाब सुनता रहा और भीतर ही भीतर जलता भुनता रहा। रहे सहे को हनुमान जला गया और मेरी मान तथा मर्यादा को बिल्कुल खाक में मिला गया। जब उसके एक साधारण से दूत के साहस का यह हाल है तो उसकी अपनी शक्ति का अनुमान लगाना तो सख्त मुहाल है।

प्रहस्त—महाराज को आज किस बात का मलाल है, जो

दुश्मनों के मन पर इस क़दर मलाल* है।

रावण-मेरे वज़ीर बा तदबीर! मेरा मन जिस कारण से दुखित है, वह आपको पूर्णतया विदित है। जब से हनुमान सब की आंखों में धूल डाल गया और कई वीरों का वध करके अपने आपको साफ़ निकाल गया, तब से मेरे हृदय को बड़ा क्लेश हो रहा है और इस समय भी यह प्रश्न दरपेश हो रहा है कि जिसके दूत की इस भाँति दिलेरी है, तो इस प्रकार की सेना तो उसके यहां और भी बहुतेरी है। खेद और लज्जा की जगह है कि इस प्रकार सहस्रों मनुष्यों में से एक साधारण व्यक्ति इस भाँति निकल जाये और कोई जिह्वा तक न हिलाये।

प्रहस्त-महाराज आपने व्यर्थ अपने मन पर इस प्रकार मलाल किया और कैसा वज़नदार सवाल किया। यदि हनुमान चोरों की तरह आकर लंका में फिर गया तो उसने कौनसा कमाल किया? उसकी वीरता तो उस समय थी, जब सन्मुख होकर मुक़ाबला करता बहादुरों की भाँति लड़ता, हमें मारता या आप मरता, मुझे आश्चर्य है कि उसने कौनसी वीरता दिखाई, अन्त में भाग कर ही जान बचाई। आप

*दुख

इसको वीरता समझते हैं, परन्तु मेरे समीप तो उसका यह बुजदिलाना* फैल है। अजी महाराज! लंका के शूरवीरों से सामना करना कोई बच्चों का खेल है।

वज्रदन्त—मन्त्री जी का फरमाना बिल्कुल सही है और उन्होंने एक-एक बात बे मोल कही है। यह आपका केवल ख्याल है, भला उस बिचारे बनवासी की इस ओर मुख करने की क्या मजाल है। उसके लिये तो हमारा एक रेला ही काफी है और हनुमान जैसे दस बीसों के लिए तो बन्दा अकेला ही काफी है।

मेघनाद—पिता जी! जब तक मेघनाद संसार में मौजूद है आपका किसी प्रकार की चिन्ता करना बिल्कुल बेसूद※ है। मैं वही मेघनाद हूं जिसका हनुमान एक झटका भी न सहार सका और मेरे सामने बिल्कुल दम न मार सका। उसे तो मैं बिल्कुल मामूली इन्सान समझता हूं, अलबत्ता भागते के पीछे भागना अपना अपमान समझता हूं।

रावण—खैर! जो कुछ हो चुका उसका अब क्या जिकर करना है, अब तो आगे की रोक थाम का फिकर करना है। यों तो मुझे किसी बात का गम नहीं क्योंकि

*कायरता पूर्ण ※व्यर्थ।

मेरे शूरवीर आज किसी पहलू में भी किसी से कम नहीं, बल्कि बिना मुबालगा लंका के बहादुरों से मुकाबिला करने का तमाम जमीन पर किसी में दम नहीं। मानलो कि वह इस ओर रुख करें भी तो वह नहीं या...

समस्त सभासद—(एक ज़बान होकर) हम नहीं।

विभीषण-भ्राता जी! आपके समस्त सभासद आप से डरते हैं और इसलिये खुशामदाना बातें करते हैं। अग्नि तथा शत्रु को तुच्छ समझना अक्लमन्दी से बईद* है इसलिए मेरी आपसे बार बार यही ताकीद है कि जिस प्रकार हो सके इस बला को गले से टालें और सारे कुल को इस आने वाली बर्बादी से बचा लें इसका सबसे सुगम उपाय यही है कि सीता जी को रामचन्द्र के पास पहुँचा कर उनसे हाथ मिलालें और उनको शत्रु के बदले अपना मित्र बनालें। हनुमान को आप न केवल आंखों से ही मुशाहिजा फरमा चुके हैं, बल्कि उसकी शक्ति को भी आजमा चुके हैं। जिसके एक दूत की यह दशा है, तो उससे सामना करने में प्रत्यक्ष दुर्दशा है फिर न जाने इन परामर्श-दाताओं के मन में क्या समा है?

*दूर

मेघनाद—चचा साहब। बस बहुत हो चुकी, जरा चुप हो जाइये यदि आपको रामचन्द्र का अधिक ही भय है तो कहीं छुप जाइये। कुल पर चाहे कितनी ही तबाही मचे, मगर ऐसी जगह छुपना जहां आपकी जान बचे। शोक! आप जैसे निर्लज्ज और कायर न ने हमारे कुल में पैदा होते, न आज हम अपने भाग्य को रोते। बहन की नाक काटी जाये और भाई को शर्म न आये। जाओ, जाओ, जल्दी करो, वरना मौत देख जायेगी तो फिर छुपने के लिए जगह भी न पायेगी।

विभीषण—ना समझ और गुस्ताख लड़के! तू इस प्रकार जबान चला रहा है और पृथ्वी तथा आकाश के कुलाबे मिला रहा है। माना कि तू यौवन मद में मखमूर है, किन्तु बुद्धि और समझ अभी तुझ से कोसों दूर है। बालिश्त भर का लड़का और हाथ भर की जबान, मुँह से निकल गया वही प्रमाण। इस समय इतनी बहादुरी जता रहा है और अपने आपको अद्वितीय वीर बता रहा है, कल तू कहां मर गया, जब अकेला हनुमान सहस्रों की किरकिरी कर गया।

मेघनाद—जिस बात को मैं कहना न चाहता था, आखिर

आप कहलवा कर हो रहे। चचा साहब ! इसमें भी आपकी साजिश और धृष्टता थी, जो हनुमान इस प्रकार भाग गया न आप उसकी अनुचित हिमायत करते, न पिता जी उस पर नजरे इनायत करते। जब से हनुमान भाग गया, आपका तो मानो भाग्य जाग गया। मन की मुराद मिली और दिल की कली खिली। मेरा दावा है कि हमारे साथ आपकी सहानुभूति केवल एक लोक दिखावा है अन्यथा गुप्त रूप से तुम्हारी रामचन्द्र जी से मिली चलती है और तुम्हारे जैसे देश तथा कुल द्रोही पर किसी प्रकार का विश्वास करना सख़्त गलती है। शोक है कि जिसने तुम्हारी बहिन की दुर्गति की, तुम उसी का पक्ष समर्थन करो, यदि कुछ लाज है तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो।

विभीषण—(रावण से) भाई साहब ! देखते हो यह कल का छोकरा मुझे किस कदर सख्त सुस्त कह रहा है।

रावण—निःसन्देह जो कुछ यह कह रहा है बिल्कुल दुरुस्त कह रहा है।

विभीषण—शोक कि आप भी इसका अनुचित पक्ष लेकर जान बूझ कर मेरा अपमान करा रहे हैं और इसकी पीठ ठोंक ठोंक कर मुझे सारे दरबार में दुर्वचन सुनवा रहे हैं

रावण—(कड़क कर) अरे निर्लज्ज ! यदि मैं इसका पक्ष भी लेता हूं तो शत्रु का वफादार तो नहीं और तेरी भाँति मुल्की व कौमी गद्दार तो नहीं। निःसन्देह तेरी शत्रु के साथ गहरी साज बाज है, इसलिये हमारी प्रत्येक बात तेरे नजदीक काबिले ऐतराज है। हनुमान की वकालत करने के लिए तू आगे अड़ गया, जब मैंने उसको वध करना चाहा तो झट बीच में पड़ गया, अब मेघनाद ने उसके विरुद्ध युद्ध की सलाह दी तो तू उसके सिर चढ़ गया। ज़रा कोई उसके विरुद्ध बोलता है तो तू झट उसकी जबान टटोलता है। मैं हैरान हूं कि तु अकारण क्यों मेरे से इस कदर बरगश्ता है जो मेरी बर्बादी पर कमर बस्ता है।

विभीषण—भ्राता जी ! यह आपकी भूल है और मेरे सम्बन्ध में ऐसा ख्याल करना बिल्कुल फिजूल है। न मैं कौमी गद्दार हूँ, न रामचन्द्र का तरफदार हूं बल्कि आपका सच्चे दिल से जाँ निसार हूं, और आपके पसीने के बदले अपना रक्त बहाने को तैयार हूं, किन्तु इस आने वाली खराबी को देखकर जरूर अश्कबार हूं, जो आप सहेड़ रहे हैं और निष्प्रयोजन सोती राड़ को छेड़ रहे है, एक स्त्री वह भी पराई, उसके लिए इतनी खूंरेज लड़ाई !

रावण—परन्तु उनके दिल में यह क्या समाई, जो उन्होंने

अकारण सरूपनखा की नाक उड़ाई। अरे बेहया! अब भी शर्म न आई?

विभीषण-निसन्देह यही एक बात है जिसने आपकी तबियत इस प्रकार भड़काई, किन्तु वह ख्वाहमख्वाह उनके सिर आई और अपने किये की सजा पाई।

मेघनाद-शर्म! शर्म!! शर्म!!!

समस्त सभासद-गैरत! गैरत!! गैरत!!!

रावण—विभीषण! ज़रा कान खोल कर सुन, तेरी निस्बत चारों ओर से किस कदर नाराजगी का इजहार है, और हर तरफ से तेरे लिए लानत और गैरत की बौछाड़ है। मेरा प्रत्येक वीर मरने मारने को तैयार है, केवल एक तेरी ओर से इन्कार है। जिससे स्पष्ट प्रकट है कि तू उनका खुल्लमखुल्ला तरफदार है, कौमी गद्दार है, परले दर्जे का मक्कार है, लानत है, फटकार है और तेरी जिन्दगी पर धिक्कार है।

विभीषण—जैसे आप खुद फरामोश हैं वैसे ही आपके सभासद खुशामदी और चापलूस हैं। इस समय अवश्य वह आपके सुर में सुर मिला रहे हैं, किन्तु वास्तव में आपको उल्टे मार्ग पर चला रहे हैं और अमृत के धोखे में विष पिला रहे हैं। समय आने पर यह निखट्टू, बजर बट्ठू और खुशामदी टट्टू अपने मुख से ही कहेंगे कि

यह रावण की सख़्त ग़लती थी, मगर हम क्या करते हमारी कुछ पेश न चलती थी। इसलिए केवल मात्र इन खुशामदियों की बातों पर न जाइये, बल्कि इस मुआमले पर भली प्रकार गौर फरमाइये।

रावण का गाना (बहरे तवील)

ऐसे भाई की मुझको जरूरत नहीं,
मेरे आगे से हट जा अरे बेशरम।
दूर हो जा न आंखों के आ सामने,
वरना करदूंगा तेरा अभी सिर कलम॥
ऐसे भाई की० ॥
पैदा होते ही मर जाता गर बेहया,
आज इतना न होता मुझे रंजो-गम।
तेरे जैसा हुआ भाई जब से मेरा,
तो बिलाशक फूटे मेरे भी करम।
ऐसे भाई की० ॥
तूने की जब हिमायत* हनुमान की,
तेरी निस्बत मुझे तो जमो था भरम।
अरे दरपर्दा** छुरियां चलाता रहा,
तेरो करतूत का अब हुआ है इलम।
ऐसे भाई की० ॥

*पक्षपात। **गुप्त रीति से।

बेहतरी है तेरी बस इसी बात में,
तू यहां से निकल जा अभी एकदम ।
चैन आयेगा अब तो उसी दम मुझे,
तेरे निकलेंगे मनहूस यां से कदम ।
ऐसे भाई की० ॥
अरे बदकार मक्कार गद्दार तू,
क्यों दिलाता है गुस्सा मुझे दम बदम ।
कोई ग़ैरत का मादा है बाकी अगर,
डूब मर बेशरम ! डूब मर बेशरम ॥
ऐसे भाई की० ॥

अरे पाजी ! मक्कार ! बेग़ैरत गद्दार ! तू इसी क्षण यहीं से काफ़ूर हो जा और मेरी आंखों के आगे से दूर होजा । तेरे प्राणों की रक्षा इसी में है कि तुरन्त मेरी सीमा से निकल जा ! अरे निर्लज्ज ! यदि वह तेरे साथ कुछ भलाई करता तब भी तू उसकी हमदर्दी का दम भरता । भला वह तो तुझ से हर प्रकार बरगश्ता हो और तू उल्टा उसकी हिमायत पर कमर बस्ता हो ! वह तेरी बहिन के सतीत्व पर हाथ डाले किन्तु तुझको शरम न आये, खर और दूषण का सेना सहित हनन करे, और तेरा रक्त जोश न खाये । अरे निर्लज्ज ! इस बेहयाई की जिन्दगी से तो अच्छा था कि कुछ खाकर सो जाता ताकि तेरा खात्मा हो जाता ।

अगर मैं तेरी बातों पर जाता तो हरगिज न देरी करता और तुझको इसी वक्त तहे तेग करता। मगर मैं तेरे जैसा बेशरम नहीं और अपने मां जाये भाई को बध करना मेरा धर्म नहीं। माना कि तू आला दर्जे का पाजी और शैतान है, किन्तु तेरे जैसे मुर्दे को मारने में भी मेरा अपमान है। (धक्के देकर) बेगैरत चला जा, निकल जा, दूर हो जा, अब लंका के भीतर कदापि न आना और जीवन पर्यन्त मुझको अपनी मनहूस शक्ल न दिखाना। (कोतवाल से) इस पाजी को मेरी आंखों के सामने से दूर कर दो और दो सिपाही इसके साथ मामूर* कर दो, जो इसको मेरी सीमा से निकाल कर आयें किन्तु यह ख्याल रहे कि वह किसी प्रकार की रियायत इसके साथ न करने पायें, अन्यथा सख्त सजा पायेंगे और आज्ञा-भंग का अच्छी तरह मजा पायेंगे।

सिपाही—(दोनों ओर से विभीषण को पकड़ कर) चलिये, चलिये जरा जल्दी यहां से निकलिए।

विभीषण का गाना (बहरे तबील)

तेरे बरबाद होने के दिन आ गये,
दोष इसमें ऐ भाई तुम्हारा नहीं।

*नियुक्त

तेरी बुद्धि में रावण खलल आ गया,
तूने अपना बेगाना विचारा नहीं ।
तेरे बरबाद०
आप अपनी जबाँ से कहो न कहो,
मुझे रहना यहां खुद गवारा नहीं ।।
तेरे जैसे मतिमन्द के राज्य में,
अब विभीषण का कोई गुजारा नहीं ।
तेरे बरबाद०
हैरख्वाही का मुझको मिला यह सिला,
यहां रहना भी भाता हमारा नहीं ।
एक ईश्वर का मुझको रहा आश्रा,
और दुनियाँ में कोई सहारा नहीं ।
तेरे बरबाद०
तुझे भाई की भाई नसीहत नहीं,
आज तुझको विभीषण प्यारा नहीं ।
मारने में न छोड़ी है कोई कसर,
शीश धड़ से अगर्चे उतारा नहीं ।
तेरे बरबाद०
तख्त लंका का तख्ता उलटने को है,
क्या करूँ मेरा चलता इजारा नहीं ।

मेरे चलते समय का नमस्कार लो,
तेरे दर्शन करूंगा दुबारा नहीं।
तेरे बरबाद०

नाटक

शोक! मेरी शुभ कामनाओं का यह बदला मिलना था और मुझे इसी प्रकार सरे दरबार जलील होकर लंका से निकलना था। अच्छा भाई! तुम्हारा क्या कसूर है, वास्तव में ईश्वर को इसी प्रकार मंजूर है, कि यह हरी भरी लंका देखते देखते नष्ट हो जाये और जिस राज्य की सारे संसार में धाक थी, वह तुम्हारे हाथों भ्रष्ट हो जाये। अच्छा मेरा अन्तिम नमस्कार है, आपके न किसी कार्य से सम्बन्ध है न लंका से सरोकार है:—

बुलबुल ने आशियाना* चमन से उठा लिया।
उसकी बला से बूम** बसे या हुमा*** रहे॥

(विभीषण का उसी समय सभा से निकल जाना और रावण का पेचोताब खाते हुए अपने भवन में जाना तथा अपने मन मोदक फोड़ना)

रावण-(मन ही मन में) आज से मेरा और विभीषण का

*आसन। **उल्लू। ***विशेष पक्षी जो शुभ समझा जाता है।

सम्बन्ध बिल्कुल टूट गया और उससे यह देश सदैव के लिये छूट गया। जहां तक मेरा अनुमान है वह रामचन्द्र के पास जायेगा और मुझे हानि पहुँचाने के निमित्त एड़ी चोटी का बल लगायेगा। यद्यपि विभीषण एक नितांत साधारण और अशक्त व्यक्ति है, किन्तु एक घर के भेदी का शत्रु से जा मिलना मेरे लिये हानिकारक एवं बाइसे कमज़ोरी है। सचमुच मैं थोड़ी सी गलती खा गया और शीघ्र ही तेजी में आ गया। अन्यथा यदि थोड़े काल के लिये क्रोध को थाम लेता और जरा पालिसी से काम लेता तो न विभीषण मेरे हाथ से जाता, न शत्रु को जाकर किसी प्रकार का भेद बताता। उसे यों ही दम दिलासा दिये जाता और जिस प्रकार वह कहता। हांजी हांजी किए जाता। संकट में उसका तरफ़दार रहता और गुप्त रीति से उसकी साजिशों से खबरदार रहता। यद्यपि वह आला दर्जे का मक्कार और हद से ज्यादा चालाक है, किन्तु उसकी उपस्थिति मेरे लिये इतनी हानिकारक न थी, जितना कि उसका चला जाना खतरनाक है। खैर जो हुआ सो हुआ अब कुम्भकरण के पास जाऊँ और उसको अपना हमदर्द बनाऊँ, ऐसा न हो कि वह भी मुझ से रंजीदा हो जाये और मामला ख्वाहमख्वाह पेचीदा हो जाये।

(२) कुम्भकरण का भवन

मन्त्री—महाराज ! आपको कुछ दरबार का हाल भी मालूम है, वहां तो आज नया ही गुल खिला ।

कुम्भकरण—(आश्चर्य से) क्यों ? क्या बात है ? मुझे तो अभी तक उसकी निस्बत कुछ पता नहीं मिला ।

मन्त्री—महाराज विभीषण को न केवल भरी सभा में अपमानित ही किया, बल्कि अपनी सीमा से बाहर निकल जाने के लिये विवश किया ।

कुम्भकरण—(हैरान होकर) यह क्यों ? आखिर उसने ऐसा कौनसा अपराध किया ।

मन्त्री—कुछ अपराध भी नहीं था, केवल उन्होंने अपनी स्वतंत्र सम्मति का इज़हार किया था ।

कुम्भकरण—आखिर वह कौनसी बात थी, जिस पर सम्मति लेने को दरबार किया था ।

मन्त्री—यह तो आपको विदित ही होगा, कि रामचन्द्र असंख्य सैना लिये चढ़ा आ रहा है, अस्तु उसकी रोक थाम के उपाय के लिये दरबार किया और प्रत्येक ने रामचन्द्र के विरुद्ध युद्ध करने के लिये अपनी सम्मति का इज़हार किया, किन्तु विभीषण के मुख से यह निकल गया कि एक स्त्री के लिये इतना रक्त बहाना बिल्कुल

नादानी है, बल्कि सीता को रामचन्द्र के पास पहुँचा कर संधि कर लेने में ही बुद्धिमानी है, इत्यादि इत्यादि। ज्यों हीं विभीषण ने यह बात कही, त्यों ही महाराज के क्रोध की सीमा न रही। तुरन्त आज्ञा दी कि तुम मेरे राज्य से निकल जाओ और मुझे जीवन पर्यन्त अपना मुँह न दिखाओ।

कुम्भकरण-(मस्तक पर हाथ रखकर कुछ देर चुप रहने के पश्चात) शोक ! रावण की यह करतूतें लंका को नाश करके छोड़ेंगी। एक तो स्वयं उसके स्वभाव का बहुत बुरा हाल है, उस पर उसके मन्त्रियों की खुशामदी बातें और भी नीम और करेले की मिसाल है। कुछ काल से तो उसकी ऐसी बुद्धि चली है कि बस चुप ही भली है। मैं इसलिये न उसके किसी कार्य में बाधा देता हूं, न राज काज में कभी भाग लेता हूं। उसकी इच्छा—स्याह करे या सफेद, किसी को आबाद करे या नाबूद, हमें क्या प्रयोजन जो व्यर्थ वहां जाकर अपना अपमान करायें और तीन-तीन पैसे के आदमियों से...

चौबदार-महाराज लंकापति जी तशरीफ ला रहे हैं।

(रावण का आना और कुम्भकरण का उठकर स्वागत करना)

कुम्भकरण-आइये भ्राता जी ! आज कैसे भूल कर तशरीफ ले आये।

रावण–भाई ! मैं आपको कुछ कष्ट देने आया हूं और एक समस्या पर आप से परामर्श लेने आया हूं, क्योंकि और तो मैं किसी से नहीं डरता, किन्तु आपको यह मालूम ही है कि बिना तुम्हारी सम्मति के कोई कार्य नहीं करता।

कुम्भकरण–बिल्कुल ग़लत, सफेद झूठ, ख्वाहमख्वाह का इलज़ाम, भला आपके कार्यों में मेरी सलाह-सम्मति का क्या काम ?

रावण–(किसी कदर खिसियाना होकर) निःसंशय आज तक जो कुछ मैंने किया अपनी इच्छा से किया और किसी कार्य में आपसे परामर्श नहीं लिया, किन्तु इस समय ऐसी भयानक सूरत है जिसके लिये मुझको न केवल आपकी सम्मति बल्कि सहायता की सख्त जरूरत है।

कुम्भकरण–आखिर ऐसी कौनसी कठिन समस्या उपस्थित है, जिसके कारण आपका मन इस प्रकार व्यथित है।

रावण–भाई ! कदाचित आपको मालूम होगा कि रामचन्द्र अनगिनत सेना लिये लंका की ओर बढ़ा आ रहा है, और मुझको यही भय रात दिन खाये जा रहा है, क्योंकि मैंने सुना है कि हमारे बहुत से आधीन राष्ट्र भी हम से विरुद्ध हो गये और खुल्लमखुल्ला विद्रोह पर प्रस्तुत हो गये, यहां तक कि विभीषण भी यहां

निकल गया और जहां तक मेरा अनुमान है वह रामचन्द्र के साथ मिल गया। जब हमारे घर का ही यह हाल है, तो इस दशा में रामचन्द्र पर विजय प्राप्त करना बहुत मुहाल है।

कुम्भकरण—आप इस समय मुझसे परामर्श करने आये, किन्तु उस समय तो न पूछा जब सीता को चुरा कर लाये, अब रोते क्यों हो, भुगतो अपने किये की सजा और देखो इश्कबाजी का मजा। अभी से दिल तोड़ने लगे और ऐसी जल्दी घुटने ढीले छोड़ने लगे—

इब्तदाय* इश्क है रोता है क्या।
आगे आगे देखना होता है क्या॥

रावण—शोक! मुझे यह आशा न थी कि मेरे भाई ऐसे दगाबाज निकलेंगे, मैं तो विभीषण को ही रोता था परन्तु यहां तो आवा ही बिगड़ा पड़ा है और जिसे देखो वही कानों पर हाथ रक्खे खड़ा है। खैर मुझे तो शिक्षा हो गई और नहीं तो भाइयों की वफादारी की तो परीक्षा हो गई। यदि तुम्हारा यह ध्यान हो कि रावण लड़ाई से डरता है और इसलिये मेरी बार बार खुशामद करता है तो यह तुम्हारी भूल है। खौफ और खुशामद का तो मैं सिर्फ नाम ही नाम जानता हूं, अन्यथा

*आरम्भ

इनका प्रयोग करना तो मैं अपने लिये काल से भी बुरा मानता हूं, बहुत अच्छा क्षमा कीजिये, और मुझको आज्ञा दीजिये, जिसप्रकार होगा उनसे मैं निपट लूंगा, किन्तु भविष्य में आपको कष्ट न दूँगा।

कुम्भकरण–(रावण का हाथ पकड़ कर) भाई साहब असन्तुष्ट होकर न जाईये, जरा गुस्से को जब्त फरमाइये। आपने मेरी बातों का उल्टा अर्थ निकाला और मेरे भाव तथा अभिप्राय को सर्वथा पलट डाला। भला मैंने यह बात कब कही कि आप में युद्ध की शक्ति नहीं रही अथवा मैं आपका सहायक नहीं, बल्कि मेरा तो यह अभिप्राय है कि यह कार्य आपकी शान के लायक नहीं किन्तु खैर बुरा हो या भला हमारी जाने बला। अन्त में एक दिन मरना है, फिर लड़ाई से क्या डरना है। कुम्भकरण तन, मन से आपके साथ है, परन्तु जय-पराजय परमेश्वर के हाथ है।

रावण–(कुम्भकरण को गले लगाकर) मेरे प्यारे भाई! मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूं कि इस विपद के समय मेरी धीर बँधाई। अब मैं जाता हूं और किसी गुप्तचर को भेजकर उनकी सेना आदि का पता मंगवाता हूं।

(३) रामचन्द्रजी का फौजी कैम्प।

सुग्रीव–महाराज एक अचरज की बात सुनिये, रावण का भाई विभीषण आपसे शरण मांगता है।

रामचन्द्र जी-(अचम्भे से) हैं ! रावण का भाई विभीषण !

सुग्रीव-हां भगवन ।

रामचन्द्र—परन्तु उससे ऐसा कौनसा अपराध हुआ जिसके कारण वह लंका छोड़ने पर बाध्य हुआ ?

सुग्रीव सुना है कि विभीषण रावण के इस कार्य को अनुचित बताता था और उसको लड़ाई से बाज़ रखना चाहता था, जिससे दोनों में परस्पर कुछ तकरार हो गया और रावण के क्रोध का पारा पूरे एक सौ चार हो गया। अस्तु उसे आज्ञा दी कि इसी क्षण लंका की सीमा से निकल जाये और जीवन पर्यन्त मुझे अपना मुख न दिखाये।

रामचन्द्र जी-तो आपका इस विषय में क्या विचार है ? क्या विभीषण वास्तव में काबिले ऐतबार है ?

सुग्रीव-यह विषय ऐसा नहीं कि जिसका निश्चय केवल मेरी सम्मति पर ही किया जाय, बल्कि बेहतर है कि इसके सम्बन्ध में प्रत्येक से परामर्श लिया जाय।

जामवन्त—क्योंकि वह हमारे शत्रु का बिल्कुल करीबी रिश्तेदार है, अतः ऐसे व्यक्ति की प्रत्येक बात मेरी राय में ना काबिले एतबार है। इसके सिवाय हमारे पास इस बात का भी क्या सबूत है कि वह रावण का विरोधी है अथवा उसका ही दूत है।

अङ्गद्–जाम्बवन्त जी का फर्माना बिल्कुल सही है और मेरी सम्मति भी यही है कि विभीषण नेकनियत से नहीं आया है बल्कि उसने यह केवल एक पाखण्ड बनाया है। इस समस्या पर जरा अच्छी प्रकार विचार करना चाहिये और जरा सोच समझ कर उस पर ऐतबार करना चाहिये।

राम०–मेरे विचार से हनुमान जी की राय ज्यादा वजनदार है, हम सब की सम्मति किसी अनुभव के आधार पर नहीं बल्कि अपने दिली ख्यालात का इजहार है (हनुमान से) हां हनुमान जी कहिये आपका इस विषय में क्या विचार है, क्या विभीषण वास्तव में नाक़ाबिले ऐतबार है!

हनुमान–और तो मैं कुछ नहीं कह सकता, किन्तु हाँ इतना कहे बिना नहीं रह सकता कि यदि विभीषण उस समय मेरे प्राण न बचाता तो मैं कदाचित ही जीवित लौट कर आता।

रामचन्द्र–(सुग्रीव से) यद्यपि मेरा आपकी राय से इख्तलाफ़* है तथापि मेरा मन साक्षी देता है कि विभीषण की नियत बिल्कुल साफ है, यदि मान भी लिया जाय कि उसका कुछ और इरादा हो तो जीवित

* विरोध।

बच कर कहां जा सकता है। हां यदि उसका मन साफ हुआ तो हमें बहुत कुछ लाभ पहुँचा सकता है, अगर इन सब बातों को भी छोड़ दिया जाये तो कम से कम उसके उस अहसान का ध्यान किया जाये जिसके जीवित उदाहरण हनुमान जी आपके सम्मुख मौजूद हैं किन्तु आपके विचार उदार नहीं बल्कि महदूद हैं। इसके सिवाय जो मनुष्य हमारी शरण में आयें, तो मैं इस बात को सहन नहीं कर सकता कि वह निराश होकर जाये। तात्पर्य सर्वप्रकार से वह हमारे विश्वास का अधिकारी है और आपको उसकी निस्बत व्यर्थ बे-ऐतबारी है।

सुग्रीव—यह तो सब कुछ सच है, किन्तु आप इस बात को अच्छी तरह विचार लें कि वह उस रावण का भाई है जिसके कपट की सारे विश्व में दुहाई है।

रामचन्द्र—निःसन्देह मैं मानता हूं कि वह रावण का भाई और रावण उसका भाई, किन्तु मेहरबान! नेकी और बदी किसी विशेष व्यक्ति के हिस्से में नहीं आई। पांचों उँगलियाँ एक समान नहीं होती, कोई बड़ी है, कोई छोटी है, कोई पतली है, कोई मोटी है, यह आवश्यक नहीं कि यदि कुल के भीतर एक व्यक्ति अधर्मी है तो वह कुल का कुल ही

कुकर्मी है। दूर जाने की आवश्यकता नहीं, इसका उदाहरण यहीं उपस्थित है, अर्थात एक तो स्वयं आपकी ही हस्ती है। बुरा न मानना कि बाली भी तो आपका भाई था, फिर वह क्यों इस प्रकार अत्याचारी और अन्याई था परन्तु आप में क्यों वह औसाफ़ नहीं, क्या दो सहोदर भ्राताओं में आकाश पाताल का इख्तलाफ़ नहीं। अस्तु एक पुरुष की अयोग्यता पर समस्त कुल को दोषी नहीं मानना चाहिये और सब को एक जैसा नहीं जानना चाहिये।

सुग्रीव—बहुत अच्छा यदि आपके समीप यह काबिले ऐतबार है तो हमें क्या इन्कार है।

रामचन्द्र जी—तो आप जाइये और उनको आदर के साथ यहां ले आइये।

(सुग्रीव का जाना और थोड़ी देर पश्चात विभीषण सहित वापिस आना)

विभीषण—(रामचन्द्र जी से हाथ जोड़कर) भगवन्! इस अतिथि सत्कार के लिये हृदय से कृतज्ञ हूं।

रामचन्द्र—(विभीषण का हाथ पकड़ कर) प्यारे विभीषण आप मुझे लज्जित न कीजिये, बल्कि मैं आपका यथा-योग्य सत्कार करने से विवश हूं।

विभीषण—महाराज! जैसा आपको सुना था उससे कई गुना बढ़कर पाया, जिसने अपने शत्रु के सहोदर

भाई को खुले हृदय से गले लगाया। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि आपका यह अहसान जीवन पर्यन्त न भूलाऊँगा और मरता मरता भी इसका बदला दे जाऊँगा।

रामचन्द्र जी–प्यारे मित्र! यह कोई अहसान नहीं है बल्कि जो किसी दुखित पुरुष के साथ हमदर्दी नहीं करता वह इन्सान नहीं है। माना कि रावण हमारा हरीफ* है, किन्तु आपकी इखलाकी जुरअत वाकई काबिले तारीफ है। जिसने धर्म के सन्मुख अपने सहोदर भ्राता की बिल्कुल परवाह न करते हुये उसे फौरन छोड़ दिया और ऐसे घनिष्ठ सम्बन्ध को एकदम तोड़ दिया।

विभीषण–महाराज! मैंने तो उस अभिमानी को बार बार समझाया किन्तु उसने मेरी बातों को हँसी में ही उड़ाया उल्टा मुझको भीरु और कायर बतलाया, आखिर जब उसे अपने नाश पर ही प्रस्तुत पाया, तो विवश हो उसका साथ छोड़कर आपकी शरण में आया, क्योंकि मुझको पूरा यकीन हो गया कि उसका आत्मा नितांत मलीन हो गया जब तक यथोचित सजा न मिलेगी उसकी यह हवा दिमाग से हरगिज न निकलेगी। मेरी ओर से रावण और मैं रावण की ओर से मर चुका।

*शत्रु

अब तो शरीर आपके अर्पण कर चुका।

रामचन्द्र–यदि रावण आपको और आप रावण को स्पष्ट जवाब दे चुके, तो हम आपको आज से लंकापति का खिताब दे चुके, यहां आपका हर तरह सत्कार किया जायेगा और मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि लंका विजय होने पर यह राज्य आपको दिया जायेगा। (सुग्रीव से) सुग्रीव जी! आप इनके आराम तथा विश्राम एवं निवास स्थान का अच्छी तरह इन्तजाम कीजिए और आप भी आराम कीजिए!

(दोनों वहां से चले जाते)

लक्ष्मण—(रामचन्द्र जी से) रावण अपने काल को अपनी गोद में पाल रहा है और अपनी भुजाओं को इस प्रकार काट कर डाल रहा है।

राम०—हां भाई! जब किसी मनुष्य के नाश होने के दिन आते हैं तो उसके विचार उल्टे ही हो जाते हैं, क्योंकि रावण पहले दर्जे का विषयी है, इसलिए उसकी बुद्धि तो सर्वथा मारी गई है।

लक्ष्मण–चाहे रावण कितना भी बद चलन और ऐशी है, किन्तु विभीषण का आना इस समय हमारे लिए एक प्रकार की इमदाद ग़ैबी* है।

*ईश्वरीय सहायता।

राम०—हमने भी तो उसे इसीलिए शरण दे दी है, क्योंकि यह रावण के घर का पूरा भेदी है, इसलिये यह हमारे बहुत कार्य कर सकता है, जो काम हम सब मिलकर महीनों में करेंगे, विभीषण अकेला दिनों में समाप्त कर सकता है।

लक्ष्मण—इसमें क्या सन्देह है क्योंकि वह...

विभीषण—(दो कैदियों को उपस्थित करके) यह दोनों व्यक्ति रावण के गुप्तचर हैं जो भेद लेने के अभिप्राय से हमारे कैम्प का चक्कर लगा रहे थे और हमारे आदमियों को बहका रहे थे।

राम०—(कैदियों से) तुम्हारा क्या नाम है और यहां आने का क्या परिणाम है? यदि सच सच न बताओगे तो कठिन दण्ड पाओगे।

एक कैदी—(हाथ जोड़कर) महाराज मेरा नाम शुक है और (अपने साथी की ओर संकेत करके) इसका नाम सारन है।

राम०—किन्तु तुम्हारे यहां आने का क्या कारण है?

शुक—हजूर हम तो यों ही मन बहलाने को घूम रहे थे कि (विभीषण की ओर संकेत करके) यह हमको पकड़ लाए।

राम०—तो तुम्हारी यह इच्छा है कि तुम्हें इसी समय जल्लाद के सुपुर्द कर दिया जाये।

दोनों कैदी–(गिड़ा गिड़ा कर) हजूर हम बिल्कुल बेकसूर हैं।

रामचन्द्र जी– तो जब तक सच न बताओगे, हम तुमको क्षमा करने से मजबूर हैं।

शुक–हजूर ! हम सच सच निवेदन कर देंगे यदि हमको क्षमा का वचन दे दिया जाये।

राम०–यदि तुम सच सच प्रकट कर दोगे, तो सम्भव नहीं कि तुम्हें कुछ कष्ट होने पाये

शुक–हजूर ! हम महाराजा रावण की आज्ञा से आपकी सेना का भेद लेने आये थे किन्तु अभी पहुँचने भी न पाये थे कि पकड़े गये और खुद ही काल की कड़ी शृंखलाओं में जकड़े गये। अब हमारे जीवन और मरन के हजूर ही मालिक व मुख्त्यार हैं और हम हाथ जोड़ कर क्षमा के ख़्वास्तगार हैं, क्योंकि हम निरापराध होने के अतिरिक्त बिल्कुल गरीब और बाल बच्चेदार हैं। (पेट पर हाथ मार कर) यह बेईमान दोजख सारे कौतक करा रहा है और भांति भांति के दुःख भरा रहा है।

राम०–यह तो तुमने सच कहा, किन्तु जिस कार्य के निमित्त तुम यहां आये थे, वह तो बीच में ही रहा, अर्थात तुमको कुछ विदित है कि हमारे पास किस क़दर सेना उपस्थित है।

शुक—न हमने यह मालूम किया और न करने की ज़रूरत है बल्कि इन बखेड़ों से अलग रहने में ही हमारे लिए भलाई की सूरत है।

राम०—आखिर तुम क्या चाहते हो, कुछ अपने मन का भेद भी बतलाते हो ?

शुक—बस यही कि हमें रिहाई मिल गई, समझो कि सारी खुदाई मिल गई।

राम०—किन्तु रावण यहां का हाल पूछेगा तो क्या बतलाओगे और उससे किस प्रकार अपना पीछा छुड़ाओगे ?

शुक—जब वह समय आयेगा उस वक्त देखा जायेगा, आप यहां से छुटकारा तो दीजिये।

राम०—(हँसी से) यदि हम तुम्हारे लिए मृत्यु की आज्ञा न दें बल्कि युद्ध की समाप्ति तक तुमको यहीं पर कैद रक्खें ?

शुक—किन्तु हमारे बाल बच्चे किसके भरोसे पर जिन्दगी की उम्मेद रक्खें ?

राम०—यदि हम तुमको रिहाई देंगे ?

शुक—तो हम रावण के दरबार में हजूर के नाम की दुहाई देंगे।

राम०—अच्छा जाओ हम तुमको आजाद करते हैं।

दोनों-(पृथ्वी चूमकर) हम महाराज का सच्चे हृदय से धन्यवाद करते हैं।

रामचन्द्र जी—किन्तु जरा ठहरो।

दोनों-(सहम कर मन ही मन में) बाप रे! यह दुबारा क्यों बुलाये गये? (हाथ जोड़कर) महाराज आज्ञा!

राम-यदि तुम चाहो तो हम तुमको अपनी सेना का सरसरी निरीक्षण करवादें।

दोनों-(कानों पर हाथ लगाकर) बस हजूर हम बाज आये। हाँ यदि आपको हमें मरवाना ही है तो बेशक मरवा दें।

राम०-अच्छा जाओ, यदि तुम्हारी इच्छा नहीं तो न सही।

दोनों-(जाते हुये) हजूर जब आपने दुबारा बुलाया तो सच जानिये कि जान में जान न रही। (चले गये)

राम०—सुग्रीव जी! देख ली लंका के वीरों की करतूत।

सुग्रीव—हां महाराज! जैसा रावण उचक्का, वैसे ही बुजदिल उसके दूत।

रामचन्द्र जी—अब क्या विचार है?

सुग्रीव—हमारी सेना बिल्कुल तैयार है, केवल आपकी आज्ञा का इन्तजार है।

राम-मेरी राय में चढ़ाई करने से पहले उसको एक अवसर और दिया जाये और किसी योग्य एलची को लंका में भेजकर राजनीति के नियम को पूरा किया जाये।

सुग्रीव–निस्सन्देह यह राजनीति का नियम तो जरूर है, मगर रावण पहले दरजे का मगरूर है।

राम–कुछ भी हो हमें उसकी बातों पर न जाना चाहिये बल्कि अपने कर्त्तव्य को निभाना चाहिये।

सुग्रीव–यदि आपका यही विचार है तो हमें क्या इन्कार है। जिसको आप आज्ञा दें वही इस सेवा के लिये तैयार है।

राम–मेरी राय में यह ड्यूटी राजकुमार अंगद की लगाई जाये, आगे जिस प्रकार आपकी समझ में आये।

अङ्गद–(हाथ जोड़कर) यह मेरी मान वृद्धि करके दया दर्शाई है जो आपने यह सेवा मेरे जिम्मे लगाई है।

राम—अच्छा कल प्रातःकाल ही विदा हो जाना और बड़ी चतुरता तथा बुद्धिमत्ता से रावण को इस भयानक युद्ध की हानियां जताना। यदि न मानेगा तो मजबूरी है तथापि हमको अपना कर्त्तव्य पालन करना जरूरी है।

अङ्गद—आपकी आज्ञा स्वीकार है, अपनी ओर से हर प्रकार यत्न करूँगा, मानना न मानना उसके अधिकार है।

पच्चीसवां दृश्य

(१) लंका का जंगी दरबार

रावण—ए मेरे शूरवीर सरदारो! तख्त लंका के कदीमी

जां निसारो[1] ! आज भाग्य से ही वह दिन आ गया है जिसकी वीर लोग बड़ी उत्कंठा से प्रतीक्षा किया करते हैं। हां आज शत्रु को बतला दो कि योद्धा इस प्रकार प्राणों का बलिदान दिया करते हैं। आज प्रकट करदो कि तुम तख्त लंका के पूरे वफादार हो, समर भूमि में शत्रु का सिर हो अथवा तुम्हारी...

सर्व उपस्थितगण–(एक स्वर से) तलवार हो।

रावण–शाबाश ! शाबाश !! मेरे सौभाग्य का क्या ठिकाना है, जिसका एक-एक बहादुर यकताये जमाना[2] है। अगर एक तीर अंदाजी[3] में ताक[4] है तो दूसरा कुश्ती और शाह सवारी में शोहर ए आफाक[5] है। भला उन बन वासियों की हमसे मुकाबला करने की क्या ताब है, एक ओर साधारण चिड़ियाँ हैं तथा दूसरी ओर...

सर्व उपस्थितगण–(एक स्वर से) उकाब[6] है।

रावण–बेशक ! बेशक ! तुम उकाब हो और युद्ध विद्या में अद्वितीय तथा लाजवाब हो। जब परमेश्वर की कृपा हमारे साथ शामिल है, तो मुझे यकीन कामिल है कि तुम्हारी फतह पै दर पै होगी और इस लड़ाई में...

१—प्राण न्यौछावर करने वालो। २—संसार में अद्वितीय। ३—धनुर्विद्या। ४—निपुण। ५—आकाश तक प्रसिद्ध। ६—एक बलवान शिकारी पक्षी।

सर्व उपस्थितगण–लंकापति रावण की जय होगी।

मालवान*–जहां तक मेरा अनुमान है, यह अकारण का रक्तपात लंका के लिये हानि का सबब है। मैं मानता हूं कि राजाओं के बहुधा युद्ध हुआ करते हैं, तथा परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध हुआ करते हैं। किन्तु वह राजवृद्धि एवं राष्ट्र-रक्षा के लिये लड़ते हैं, न कि आपकी भाँति एक स्त्री के निमित्त इस प्रकार रक्त प्रवाह करते हैं। अतः मेरी विनय मँजूर करो और इस क्लेश की जड़ को दूर करो।

रावण–(झुँझला कर) न जाने तुम्हारी समझ पर क्या पत्थर पड़ रहे हैं और आप भी विभीषण की भाँति हवा के घोड़े पर चढ़ रहे हैं। प्रत्येक अपनी-अपनी बोली बोल रहा है, जिसे देखो वही उपदेश के दफ़्तर खोल रहा है, या तो तू काल से डरता है या मेरा मन टटोल रहा है। सुन लो और अच्छी तरह कान खोल कर सुन लो, कि मैं किसी प्रकार और किसी दशा में भी इस युद्ध से बाज नहीं रह सकता, और इससे विशेष मैं कुछ नहीं कह सकता, कि जिसको काल का भय हो वह बड़ी खुशी से इसी समय निकल जाये और उसको बुलाने या मनाने के लिये

*रावण का एक दूरदर्शी वृद्ध मन्त्री

मेरी बला जाये, जब तक तन में प्राण और हाथ में तलवार है, किसी से डर कर अथवा दब कर रहना मेरे लिये सख्त आर* है। आश्चर्य तो यह है कि एक आवारागर्द झुण्ड से इतना भय, जिसके पास एक समय की रोटी का सामान भी नहीं है! कृपा करके इस ज्ञान गुदड़ी को बन्द कीजिये और एक किनारे बैठ कर अपना आनन्द कीजिये।

द्वारपाल—महाराज! किष्किन्धा का एक दूत जो अपना नाम अङ्गद बतलाता है, हाजिर हजूर होना चाहता है।

रावण—(एक सैनिक अफसर से) तुम जाओ और उसे आदर सहित यहां लाओ।

(सैनिक अफसर का चले जाना और थोड़ी देर पश्चात एक बांके युवक को साथ लेकर आना)

रावण—(नवआगत युवक से) किष्किन्धा राज की ओर से तुम ही आये हो, कहो क्या संदेशा लाये हो? यदि कुछ हरज न हो तो अपना नाम भी बता दीजिये और निवास स्थान का भी पता दीजिये।

नवयुवक—मैं बानरराज स्वर्गवासी महाराज बाली का पुत्र हूं, अंगद मेरा नाम है और रामचन्द्र महाराज की ओर से आपके नाम एक आवश्यक पैगाम है।

* लज्जाजनक

रावण–आह, आप मेरे मित्र बाली के फरजन्दे अर्जमन्द हैं कहिये आपके मिजाज तो आनन्द हैं।

अँगद–आपकी मेहरबानी है।

रावण–मैंने बहुत देर पश्चात् आपकी अब शक्ल पहचानी है, किन्तु मुझे इस बात की हैरानी है कि आपने यह नीच काम करने की क्या ठानी है।

अँगद–आप मुझे कुछ ही कहें, मैं नीच अथवा पतित के कहने का कब बुरा मानता हूं, बल्कि आपकी इन सब बातों को सहन करता हुआ भी आपको समझाना अपना कर्त्तव्य जानता हूं, क्योंकि आपके और पिता जी के न केवल गहरे सम्बन्ध ही थे बल्कि एक दूसरे के मेहरबान भी रह चुके हैं और जहां तक मुझे ज्ञात है आप कुछ काल तक उनके यहां बतौर एक खास महमान भी रह चुके हैं। इस अगाध प्रेम के कारण ही मुझे आपके साथ इतनी हमदर्दी है, अस्तु प्रथम भी हनुमान जी के द्वारा आपको भावी आपदाओं की सूचना कर दी है।

रावण–(जरा खिसियाना होकर) मेरे पास इतना अवकाश नहीं जो तुम्हारी इस लैकचरबाजी को सुनूँ। कुछ अपना अभिप्राय भी बयान करते हो, या यों ही व्यर्थ बातों की खैंचतान करते हो।

अंगद—मुझको श्री रामचन्द्र जी ने इस लिए आपके पास भेजा है कि अब भी आप इस प्रकार के रक्त प्रवाह से बाज आयें और व्यर्थ में ईश्वर सृष्टि का लहू न बहायें। अन्यथा इस लड़ाई से आपको संताप होगा और लाखों निरपराधों के रक्त का आपकी गर्दन पर पाप होगा। अतः मेरी भी आपसे यही ताकीद है कि एक साधारण सी बात के लिए इस प्रकार खून बहाना बुद्धि के विपरीत है। इसलिए अब भी समय है कि आप इस अहंकार की खड़ग को खूँटी पर टांगें और सीता जी को रामचन्द्र जी के पास पहुँचा कर उनसे अपराध की क्षमा मांगे। यद्यपि वह आपसे सख्त नाराज हैं तथापि बड़े सरल स्वभाव और मन के फय्याज* हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि यदि आप आयन्दा के लिए अपना मन बुराइयों से साफ कर देंगे तो वह आप का अपराध तुरन्त माफ कर देंगे। इतमीनान के लिए मैं इस बात का जिम्मा लेता हूं, कि आप एक बार हां कीजिये, मैं ही उनकी ओर से क्षमा का वचन देता हूं।

रावण—(क्रोधित होकर) बस बस अरे बदलगाम जरा अपनी जबान को थाम, क्यों इतनी बक-बक लगाई

* उदार

है, क्या तुझको तेरी मौत तो यहां नहीं खींच लाई है ? अरे निर्लज्ज! तेरे जैसे नालायकों का भी जिन्दों में शुमार है, जो कि अपने बाप के घातकों से बदला लेना तो अलग, उल्टा उनका ही खिदमतगार है। अरे बेशर्म तेरे तो जीवन पर भी धिक्कार है, तेरे जैसे कपूत से तो यदि बाली पुत्रहीन ही मर जाता तो उसकी आत्मा इस प्रकार दुःख न पाती। मैं सत्य कहता हूं कि यदि तेरे जैसा पाजी मेरे खानदान में होता, तो अब तक कभी का दूसरे जहान में होता। शोक! बाप आंखों के सामने वध हो और बेटा खड़ा तमाशा देखे, डूब मर नालायक—

बेशरम जिस कुल में तेरे जैसा पैदा लाल हो।
बाप के घातक का ही अफसोस जो दल्लाल हो॥
जिसको अपनी शर्म गैरत का न बिल्कुल ख्याल हो।
ऐसा कुल क्योंकर न फिर दुनियां में पायमाल॥
स्त्री के वास्ते भाई की जिसने जान ली।
बेहया तूने भी उसकी सेवकी की ठान ली॥

अँगद—अभिमानी रावण! वास्तव में यह तेरा कसूर नहीं बल्कि ईश्वर को अब यह कुल संसार में रखना मंजूर नहीं। होनी के कालचक्र ने तेरी बुद्धि पर बिल्कुल पर्दा डाल दिया है और सोच विचार का अंश तेरे भीतर

से निकाल दिया है—

शोक है मेरा यहां आना ही बे फायदा हुआ।
वक्त है अब भी सम्भल क्यों मौत का शैदा हुआ॥
तेरी बातों से ही तेरा ख्याल बेफ़ायदा हुआ।
क्या विभीषण आपके कुल में नहीं पैदा हुआ॥
आप अपनी सोचिए क्या फिकर मेरे बाप की।
होने वाली है वही हालत ऐ हजरत आपकी॥

रावण—नहीं शक्ति थी तुझ में तो हमारे पास आ जाता।
मैं तेरे बाप का बदला उसी क्षण लेके दिखलाता॥

अङ्गद—न कर इतना तकब्बुर* जहां इक रोज फ़ानी है।
तेरे से आला हो गुजरे न कुछ बाकी निशानी है॥

रावण—परे हट दूर होजा मुफ्त में क्यों कान खाये हैं।
तेरे जैसे तो बच्चे आज तक मैंने पढ़ाये हैं॥

अङ्गद—पढ़ाये हों कभी शायद थे जिस दिन आप आये में।
मगर अब तो अकल मारी गई आकर बुढ़ापे में॥

रावण—जबां को रोक ओ जाहिल यह क्या बक बक लगाई है।
किसी बे अकल ने तुझको अकल भी कुछ सिखाई है॥

अंगद—अकल होती तो फिर क्या था अकल का ही तो रोना है।
बदौलत इस अकल की खाक इस लंका को होना है॥

रावण—अरे लंठ! तुझको किसी ने कुछ बुद्धि भी सिखाई है।

*अभिमान।

था तु ने आज तक पशुओं में ही आयु गँवाई है ॥
हां हां, अब ध्यान आया कि बुद्धि कौन सिखाये, कौन पढ़ाये, कौन लिखाये, पिता का साया तो सिर पर से जाता रहा, चाचा को क्या प्रयोजन ! वह तुझ से अपनी चाकरी कराता रहा। फिर चाचा भी कौन ? सुग्रीव ! भला जिसने अपने सहोदर भाई का ही रक्त पिया, उसने तेरी शिक्षा का बोझ अपने ऊपर कब लिया। हाँ उसे तेरे जैसा मुफ्त का दास अवश्य मिल गया। जिसके अन्दर से लज्जा और शर्म का अंश बिलकुल ही निकल गया। अरे मूढ़ ! अब भी अपने पिता की मौत को याद कर और ऐसे दुष्ट चाचा की गुलामी से अपने को आजाद कर। मैं तुझे यहां एक प्रतिष्ठित पद पर मुमताज* करूँगा और तेरी प्राचीन एवं वर्तमान सेवाओं का (यदि कुछ होंगी) भली भाँति लिहाज करूँगा। फिलहाल तुझको अपने राज्य के एक विशेष प्रांत का सूबेदार कर दूँगा और थोड़े दिनों में सुग्रीव और रामचन्द्र से तेरे बाप का बदला दिला कर तेरी राजधानी का तुझको स्वामी तथा मुखत्यार कर दूँगा। अन्यथा या तो इसी जंग में तेरा काम तमाम हो गया और, यदि बच भी गया तो सारी उमर के लिए सुग्रीव का

*मुकर्रर, नियुक्त।

गुलाम हो गया।

अङ्गद-खैर, मैं तो बदतमीज़ ही सही, किन्तु बुद्धि ठिकाने आपकी भी नहीं रही, जो कोई गम्भीर तथा उपयुक्त उत्तर देने की जगह दूसरे के घरके झगड़े छेड़ रहे हैं, और व्यर्थ में गड़े मुर्दे उखेड़ रहे हैं। मेरे बाप ने जैसा व्यवहार अपने भाई के साथ किया, वैसा फल भोग लिया मेरे लिये दोनों का दर्जा एक समान है और चाचा का सेवकी अथवा गुलामी करने में मेरा कौनसा अपमान है :—

औरों के घर के झगड़े ऐ रावण न छेड़ तू।
तुझको पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू॥

मुझको तो आपका भी वैसा ही अंत होता दृष्टि आ रहा है और निःसन्देह काल आपके सिर पर मंडला रहा है। जिस समय रामचन्द्र जी के बाण लंका पर बरसेंगे तो आप तो एक एक साँस को तरसेंगे। क्यों बुद्धि मारी गई है, कुछ समझ कर बात कीजिए और अब भी इस हठ को त्याग दीजिये।

(रावण तथा अंगद का सम्मिलित गाना)

तर्ज—(क्या करूं यह मेरा दिल दिवाना हुआ)

रावण-तू शरारत से क्यों बाज आता नहीं,
अरे अहमक क्या आई है तेरी कजा।

अङ्गद्–कभी तड़पे न तू ही बहालत निज़ा।
रावण–तुझे बकवास का अब चखाऊँ मजा॥
अङ्गद्–तुझे बदकारियों की मिलेगी सजा।
तेरी नजरों में कोई समाता नहीं॥
रावण—तू शरारत से...
अङ्गद्–तू शरम कर शरम कर शरम कर शरम।
डूब मर क्या राजा का यही धरम॥
रावण–तू अकड़ता है जितना हुआ मैं नरम।
अङ्गद्–यही कहता हूं अच्छे नहीं यह करम॥
तुझे कहना किसी का सुहाता नहीं।
रावण–तू शरारत से...
रावण–है शरम तो कहीं डूब मर बेहया।
अङ्गद्–तेरी गैरत का मादा भी क्यों मर गया।
रावण–देख हालत तेरी मुझको आती दया॥
अंगद्–बैठ जा कोई खिल जायेगा गुल नया ?
कोई झगड़ा फैलाना मैं चाहता नहीं॥
रावण–तू शरारत से...
रावण—अरे अहमक न गुस्सा ज्यादा दिला।
अंगद्–छोड़ हठ को इसी में है तेरा भला।
रावण–जा चला जा चला जा चला जा चला।

अंगद्–मेरे जाते ही आयेगी तुझ पर बला।
तू है जिन्दा कि जब तक मैं जाता नहीं॥

रावण—तू शरारत से...

रावण का गाना (बहरे तबील)

मैं बहुत जब्त करता रहा अब तलक,
तूने अपनी तर्ज़ को न बदला मगर।
खैंच लूँगा हलक से मैं तेरी जबां,
तूने बक बक ज्यादा लगाई अगर।
मैं बहुत जब्त...

तेरे जैसा कोई बेशर्म दूसरा,
तो जमाने शायद ही होगा बशर*।
जिस घराने में तूने जन्म ले लिया,
नष्ट होने में उसके नहीं कुछ कसर।
मैं बहुत जब्त...

भूल जायेगा सारी अकड़ फूँ अभी,
जिस घड़ी मैंने ऊपर उठाई नजर।
पहले टुकड़े करूँगा मैं तेरे यहां,
फिर तेरे उन हिमायती की लूँगा खबर।
मैं बहुत जब्त...

*मनुष्य

स्वप्न सीता के अब तो वह देखा करे,
मगर दर्शन न होवेंगे सारी उमर।
हां ताज्जुब नहीं है कुछ इस बात का,
मुफ्त में और दे जाये अपना ही सर।
मैं बहुत जब्त...
जान की खैर चाहता है अपनी अगर,
लौट जाये वह फौरन से भी पेश्तर।
वरना मेरे इशारे की ही देर है,
राक्षस खा जायेंगे उसे भून कर।
मैं बहुत जब्त...
यों ही दस बीस लौंडे इकट्ठे किये,
कोई घर है न जिनका न कोई है दर।
चलो रावण से चल कर लड़ाई करें,
चाहे घर में न खाने को हो सेर भर।
मैं बहुत जब्त...
कोई गैरत शर्म है अगर बेहया,
नाम बाली का करदे तू अब भी अमर।
वरना तेरे इस जीने पै धिक्कार है,
डूब मर, डूब मर, डूब मर, डूब मर।
मैं बहुत जब्त...

अंगद का गाना (बहरे तवील)

मैंने अपने फर्ज को अदा कर लिया,

भाड़ में पड़ मुझे क्या जरूरत पड़ी।

हां मेरा अब यह पुख्ता यकीं हो गया,

मौत हंसती है तेरे सिरहाने खड़ी।

मैंने अपने०

रख तहम्मुल* जरा एक दो रोज में,

निकल जायेगी तेरी यह सब हेकड़ी।

हाथ आंखों पै धर धर के रोयेगा तू,

हाथ आयेगी हरगिज न फिर यह घड़ी॥

मैंने अपने०

इस तकब्बुर× ने अन्धा तुझे कर दिया,

हो रहा है तू पागल सौदाई सिड़ी।

होश आयेंगे अब तो ठिकाने तभी,

राम की फौज लंका में जब आ पड़ी।

मैंने अपने०

इसलिए कहना सुनना ही बे सूद है,

क्योंकि तुझको तो कच्चे घड़े की चढ़ी।

तेरी आंखें जमीं में रहेंगी गड़ी।

मैंने अपने०

---

*धैर्य। ×अभिमान।

आज बेशक बताता है लौंडे हमें,
बन रही है यह तेरी जबाँ फुलझड़ी।
तुझे मालूम लौंडों की होगी कदर,
कोई जिस रोज उनसे लड़ाई लड़ी॥

नाटक

अफसोस! बेहद अफसोस!! ऐ खुद फरामोश, मैंने इस प्रकार सिर खपाया, किन्तु तेरी समझ में कुछ भी न आया। ज्यों ज्यों काल निकट आ रहा है त्यों त्यों तेरी आंखों में अंधेरा छा रहा है। जिनको आज तू ताने और घृणा से आवारा गर्द और लौंडे बता रहा है और अपनी समझ में बड़ी शेखी जता रहा है, जब उनसे जरा हाथ मिलायेगा तो उस समय तुझे उनकी शक्ति का हाल स्वयं मालूम हो जायेगा!

रावण—निःसन्देह तू भी सच्चा है, क्योंकि तू अभी बच्चा है और युद्ध विद्या में नितांत कच्चा है, इसलिए तेरे समीप तो रामचन्द्र से बढ़कर पृथ्वी भर पर कोई मजबूत नहीं, किन्तु यह ध्यान रख कि सारी सृष्टि अंगद जैसी कपूत नहीं। मैं रावण हूं रावण।

अंगद का गाना (बहरे तबील)

जानता हूं मैं अच्छी तरह से तुझे,

यों ही शेखी न इतनी जतावे ज़रा।

तेरे सारे दिलावर हैं देखे हुए,

ऐसे धत्ते न मुझको जतावे ज़रा,

जानता हूं मैं० ॥

आज कल में ही मालूम हो जायेगा,

आसमां को न सिर पर उठावे ज़रा।

जो कि होगा वह आजायेगा सामने,

तू ज़बां को न नाहक़ चलावे ज़रा।

जानता हूं मैं० ॥

अब तो इस बात को ही गनीमत समझ,

मौत दो चार दिन ठहर जावे ज़रा।

ऐंठ सारी निकल जायगी जल्द ही,

तू सबर कर न यों तिलमिलावे ज़रा।

जानता हूं मैं० ॥

मैं तो बच्चा हूं, कच्चा हूं, नादान हूं,

कोई तेरा पहलवान आवे ज़रा।

देख लूं मैं तेरे उस जवां मर्द को,

पैर मेरा ज़मीं से उठावे ज़रा।

जानता हूं मैं० ॥

नाटक

मैं रामचन्द्र की सेना में सबसे निर्बल इन्सान हूं,

और तेरे विचार के अनुसार अभी बिल्कुल नादान हूं, किन्तु तेरा यह वहम दूर करने लिए अपनी शक्ति का साधारण सा चमत्कार दिखाता हूं (अपना पांव पृथ्वी पर जमाकर) और अपना पांव पृथ्वी पर जमाता हूं। तेरे शूरवीरों में जो सब से अधिक बलवान हो, और जिस पर तेरा पूरा अभिमान हो, वह आये और मेरा पांव पृथ्वी पर से उठाये। हमारी तुम्हारी जय पराजय का भी इसी पर दारोमदार है, यदि किसी योद्धा ने मेरा पांव पृथ्वी पर से उठा दिया, तो तुम्हारी जीत और हमारी हार है, अन्यथा इसके विरुद्ध अवस्था में सीता जी को श्री रामचन्द्र जी के पास पहुँचा आना और किसी प्रकार की हील हुज्जत न मिलाना। क्यों है हिम्मत ?

रावण-हां हां, मुझे यह शर्त स्वीकार है।

अंगद-बुलाओ तो फिर देर करना बेकार है।

रावण-देखना कहीं पीछे से पछताओ, अथवा अपनी शर्त से ही मुकर जाओ।

अंगद-तुम्हारा यह विचार बिल्कुल वाहियात है, मर्दों का प्रण प्राण के साथ है।

रावण—(मेघनाद से) मेघनाद! तुम जाओ और अपनी अद्वितीय शक्ति का परिचय दिखाओ।

मेघनाद–चलूँगा जिस ज़मीं पर उस जगह भूचाल आयेगा,
ज़मीं तो इक तरफ़ चर्खे कुहन भी कांप जायेगा।
मुजस्सिम काल हूं मैं क्या यह मेरी ताब लायेगा,
भस्म हो जाएगा जो भी नजर मुझसे मिलायेगा।
इसे तो एक झटके में कई चक्कर खिला दूँगा,
पांव तो चीज क्या उतनी जमीं को भी हिला दूँगा।

(अंगद के पांव से चिपट कर) आज तो अजीब लक्कड़ से पाला पड़ा, अरे इसमें कहीं मेख तो नहीं लगादी ?

(लज्जित होकर बैठ जाना)

रावण–निकुम्भ ! अब तुम्हारा वार है।

निकुम्भ–मैं अपनी वीरता के आपको जौहर दिखाता हूं।
नज़र मेरी तरफ़ रखना पैर क्यों कर उठाता हूं॥
हुक्म हो तो अभी इस पांव के टुकड़े बनाता हूं।
खबरदार हो अरे बुजदिल मैं तेरी ओर आता हूं। }
वह ताकत दी है कुदरत ने मेरे इस दस्तो बाजू में।
ज़मीं व आसमां को वज़न कर दूँ इक तराजू में।

(पूरा बल लगा कर) हिलादे, भाई हिलादे, अन्यथा दो टुकड़े हो जायेंगे। (खिसियाना होकर) चूल्हे में पड़ा न उठा, जब मुकाबले पर इस प्रकार पैर जमायेगा, उस समय देखा जायेगा।

रावण–कुम्भकरण !

कुम्भकरण–(अकड़ कर):—

उठाया जब क़दम मैंने क़दम इसका उठाने को।
न पायेगी जगह इसको कहीं भी मुँह छिपाने को।
मेरी जुम्बिश से आजायेगी जुम्बिश कुल जमाने को।
संभल जा अब मैं आता हूं तेरा बल आज़माने को।
ज़माने को हिलाने की है ताक़त इस कलाई में।
बशर तो चीज क्या तहलका मचा दूँ कुल खुदाई में।

(हांफता हुआ पसीने से तर बतर होकर) इस लड़के से क्या सिर खपायेंगे, कोई बहादुर मुक़ाबले पर आयेगा तो हाथ दिखायेंगे।

रावण–(कड़क कर) मुझे आश्चर्य है, आज तुम्हारी शक्ति को क्या चिड़ियां चुग गईं, क्या इतने शूरवीरों में एक भी ऐसा नहीं जो इस लड़के का पांव धरती से हिला सके !

(रावण के इशारे पर बहुत से शूरवीरों का बारी बारी आना और अंगद का पांव उठाने को बल लगाना, किन्तु असफल होकर बैठ जाना। अंगद का रावण को ललकारना और दोबारा पांव धरती पर मारना। अंगद के भयंकर चीत्कार और पांव के धमाके से कई राक्षस सरदारों का कुर्सियों से गिर जाना तथा रावण का मुकट भी सिर से उतर जाना)

अंगद—खड़ा है सामने अंगद भ्रम अपना मिटाले तू।
कोई बाकी रहा होवे तो उसको भी बुलाले तू।
अभी है वक्त लंका को तबाही से बचाले तू।
शर्म की जा है अब भी प्रण अपना न पाले तू॥
न फिर यह वक्त मिलने का अगर इस वक्त चूकेगा।
फ़लक* आंसू बहायेगा ज़माना मुँह पै थूकेगा॥

रावण—अरे कायर! क्यों कैंची की भांति जबान चला रहा है और इस तुच्छ बात के लिए स्थान से निकला जा रहा है। (अपने स्थान से उठकर) मैं अभी तेरा अभिमान तोड़ूगा, पांव तो क्या मैं तेरा अस्तित्व ही पृथ्वी से नहीं बल्कि संसार से उठा कर छोड़ूंगा। (अङ्गद के पांव की ओर झुककर) अपना सारा बल लगाले और पांव को भली भाँति जमाले।

(अंगद अपना पांव पीछे हटा कर) (बहरे कवील)

हुआ है क्यों दीवाना होश में अपने तू आ रावण।
मेरे कदमों को तू नाहक न हाथ अपना लगा रावण॥
यदि अपने गुनाहों का तू पश्चाताप करता है।
तो जाकर राम के चरणों में सिर अपना झुका रावण॥
हां इतना वादा मैं भी तुम्हारे साथ करता हूं।
तेरे सारे गुनाहों को मैं दूँगा बख्शवा रावण॥

*आकाश

बड़े ही रहमदील फ़ैयाज हैं दिल के धनी हैं वह।
यक़ीनन बख्श ही देंगे वह तेरी खता रावण ॥
नहीं बिगड़ा अभी कुछ भी अगर तू होश में आवे।
मुआफी मांग लेने में ही है तेरा भला रावण ॥
अगर ख्वाहिश है जीने की तो अब भी फैसला करले।
नहीं तो समझ ले कि आगई तेरी कजा रावण ॥
कोई दिन में यह देखेगा तु हसरत की निगाहों से।
राम की तेग के नीचे तेरा होगा गला रावण ॥
यदि माने तो अच्छा है न माने तो तेरी इच्छा।
फर्ज 'यशवन्तसिंह' तो कर चला अपना अदा रावण ॥

नाटक

बस-बस मुआफ रखिये। इस प्रकार मामला साफ नहीं हो सकता और मेरे पांव में पड़ने से तुम्हारा कसूर माफ नहीं हो सकता। यदि अपने किए पर पछताते हो और अपना अपराध क्षमा करवाना चाहते हो तो श्री रामचन्द्र जी की सेवा में जाओ और उनके चरणों में अपना शीश झुकाओ। यदि आवश्यकता हुई तो मुझे तुम्हारी सिफारिश करने से इन्कार नहीं, किन्तु स्वयं क्षमा कर देने का मुझे अधिकार नहीं।

रावण—(लज्जित हो कर अपने स्थान पर बैठ कर) अरे धूर्त! तेरी भलाई इसी में है कि तू यहां से चला जा

और मुझको अपनी मनहूस शक्ल न दिखा। तेरी इस बेहूदा बकवास का उत्तर जिह्वा से नहीं बल्कि तलवार से दिया जायेगा, मैं देखूँगा कि तू युद्ध भूमिमें कितनी देर पैर जमाएगा।

अंगद—यह तेरी सरासर हिमाकत है, जिन भाइयों के भरोसे तू कूद रहा है, उनमें केवल बातें बनाने की ही ताकत है। खैर यदि तुझे अपनी तलवार काही अभिमान है, तो हमारी ओर से भी युद्ध का ऐलान* है।

(अंगद का चला जाना)

रावण—(उपस्थित सभासदों से) वास्तव में रामचन्द्र हमसे डरता है, इसलिए बार-बार दूत भेजकर सन्धि के लिए प्रार्थना करता है। किन्तु यहाँ कौनसी मोम की नाक है, जो जल्दी से मुड़ जाये, या हवाई किला है जो उसकी बातों से उड़ जायं। अब तो उसे अच्छी तरह से हाथ दिखाऊँगा और लंका पर चढ़ाई करने का मज़ा चखाऊँगा।

मेघनाद—पिता जी! यदि ऐसे ऐसे ऐरे गैरे लंका में आ जायेंगे तो फिर हम किसी को काहे को मुँह दिखायेंगे माना कि अंगद का पांव पृथ्वी से नहीं हिला, किन्तु मुझको तो पूरा बल लगाने का अवसर ही नहीं मिला

* घोषणा

रावण—पांव जमाना तो एक करतब है, जो साधारण आदमी भी जानते हैं, किन्तु हम इसमें कोई वीरता थोड़ा ही मानते हैं।

कुम्भकरण—अब इन बातों को जाने दीजिए और अपनी सेना की तैयारी की चिन्ता कीजिए।

रावण—सभा विसर्जित! अपना अपना जंगी सामान तैयार करो और दूसरी आज्ञा का इन्तजार करो।

रामचन्द्र जी का फौजी कैंप

(सुग्रीव और हनुमान आदि की युद्ध के लिए बेकरारी और) अंगद की इन्तजारी)

सुग्रीव—(रामचन्द्र जी से) समस्त सेना बिल्कुल तैयार है, फरमाइये अब क्या विचार है?

राम०—मुझे केवल अंगद की वापिसी का इन्तजार है।

हनुमान—मुझे तो किंचित आशा नहीं, कि अंगद कुछ सन्तोष-जनक उत्तर लाये।

राम०—सम्भव है कि आपका विचार ठीक ही हो, किन्तु कम से कम उनकी राह तो देख ली जाये।

विभीषण—महाराज! राजनीति के नियम से तो मैं आप की बात मानता हूं, किन्तु अपराध क्षमा, रावण के स्वभाव को मैं आपसे अधिक जानता हूं। अतः रावण का जो कुछ उत्तर होगा, मैं यहीं बैठा बता सकता

हूं और अक्षर अक्षर जता सकता हूं। यह सर्वथा असंभव है कि वह सीधी तरह से मान जाये, चाहे लंका नाश हो जाये अथवा उनकी भी जान जाये। भला जिसने अपने सहोदर भाई की कुछ क़दर न जानी उसने अंगद की बात कब मानी !

राम०–आपका फ़र्माना बिल्कुल सही है, किन्तु अब उसके आने में देर कौनसी रही है।

जामवन्त–आप इतनी जल्दी क्यों मचा रहे हैं, लीजिये वह सामने अंगद कुमार ही आ रहे हैं।

हनुमान–आइये आइये, आपका ही जिकर अज़कार हो रहा था और बड़ी देर से इन्तज़ार हो रहा था।

अंगद–(सुग्रीव तथा रामचन्द्र जी के चरण छूकर) भगवन ! मैं आपकी आज्ञा का पालन कर आया।

सुग्रीव–किन्तु कोई संतोष-जनक उत्तर भी लाया ?

अंगद–वही ढाक के तीन पात।

विभीषण–क्यों महाराज ! हुई न वही बात।

राम०–बहुत अच्छा समस्त सेना के नाम आज्ञा जारी कर दो और कल प्रातःकाल ही कूच की तैयारी कर दो।

(एक दम जंगी बिगुल का बजना, सारी सेना का फालन हो जाना रामचन्द्र जी का सुग्रीव, अंगद, हनुमान, विभीषण, जामवन्त आदि सहित सेना का निरीक्षण करना और प्रत्येक सैनिक अफसर को यथोचित हुक्म सुनाना, हर एक योद्धा का वीरता के उद्वेग में उन्मत्त नजर आना, रामचन्द्र जी तथा सुग्रीव की जय के उत्तेजित शब्द लगाना। सारे कैम्प में स्थान-स्थान पर मारू बाजा बजाना, बैंड नफीरी तथा शहनाई द्वारा युद्ध के गीत गाना, कवि लोगों का अपनी ईश्वर दत्त बुद्धि तथा चतुराई से वीरों का साहस बढ़ाना और इसी आनन्दमय दृश्य से पच्चीसवें दृश्य का समाप्त हो जाना।)

—*—

छब्बीसवां दृश्य

—०:*:०—

समर भूमि

वीर लक्ष्मण और योद्धा मेघनाद

राम०—(विभीषण से) कुछ मालुम है कि शत्रु का सैन्य संचालन किसके हाथ है ?

विभीषण—हां महाराज ! जानता हूं, आज उसका सेनापति मेघनाद है।

राम०—कुछ अच्छा होशियार है ?

विभीषण—निस्सन्देह रावण की सेना में तो यह एक गिनती का सरदार है बल और वीरता में अद्वितीय है। इसके अतिरिक्त बड़ा चालबाज और पहले दर्जे का मक्कार है और रावण को इसकी बहादुरी पर पूरा ऐतबार है। सेना की मोर्चेबन्दी इस गजब की करता है कि अगर शत्रु के सहस्र योद्धा मरें तो उसका एक मरता है।

राम०—आज मैं स्वयं सेना की कमान करूँगा, और उसकी मोर्चेबन्दी को एक क्षण में वीरान करूँगा।

लक्ष्मण—भ्राता जी! आप अभी विश्राम कीजिये और मेघनाद के मुकाबले पर जाने की मुझको आज्ञा दीजिये।

रामचन्द्र—भाई! तू अभी नौ आमोज* है और आज युद्ध का पहला रोज है। आज की लड़ाई पर ही दोनों ओर की आइन्दा उम्मेदों का दारोमदार है और तू अभी मेघनाद के मुकाबले में नातजुर्बेकार है।

हनुमान—(रामचन्द्र जी से) जब यह स्वयं अनुरोध करते हैं तो आप क्यों विरोध करते हैं यदि कुछ खतरनाक सूरत होगी तो आखिर हम भी तो साथ हैं।

रामचन्द्र—बहुत अच्छा, यदि तुम सब की यही इच्छा है

*नया शिक्षित

तो मुझे कब इन्कार है, किन्तु इनके साथ साथ ही रहना क्योंकि मेघनाद बड़ा मक्कार है।

लक्ष्मण-(रामचन्द्र के पैरों में पड़कर) जब मेरे साथ आपका आशीर्वाद है तो मेघनाद जैसों की मेरे सामने क्या बुनियाद है। जरा देखना कि उसके कैसे छक्के छुड़ाता हूं और उसकी मोर्चेबन्दी कितनी देर में उड़ाता हूं।

रामचन्द्र जी-(लक्ष्मण को हृदय से लगाकर) प्यारे भाई! जाओ और अपनी अनुपम वीरता के जौहर दिखाओ, परमात्मा करे कि शीघ्र ही विजय पताका लहराते हुए वापिस आओ।

(दोनों ओर की सेनाओं का सन्मुख डट जाना और अपनी अपनी रण पताकायें वायु में लहराना, दोनों ओर से युद्ध के बाजे पर चोट पड़ना और शूरवीरों का उत्तेजित शब्द करते हुए आगे बढ़ना)

मेघनाद-(ललकार कर) कौनसा वीर मेरे मुकाबले के लिए प्रस्तुत हुआ, जरा सामने आये और अपनी शक्ल तो दिखाए।

लक्ष्मण-आज मैं ही तुम्हारा स्वागत करूँगा।

मेघनाद-यह रंग भूमि नहीं बल्कि रणभूमि है और अब हमारी तुम्हारी बात चीत नोक जबान से नहीं बल्कि नोक शमशीर से होगी, अथवा बर्छी भाले और तीर से

होगी। (बाण छोड़कर) ले सम्भाल, यह तीर तेरे लिये मौत का सन्देशा है।

लच्मण–(रास्ते में ही काटकर) ऐसे ऐसे हजार तीर भी चलाये तो मुझे क्या अन्देशा है।

मेघनाद–यह दूसरा आता है।

लच्मण–(फिर काटकर) देख यह भी खाली जाता है।

मेघनाद–(बाण पर बाण छोड़ता हुआ) सन्तोष रख अब तो रामचन्द्र तेरी सूरत को तरसेगा।

लच्मण–(बार बार पैंतरा बदलता और बाण बरसाता हुआ) जो गरजता है वह ऐसे ही बरसेगा।

(दोनों ओर के योद्धाओं का एक दूसरे पर गजब के तीर बरसाना कईयों का जख्मी होना, कईयों का मर जाना परन्तु सूर्य अस्त होने से एक विशेष बिगुल का शब्द कान में आना दोनों ओर से शस्त्रों का रुक जाना और अपने अपने पहाड़ों को कूच करना)

दूसरा दिन

(दोनों सेनायें कल की भांति एक दूसरे के सम्मुख खड़ी हैं)

मेघनाद कल तु जीवित बच कर खूब गया मगर क्या करूँ कम्बख्त सूर्य भी ऐन समय पर डूब गया।

लच्मण–यह समझले कि आज सूर्यास्त से पहले तेरे भाग्य का सूर्य डूब गया।

मेघनाद—तेरे बाण से ?

लक्ष्मण—हां हां मेरे बाण से समझ अथवा अपने अनुचित अभिमान से।

मेघनाद—(बाण बरसाता हुआ) वह देख मौत आई।

लक्ष्मण-(मुँह तोड़ उत्तर देता हुआ) चल बे उल्लू के भाई।

मेघनाद—इस बार तो तेरा काम तमाम जरूर है।

लक्ष्मण—(एकदम कई बाण छोड़ कर) आज तेरे प्राण नहीं बचेंगे अभी शाम दूर है।

एक पुरुष—(मेघनाद से) कहिये लड़ाई का क्या हाल है, आप का शरीर तो जख्मों के कारण बहुत निढाल है।

मेघनाद—ऐसा कौनसा उपाय है जो मैंने अपनी ओर से कम कर रक्खा है, किन्तु इस लड़के ने तो नाक में दम कर रक्खा है।

वही पुरुष—(चुपके से) उस शक्ति बाण को क्या धोकर पीओगे या देख देख कर जीओगे।

मेघनाद—उसको भी काम में ला चुका हूं, एक बार नहीं बल्कि कई बार आजमा चुका हूं।

वही पुरुष—वह तो ऐसे वस्तु नहीं जिसकी चोट खाली जाये।

मेघनाद—मगर वहां तक पहुँचने भी पाये।

वही पुरुष–इस से तो पाया जाता है कि लक्ष्मण इस विद्या का भी उस्ताद है।

मेघनाद–उस बेचारे की तो क्या बुनियाद है, किन्तु हनुमान को उसकी रोक याद है।

वही पुरुष–हनुमान को यहां से अलग कर देना तो मामूली बात है।

मेघनाद–बस तो फिर मैदान हमारे हाथ है।

(थोड़ी देर बाद हनुमान का गायब हो जाना)

मेघनाद–(लक्ष पूर्वक इधर उधर देख कर) ले अब होशियार हो जा और मरने के लिए तैयार हो जा।

लक्ष्मण–(बाण छोड़कर) अरे बदकार! यदि अपनी कुशल चाहता है तो सामने से फरार हो जा।

मेघनाद–(शक्ति चला कर) यह वह शक्ति है जो छूटते ही शत्रु के कलेजे पर जाकर लगती है।

लक्ष्मण–(लड़खड़ाती जबान से) ह...नु...मा...न...! (मूर्छित हो जाना)।

(लक्ष्मण का मूर्छित होकर गिर जाना तथा मेघनाद का आनन्द के बाजे बजाते हुए लंका की ओर लौटना सुग्रीव आदि का लक्ष्मण को उठाकर अपने केम्प में ले जाना)

कैम्प

(लक्ष्मण जो बेसुध पड़े हैं समस्त सैनिक अफसर उनके आस पास बैठे हैं, कुछ खड़े हैं)

रामचन्द्र–(दूर से आते हुए) कहो लच्मण का क्या हाल है ?

सुग्रीव–(अश्रु भरे नेत्रों से) भगवन् क्या बतायें लच्मण तो कुछ अधिक ही निढाल हैं।

राम०–(लच्मण का सिर अपनी जांघ पर रख कर) आह प्यारे भाई, इस विपत्ति के समय यह कैसी बेवफाई ! जिस बात से डरता था आखिर वही आगे आई।

विभीषण–मेरे ध्यान में तो लच्मण बिल्कुल सही सलामत है क्योंकि उनके चेहरे की बड़ी अच्छी अलामत* है !

रामचन्द्र जी (गाना)

मुझ को बता तो लच्मण हालत यह तेरी क्यों है।
किस नींद में पड़े हो यह बेखबरी क्यों है ॥
उठ कर तू एक दफ़ा तो भैया गले से लग जा।
यह बेरुखी है कैसी यह सितमगरी क्यों है।
तू शेर था बहादुर लाखों में एक दिलावर !
तलवार तेरी लच्मण बेकार धरी क्यों है ॥
क्यों उड़ गया है तेरा वह रंगे अर्गुवानी।
चेहरे पै तेरे एकदम जर्दी सी फिरी क्यों है ॥

*लक्षण।

मैं रो रहा हूं कब से बैठा तेरे सिरहाने ।
इन मेरे आंसुओं की यह बेक़दरी क्यों है ॥
पहलू में लक्ष्मण के जल्दी मुझे लिटा दे ।
ऐ मौत तू ही आजा अब देर करी क्यों है ॥
क्या मुख दिखाऊँगा मैं जाकर अवधपुरी में ।
तकदीर आज मेरी चक्कर में पड़ी क्यों है ॥

नाटक

(लक्ष्मण के मुख पर हाथ फेरकर) लक्ष्मण! लक्ष्मण!! प्यारे लक्ष्मण!!! उठो अब तो बहुत सो चुके (लक्ष्मण के पैर टटोलकर) हाय अफ़सोस! तुम्हारे तो हाथ पाँव भी बिल्कुल ठण्डे हो चुके। (मस्तक चूमकर) आह प्रिय भाई, दे चले दागे जुदाई।

गाना (रागनी सोहनी)

छोड़ जाते हो मुझे क्यों दुःख दिखाने के लिए।
इसलिए ही था बज़िद तू साथ आने के लिए॥
साथ आने का तेरा मकसद यही था लक्ष्मण।
खुद को सुलाने के लिए मुझको रुलाने के लिए॥
क़िस लिए रूठे हो मुझसे क्या खता ऐसी हुई।
अब बुलाऊँ मैं क़िसे तुझको मनाने के लिए॥
ज़ोर बाज़ू पर तेरे ही था भरोसा राम को।
क्या खबर थी आये थे यह दुःख दिखाने के लिए॥

कौन है जिसको कहूंगा और किसे भेजूँगा मैं।
जानकी को कैद रावण से छुड़ाने के लिए॥
घर छुटा भाई छुटे अब दे चले तुम भी दगा।
रह गया मैं जंगलों में खाक उड़ाने के लिए॥
गोद माता की छिनी साया पिता का उठ गया।
फ़लक ने क्या क्या दिए दुःख आजमाने के लिए॥
अब जरा सी देर में ही यह शकल छुप जाएगी।
आजा ऐ भाई भरत आंसू बहाने के लिए॥
रामचन्द्र अब तुम्हें सूरत दिखा सकता नहीं।
कौन जायेगा वहां तुम को बुलाने के लिए॥
देख लो लोगो मेरे हाथों का तोता उड़ चला।
कर लो कोई यत्न लक्ष्मण को बचाने के लिए॥

नाटक

(धाय मार कर) आह! मेरी आंखों के तारे, मेरे जीवन के सहारे। रोते रोते मेरे आंसुओं का खात्मा हो गया, किन्तु तुम्हारा क्यों कठोर आत्मा हो गया। दरो-दीवार मेरी हालत ज़ार को देखकर रो रहे हैं किन्तु जिन के लिए मैं रोता हूं, वह ऐसी गहरी नींद सो रहे हैं कि न करवट लेते हैं, न किसी बात का उत्तर देते हैं (लक्ष्मण का

मुख चूम कर) मेरे वीर ! तुझको किस दुष्ट की हाय खा गई, जो ऐसी ढाई घड़ी की आ गई।

सुग्रीव–भगवन ! कुछ धैर्य धरो रोने को कौन नहीं रो सकता किन्तु इस प्रकार तो लक्ष्मण जीवित नहीं हो सकता। मैं मानता हूं कि इनके शरीर पर घावों का कुछ हिसाब नहीं, किन्तु शुक्र है कि फिर भी लक्षण कुछ अधिक खराब नहीं। इसलिए सोच समझ कर इनका इलाज कीजिए और इस रोने धोने को जाने दीजिये।

रामचन्द्र जी–(ठण्डी सांस लेकर) आह ! किसका इलाज और कैसी दवाई, लक्ष्मण ने तो अब तक आंख भी नहीं उठाई ! अन्याई मेघनाद तेरा वार चल गया और तू लक्ष्मण को मार कर जिन्दा निकल गया। कम्बख्त रावण ! अब तेरे घी के दीपक जल गए और काल के दूत तेरे सिर से टल गये। मेरी दुर्भाग्यता तेरी बाजी चढ़ा गई, और लक्ष्मण की मौत तेरे जीवन के दिन बढ़ा गई। प्यारी सीता अपने छुटकारे की आस छोड़ और रावण की कैद में ही अपने जीवन के दिन तोड़। सुग्रीव जी ! मैं आपकी मेहरबानी का बहुत कुछ मशकूर हूं, किन्तु अपनी भाग्य हीनता से मजबूर हूं। जाओ जाकर अपना राज्य सम्भालो और जरा अंगद को भी मेरे पास बुला लो।

अंगद—(आंसू बहाता हुआ भड़भड़ाती हुई आवाज से) भगवन् ! आपका सेवक हाजिर है।

रामचन्द्र जी–(अंगद को गोद में लेकर) बेटा ! तुम अपने चाचा के साथ अपनी राजधानी में जाओ और राज्य सम्बन्धी कार्यों में इनका हाथ बटाओ। जिस प्रकार तुम्हारे चाचा कहें उनका हुक्म मानना और उनकी आज्ञा का पालन करना प्रथम कर्त्तव्य जानना। प्यारे विभीषण मैंने जो वचन आपको दिया था, अर्थात् लंका का राज्य दिलाने का वादा किया था, उसको मैं पूरा करने से लाचार हूँ, जिसके लिए आप से क्षमा का ख्वास्तगार हूँ। (सर्व उपस्थित गणों से) आपकी सहानुभूति तथा अनुग्रह का जो मुझ पर एहसान है इसका धन्यवाद करने के लिए न मेरे पास शब्द हैं न मुख में जबान है।

विभीषण—महाराज ! मुझे व्यर्थ लज्जित न कीजिए। चूल्हे में पड़े राज और भाड़ में पड़े लंका, यदि लक्ष्मण जी स्वस्थ हो जायें, तो एक लंका क्या हजार लंका इनके सिर पर कुर्बान कर दूँ और यदि आवश्यकता हो तो अपने आप को भी इसी जगह बलिदान कर दूँ।

रामचन्द्र जी–(सामने देखकर) यह कौन खड़ा है, हनुमान ?

हनुमान–(हाथ जोड़कर सिर झुकाये हुए) हाँ कृपा निधान !

रामचन्द्र जी–अच्छा आप भी तशरीफ़ ले आये।

हनुमान–(चुप)

रामचन्द्र जी–भाई रोते क्यों हो, परमात्मा की इच्छा पूरी हो गई, किसी का क्या दोष है, मेरी ही प्रारब्ध सो गई।

हनुमान–निस्सन्देह मैं गलती खा गया और राक्षसों के धोखे में आ गया। (तलवार आगे करके) यह लीजिये मेरा भी झगड़ा निबटा दीजिए और मुझे भी लक्ष्मण के बराबर लिटा दीजिए।

रामचन्द्र का गाना (रागनी भैरवीं)

उठ जाग मुझे पहचान ऐ मेरे वीर वीर वीर।
तुम बिन ऐ लक्ष्मण कौन बंधावे धीर धीर धीर।
टुक आंख खोल ऐ भाई, तुझे नींद किधर से आई।
ऐ लक्ष्मण तेरी दुहाई, जिगर मत चीर चीर चीर।
उठ जाग० ॥
तज कर सब ठाठ अमीरी, लो मेरे साथ फकीरी।
यह है मिलाप अखीरी, था इतना सीर सीर सीर।
उठ जाग० ॥
तुम तोड़ मेरे से नाता, कहो चल दिए कहां भ्राता।
जब सुनेगी तेरी माता, लगेगा तीर तीर तीर।
उठ जाग०।

मांगेगा राज विभीषण, क्या जवाब दूंगा लक्ष्मण !
बर्बाद कर गया दुश्मन, दुष्ट वे पीर पीर पीर ।
उठ जाग० ॥

अभी भरत ने मिलने आना, उनको तू मिलकर जाना ।
मेरी आंखों में नहीं पाना, तब तक नीर नीर नीर ।
उठ जाग० ॥

नाटक

सुग्रीव—महाराज युद्ध में मरना मारना, स्वयं घायल होना या दूसरे को घायल करना साधारण सी बात है, किन्तु यों स्त्रियों की भांति रोना पीटना बिल्कुल वाहियात है। आप धैर्य रखें लक्ष्मण जी का इलाज करेंगे और निःसन्देह विभीषण ही लंका का राज करेंगे।

रामचन्द्र जी का गाना
(रेख्ता भैरवीं तर्ज—दम देके तुम तो जाते हो)

खोलो तो भाई आंखें यह कैसा सितम हुआ,
अब तक भी तेरा लक्ष्मण सोना न कम हुआ।
घर से निकल कर भाई शत्रु की नजर में,
तूने दिया बिछोड़ा यह कैसा जुल्म हुआ।
१४ बार से अलग था बे वतन आवारा.
मौजूदगी में तेरी तो मुतलक न ग़म हुआ।

सुन कर विलाप मेरा शत्रु भी रो पड़े,
तुमको दया न आई यह अच्छा रहम हुआ।
जाते हो कहां भाई तुम छोड़ कर मुझे,
क्या जिन्दगी है मेरी जब तेरा न दम हुआ।
तनहा न जाने दूँगा दोनों ही चलेंगे,
रंजो अलम यहीं यह सारा खतम हुआ।
सीता की वापसी की उम्मेद क्या रही,
तेरा ही भरोसा था तू राही अदम* हुआ।
पिछले तो सभी दुखड़े मैं भूल गया था,
'यशवन्तसिंह' लेकिन यह गहरा जखम हुआ।

नाटक

हाय अफसोस! मेरा इस कदर रोना चिल्लाना सब फिजूल गया। (लच्मण के मस्तक को चूम कर) आह भ्राता तू मुझको बिल्कुल ही भूल गया। परमेश्वर के वास्ते जरा अपनी जबान को तो हीला और मुझे एक बार भाई कह कर तो बुला। (ठोडी हिला कर) लच्मण! लच्मण!! प्यारे लच्मण!! आह यह आलमे बेहोशी* है, अथवा सदैव की खामोशी है।

गाना बतर्ज—दिल बेकरार सोजा

ज्यादा हठी न हो तू लच्मण बेदार होजा,

*यमलोक का यात्री *मूर्छित अवस्था

दुश्मन से लेंगे बदला जरा होशियार होजा।
ले लूँ बलायें तेरी भैया गले लगा कर,
उठ कर मैं गले का लच्मण तू हार होजा।
तेरी इनायतों का कायल हूँ सच्चे दिल से,
लेकिन यह कब कहा था यों खाकसार होजा।
रंजीदा देख मुझको तू गम में डूब जाता,
इस ग़म में भी तो मेरा तू गमगुसार होजा।
मेरे पसीने की जगह तूने लहू बहाया,
किसको कहूंगा अब मैं मेरा जां निसार होजा।
एक दिन में लच्मण बलिहार मुझ पै दम दम,
पहले सौ बार होता अब एक बार होजा।
मिलने को वीर तेरे आते हैं भरत भाई,
कर पेशवाई उनकी उठकर तैयार होजा।
बिन आपके सहारा ईश्वर नहीं है कोई,
तू राम का सहायक परवरदिगार होजा।

नाटक

अंगद—(हाथ जोड़कर) भगवन! मेरा आप से कुछ निवेदन करना छोटा मुँह बड़ी बात है, क्योंकि मेरे जैसे कल के बच्चे की आपके सामने क्या बिसात है, जिसकी बुद्धि केवल खाने और खेलने तक ही महदूद

है इसलिए सूर्य को दीपक दिखाना बिल्कुल बेसूद है। यह काम तो हमारे जैसों का था जो आप कर रहे हैं, किन्तु हम तो धीरज किये बैठे हैं और आप आहें भर रहे हैं। यदि हम रोते तो आशा थी आप हमारी धीर बंधायें, किन्तु आपको तसल्ली देने के लिए हम किसको बुलायें।

रामचन्द्र—बेटा अङ्गद! तुम्हारा कहना बिल्कुल सही, किन्तु क्या करूँ मेरी तबियत मेरे आधीन नहीं रही। इस नागहानी दुख ने मेरे दिल को बिल्कुल हिला दिया और लक्ष्मण की असमय मृत्यु ने मेरा सब धैर्य खाक में मिला दिया। यद्यपि पिछली आपदाओं का बोझ भी कुछ कम न था, किन्तु लक्ष्मण की उपस्थिति में मुझको उनका बिल्कुल गम न था। परन्तु अब तो घर के रहे न घाट के रहे, न इधर के रहे न उधर के रहे। (लक्ष्मण का मुँह चूम कर) आह मेरे जीवन के सहारे, मुझको यहां छोड़कर किधर को पधारे?

गाना लावनी जिला

तेरी मौत से भाई मेरा सीना चकना चूर हुआ।
क्या अपराध हुआ मुझसे जो तू आंखों से दूर हुआ॥
पूछेंगी तेरी माता लक्ष्मण को साथ नहीं लाया।

शत्रुघ्न यह कहेगा आकर कहां हैं मेरी मां का जाया ॥
तेरी मौत को अवधपुरी के लोगों ने जब सुन पाया ।
यही कहेंगे नारी कारण भाई को मरवा आया ॥
किस किस को क्या कहूंगा मैं तो सभी तरह मजबूर हुआ
क्या अपराध०

राज विभीषण मांगेगा तो उसको क्या उत्तर दूँगा ।
कहेगा जब दो मेरी अमानत क्या मैं अपना सिर दूँगा ।
तू कुर्बान हुआ मुझपर मैं जान तेरे ऊपर दूँगा ।
बोल नहीं तो मैं भी अपना खात्मा कर दूँगा ॥
जर्रा जरा सी हिला तो लच्मण क्यों इतना मगरूर हुआ
क्या अपराध०

यह तो सच है तू मुझसे पहले दिन से शरमाता था ।
बेशक भाई तू मेरे नहीं सम्मुख आंख उठाता था ।
जब मैं तुझे बुलाता था तू मेरे सामने आता था ।
बिन कसूर ही लच्मण तू पानी पानी हो जाता था ॥
क्या तेरी उस पिछली आदत का ही यहां जहूर हुआ
क्या अपराध०

यों तो मुझको अरसे से गरदिश ने आकर घेरा है ।
लेकिन आज हुआ आंखों में चारों ओर अँधेरा है ॥
मेरी किस्मत उल्ट गई कुछ दोष न भाई तेरा है ।
जगह भी उतनी जल जायेगी जहां राम का डेरा है ॥

बद किस्मत, कम्बख्त और मन्हूस राम मशहूर हुआ ।
क्या अपराध०

इस सदमे को कहो तो कैसे भाई भरत सहारेगा ।
सुन कर तेरी मौत टक्करें दीवारों से मारेगा ।
प्राण त्याग देंगी मातायें शत्रुघ्न स्वर्ग सिधारेगा ।
राम तुम्हारे साथ चलेगा जहां तू वीर पधारेगा ॥
सारा कुल हो जाये नष्ट क्या यह तुझको मंजूर हुआ ।
क्या अपराध०

नाटक

मेरे भ्राता ! तुझे मेरी इस दुखित अवस्था पर भी तरस नहीं आता । इस प्रकार तो यदि मैं किसी अपने बैरी के पास भी जा कर चिल्लाता, तो जो कुछ चाहता वही बख्शवा लाता किन्तु तू इतनी खुशामद करने पर लब तक नहीं हिलाता । हाय ! हाय !! ऐसा गजब आखिर इस बेरुखी का कुछ सबब ? (आकाश की ओर देख कर) आ फलक कज रफ्तार* ! तुझपर परमेश्वर की मार ! अरे कम्बख्त, इम्तिहान भी लेता है तो ऐसा सख्त ! अरे जालिम ! निर्दयी ! दया कर । (दीवाना वार, शस्त्रों को इधर उधर फैंक कर) जाओ, जाओ, चूल्हे में पड़ो, जब तुम समय पर ही काम न आये, तो कौन मूर्ख है जो व्यर्थ

*टेढी चाल वाले आकाश ।

तुम्हारे बोझ को उठाये। (पुनः उठाकर) नहीं नहीं, अभी नहीं, भाई का बदला अवश्य लेकर छोड़ूँगा और कपटी मेघनाद का अच्छी तरह अभिमान तोड़ूँगा। अत्याचारी मेघनाद! बस समझले कि अब तेरा काल मेरे अधिकार है, कल को तेरा सिर है और मेरी तलवार है।

गाना कव्वाली

कत्ल करने को शत्रु के यही तलवार काफी है।
बिरादर नींद से होना तेरा बेदार काफी है॥
अदू[1] की फौज में जाके मैं वह घमसान कर दूँगा।
नहीं इमदाद[2] की ख्वाहिश तेरा इजहार काफी है॥
न इतनी फौज लश्कर की मुझे मुतलक जरूरत है।
फक़त तू लक्ष्मण मेरा सिपहसालार काफी है॥
तेरे ही आश्रय से नीमजां[3] में जान आयेगी।
हिलाना लब तेरा भाई फक़त इक बार काफी है॥
न ख्वाहिश है अयोध्या की न सीता की तमन्ना[4] है।
मेरी दाईं भुजा मुझको तेरा दीदार[5] काफी है॥
तेरे सिर पर से कर डालूँ निछावर राज दुनियां का।
इधर तू और उधर मैं हूं यही दरबार काफी है॥
न भूखा ऐश इशरत का तेरे सिर की कसम भाई।
तेरा दीदार काफी है तेरी गुफ्तार काफी है॥

१ शत्रु २ सहायता ३ अर्धे जीवित ४ इच्छा ५ दर्शन .

जबां से इक दफा भाई मुझे कह कर बुला लक्ष्मण।
मुझे यह घूंट अमृत की मेरे 'सरदार' काफी है।

सुग्रीव का गाना (बहरे कव्वाली)

तुम्हें लक्ष्मण बहुत प्यारा हमें क्या कम प्यारा है।
मगर ईश्वर की इच्छा में किसी का क्या इजारा है॥
प्रथम तो इस मुसीबत से हुए थे नीमजां सारे।
और इस पर आपके अनुचित रुदन ने मार डारा है॥
समय से पहले कैसे कर लिया यह अपने निश्चय।
किया जो आपने अनुमान यह मिथ्या हो सारा है॥
जो बातें जाहिरी इनमें कोई लक्षण नहीं ऐसा।
कि जिससे हो यकीं ऐसा स्वर्ग लक्ष्मण सिधारा है॥
यदि बिलफर्ज ऐसा ही हो तो क्या अचम्भा है।
यह आखिर युद्ध भूमि है या खाला का द्वारा है॥
मिठाई तो नहीं बटती यही तो रण में होता है।
कहीं पर खुद मरे हैं और कहीं शत्रु को मारा है॥
ताज्जुब है कि आप जैसे जहां दीदा बहादुर भी।
करें ऐसा रुदन गोया लिया जीवन उधारा है॥
तसल्ली आप रक्खें लक्ष्मण बिल्कुल सलामत है।
फक़त आलम बेहोशी है यकीं पुख्ता हमारा है।

नाटक

श्रीमान जी ! जरा तबियत को सम्भालिये और इन निकम्मे विचारों को चित्त से निकालिये ! प्रथम तो परमेश्वर की दया से लक्ष्मण तन्दुरुस्त है और यदि मान भी लें कि आपका ख्याल ही दुरुस्त है तो रणभूमि में हुआ ही क्या करता है। आखिर जो अपने शत्रु से जाकर लड़ता है वह अपना सिर पहले हथेली पर धरता है या तो उसे मारता है अथवा खुद मरता है। यह सब जानते हुए भी आपका यह हाल है, फिर लक्ष्मण जी के सम्बन्ध में तो आपका बिल्कुल मिथ्या ख्याल है। यदि शत्रु को यह विदित हो गया कि आप में इतना ही इस्तक़लाल है, तो ऐसी अवस्था में सफलता का मुँह देखना सख्त मुहाल है।

रामचन्द्र जी—हाँ भाई संसार में ऐसा कोई नहीं जो उपदेश करना न जानता हो, किन्तु ऐसा कोई है जो दूसरे का दुःख भी अपने जैसा मानता हो। कल तुम्हीं बाली के मृतक शरीर पर अपना जानी दुश्मन होने पर भी धायें मार मार कर रो रहे थे, यहां तक कि तुमने आत्मघात करने को भी कहा, परन्तु वह समय तुमको याद नहीं रहा। आह ! लक्ष्मण जैसा भाई तो सारे विश्व में दीपक लेकर ढूंढने से भी नहीं मिल सकता, जो प्रत्येक गुण में अपनी समता नहीं रखता। प्यारे

लक्ष्मण मुझको—

कोई कहता है दीवाना कोई कहता है सौदाई।
मैं सब से यही कहता हूं कि बिल्कुल ठीक है भाई॥

परन्तु मैं फिर भी उनका कृतज्ञ हूं कि कुछ तो कृपा करते हैं, कुछ तो समवेदना का दम भरते हैं। जिसके साथ ऊपरी सम्बन्ध है उनको तो मेरा यहां तक ख्याल है, किन्तु जो अपना भाई है, उसका यह हाल है कि ज़रा सा लब हिलाना भी सख्त मुहाल है, अच्छा भाई यह संसार की चाल है।

(गाना बहरे तवील)

क्यों पड़ा है चढ़ा है तुझे क्या नशा,
खोल आंखें जबां को हिला लक्ष्मण।
तेरा भाई सौदाई है रो रो हुआ,
पर न आई तुझे कुछ दया लक्ष्मण।
मेरी नैया ऐ भैया भंवर में पड़ी,
बन खिवैया किनारे लगा लक्ष्मण।
छोड़ मुझको यहां तुम चले हो कहां,
कुछ पता तो वहां का बता लक्ष्मण।
दुःख दिखाने जलाने सताने को तू,
यों मिठाने रुलाने को था लक्ष्मण।

रंजो ग़म को अलम को भुला एकदम,
छोड़ हमको अदम को चला लक्ष्मण।
ऐ बहादुर निरादर न कर तू मेरा,
करूं आदर निरादर को क्या लक्ष्मण।
छोड़ घर को नगर को किधर को चला,
ज़रा सिर को इधर को उठा लक्ष्मण।
वीर तकदीर आखीर फूटी मेरी,
धीर रघुवीर की तू बन्धा लक्ष्मण।
कुछ बहाना ठिकाना बताना मुझे,
फिर रवाना हो जाना ज़रा लक्ष्मण।
जो अकड़ कर पकड़ कर ले जाये तुझे,
लूँ जकड़ यहीं पर बुला लक्ष्मण।
और चलता न 'यशवन्तसिंह' कुछ यहां,
हा चला लक्ष्मण ! हा चला लक्ष्मण !

नाटक

जामवन्त—क्या आपको विश्वास है कि यों रोने धोने से कोई सन्तोष-जनक परिणाम होगा अथवा लक्ष्मण जी को कुछ आराम होगा ?

रामचन्द्र—इस बात को कौन नहीं जानता, परन्तु क्या करूँ मन नहीं मानता।

जामवन्त—आप वैद्य को बुलाइए और इनका निरीक्षण कराइये, अन्यथा विलम्ब करने से विष का असर

सब रक्त में सरायत कर जायेगा, फिर तो सारे शरीर में जहर ही जहर भर जायेगा।

राम०—(हनुमान जी से) जाओ, जरा वैद्यजी को बुला लाओ।

(हनुमान का शीघ्र चले जाना और थोड़ी देर पश्चात् सुषेण वैद्य सहित आना)

सुषेण—(लक्ष्मण के घावों और नाड़ी को ध्यान से देखकर) ओ हो बड़े गहरे घाव हैं।

राम०—क्यों? कुछ है उम्मेद अथवा बिल्कुल ही आश नहीं।

सुषेण—अवस्था तो अच्छी है किन्तु शोक कि जिस औषधि की आवश्यकता है वह मेरे पास नहीं।

राम०—वह कौनसी औषधि है, सम्भव है खोज करने से मिल जाये।

सुषेण—कोई ऐसी बहुमूल्य अथवा दुर्लभ औषधि नहीं। अमृत संजीवनी नामक एक बूटी है जो गन्धमादन पर्वत पर बहुतायत से उत्पन्न होती है। अगर वह बूटी आ जाये तो लक्ष्मण जी शर्तिया तन्दुरुस्त हो सकते हैं, किन्तु शर्त यह है कि सूर्योदय से पहले आये अन्यथा पीछे उसका आना न आना एक समान है क्योंकि लक्ष्मण केवल रात भर का मेहमान है।

राम०—(हनुमान की ओर देखकर) मेरे बहादुर जरनैल!

अब किस बात का विचार है, मेरे तथा लक्ष्मण के जीवन का तुम्हारी हिम्मत पर दारोमदार है।

हनुमान–मुझे कब अस्वीकार है, यदि आवश्यकता हो तो मेरा सिर भी आपके चरणों पर निसार है। (सुषेण से) परन्तु उस बूटी की क्या पहचान है क्योंकि मेरे लिए तो साधारण घास और अमृत संजीवनी एक समान है।

सुषेण–वह बूटी रात्रि के समय दीपक की भाँति चमकती है, अतएव उसकी पहचान कर लेना बिल्कुल आसान है।

राम०–अब आप विमान पर आरूढ़ हो जाइये और देर न लगाइये।

हनुमान–(रामचन्द्र जी के चरणों में झुक कर) अब या तो बूटी लेकर ही आऊँगा अन्यथा जीवन पर्यन्त मैं भी आपको अपना मुख न दिखाऊँगा।

गंधमादन पर्वत

(हनुमान जी अमृत संजीवनी की खोज में पहाड़ की विविध चोटियों पर फिर रहे हैं और सारे पौधों को उलट पुलट कर रहे हैं।)

हनुमान–(हैरान होकर मन ही मन में) समस्त पर्वत को देख लिया, सारे पौधों को उलट पुलट किया किन्तु जो निशानी वैद्य जी ने बताई, वह बूटी अभी तक नजर न

आई, न कोई बूटी चमकती है, न कोई आग के सदृश दमकती है। क्या करूँ, क्या बनाऊँ अब कौन सी बूटी लेकर जाऊँ। इधर समय की तंगी का ध्यान, उधर बूटी का मिलना कठिन महान। ऐसा न हो ,कि यह कोई और पहाड़ हो जो अमृत संजीवनी की ओर से बिल्कुल ही उजाड़ हो। (जेब से नक़शा निकाल कर और उसे ध्यान सहित देख-कर) नहीं नहीं पहाड़ तो यह वही है, किन्तु क्या इस पर अमृत संजीवनी नहीं रही है। (आकाश की ओर देखकर) अभी तो आधी से अधिक रात है, प्रयत्न कर, सफलता परमेश्वर के हाथ है। वह सामने वाले जो टीले हैं, उन पर कुछ चिन्ह पीले पीले हैं, कदाचित वह अमृत संजीवनी का ही प्रकाश हो और वहीं अपनी पूर्ण आशा हो (दौड़ कर उन चोटियों पर चढ़ कर) अहा हा, यहां तो ऐसा प्रतीत होता है मानो सहस्रों दीपक जल रहे हैं, अथवा बहुत से सूर्य निकल रहे हैं, वाह री अमृत संजीवनी जहां पर तेरी ज्योति हो, वहाँ कब सम्भव है कि कोई बीमारी भी होती हो, निःसन्देह तू अमृत का भण्डार है और मृतक शरीर में प्राण डालने की शक्ति का तुझ में सँचार है। (जल्दी जल्दी बूटी तोड़ कर) शुक्र है कि यह मुश्किल हल हो

गई और मेरी मेहनत सफल हो गई। (फिर झिझक कर) ओ हो भूल गया, मेरा तो यहां आना ही फिजूल गया (माथे पर हाथ रखकर) अरे नामाकूल! यह तो पूछा ही नहीं कि इसके पत्ते चाहियें या फूल, जड़ी चाहिये या फल, अब क्या बनता है मारी गई अक्ल। यदि यहां पूछूँ तो किससे एक मैं हूं एक यह पहाड़, बाकी चारों ओर बियाबान उजाड़। (कुछ सोच कर) बस बस यही ठीक है, अब अधिक उधेड़-बुन करना बेफायदा है, क्योंकि दिन निकलने से पहले तो मेरा वहां पहुँचने का वायदा है। इस बूटी के बहुत से पौदों को जड़ों समेत उखाड़ कर ले जायेंगे और जिस भाग की उन्हें आवश्यकता होगी वह स्वयँ काम में ले आयेंगे। बस यही तजबीज सबसे आला है, (जल्दी-जल्दी बूटी उखाड़ कर) किन्तु जल्दी करना चाहिये क्योंकि अब दिन निकलने वाला है।

रामचन्द्र जी की व्यकुलता

गाना (रागिनी तेलंग)

रात भी आज तो बारात बनी जाती है।
कैसी तेजी से बनी और ठनी जाती है॥
लोग तारीफ में तेरी यह कहा करते हैं।

कबुक* रफ्तार तो दुनियां में सुनी जाती है ॥
आज मस्ताना रवी भूल गई ओ जालिम ।
अपनी आदत के खिलाफ ऐसी तनी जाती है ॥
या मेरे साथ है तुझको भी अदावत कोई ।
इस तरह से जो जली और भुनी जाती है ॥
सजन सकारे जायेंगे नैन मरेंगे रोय ।
विधना ऐसी रैन कर जो भोर कबहुँ न होय ।
ना मुरादों की तू करती है मुरादें पूरी ।
तू जमाने में रहम दिल भी गिनी जाती है ॥
आज की रात यहीं रैन बसेरा करले ।
तेरे रहने से मेरी जानकनी जाती है ।
यारे मन फरदारवद रोजे शिताब ।
या इलाही ता न गोयम बर न आयद आफताब ।
मुझको तो मार चली और किसे डसने को ।
फन उठाये हुए तू नाग फनी जाती ॥

नाटक

ओह ! आज रात भी पंख लगाये दौड़ी जा रही है, न जाने इसे क्या मौत खा रही है, अथवा पीछे कोई शत्रु की फौज आ रही है । किन्तु इस बेचारी का भी क्या कसूर है, इसके सिर पर भी कोई उच्च अफसर जरूर है, जिस

*विशेष पक्षी जिसकी चाल प्राणियों में सुन्दर मानी जाती है ।

की आज्ञा से यह भी मजबूर है। ज्यों-ज्यों रात खतम होती जाती है, लक्ष्मण जी के जीने की आशा कम होती जाती है। आह सूर्य देवता! तू संसार के लिए जो प्रकाश लेकर आयेगा, परन्तु तेरे उदय होते ही मेरे भाग्य का सूर्य डूब जायेगा। उधर सृष्टि रात भर की नींद के पश्चात् बेदार होगी इधर मौत लक्ष्मण के गले का हार होगी। परमेश्वर के वास्ते ही कुछ यत्न बनाले और थोड़ी देर के लिये अपने आपको कहीं छिपाले। किन्तु तेरे भी कुछ आधीन नहीं, क्योंकि तू स्वयं स्वाधीन नहीं। तेरे पीछे भी एक जबरजस्त पंजा है और वह ईश्वरीय नियम का शिकंजा है। प्रभो! क्या वह नियम टल नहीं सकता और यह टाइम टेबिल आज की रात बदल नहीं सकता। यदि कोई ऐसा नियम हो जो इस नियम पर बलवान हो, अथवा कम से कम इसके समान हो तो आप ही मेरी विनय को मन्जूर कीजिये और इनको दूसरी आज्ञा पाने तक अपनी अपनी जगह पर रहने के लिए मजबूर कीजिये, अन्यथा यदि इनकी गति का यही हाल है, तो हनुमान का नियत समय पर पहुँचना सख्त मुहाल।

गाना (बतर्ज कव्वाली)

तू ही स्वीकार करले ओ फलक यह बात थोड़ी सी।
तेरा अहसान मानूँगा बढ़ा दे रात थोड़ी सी॥

किये हैं जिस क़दर तू ने जुल्म सब भूल जाऊँगा।
यदि दे दे मुझे तू फ़क़त यह खैरात थोड़ी सी ॥
न जब तक मैं कहूं तुझको न सूरज को निकलने दे
न माने तो उसे दे दे मेरी हयात* थोड़ी सी ॥
उमर भर मैं तेरा हरगिज न यह उपकार भूलूंगा।
तू कर दे मेहरबानी यह हमारे साथ थोड़ी सी ॥
इधर सूरज निकलने का जमाना मुन्तज़िर होगा।
मगर मेरे लिए तो मौत है प्रभात थोड़ी सी ॥
हमेशा एक जैसी चाल क्यों रखता है ओ जालिम।
दुहाई है बदल दे आज तो आदात थोड़ी सी ॥
मुझे तू दान दे दे जिन्दगी मेरे बिरादर की।
यह भिक्षा मांगता हूं आज जी के साथ थोड़ी सी ॥
हर एक की लक्ष्मण मुझ से खुशामद क्यों कराता है।
हिला दे तू जबां अपनी ऐ मेरे भ्रात थोड़ी सी ॥

नाटक

(आकाश की ओर देखकर) ऐसा प्रतीत होता है कि सूरज निकलने वाला है, क्योंकि पूर्व की ओर कुछ कुछ उजाला है। ओ जालिम! ज़रा सबर कर, नहीं तो ग़ज़ब हो जायेगा, तु सारे संसार को तो जगायेगा परन्तु लक्ष्मण सदा की नींद सो जायेगा।

* जीवन

सुग्रीव–नहीं महाराज ऐसा क्या अन्धेर है, अभी सूरज के निकलने में बहुत देर है।

रामचन्द्र जी–वह देखिये पूर्व की ओर रोशनी नमूदार* है।

सुग्रीव–(गौर से देखकर) मुबारिक हो, यह रोशनी सूरज की नहीं बल्कि यह तो हमारा बहादुर सिपहसालार है।

रामचन्द्र जी—कौन हनुमान!

सुग्रीव–निस्सन्देह हनुमान, यह देखिये सामने विमान, अब तो हुआ इतमीनान।

रामचन्द्र जी–(हाथ जोड़कर) धन्य हो सर्व शक्तिमान आपका धन्यवाद करने के लिए न जबान में बल न मुख में ज़बान।

(हनुमान का दौड़ कर रामचन्द्र जी के चरणों में गिर पड़ना तथा उनका तुरन्त गले लगाना

सुषेण—ज़रा मेरी ओर आओ और वह बूटी मुझे दिखाओ।

हनुमान–(विमान से बूटी निकाल कर) लीजिये, लीजिये, लीजिये।

सुषेण—(आश्चर्य भाव से) वाह वाह! तुम तो पहाड़

* प्रकट

का पहाड़* ही उठा लाये।

हनुमान-और क्या करता, न तो चलती बार आपने कहा और न मुझे पूछना याद रहा कि इसका कौन सा हिस्सा दरकार है, तथा उसकी किस क़दर मिक़दार है! वहां जाकर जब यह प्रश्न उपस्थित हुआ, तो चित्त बहुत व्यथित हुआ। अन्त में सोचते सोचते यह सलाह करली और बहुत सी बूटी जड़ समेत उखाड़ कर विमान में भरली।

सुषेण-(अपने कम्पौंडर से) पहले घावों को अच्छी तरह धोकर साफ करदो और फिर इस बूटी की जड़ को रगड़ कर घावों में भर दो! (दूसरे कम्पौंडर से) तुम इसके पत्तों को कूट कर इसका पानी निकालो और थोड़ा थोड़ा लक्ष्मण के मुँह में डालो। (थोड़े फूल लेकर) मैं इनकी नस्वार बना कर इन्हें सुँघाता हूं, और अभी लक्ष्मण को होश में ले आता हूं।

रामचन्द्र जी-(कुछ देर के पश्चात) अभी तक तो इस बूटी ने अपना गुण नहीं दिखाया, क्योंकि लक्ष्मण को तो बिल्कुल होश नहीं आया।

सुषेण-महाराज! पूरे दस बारह घन्टे से लक्ष्मण बिल्कुल

*यह एक मुहावरा था जो बूटी की बहुतायत को देखकर सुषेण ने कहा था, जिसको बहुत से लोग हनुमान का सचमुच पहाड़ उठा लाना ही स्वीकार कर बैठे।

बेसुध पड़ा है, इसके अतिरिक्त इनके सारे शरीर में ज़हर ही जहर भरा हुआ है, अर्थात दूसरे शब्दों में लक्ष्मण बिल्कुल मरा हुआ है, आखिर जब विष का प्रभाव···

लक्ष्मण–(अंगड़ाई लेकर) अच्छीं अच्छीं अच्छीं

सुषेण–(तुरन्त एक औषधि उनके मुँह में डाल कर) लक्ष्मण जी ! लक्ष्मण जी !! कहो क्या हाल है ?

लक्ष्मण–(बड़ी धीमी आवाज से) भाई !

रामचन्द्र जी—(प्रेम उद्वेग से उनको गले लगाकर) हाँ भाई ! शुक्र है तूने जबान तो हिलाई, अब ज़रा जान में जान आई ।

सुषेण–आप कृपा करके दूर ही रहिये और इन्हें कुछ न कहिये, क्योंकि अभी इनके शरीर में रेशा है और प्रेम उद्वेग के कारण घावों के खुल जाने का अन्देशा है ।

(समस्त कैम्प में खुशी के बाजे बजना और चारों ओर से रामचन्द्र जी को बधाई के शब्द आना ।
हनुमान का रामचन्द्र जी के चरणों में सिर झुकाना)

तीसरा दिन (घमसान युद्ध)

(दोनों सेनाओं में गजब का जोश बढ़ा हुआ है और हर एक को क्षत्रियता का जोश चढ़ा हुआ है)

हनुमान–(गर्ज कर) आओ आओ जरा आगे पांव बढ़ाओ ।

धूम्र–(तलवार लेकर उछलता हुआ) आता हूं और

तुझे अभी यमलोक पहुँचाता हूं।

हनुमान–क्यों इतना उछलता है, कोई घड़ी दुनियां की हवा खा ले।

धूम्र–(तलवार का एक हाथ मार कर) क्यों बिना आई मौत मरता है, अच्छा है कि अब भी भागकर प्राण बचा ले।

हनुमान–(गदा से उसकी खोपड़ी फोड़कर) यह पड़े हैं तेरी खोपड़ी के टुकड़े उठा ले।

अकम्पन–सावधान! जाने न पायेगा।

अङ्गद–(मार्ग रोक कर) मुझ से बचकर कहां जायेगा?

अकम्पन—तेरा बीच में पड़ने का क्या काम है?

अङ्गद–तू नहीं जानता मेरा क्या नाम है?

अकम्पन–हां, हां, जानता हूं कि तू रामचन्द्र का एक निर्लज्ज कुल घातक और तुच्छ गुलाम है।

अङ्गद–(उत्तेजित होकर तलवार का एक भरपूर हाथ मारकर) पड़ा रहे, तेरे जीवन का यही परिणाम है।

(एक से दो कर दिए)

वज्रबाहु–सम्भल जा, अब वज्रबाहु तेरी मौत का सन्देशा लिए आता है।

नल—(बीच में बाधक होकर) जरा ठहर किधर मुँह उठाये जाता है।

वज्रबाहु—(उपहास करता हुआ) तुझे लड़ाई से क्या, जाकर अपनी ईंटें फोड़।

नल—खैर कुछ फोड़ना ही है, ईंट न सही तेरा सिर सही।

बज्रबाहु-क्यों बुद्धि मारी गई है, यह शिल्प कर्म नहीं बल्कि लड़ाई है।

नल-(एक ही घूँसा मारकर) जरा चुप रह, क्या बक बक लगाई है।

बज्रबाहु-(उद्विग्न हो तलवार चलाता हुआ) तू घर से असंतुष्ट होकर तो नहीं आया ?

नल-(एक ही वार से काम तमाम करके) यह पड़ा है राक्षसों तुम्हारा ताया।

(परस्पर दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर पिल पड़ना और दू बदू होकर लड़ना। घोर संग्राम के पश्चात् लंका की सेना का पराजित होकर भाग जाना और बानरी सेना का उत्तेजित शब्द तथा उत्साह पूर्ण जयकारे लगाते हुए अपने कैम्प में वापिस आना)।

चौथा दिन

राजा सुग्रीव और रणधीर कुम्भकरण

(राक्षस सेना कल की पराजय का धब्बा धोने के लिए कमर बस्ता है और सबके आगे रणधीर कुम्भकरण की विशेष सेना का दस्ता है)

विभीषण-[रामचन्द्र जी से] महाराज ! आज के युद्ध को साधारण युद्ध न समझिये बल्कि एक एक प्रलय की घड़ी है, वह देखिये ! राक्षस सेना किस दृढ़ता से खड़ी है। फौज की कमान कुम्भकरण ने अपने आप सम्भाली है, जिससे प्रकट होता है कि आज प्रलय ही आने वाली

है क्योंकि यह पुरुष उस समय शस्त्र उठाता है जब कोई विशेष आवश्यकता हो अथवा अधिक भीषण अवस्था हो। अन्यथा हर समय नशे में प्रमत्त रहता है, और जब शस्त्र उठा ले, तो देखने वाला चकित रहता है। इस लिये आज विशेष एहतियात रखना, बल्कि मेरी राय में तो सैन्य का संचालन अपने हाथ रखना।

सुग्रीव–आप कुछ चिन्ता न कीजिये और मुझको उसके मुकाबले पर जाने की आज्ञा दीजिये।

रामचन्द्र जी–आप इस हठ को जाने दो, और कुम्भकरण से मुझको ही हाथ मिलाने दो।

सुग्रीव—आखिर कुम्भकरण काई खुदा तो नहीं, यदि कोई ऐसी ही अवस्था हुई तो आप भी हम से कोई जुदा तो नहीं।

(बिगुल की आवाज आना और दोनों सेनाओं का सम्मुख जम जाना)

कुम्भकरण–(खड्ग हिला कर) जरा सामने आओ, वह कौन काल का अभिलाषी है, कुम्भकरण की तलवार भी एक मुद्दत से खून की प्यासी है।

सुग्रीव–जरा आगे आ, ताकि तेरी प्यास बुझाऊँ।

कुम्भकरण–जरा गिरेबान में मुँह डाल कर देख, तू भी अपने आपको शूरवीरों में गिनता है।

सुग्रीव–निर्लज्ज ! तू भी बोलने को मरता है और बड़े गौरव से रावण का भाई होने का दम भरता है।

कुम्भकरण–(प्रहार करके) जान पड़ता है कि तू अवश्य मृत्यु का स्वाद चक्खेगा।

सुग्रीव–(तलवार चलाकर) यदि मैंने तेरी मरम्मत न की तो तू भी क्या याद रक्खेगा।

कुम्भकरण–(बाण चलाकर) मूर्ख ! वह देख तेरी मौत सामने खड़ी हँस रही है।

सुग्रीव–(तलवार का वार करता हुआ) यों क्यों नहीं कहता कि आज मेरी जान मुसीबत में फँस रही है।

(सुग्रीव का लड़ते लड़ते अशक्त हो जाना और कुम्भकरण के अविश्रांत बाणों से घायल होकर गिर जाना, वानर सेना के पांव उखड़ जाना, राक्षस सेना का सुग्रीव को मूर्छित अवस्था में उठाना तथा रामचन्द्र जी हनुमान आदि का आना)

हनुमान–(ललकार कर) ठहर ठहर कहां जाता है ?

कुम्भकरण–क्यों अपने काल को बुलाता है ? क्या तू भी सुग्रीव के पास पहुँचना चाहता है ?

हनुमान—अरे कायर, किस करतूत पर इतना अकड़ रहा है और ऐंठ कर बातें कर रहा है ?

कुम्भकरण–(एक गदा मार कर) पीछे हट कर मर, क्यों व्यर्थ सिर पर चढ़ रहा है।

(हनुमान का मूर्छित होना)

अङ्गद–(रामचन्द्र से) कुम्भकरण तो गजब ढा रहा है, जिस तरफ पड़ता है मैदान साफ करता जा रहा है, मानो यह तो आज ही युद्ध की समाप्ति करने की सौगन्ध खा चुका, यदि अब भी इसका हाथ किसी प्रकार न रुका तो सांझ तक तो लाखों के ढेर लगा देगा, जो शेष रहेंगे उनको वैसे भगा देगा।

रामचन्द्र जी–निःसन्देह कुम्भकरण एक प्रत्यक्ष काल है, साहस और वीरता में अद्वितीय एवं बेमिसाल है। परन्तु जो कुछ इसको करना था, वह कर चुका, अब कुम्भकरण को जिन्दा न समझो, बल्कि वास्तव में मर चुका।

कुम्भकरण–(रामचन्द्र जी से) इतने जीवों का खून बहाकर अब जान क्यों छिपाता फिरता है जरा सामने आ।

रामचन्द्र जी–मेरे मन में बहुत मुद्दत से अभिलाषा थी, शुक्र है आज तेरा बल जाँचने का अवसर मिला।

कुम्भकरण–कल के आँसुओं की नमीं तो अब तक तेरी आँखों में मौजूद है।

रामचन्द्र जी—(बाण छोड़कर) तू अपने प्राण बचा

पिछली बातों का जिकर करना बेसूद* है।

कुम्भकरण–(वार चला कर) सँभल जा अब मेरा वार आता है।

राम०—(पैंतरा बदल कर) बहुत उछल चुका, अब हो जा सावधान।

कुम्भकरण–(तलवार घुमाता हुआ) यह याद रख, कि मैं तुझे मारे बिना थोड़ा ही मरता हूं।

रामचन्द्र जी–(एक सनसनाता हुआ तीर छोड़कर) तू तो चल तेरे पीछे ही पीछे रावण को भी रवाना करता हूं।

(कुम्भकरण का अन्त)

(कुम्भकरण के मरते ही राक्षस सेना का तितर बितर हो जाना और बानरी सेना का उसके पीछे तालियाँ बजाना तथा भांति भांति के लज्जा जनक शब्द पुकारना और विजय पताका लहराते हुए अपने कैम्प में आना)

दरबार लंका

फौज लंका की शानदार पसपाई+ और रावण की हाय दुहाई

रावण—मुझे बड़ा आश्चर्य तथा हैरानी है कि तुम लोगों ने मुझे बर्बाद करने की क्यों ठानी है। जिस दिन से जंग

*व्यर्थ +पराजय।

हो रहा है, हर प्रकार हमारा ही काफिया तङ्ग हो रहा है। समस्त नामी सरदार एक एक करके समाप्त हो गये, अनगिनत शूरवीर सदैव के लिए मृत्यु शैया पर सो गये। सितम है, गजब है, समझ में नहीं आता कि तुम्हारे इस कायरपन का क्या सबब है। मैं यह भी मानने के लिए तैयार नहीं कि शत्रु हम से कुछ ज्यादा जबरदस्त है, फिर क्या कारण है कि प्रत्येक दिन उसकी फतह तथा हमारी शिकस्त* है। हालांकि लंका का एक एक बहादुर बेनजीर और लासानी है, परन्तु विदित होता है कि तुम्हारे दिलों में जरूर कुछ बेईमानी है और तुम पर किसी प्रकार का विश्वास करना बिल्कुल नादानी है।

प्रहस्त—हां महाराज! यह आपकी बड़ी मेहरबानी है और हम लोगों की जां निसारियों की यह कदरदानी है, हम लोग प्राण हथेली पर रक्खे फिरते हैं, किन्तु आपको फिर भी बदगुमानी है। आप का दोष नहीं, यह सिपाह-गिरी का काम ही ऐसा नामुराद है, कि खून पसीना एक करने पर भी इसकी यही दाद है।

मेघनाद—पिताजी! यह आपकी व्यर्थ बेकरारी है और यह भी बिल्कुल गलत है कि शत्रु का पलड़ा हम से कुछ भारी है। चाचा कुम्भकरण मरने को तो मर गये, परन्तु सफाया

* पराजय

उनका भी कर गये। असंख्य सेना के अतिरिक्त सुग्रीव तथा हनुमान को जन्नुम रसीद कर गया और लक्ष्मण प्रथम दिवस ही मेरे हाथ से मर गया। अब तो अकेला राम ही राम है, अस्तु कल को उसका काम भी तमाम है (रावण के कान में) आप भी कैसी भूल कर रहे हैं यह तेजी में आने का समय नहीं।

रावण-(बात का रुख बदल कर) नहीं, नहीं, मेरा यह हरगिज भी ख़्याल नहीं, कि मेरे दरबार में कोई भी नमक हलाल नहीं! भला मैंने यह कब कहा, कि आप लोगों में बहादुरी तथा वीरता का अंश नहीं रहा, बल्कि मेरे कहने का अभिप्राय तो कुछ और है, जो खास तौर पर काबिले गौर है, अर्थात वास्तव में आप लोग इतना सिर तोड़ परिश्रम करते हैं, परन्तु फिर भी हमारे ही आदमी क्यों अधिक मरते हैं।

एक नव आगत-महाराज ने जो आज्ञा दी थी वह वस्तु तैयार है।

रावण-हां, हां, शीघ्र उपस्थित करो, मुझको उसका बड़ी देर से इन्तजार है।

वही नव आगत-(बक्स में से दो बनावटी सिर निकाल कर) यह लीजिये, यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो आज्ञा कीजिये

रावण-(दोनों सिरों को ध्यान से देख कर) सचमुच कारीगरी में तो कमाल है, असल और नक़ल में पहचान सख्त मुहाल है।

सर्व उपस्थितगण—निःसन्देह इनको तो हम भी नहीं पहचान सकते, उस वेचारी की तो क्या मजाल है।

रावण—मेघनाद! कल को सेना की कमान तुम स्वयं संभालो और जिस प्रकार हो सके इस झगडे का फैसला ही कर डालो।

मेघनाद-आप निश्चित रहें कल को जब मैदान में जाऊँगा तो फैसला करके ही आऊँगा।

रावण की नई धूर्तता

अशोक वाटिका

सीता जी (गाना रागनी कालिंगड़ा)

मिटायेगा क्या कोई खुद ही,
मैं हस्ती* अपनी मिटा चुकी हूं।
सज़ा गुनाहों की पा चुकी हूं,
वहुत ही सदमे उठा चुकी हूं।
न जाने कि क्यों यह जान मेरी,
नहीं निकलती है इस जिसम से।

* अस्तित्व

खुशामदें कर चुकी हूं इसकी,
मैं जोर अपना लगा चुकी हूं।
मैंने चाहा कि अपने हाथों से,
काम अपना तमाम कर दूँ।
मगर न देते यह साथ दुश्मन,
मैं बारहा आजमा चुकी हूं।
जन्म जन्म के जो पाप मेरे
इसी जन्म में हुये इकट्ठे।
जलायेंगे क्या यह मुझको मिलकर,
मैं खुद ही खुद को जला चुकी हूं।
यह मैंने माना कि मैं तुम्हारी,
दया की मुतलक न मुस्तहिक* हूं।
मगर कजा पर तो हक है सबका,
न आई वह भी बुला चुकी हूं।

नाटक

हा अभागी सीता! तूने ऐसा कौनसा पाप कर्म किया था, जिसका फल भोगने के निमित्त इस संसार में जन्म लिया था। न जाने कब तक इस शरीर को अजाब होगा अथवा जन्म जन्मान्तर के पापों का इसी जन्म में नहीं बल्कि इन्हीं दिनों में हिसाब होगा। आये दिन की आप

* अधिकारणी

दाग्रों तथा हर घड़ी की आहों से शरीर का यह हाल हो गया कि एक क़दम चलना भी सख्त मुहाल हो गया, मौत हर समय सामने खड़ी हंस रही है, परन्तु यह अभागी जान न जाने कहां फँस रही है, यदि यह निकल जाये तो मुझको इन कष्टों से छुटकारा मिल जाये। जब तक जीवित हूं मेरा पाप और भी बढ़ रहा है, क्योंकि इस घोर युद्ध में लाखों जीवों का रक्त मेरी गर्दन पर चढ़ रहा है, परन्तु किससे कहूं कि इस झगड़े को मिटाये, या किसको भेजूँ जो स्वामी जी को इस युद्ध से हटाये। यदि अपनी आहों से काम लूँ तो वह भी बेसूद है, क्योंकि अब तो उनकी गति भी केवल मेरे लबों तक महदूद है। दिल को दिल से राह जरूर है, किन्तु दिल बेचारे का भी क्या कसूर है। यह मुझ से अधिक मजबूर है, अतएव इससे वह गुण ही कोसों दूर है। (आकाश की ओर देख कर) शीतल पवन के शीघ्रगामी झोंको! परमेश्वर के वास्ते तुम ही जाकर उनको इस भीषण युद्ध से रोको। प्राणनाथ! आप लंका से अपना घेरा उठा लो और मेरे लिये अपना तथा लक्ष्मण का जीवन जोखों में न डालो। कृपा कर के आप अयोध्या को लौट जाओ और इस प्रकार जीवों का लहू मेरी गर्दन पर न चढ़ाओ। मेरी जिन्दगी का जो प्रोग्राम है वह अब

क़रीबुल इख्तताम* है। इस पर भी—

कोई दिन गर जिन्दगानी और है।
मैंने अपने दिल में ठानी और है॥

और तो मुझे हर प्रकार का संतोष रहेगा, किन्तु इतना जरूर अफसोस रहेगा, कि अंतिम काल में आपके दर्शनों से वंचित...

(रावण का प्रवेश)

रावण—(दोनों सिरों को पीठ पीछे छिपाये हुए) सीता! मुझे बड़ा खेद है, कि तुम अभी तक वही पागलों वाली बातें कर रही हो और व्यर्थ सर्द आहें भर रही हो। क्या यह वहम का भूत अभी तक तेरे सिर पर सवार है?

सीता—(चौंक कर) ओ दुष्ट! तू मुझे क्या कहता है, जो हर समय छाया की भांति मेरे पीछे ही लगा रहता है? रावण! मैं सच कहती हूं कि चाहे मुझे कोई जान से भी मार छोड़े, परन्तु मैंने आज तक सिवाय अपने पति के दूसरे मनुष्य के आगे हाथ नहीं जोड़े। किन्तु मैं आज विवश हो अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ती हूं और तेरे आगे हाथ जोड़ती हूं कि एक हाथ तलवार का चला दे और मुझे सदैव के लिए सुख की नींद सुला दे। जिस

* समाप्ति के समीप।

से मुझको तो अपनी मुँह मांगी खैरात मिले और तुझको प्रतिदिन की वेकारारी से नजात* मिले।

रावण-प्यारी सीता! ज़रा अपने आपको सम्भाल और इन ऊटपटांग विचारों को चित्त से निकाल। मैं तुझको सताने अथवा रुलाने नहीं आया हुँ बल्कि तुम्हारे लिये एक शुभ समाचार लाया हूं।

सीता—मुझे तेरे शुभ समाचारों से प्रयोजन नहीं, कृपा करके यहां से किनारा कर और व्यर्थ मेरे साथ मगज न मारा कर।

रावण-ओ जालिम! तू कभी तो मुँह से अच्छी बात निकाला कर।

सीता-अरे निर्लज्ज! तु शीघ्र यहां से अपना मुँह काला कर।

रावण-मैंने तो तेरे उस कल्पित सहारे का भी फैसला कर डाला है।

सीता-सारा परिवार तो मर चुका, अब आजकल में तेरा नम्बर भी आने वाला है।

रावण-जिनके भरोसे पर तू कूद रही है, वह तो कभी के जहन्नुम रसीद हुये।

सीता-(तैश में आकर) अरे जबान संभालता है या नहीं कहीं के मुये।

* छुटकारा

रावण–क्या तू मेरी बात झूठ मानती है।

सीता–एक मैं क्या तेरी धूर्तता को सारी दुनियां जानती है।

रावण–(दोनों सिरों को आगे करके) अरी नादान, जरा आंख खोल कर देख और इनको पहचान, क्यों अब तो हो गया इतमीनान ?

सीता–(चीख मार कर) आह आह, आह, प्राणनाथ ! छोड़ चले दासी का साथ ! हाय आपकी मृत्यु भी इस... पापी के हाथ...

(मूर्छित होकर गिर गई)

रावण–अफसोस क्या सोचा था और क्या हो गया। त्रिजटा ! त्रिजटा !! जरा इधर आना।

त्रिजटा–(दौड़ कर तथा हाथ मल कर) हाय हाय मैं मर गई, सीता तो इस सँसार से कूच कर गई।

रावण–मेरा ख्याल है कि मरी नहीं केवल इन सिरों को देख कर डर गई।

त्रिजटा–मरने को इसमें रक्खा ही क्या था, न जाने कहां सांस अटक रहा था।

रावण–आखिर इसको मरना ही था, मैं इसके साथ कब से सिर पटक रहा था।

(चला जाना)

त्रिजटा–(सीता का सिर अपने घुटनों पर रख कर)

सीता ! सीता !! बेटी जरा आंखें खोल। क्या सचमुच तेरा काल ही आ गया ?

त्रिकटा—बेचारी ने बहुतेरे दिन ग़म खाया, अन्त में ग़म इसको खा गया।

दुर्मुखी—नहीं मरी नहीं। इसके मन पर भय छा गया।

त्रिजटा—(मुख में पानी डाल कर) बेटी अब किसी प्रकार का ख्याल न कर। जिसका डर था वह तो चला गया।

सीता—(कुछ आंखें खोलकर धीमे स्वर से) आह किसका भय और किसका डर ? मौत जैसी भयानक वस्तु जिसके नाम से संसार भय खा रहा है, मेरे समीप आने से उस पर भी डर छा रहा है। प्राणपति ! मेरे ऐसे भाग्य तो कहां थे जो आपके चरणों में रहना मिलता, परन्तु प्रारब्ध को यह भी अच्छा न लगा कि दम ही आपके चरणों में निकलता। मुझ निर्भागिनी का जब से आपके साथ सम्बन्ध हुआ, सुख, शान्ति, ऐश व आराम का द्वार आपके लिए बिल्कुल बन्द हुआ। जिस दिन से मेरे अभागे पांव अयोध्या में आये, वह कौन से कष्ट हैं जो आपने न उठाये ? पिता जी के वियोग का दुःख आपने सहा, माता पुत्र के पास तथा पुत्र माता के पास न रहा। राजपाट आपको छोड़ना पड़ा, भाइयों से सम्बन्ध आपको तोड़ना पड़ा। घर बार को तिलाञ्जली दी किंतु

धर्म के सामने विपत्तियों की किंचित परवाह न की। मेरे आते ही आपकी बर्बादी बड़ी सख्त हुई और इस प्रकार तबदीली यकलख्त हुई। अन्त में आपकी मृत्यु का कारण भी मैं ही कम्बख्त हुई। घर से चलते समय आपने बहुत कुछ समझाया, किन्तु मैंने अपने त्रियाहठ को ही निभाया। यदि आपका कहना मान लेती तो क्यों स्वयं हैरान होती और क्यों आपके प्राण लेती। वीर लक्ष्मण मेरी मूर्खता तथा हठ धर्मी का शिकार हुआ। वाह री मेरी प्रारब्ध की खूबी! मुझको तो नष्ट किया ही था किन्तु साथ उनको भी ले डूबी। कदाचित आप इसीलिए मेरा साथ तोड़े जाते हैं और मुझ निर्भागिनी को यहां छोड़े जाते हैं। परमेश्वर के वास्ते मेरा दोष क्षमा कीजिए और नहीं तो कम से कम मुझको अपने अपराधों की क्षमा मांगने का तो अवसर दीजिये। [वहां से उठकर] आप मानें अथवा न मानें मगर मैं अपनी हठ से कदापि न टलूँगी और जहां आप जायेंगे आपके साथ ही चलूँगी।

त्रिजटा—बेटी बावली न बन, रावण अपनी इस करतूत पर स्वयं लज्जित है, सन्तोष रख तेरा पति सही सलामत है, और तेरा देवर भी जीवित है।

सीता—निःसन्देह मैं पागल हूं, दीवानी हूं, सिड़ी हूं, खफ-

कानी हूं, परन्तु इतनी नहीं कि अपने प्राण प्यारे को भी न पहचानूँ भला जब उनके सिरों को मैं अपनी आंखों से देख चुकी, तो आपकी बात को कैसे मानूँ।

त्रिजटा—तू इन सिरों के भेद को नहीं जानती, इसलिए मेरी बात सच नहीं मानती। लंका में महोदर नामक एक मनुष्य इस प्रकार की बनावटी वस्तुयें बनाता है कि देखने वाला अचम्भे में रह जाता है। अस्तु वह दोनों सिर जो रावण ने तुझको दिखाये हैं उसी कारीगर ने बनाये हैं। यह बात अक्षरशः सही है, भला मैंने पहले तुझको कोई झूठ बात कही है।

सीता—(त्रिजटा के पांव पकड़ कर) मैं आपकी कृपाओं का कहां तक धन्यवाद करूँ और आपके किस किस उपकार को याद करूँ। न जाने आपको मेरे साथ क्यों इतनी हम-दर्दी है और इस समय तो मानो आपने मुझको नई ज़िन्दगी प्रदान कर दी है।

त्रिजटा—(सीता को गले लगाकर) बेटी! मेरी क्या मेहरबानी है वास्तव में तेरा पतिव्रत धर्म ही ऐसा लासानी है, जो हर समय तेरा सहायक है, अन्यथा त्रिजटा बेचारी किस लायक है? [सिर पर हाथ फेर कर] बस बेटी अधिक न रो और जाकर हाथ मुँह धो, जिससे तेरे

चित्त को कुछ शान्ति हो। (हाथ पकड़कर) उठो! अब किसी का कहना भी मानती हो।

(त्रिजटा द्वारा सीता का हाथ पकड़ कर वहां से ले जाना)

पांचवां दिन

समर भूमि

[भक्त विभीषण और योद्धा मेघनाद]

मेघनाद–(गरज कर) जरा सामने आओ, आज तुम में से किस की कुर्बानी है?

विभीषण–वीरों की भांति लड़ना है अथवा मन में वही बेईमानी है।

मेघनाद–[आग बबूला होकर] अरे बुजदिल! मक्कार! बे गैरत! गद्दार! ऐसी बेहयाई! कहीं डूब मरने की जगह भी न पाई! अरे निर्लज्ज! यहां से चला जा और मेरी आंखों के सामने न आ, जैसा तू स्वयं मन मलीन है, वैसा ही सारा संसार तेरे समीप बेईमान है। सच पूछिये तो तेरे जैसे कुल कलंक के खून का एक छींटा भी मेरी खडग को लगने में मेरा अपमान है। औरों को बेईमान बताता है और स्वयं बड़ा धर्मात्मा बनना चाहता है। निर्लज्ज कहीं का!

विभीषण–अरे छोकरे! यह लंका का दरबार नहीं जो तू अपनी मनमानी चला लेगा, यदि अधिक बक बक करेगा

तो अभी अपनी जिह्वा निकलवा लेगा। धर्मात्मा और लज्जावान तो तु और तेरा बाप है, बाकी दुनियां में तो तेरे निकट पाप ही पाप है। निर्लज्ज! तूने मेरे विरुद्ध तो कई बार मुख खोला और जो कुछ तेरे जी में आया सो बोला, परन्तु कभी अपने बाप का कर्म पत्र भी टटोला, उससे पूछने का तो तुझ में तब दम हो, जब तू स्वयं किसी बात में कम हो। 'काले का भाई चिकारा, वह कूदे नौ तो वह कूदे अठारह'। 'बाप डाली डाली है तो बेटा पत्ते पत्ते, दूसरा कोई पूछे तो उसे बताओ घत्ते'। 'अन्धे चूहे और थोथे धान, बाप बजाये ढोलकी और बेटा तोड़े तान'। तू भी सच्चा है, अगर बाप के कदम पर न चलता तो तुझे संसार में कुपुत्र का पद न मिलता। बेशक अनुकरण हो तो ऐसा हो और पुत्र हो तो तेरे जैसा हो। लानत है बेशर्म!

मेघनाद—अरे कुल कलंक! फिर वही सांप के से डंक। निर्लज्ज क्यों बेहयाई का बुरका पहना है, इस शरीर को सदा अमर नहीं रहना है। अन्त में काल इसको एक दिन अवश्य खायेगा, परन्तु यह कलंक का टीका प्रलय तक भी तेरे माथे पर से न जायेगा।

विभीषण—नादान लड़के! पहले हठधर्मी को अपने दिल से निकाल और जरा अपने गिरेबान में मुँह डाल,

देख फिर तुझको मालुम हो जायेगा, कि मेरे जिम्मे तेरा यह व्यर्थ पातक है, मैं कुल कलंक हूं, या तू कुल घातक है। यद्यपि तेरी आत्मा अत्यन्त मलीन है तथापि मुझको इस बात का पूरा यक़ीन है कि वह तुझ को सच और झूँठ में अवश्य पहचान करायेगी और स्वयं तेरे भीतर से तेरे लिए धिक्कार एवं फटकार की आवाज़ आयेगी।

मेघनाद—मनुष्य का चेहरा उसके भीतरी भावों का आईना है, अस्तु तेरी इस दुष्ट शकल से स्पष्ट है कि तू परले दर्जे का कमीना है। जैसे तू आप है वैसा ही तुझ को सारा संसार नजर आता है, इसलिये मुझको कुल घातक बतलाता है।

विभीषण—अकल के अँधे! क्या यह मेरा झूँठा इलजाम है और तेरे कुल-घातक होने में भी कुछ कलाम* है। यदि तू अपने बाप की अनुचित बातों का समर्थन न करता, तो आज कुनबा कुत्तों की मौत क्यों मरता। जरा तू ही बता कि लंका के भीतर सिवा तेरे तथा तेरे बाप के और भी किसी आदमी का नामो निशान है। तू आज काल के गाल में आ ही गया, तेरा बाप सुबह शाम का महमान है। अब बता कुल घातक के सिर

*आपत्ति अथवा संशय

पर क्या सींग होते हैं जो तेरे नहीं।

मेघनाद-(क्रोधित होकर) जितना मैं तेरा लिहाज करता गया उतना ही तू अश्लील शब्दों पर उतरता गया। तू तो रोज दुआयें मांगता होगा कि कब कुनबा मरे और कब तू लंका का राज्य करे। किन्तु याद रख कि आज मैं तुझको अपने हाथों से मुकुट पहनाऊँगा, यदि तुझको जीवित छोड़ दूँ तो दुनियां में किसी को मुँह न दिखाऊँगा।

विभीषण—शाबाश! शाबाश!! भला यह कब सम्भव था कि इतनी लान तान सुन कर भी तुझको लज्जा न आये, वास्तव में यह मुँह ही इस योग्य नहीं जो दिखलाया जाये।

मेघनाद-(तलवार का हाथ चलाकर) सिवा मौत के तेरा कोई इलाज नहीं।

विभीषण-(पैंतरा बदलकर) अब विभीषण तेरे बाप का मोहताज नहीं।

मेघनाद-(फिर वार करके) उछल ले जब तक उछलना है, किन्तु मुझे भी तेरे प्राण लेकर टलना है।

विभीषण—अब जरा मेरा वार भी सम्भाल।

मेघनाद-(चोट बचाकर) तू चाहे जितना शोर मचा किन्तु देख मैं भी कैसा बचा।

विभीषण—कच्चू कब तक बचेगा मैं भी तेरा चचा हूं चचा।

(दोनों का एक दूसरे पर आक्रमण करना किन्तु मेघनाद के हृदय वेधक बाणों की बौछार से विभीषण का घोर रूप से आहत हो जाना तथा उसी समय लक्ष्मण जी का उनकी सहायता के लिए पहुंच जाना)

सुग्रीव—(रामचन्द्र जी से) महाराज मेघनाद तो गजब ढा रहा है और विभीषण को बुरी तरह दबाये आ रहा है।

रामचन्द्र जी— मैं जाता हूं और मेघनाद की मिट्टी ठिकाने लगाता हूं।

लक्ष्मण—आप अभी विश्राम कीजिये और मुझको उसके मुकाबले पर जाने की आज्ञा दीजिये।

रामचन्द्र जी—वह बड़ा धूर्त है, तुम्हारे वश में न आयेगा और व्यर्थ ही बना बनाया काम बिगड़ जायेगा।

लक्ष्मण—वह समय निकल गया, जब उसका दाव चल गया। यदि आज मेघनाद का सिर काट कर न लाऊँ तो संसार को मुँह न दिखलाऊँ।

रामचन्द्र जी—तो अच्छा शीघ्र जाओ।

(लक्ष्मण जी का युद्ध में सम्मिलित होना और मेघनाद का हनन)

लक्ष्मण—(ललकार कर) सावधान! अरे कायर तू बहुत सिर पर छा गया।

मेघनाद—अरे मूर्ख! पिछली मार को ऐसी जल्दी भूल

गया जो आज फिर सामने आ गया।

लक्ष्मण—अरे बेईमान! वह कौन सी वीरता की लड़ाई थी जो तू जीतकर चला गया।

मेघनाद—जान पड़ता है कि रामचन्द्र ऊपर से ही तेरे प्रेम का दम भरता है, परन्तु वास्तव में तुझसे शत्रुता करता है, जो दोबारा तुझ को लड़ाई में पेल दिया और जान बूझ कर काल के मुँह में धकेल दिया।

लक्ष्मण जी का गाना

जरा रह जा तू अपने करीने से,

बेशर्म क्यों तु इस कदर बातें बना रहा।
बदकार क्यों कमीनापन अपना दिखा रहा॥
मुँह खोल खोल किस लिए इतना चिल्ला रहा।
हालत तेरी को देख मुझे रहम आ रहा॥
क्यों हुआ है तु बेजार जीने से।

जरा रह जा०...

धोखा ही जानता है या कुछ बहादुरी भी है।
कुछ याद तुझको फन्ने सिपाहगिरी भी है।
सम्मुख किसी के होके लड़ाई लड़ी भी है।
जिस दिन से लिया जन्म कुछ नेकी करी भी है॥
तुझको पाला पड़ा इक कमीने से।

जरा रह जा०...

बुजदिल कमीने बेशरम निर्लज्ज बेहया,
कुछ शर्म है तो डूब कर ही क्यों न मर गया ॥
धोखा फरेब सूझता है नये से नया ।
तेरे से बेईमान पर न करूँगा दया ॥
पार खंजर कर डालूँगा सीने से ।
ज़रा रह जा०...

नाटक

अरे निर्लज्ज ! यदि रावण की सेना में तेरे जैसे ही शूर-वीर तथा बहादुर शरीक हैं तो निश्चय ही उसके नाश होने के दिन बिल्कुल नजदीक हैं। मुझे सन्देह है कि रावण के होश हवास भी ठीक हैं।

मेघनाद—अच्छा अधिक जबान न निकाल (बाण छोड़ कर) कर अपनी मौत का इस्तकबाल ।

लक्ष्मण—(बाण काट कर) अब होशियार हो जा और मेरा वार भी सम्भाल ।

मेघनाद—पहले कहीं जाकर शिक्षा पा और फिर मेघनाद के मुकाबले पर आ ।

लक्ष्मण—(लगातार कई बाण वर्षा कर) अधिक बक बक न लगा, किसी पानी देने वाले को बुला ।

(मेघनाद के रथ के दोनों घोड़े मर गए)

मेघनाद–(दोनों हाथ उठाकर) ज़रा सबर कर मुझे अपना रथ बदल लेने दे।

लक्ष्मण—(तुरन्त रुक कर) तेरी करतूतों पर जाता तो अभी तुझको यमलोक पहुँचाता, परन्तु ऐसा करना न्याय के विरुद्ध है, क्योंकि विवश एवं निःसहाय शत्रु पर वार करना क्षत्री धर्म के सर्वथा विरुद्ध है। जल्दी जा और अपना रथ बदल कर आ, परन्तु धोखा देकर न जाना और भागकर प्राण न बचाना।

मेघनाद—मुझे डर ही किस बात का है, जो भागकर जाऊँ और अपने नाम को बट्टा लगाऊँ।

लक्ष्मण–अच्छा जाओ और शीघ्र वापिस आओ।

मेघनाद–(दोबारा तैयार होकर) आ गया हूं अब हो जा होशियार।

लक्ष्मण–(बाण बरसा कर) एक, दो, तीन, चार चल मक्कार हो काल का आहार।

(मेघनाद की एक भुजा उड़ गई)

मेघनाद–(एक ही हाथ से तलवार घुमाता हुआ) मेरा एक एक वार ही साक्षात काल है, तेरे जिन्दा बच कर जाने की क्या मजाल है।

लक्ष्मण–(तलवार का एक भरपूर हाथ मारकर) चल दुष्ट पीठ दिखा और जहन्नुम की हवा खा।

(मेघनाद की समाप्ति)

(मेघनाद का पृथ्वी पर गिर जाना और लक्ष्मण का झपटकर उसका सिर काट लाना। मेघनाद के मरते ही राक्षस सेना के पांव उखड़ जाना, अन्य राक्षस सरदारों का बहुत कुछ शोर गुल मचाना, परन्तु भागती हुई सेना का वश में न आना। बानरी सेना का रामचन्द्र जी तथा लक्ष्मण जी की जय के शब्द करते हुए अपने कैम्प में लौट आना)

—:o:—

सुलोचना का भवन

सुलोचना का गाना

मेरे मन में न जाने इस क़दर क्यों बेक़रारी है
सुबह से इस समय तक नीर ही नयनों से जारी है ॥
(युद्ध बीच जब से गये मेरे प्राण अधार ।
उसी घड़ी से दिल मेरा डोलत बारम्बार ॥
जुदाई की घड़ी एक एक रो रो कर गुजारी है ।
मेरे मन में० ॥

जिधर दृष्टि डालती दीखें बुरे आसार ।
आंख उठाऊँ जिधर को खड़े हैं राजकुमार ॥
मेरे मन में ० ॥

आज कोई युवराज को हुआ युद्ध में खेद ।
दिल धड़के फड़के मेरी दाईं आंख निषेध ॥

मेरे साजन पै निश्चय हा मुसीबत आई भारी है।
मेरे मन में० ॥

नाटक

हाय मेरा दिल आज बुरी तरह धड़क रहा है, कलेजा आप से आप फड़क रहा है। जिस ओर मेरी दृष्टि जाती है, प्राणप्यारे की सूरत सामने खड़ी नजर आती है। महलों पर चारों ओर कहीं चीलें मण्डला रही हैं, कहीं अबाबीलें पँख फैला रही हैं। न जाने आज के युद्ध का क्या परिणाम होगा और किस किस बेचारे का काम तमाम होगा।

एक सहेली—प्यारी सुलेचना! आज तुम्हारा मन क्यों इस प्रकार उदास है? क्या इसका कोई कारण खास है।

सुलोचना—क्या बताऊँ, आज जब से वह युद्ध में गए हैं तब से मेरी तबियत खुद घबरा रही है और चारों तरफ वहशत ही वहशत छा रही है (अश्रु पूर्ण नेत्रों से) परमेश्वर उन्हें कुशलता से घर लाये।

सहेली—तुम व्यर्थ अपने मन को चिन्तित करती हो और अकारण ठण्डी सांस भरती हो। यह तुम्हारा बेहूदा ख़्याल है, हमारे युवराज से मुकाबिला करने की किस की मजाल है?

सुलोचना—यह तुम्हारी गल्ती है, किसी की सदा एक

समान नहीं चलती है, आज चढ़ती है तो कल जरूर ढलती है। फिर जो होनहार है वह हो कर ही टलती है। आज कोई कारण अवश्य है जो मेरे हृदय से हर समय ठण्डी सांस निकलती है।

सहेली-(चौंककर) देखना ! देखना !! यह सामने क्या वस्तु आकर गिरी।

दोनों-(उठ कर) हाय, हाय ! यह तो किसी अभागे की भुजा है।

सुलोचना-मालुम होता है कि युद्ध से कटकर आई है क्योंकि बाण इसमें अब तक चुभा है।

सहेली-जरा पहचानो तो यह किसका हाथ है ?

सुलोचना-(सरसरी दृष्टि डाल कर) केवल हाथ को देख कर इसकी पहचान करना एक असम्भव बात है।

सहेली-(उसको उलट पुलट कर) इसकी अँगुली में तो अँगूठी है।

सुलोचना-(ध्यान से देख कर) हाय ! हाय !! यह तो मेरी ही तकदीर फूटी है ? (सिर पीटकर) आह प्राणनाथ ! यह कैसे कटा आपका हाथ ? मेरा मन तो पहले ही बैठा जा रहा था और युद्ध का परिणाम दूर से दृष्टि आ रहा था।

सुलोचना का गाना (तर्ज कैसा गजब है जिद बेसबब है)

कैसे बताऊँ किसको सुनाऊँ, दुखड़ा मेरे प्राणनाथ।

सूरत दिखाओ यह तो बताओ काटा किस जालिम ने हाथ ॥
आज सुबह से हो रहे सब ही बुरे शगून।
मानो दर और दीवार से बरस रहा है खून ॥
मण्डलाती चीलें और अबाबीलें कल न पड़ी सारी रात।
कैसे बताऊं ॥
स्वामी किसके आश्रय छोड़ चले मंझदार।
देखो टुक मेरी तरफ मेरे प्राण अधार ॥
जल्दी न कीजे बिनती सुन लीजे।
मुझ को भी ले चलिये साथ ॥
कैसे बताऊं।
बैठे बैठे सुलोचना ली गर्दिश ने घेर।
मेरी आंखों में हुआ चारों ओर अंधेर ॥
सम्बन्धी सारे तुम बिन ऐ प्यारे, कोई न पूछेगा बात।
कैसे बताऊं ॥
सम्बन्धी संसार के भली भली के मीत।
ऐ साजन किस दोष पर तोड़ चले हो प्रीत।
ऐ प्राण प्यारे किस के सहारे छोड़ी मैं दुखिया अनाथ ॥
कैसे बताऊं ॥

नाटक

आह मेरे सिरताज! मेरी इज्जत और हुरमत की लाज! मेरे ऐशो आराम और जवानी की उमंगों को अपने साथ ले गए और मुझ अभागी के हाथों में भिक्षा का

पात्र दे गये। मेरे साथ जो आपके वायदे थे वह सब फिजूल गए और जाते समय मुझे साथ ले जाना ही भूल गये। नहीं नहीं, यह भूल आपने नहीं की, बल्कि दुष्ट काल ने आपको इस क़दर मोहलत नहीं दी कि आप जबान भी हिला सकते अथवा मुझको अपने पास बुला सकते। विवश हो आपने अपने प्रेम की भुजा मेरी ओर बढ़ाई और मेरे मन की आकर्षण शक्ति उसे यहां खेंच लाई। आपके संकेत को मैंने पा लिया, कि आपने अपना प्रेम भरा हाथ मेरे सिर से उठा लिया। परन्तु थोड़ा धैर्य कीजिए और मुझे माता जी से आज्ञा ले लेने दीजिए। वे प्रसन्नतापूर्वक आज्ञा दें अथवा अप्रसन्नता से किन्तु मैं अवश्य आप के साथ चलूँगी और इस विरह अग्नि में न जलूँगी।

रावण का दीवाने खास

रावण और मन्दोदरी

रावण–हा शोक! मेरे समस्त बहादुर, सिपहसालार, बेटे, पोते और जंगजू सरदार, जिनको न केवल मैं ही अति बलवान जानता था बल्कि जिनकी वीरता और खड्ग का सारा विश्व लोहा मानता था, इस जहानेफ़ानी* से आलमे जाविदानी** को सिधार गए और अपने अपने कर्त्तव्य को सिर से उतार गये। कुम्भकरण

*नश्वर संसार **अमर लोक

से बलवान भाई और मेघनाद से वीर बेटे, मुझको वियोग का दुःख दे मृत्यु शय्या पर जा लेटे। लंका के गली कूँचों, महलों, बाज़ारों में जहां तक दृष्टि जाती है, रोने पीटने और चिल्लाने की आवाज आती है। कोई दुखिया माता अपने प्रिय पुत्र की याद करके रो रही है। कोई अभागी स्त्री अपने पति के वियोग से प्राण खो रही है। कोई प्रारब्ध की मारी बहन अपने भाई का नाम ले ले कर आंसुओं से मुख धो रही है, तात्पर्य यह है कि समस्त नगर की इस समय बहुत बुरी अवस्था हो रही है। इस प्रकार नाश तथा हानि होने पर भी यदि युद्ध का परिणाम मेरे लिए अच्छा होता, तो भी मैं अपने शूरवीरों एवं सच्चे हितैपियों को न रोता, परन्तु यहां तो वही दशा हुई कि :—

"न खुदा ही मिला न विसाले सनम
न इधर के रहे न उधर के रहे।"

वास्तव में इस दुष्ट सीता के पांव ही मनहूस हैं :—

शुभ चरण इसके जहां भी जायेंगे।
अग्नि के बादल वहां बरसायेंगे॥

जिस जगह यह कम्बख्त जायेगी, तबाही और बर्बादी को अपने साथ लायेगी। जब तक पिता के घर में

रही, उस बेचारे को सौ सौ चिन्ताओं में डाला, विवाह हुआ तो पति को घर से निकाला। ससुर को इस दुष्ट ने खाया, देवर को इसने मुसीबत में फँसाया। यहाँ आई तो लंका की ईंट से ईंट बजाई। खैर मेरी बर्बादी में तो कुछ कसर न रही, परन्तु यदि मैं इसकी तथा इसके पापों की यहीं समाप्ति न कर दूं तो सही।

मन्दोदरी—यदि आप नाराज न हों तो मैं भी कुछ निवेदन करूँ।

रावण-नहीं नाराज होने की कौनसी बात है। मैं तुम्हारी सम्मति से अवश्य लाभ उठाऊँगा और यथा संभव तुम्हारे कहने को काम में लाऊँगा।

मन्दोदरी—(डरते डरते) यदि आप मेरी तुच्छ सम्मति को काम में लायें तो सीता को अब भी रामचन्द्र के पास छोड़ आयें। जो कुछ बचा उसी को ग़नीमत जानें, कहना मेरा कर्तव्य था, आगे आप मानें या न मानें।

रावण—इस कहने से तो अच्छा था कि तुम कुछ न कहतीं और बिल्कुल खामोश ही रहतीं। शोक कि तुम भी कुछ धैर्य देने के स्थान में उल्टा मेरे घावों पर नमक डाल रही हो और ऐसे कायरता-पूर्ण शब्द मुख से निकाल रही हो। कठिनतावश यदि तुम्हारे कहने पर ही काय करूँ तो इस समय की सन्धि का क्या

परिणाम होगा, तथा मैं अकेला बच भी गया तो संसार में मेरा बड़ा नाम होगा! अब तो पृथ्वी पर से एक का काम तमाम होगा, मैं प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूं कि कल को रामचन्द्र और लक्ष्मण का कुम्भकरण और मेघनाद जैसा परिणाम होगा।

मन्दोदरी—यह आपका गलत ख्याल है, जहां तक मैं देखती हूं इस युद्ध में आपका सफल होना सख्त मुहाल है। इसलिए नहीं कि उनके पास सेना अपार है, बल्कि इस लिए कि सचाई उनकी तरफदार है।

रावण—(एक ठण्डी सांस भर कर) हां सच है तुम्हारा क्या कसूर है, सारे संसार का ऐसा ही दस्तूर है, बनी बनी के सब यार, मददगार, गमगुसार, जांनिसार, फरमां-बरदार, परन्तु बिगड़ी में तू कौन और मैं कोन :—

विमुख होते मित्र सब छोड़ दुःख के जाल में।
साथ देता है नहीं कोई भी आफत काल में।

आह! आज मेरी दुर्भाग्यता यह गुल खिला रही है कि मेरी स्त्री भी मुझ पर मिथ्या-भाषी होने का दोष लगा रही है और मेरे शत्रुओं को सत्यवादी तथा धर्मात्मा बता रही है।

मन्दोदरी—(हाथ जोड़ कर) प्राणनाथ! मैंने कदापि किसी

प्रकार की तोहमत आपके जिम्मे नहीं लगाई है बल्कि केवल आप की भूल आप को जतलाई है। अपराध क्षमा, बिलफ़र्ज यदि कोई मनुष्य मेरी ओर नज़र बद उठाये, तो क्या आप की आंखों में खून न उतर आये, बस इसी से समझ लीजिये और जिस प्रकार हो सके इस झगड़े का निपटारा कीजिये।

रावण–(झुंझला कर) बस, बस, चुप रह अधिक कान न खा और इसी क्षण मेरे सामने से चली जा। मुझे तेरे इस उपदेश तथा हितैषिता की जरूरत नहीं, यदि अधिक बकवास की तो समझले कि तेरे जीवित बचने की भी कोई सूरत नहीं।

मन्दोदरी–आपको अधिकार है यदि आप दण्ड भी देंगे तो मुझे कब अस्वीकार है परन्तु······

रावण–(डपट कर) फिर वही बक-बक, व्यर्थ झक झक, परन्तु की बच्ची, सारा संसार झूठा एक तु रह गई सच्ची।

[सुलोचना का मेघनाद की कटी भुजा लिये विलाप करते तथा सिर धुनते हुए प्रवेश]

सुलोचना का गाना [तर्ज़—हाय मैं क्या करूं]

हाय मेरे करतार ! प्यारे हमारे स्वर्ग सिधारे,
छोड़ मुझे मंझधार, हाय मेरे करतार।

युद्ध के बीच ऐ माता मेरे स्वामी स्वर्ग सिधार गये।
विधवा कर गये मुझ दुखिया को न जीती न मार गये॥
लुटा सब शृंगार। हाय मेरे०—
ऐ माता अब इस दासी का रंज अलम गम दूर करो।
शीश मंगादो मेरे पति का यह विनती मन्जूर करो॥
करदो अब मेरा भी उद्धार। हाय मेरे०—
तुम्हें यकीन दिलाने को मैं भुजा साथ यह लाई हूं।
सती होऊंगी साथ पति के निश्चय करके आई हूं॥
जीना है मेरा बेकार हाय मेरे०—

नाटक

हाय, हाय, मेरे भाग्य का दीपक ठण्डा हो गया और आपका पुत्र मुझे दोनों जहांन से खो गया। वह अपने आपको तो सब प्रकार के दुःखों से आजाद कर गये, परन्तु आपका बुढ़ापा और मेरी जवानी बिल्कुल बरबाद कर गये, पर खैर विधना को इसी भांति मँजूर था, इसमें न मेरा दोष और न आपका कसूर था। अब आप इतनी कृपा कीजिये, कि जिस प्रकार हो मेरे स्वामी का सिर मँगा दीजिए! ऐसा न हो कि मेरा साथ दूर निकल जाये और उनको दासी उनका मिलने भी न पाये।

मन्दोदरी-(सुलोचना को गले लगा कर) बेटी! मैं तुझे धैर्य दूँ अथवा अपने दुखित मन को समझाऊँ? जरा

मेरी ओर देख कि किस कदर घाव अपने हृदय में लिये बैठी हूं और कितने पुत्रों, पौत्रों, दुहित्रों तथा अन्य प्रिय सम्बन्धियों से सब्र किये बैठी हूं, मानो कुल का कुल अपनी आंखों के सामने स्वाहा कर जहर का घूँट पीये बैठी हूं। परन्तु कैसा रंज और कहां का अफ़सोस, किस पर गिला और किसका दोष, मरने वाला तो मर गया किन्तु साथ मर कर किसी ने क्या कर लिया। दोनों दुखिया कहीं बैठकर ठण्डी गर्म आहें भर लिया करेंगी और एक दूसरी को देख कर तसल्ली कर लिया करेंगी। अतः अपनी हठ से बाज रहो और जो कुछ विपदा पड़े उसे धैर्य एवं साहस के साथ सहो।

सुलोचना–आपकी कृपा तथा मेहरबानी की मशकूर हूं, परन्तु आपकी आज्ञा मानने से मजबूर हूं। आप एक बार कहें या हजार दफ़ा, नाराज हों अथवा खफ़ा, मगर मैं अपने विचारों को कदापि नहीं बदल सकती और जो प्रतिज्ञा कर चुकी हूं, उससे कदापि नहीं टल सकती।

मन्दोदरी–(रावण से) महाराज! सुलोचना बड़ी देर से खड़ी रो रही है और मेघनाद का सिर मँगवाने के लिये हठी हो रही है।

रावण–उसका सिर मंगवा कर क्या करेगी?

मन्दोदरी–क्या करेगी? उसके साथ जल कर मरेगी।

रावण–पहले तो उसका यह विचार ही वाहियात है, दूसरे इस

समय सिर का मिलना कोई साधारण बात है ? जब तक वह इसके बदले में सौ पचास सिर और न लेंगे, मेघनाद का सिर सहज में थोड़े ही देंगे।

सुलोचना-(रावण से) आप इस विषय में कुछ चिन्ता न कीजिये, केवल आज्ञा दे दीजिये।

रावण—कैसी आज्ञा ?

सुलोचना-मैं स्वयं ही जाऊँगी और अपने पति का सिर ले आऊँगी।

रावण-तो यों क्यों नहीं कहती, कि स्वयं जाकर अपने आपको शत्रु के बन्धन में फँसाऊँगी।

सुलोचना-यह केवल आपका भ्रम है, सुलोचना को कैद करने का किसमें पराक्रम है ? रामचन्द्र जी की आप से हज़ार शत्रुता तथा लाख कदूरत है, किन्तु फिर भी वह सदाचारी और धर्ममूरत है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह इस अवसर पर कदापि शत्रुता का विचार न करेगा और आपसे बदला लेने के लिए ऐसे ओछे हथियार का व्यवहार न करेगा।

रावण-यह तेरी सरासर भूल है और इस विषय में विशेष हठ करना बिल्कुल फ़िज़ूल है। तू वहां जाते ही कैद हो जायेगी क्योंकि इसके द्वारा उनको सीता के छुटकारे की पूरी उम्मीद हो जायेगी।

सुलोचना–मान लो यदि ऐसा ही हुआ, तो मेरी जान मेरे हाथ है और काल का सामान मेरे साथ है, फिर चिन्ता करने की कौनसी बात है ?

रावण–(बिगड़ कर) जब तू हुज्जत बाजी से मेरी प्रत्येक बात काटती है, तो फिर मेरा मगज़ भी क्यों चाटती है, जो तेरे मन में आये कर और मेरी आँखों से दूर होकर मर ।

(सुलोचना का उसी वक्त सिर झुकाये तथा आंसू बहाते हुए वहां से चला जाना)

रामचन्द्र जी का कम्प

(रामचन्द्र जी, लक्ष्मण, अंगद, हनुमान, विभीषण आदि सहित बैठे हुए बात चीत कर रहे हैं और मेघनाद की मृत्यु पर आनन्द मनाया जा रहा है)

रामचन्द्र जी–कहिए विभीषण जी आपकी कैसी अवस्था है ? अब तो चित्त की सन्तोष जनक व्यवस्था है ?

विभीषण–आपकी दया से मेरा चित्त तो बिल्कुल दुरुस्त है, किन्तु न जाने लक्ष्मण जी का मन क्यों इतना सुस्त है ?

लक्ष्मण—नहीं ऐसे तो मेरा मन बिल्कुल सावधान है, केवल थोड़ी सी थकान है ।

विभीषण—वास्तव में आज आपको काम भी बहुत करना पड़ा और लगातार कई घन्टे लड़ना पड़ा । मेघनाद

को गिराना आपका ही काम था, यदि आप थोड़ी देर और न आते तो मेरा काम तो तमाम था।

लक्ष्मण-(विभीषण का हाथ अपने हाथ में लेकर हंसते हुए) इस प्रशंसा को रहने दीजिये और मुझको अधिक लज्जित न कीजिये।

सुग्रीव-खैर कुछ भी हुआ, इसमें सन्देह नहीं कि अब मैदान भी हमने मार लिया और पिछला बदला भी उतार लिया।

रामचन्द्र जी-निस्सन्देह बदला तो उतार लिया परन्तु मैदान तो उस समय मारा जायेगा, जब बड़े गुरू का सिर भी इसी तरह उतारा जायगा।

विभीषण—अजी मरने की उसमें रक्खा ही क्या है, वह इस समय मृतकों से भी बुरा हो रहा है। असंख्य शूरवीर, सैनिक एवं बहादुर सरदारों के अतिरिक्त समस्त भाई, भतीजों, बेटे, पोतों और नवासों की मृत्यु से सतंप्त एवं भयभीत हो रहा है और सच पूछो तो किसी को मुँह दिखाना भी लज्जा जनक प्रतीत हो रहा है, क्योंकि उसकी कुबुद्धि तथा दुष्टता से लँका के घर-घर में रोने पीटने का शोर हो रहा है, सारांश यह कि इस समय वह सभी प्रकार कमजोर हो रहा है।

रामचन्द्र-मैं जानता हूं कि इस समय उसका हृदय मुर्दा

एवँ असीम रंजीदा है, परन्तु फिर भी वह पुराना खुर्राट और जहाँदीदा है। मिसल मशहूर है कि शेर जब ज़ख्मी हुआ तो बन गया खूं ख्वार और।

सुग्रीव–इस विषय में वाद-विवाद करना फिज़ूल है, बजाय खुद आप दोनों का विचार वाकई माकूल है। कल जैसा होगा वैसा देखा जायगा, अब तो रावण ही मुकाबले पर आयेगा।

रामचन्द्र जी—(आश्चर्य से सामने की ओर संकेत करके) देखना यह स्त्री कौन है जो इस भांति निर्भयता से हमारे कैम्प में चक्कर लगा रही है और बड़ी लापरवाही से हमारी ओर आ रही है।

(सबका उस ओर आकर्षित हो जाना)

सुग्रीव–ज़रा सावधान रहना चाहिए, ऐसा न हो कि रावण की कुछ कारिस्तानी हो।

हनुमान–क्या आश्चर्य है, सम्भव है कि इस भेष में कुछ और बेईमानी हो।

लक्ष्मण–यह भी सम्भव है कि हमारी व्यर्थ बदगुमानी हो।

अंगद–ऐसा जान पड़ता है जैसे कोई दीवानी हो।

रामचन्द्र जी—विभीषण जी! यदि आप इसका पता लायें तो बड़ी मेहरबानी हो।

विभीषण—(थोड़ी दूर उसी ओर चलकर) आह! आह!! सुलोचना! सुलोचना!! परमेश्वर के वास्ते मेरे सामने

अपने बाल न नोचना। (दोनों हाथों से अपना सिर पकड़कर) आह परमात्मा! तेरी लीला!! जिस देवी ने सारी आयु भर पलंग से नीचे पांव नहीं उतारा, आज वनों में ठोकरें खा रही है, जिसकी सूरत कदाचित पक्षियों तक को भी देखनी नसीब न हुई हो, कैसी निर्लज्जता से मुख खोले आ रही है। दुष्ट रावण! तेरी करतूत न जाने अभी क्या क्या गुल खिलायेगी और किन किन साध्वी देवियों से दर-दर की भीख मंगायेगी।

(विभीषण का खिन्न हृदय हो बैठ जाना, तमाम लोगों का अपनी अपनी जगह से उठकर विभीषण और सुलोचना के पास आना तथा सुलोचना की दशा देखकर आंसू बहाना)

रामचन्द्र–देवी! हमने बहुत जोर लगाया, एक बार नहीं कई बार रावण को समझाया, परन्तु शोक कि वह हमारी बातों को बिल्कुल ध्यान में न लाया। अन्त में जो कुछ इस समर का फल हुआ वह आंखों के सामने आया।

सुलोचना–मुझे इन झगड़ों से क्या सरोकार, उधर वह मालिक इधर आप मुख्तयार। मेरा यहां आने का जो परिणाम है, वह मेरा अपना ही काम है।

रामचन्द्र जी–जो कुछ तुम्हारा काम हो, वह निःसंकोच बयान कर दो।

सुलोचना—आप मुझ पर केवल इतना अहसान कर दो, कि मेरे पति का सिर मुझको प्रदान कर दो।

रामचन्द्र जी—केवल इतनी सी बात के लिए तुमने यहां आने का व्यर्थ कष्ट उठाया, वहीं से किसी के हाथ समाचार क्यों न पहुँचाया।

सुलोचना—मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास था कि यदि मैं वहीं से कहला भेजती तो मेरे पति का सिर मेरे पास था। परन्तु मैं स्वयँ इस लिए आना चाहती थी कि अपने पति के वध करने वाले के दर्शन भी पाना चाहती थी।

रामचन्द्र जी—लक्ष्मण जी! इनके पति का शीश इनको तुरन्त ला दो और जरा अपनी शक्ल भी दिखला दो।

लक्ष्मण-(सिर लाकर) देवी यह तेरे पति का सिर उपस्थित है। मैं तेरे पति का घातक अवश्य हूं किन्तु क्षमा के योग्य तथा निरपराध हूं।

सुलोचना-(लक्ष्मण जी की ओर ध्यान से देखकर) लक्ष्मण! सचमुच तू जती है, मेरे पति को जीतना तेरा ही काम था।

लक्ष्मण—(नीची दृष्टि किए हुए हाथ जोड़कर) देवी निःसन्देह तू सती है, परन्तु शोक कि तेरे जीवन का यही परिणाम था।

सुलोचना—(रामचन्द्र जी से) कौशल्यानन्दन, आपको जैसा सुना था वैसा ही पाया, जो अपने शत्रु की स्त्री से भी ऐसी दयालुता से पेश आया।

रामचन्द्र जी—शत्रुता शत्रु के साथ है, स्त्री मित्र की हो अथवा शत्रु की, दोनों का दर्जा एक समान है, जो मनुष्य अपने वैरी की स्त्री के साथ शत्रुता करता है वह आला दर्जे का नीच तथा परले सिरे का बेईमान है।

सुलोचना—धन्य हो! धन्य हो!! जिस मनुष्य के ऐसे शुद्ध भाव हों, उसके दर्शन से आत्मा क्यों न प्रसन्न हो। जो मनुष्य इस प्रकार के उच्च विचार रखता है उसको संसार में कौन जीत सकता है।

सुलचोना

गाना (दादरा टोडी आसावरी)

ऐ साजन तोड़ चले हो प्रीत,

घर में लाये ब्याह करवाये, कितने दिन गये बीत ॥

ऐ साजन० ॥

प्राणनाथ यह दासी कैसे, जीवन करे व्यतीत ॥

ऐ साजन० ॥

जितने संबंधी सांसारिक, भली भली के मीत ॥

ऐ साजन० ॥

तेरी बुद्धि के बाहुबल के दुनियां गाती गीत ॥

ऐ साजन० ॥

कुल दुनियां को जीता जिसने, वही तू इन्द्रजीत

ऐ साजन० ॥

(सुलोचना का आंसू बहाते हुए मेघनाद का सिर
लेकर वहां से चला जाना)

छटा दिन

युद्ध–भूमि

(महात्मा रामचन्द्र जी तथा हठी रावण)

(दोनों सेनाएं अपने-अपने मोरचों पर खड़ी हैं रावण हाथ में खड्ग लिए भूखे सिंह की तरह गुर्रा रहा है और अपनी कोप भरी दृष्टि इधर उधर फैला रहा है। दोनों तरफ की फौजो के जोशोखरोश को देखकर प्रलय का दिन याद आ रहा है)

एक धमाके का शब्द–'दन···दन···दन···'

सुग्रीव–महाराज आज तो रावण फालन भी तोपों के फैर से हुआ है, अस्तु पहले तीन फैर हो भी चुके।

रामचन्द्र जी–हां भाई। आज वह सिर पर कफन बांध कर आया है, इसलिए बिगुल तथा नक्कारे के स्थान में तोपों के फैर से सेना को फालन कराया है, मानो आज फैसले की लड़ाई होगी, या हम मरेंगे या उन की सफाई होगी।

सुग्रीव–आज रावण स्वयं लड़ेगा अतएव उसका सामना सम्मिलित शक्ति से करना पड़ेगा।

रामचन्द्र जी–कुछ चिन्ता की बात नहीं आखिर रावण कोई दस बीस तो हाथ नहीं। वह भी एक मैं भी एक जिसकी ईश्वर रक्खे टेक।

वही शब्द—'दन...दन...दन...'

सुग्रीव–यह दूसरे तीन फैर भी हो चुके।

विभीषण–इतनी विनती मेरी भी मंजूर फरमायें कि आप पहले पहल उसके मुकाबले पर न जायें, बल्कि एकाएकी मैं भी सामने नहीं जाऊंगा और वश लगते अपनी शकल नहीं दिखाऊंगा।

लक्ष्मण–वाह विभीषण जी! अभी से भय खा गये।

राम०–नहीं नहीं, तुम नहीं समझते हम इनके भेद को पागये।

लक्ष्मण–खैर, जिस प्रकार आपकी समझ में आये कीजिये। और जिसे जो आज्ञा देनी हो शीघ्र दीजिये।

राम०—प्रथम मुकाबले के लिए सुग्रीव और हनुमान को तईनात करूंगा, अंगद और तुमको सहायता के लिये उनके साथ करूँगा, और यदि आवश्यकता हुई तो मैं आखिर में उससे दो हाथ करूँगा।

वही शब्द–'दन दन दन'

राम०–यह उनकी ओर से तीसरा और अन्तिम फैर है, शीघ्र तीन तोपें सर करवाइये।

एक शब्द–फट अड़ाड़ाधूँ–फट अड़ाड़ाधूँ–फट

अड़ाड़ाधूँ...

(दोनों सेनाओं का समक्ष डट जाना तथा रावण का तलवार घुमाते हुए आगे आना)

रावण-(ललकार कर) ज़रा सामने आओ, आज तुम में से कौन मौत का महमान है ?

हनुमान-(बढ़ता हुआ) आज जो आपके स्वागत के लिए नियुक्त हुआ है वह आपका वही पुराना कृपा पात्र हनुमान है।

रावण-हट पाजी ! तेरे जैसों के साथ तो बात करने में भी मेरा अपमान है।

सुग्रीव-यदि इन से डर लगता है, तो मेरी ओर ही हो ले।

रावण-वाह, वाह, यह दूसरे तीसमारखां बोले 'बाप न मारी मैंडकी बेटा तीर अन्दाज'। अपनी जोरू के लिये तो आज तक सिर धुमता फिरा, अब उंगली को खून लगाकर शहीदों में मिलना चाहता है, हीजड़ा कहीं का !

सुग्रीव-प्रतीत होता है कि बोखला गये, जो इस प्रकार की बातों पर आ गये।

रावण-मुझे आश्चर्य है कि सारी सेना में केवल तुम दो ही बलिदान के बकरे रह गये।

सुग्रीव-अधिक बक-बक न लगा, आदमियों की भांति मुकाबले पर आ।

रावण–(क्रोधित होकर तलवार घुमाता हुआ) अरे भ्रष्ट करदूं अभी नष्ट ।

सुग्रीव—(तरह देता हुआ) कूद, कूद, खूब अच्छी तरह कूद अब मिटाऊंगा तेरा नामो नमूद ।

रावण—अब के अगर बच रहा तो नाम मिटा दूंगा ।

सुग्रीव–अगर वार खाली जाये तो हाथ कटा दूंगा ।

रावण–(तलवार का भरपूर हाथ मार कर) हाथ नहीं बल्कि सर, चल यमलोक की तैयारी कर और रास्ते से एक तरफ होकर मर ।

सुग्रीव का बे दम होकर गिर जाना, हनुमान का तुरन्त उसको उठाकर कैम्प की ओर पहुंचाना और स्वयं मुकाबले पर आना)

हनुमान–खबरदार ! जाने नहीं पायेगा ।

रावण–एक ने तो बाण मार लिये अब तू तीर चलायेगा ।

हनुमान–नियम है कि दीपक जब ठण्डा होने पर आता है तो अधिक टिमटिमाया करता है ।

रावण–(तलवार मार कर) जरा देखते जाओ, आज कितने दीपक ठण्डे करता हूं और कितने तालाब खून के भरता हूं ।

हनुमान–(तरह दे कर) ले अब सम्भल जा, यदि कुशल चाहता है तो सामने से टल जा ।

रावण–तू अपनी खूब चलाले परन्तु किसी अपने उठाने

वाले को बुलाले।

(हनुमान का लड़ते लड़ते लहुलुहान हो जाना और लक्ष्मण जी तथा अंगद का उनकी सहायता को आना)

अङ्गद-(ललकार कर) बहुत बढ़ चुका है, अब नहीं बढ़ने दूँगा।

रावण-(दोनों भुजाओं से वार करता हुआ) अरे तेरे जैसे को तो मैं खाली हाथ होता हुआ भी सामने नहीं अड़ने दूंगा।

अंगद-(खड्ग चलाता हुआ) अपने कफन का सामान भी साथ लाया है ?

रावण-(पतरा बदल कर) यह नट कौतक नहीं, बल्कि प्राण कौतुक है, पांव जमाने का समय तो अब आया है।

अंगद-क्या डर है तू अब भी बल लगाले।

रावण-(गदा का वार करके) भली प्रकार पांव जमाले, देखना कहीं उठाले, (दूसरी गदा मार कर) बुला उसको जो तुझे उठाले।

(अंगद का मुंह के बल जमीन पर गिरना और फिर उठना)

अंगद-(शीघ्रता से लपक कर) बचकर कहां जाता है ?

रावण-(अंगद को जमीन पर पटक कर) अरे मरदूद ! क्यों सिर पर चढ़ा आता है।

लक्ष्मण-(तुरन्त आगे बढ़कर) सम्भल जा अब तेरे काल का संदेश आ गया।

रावण-(लपक कर) आगे आ, मेरे मन में भी अफसोस था कि तू मेघनाद को मार कर जीवित चला गया।

लक्ष्मण-(बाण छोड़कर) मेघनाद को तूने रो भी लिया किन्तु तुझे कौन रोयेगा ?

रावण-(बाणों की वर्षा करता हुआ) मेरा हृदय भी तब ठण्डा होवेगा, जब रामचन्द्र तेरे सिरहाने बैठ कर प्राण खोयेगा।

(दोनों का एक दूसरे पर गजब के तीर बरसाना। लक्ष्मण का सख्त जख्मी हो जाना और कई बार अपने आप को गिरते गिरते बचाना। रावण का अस्त्र शस्त्रों के अतिरिक्त लात मुक्कों को भी काम में लाना और रामचन्द्र जी का ठीक समय पर सहायतार्थ आना)

विभीषण-(रामचन्द्र जी से) महाराज ! युद्ध में बड़ा घमासाण हो रहा है, वह देखिये लक्ष्मण किस प्रकार लहूलहान हो रहा है,। रावण का हाथ जिस ओर झुकता है फिर विपक्षी को नष्ट किये बिना नहीं रुकता है अब उन्हें सहायता की सख्त जरूरत है, क्योंकि इस समय युद्ध की अत्यन्त भयानक सूरत है।

रामचन्द्र जी-(दूर दर्शक यन्त्र से देखकर) बेशक, बेशक, आपने खूब बतलाया और ठीक अवसर पर जतलाया।

यदि आप थोड़ी देर और न आते तो हम हाथ मलते ही रह जाते ।

विभीषण— अब जरा जल्दी कदम उठाइये और ज्यादा देर न लगाइये । प्रथम मैं उसके सन्मुख जाऊंगा और ठीक समय पर आप को बुलाऊंगा ।

रावण—(लक्ष्मण से) अरे कम्बख़्त ! जिस के लिये तू अपनी जिन्दगी बरबाद करता है! वह तेरी कुछ इमदाद भी करता है । धिक्कार है ऐसे भाई पर जो तुझे काल के मुख में फंसाकर आप कहीं छुप रहा, अब दे उत्तर क्यों चुप रहा ?

लक्ष्मण—अरे दुष्ट ! क्यों बकवास कर रहा है ? दो चार स्वांस ले ले, काल भी तेरी तलाश कर रहा है ।

रावण—(लगातार आक्रमण करता हुआ) देख अब तेरा काल आता है या मेरा ।

विभीषण—(तुरन्त आगे होकर) बस उछल लिया बहुतेरा ।

रावण—(लाल पीला हो कर) ओ निर्लज्ज, शैतान ! नमक हराम, बेईमान !! तू अब भी मुझ को अपना कलंकित मुँह दिखाता रहा ।

विभीषण—जरा होश से बात कर, अब वह समय जाता रहा ।

रावण—अरे पतित ! अपने अपवित्र जीवन से तूने अपने

कुल को धब्बा लगाया, किन्तु मरने के लिये भी मेरे सामने आया।

विभीषण—हां हां फिर कहो यह बात तुम्हारे मुँह से बहुत फबती है, परन्तु बोलते बोलते तुम्हारी जबान क्यों दबती है ?

रावण—(तलवार लिए हुए लपक कर) ले तुझे तो आज लंका का राज्य दिलाता हूं और अपने हाथों मुकट पहनाता हूं।

रामचन्द्र—क्यों बढ़ बढ़ कर बातें बना रहा है और बेचारे विभीषण के सिर पर चढ़ा आ रहा है ?

रावण—सुबह से लड़ते लड़ते शाम हुई और लड़ाई कौतुक इख्ततताम हुई किन्तु तू उस में आग लगा कर किनारे हो गया, यह बेचारे अनाथ कटते रहे, खुद न जाने कहां जाकर सो गया। जरा सम्मुख आ, अब इधर उधर प्राण न छुपा।

राम०—(बाण छोड़ कर) यदि मैं पहले ही आ जाता तो तू इतनी देर जिन्दा न रहने पाता।

रावण—(तुर्की बतुर्की जवाब देता हुआ) यों क्यों नहीं कहता कि मैं अब तक जिन्दा न रहता।

राम०—यह बाण तेरे प्राण लेकर रहेगा।

रावण—यदि तू आज जावित चला जाय तो मुझको

रावण कौन कहेगा ।

राम०–(ब्रह्म अस्त्र चला कर) चल पतित आत्मा ! हुआ तेरी जिन्दगी का खात्मा ।

(अस्त्र लगते ही रावण का लड़खड़ा कर पृथ्वी पर गिर जाना लंका की बची हुई सेना का बेतहाशा भागना, वानरी सेना का उत्साहित शब्द एवं भांति भांति के जयकारे लगाना, रामचन्द्र जी का लक्ष्मण जी सहित रावण के निकट आना)

रामचन्द्र जी—लक्ष्मण ! यद्यपि रावण से हमारा तकरार था, तथापि यह जहां दीदा और पुराना तजुर्बेकार था । गो बे अमल था, परन्तु पुराना विद्वान था और सांसारिक उतार चढ़ाव का इसे भली प्रकार ज्ञान था । अतएव पुराने वैर भाव को दिल से निकाल कर बतौर जिज्ञासु के इनके पास जाओ और कोई सदुपदेश प्राप्त करके लाभ उठाओ ।

लक्ष्मण–(रावण के सिर की ओर खड़ा होकर) महात्मन् ! मित्रता थी अथवा शत्रुता वह जीते जी की, न जाने हमने आपकी हानि की थी, अथवा आपने हमको तकलीफ दी थी । अब उन विचारों को चित्त से निकाल दीजिये और कोई सदुपदेश देकर मुझे कृतार्थ कीजिये ।

रावण—(चुप)

लक्ष्मण—(रामचन्द्र जी से) भ्राता जी यह तो न बोलते

हैं न आंखें खोलते हैं।

रामचन्द्र—भाई उपदेश लेने का तरीका यह तुमने कहां से सीखा, जाकर उनके पांव की ओर खड़े हो जाओ और फिर उन्हें बुलाओ।

लक्ष्मण—(रावण के पांव की ओर खड़े होकर) महात्मन्! पुराने वैर भाव को चित्त से निकाल दीजिए और कोई सदुपदेश देकर कृतार्थ कीजिये!

रावण का (आँखें खोल कर) गाना (बतर्ज कव्वाली)

ऐ लक्ष्मण! खात्मे पर अब,
मेरी यह जिन्दगानी है।
करूँ तुझको नसीहत क्या,
मुझे यह खुद हैरानी है।
अगर्चे लब हिलाने की,
भी ताकत अब नहीं मुझ में।
मगर फिर भी कथा मुझको,
तुम्हें अपनी सुनानी है।
मेरी बातें तेरे हक़ में,
अवश्य ही लाभदायक हैं।
सुनो क्योंकि अभी तुम पर,
नई आई जवानी है।
विषय भोगों की जानिब,
भूलकर भी मत नजर करना।

हुई मेरी जो यह हालत,
उसी की मेहरबानी है।
खुशामद चापलूसी से,
करे तारीफ जो तेरी।
न मित्र समझना उसको,
तेरा वह शत्रु जानी है।
मेरा खाना खराब इस,
चापलूसी ने ही करडाला।
जो उजड़ी स्वर्ग की लंका,
इसी की बेईमानी है।
जो अपना शत्रु हो चाहे,
वह कितना ही अपाहज हो।
उसे दुर्बल समझ लेना,
सरासर ही नादानी है।
जो अपने और बेगाने की,
नहीं पहचान कर सकता।
तो निश्चय ही समझलो,
कि तबाही की निशानी है।
जहां तक हो सके तुम से,
बदी से भी बचे रहना।
वगरना जो करोगे,
एक दिन वह पेश आनी है।

जो देता काल अवसर तो,
मैं शायद और भी कहता।
मगर दम रुक गया अब,
आ गया आंखों में पानी है।
मेरा कहना ऐ लक्ष्मण,
लोहे दिल* पर नक्श कर लेना।
न नफ़रत इसलिये करना,
कि रावण की जवानी है।
अगर "यशवन्तसिंह" देखे,
मेरे जीवन का नक्शा ही।
नसीहत की नसीहत है,
कहानी की कहानी है,

नाटक

राम०—आप जैसे विद्वान, शूरवीर एवं साहसी राजा के मरने का मुझे स्वयं बड़ा अफसोस है किन्तु ऐसा होना ही था इसमें न मेरा अपराध है न आपका दोष है। यद्यपि इस कशमकश के दौरान में जहां तक मेरा अनुमान है मैंने कोई शब्द ऐसा अपनी जिह्वा से नहीं निकाला जो आपकी शान के खिलाफ हो, यदि किसी समय भूल से कोई शब्द ऐसा मुँह से निकल भी गया हो तो प्रार्थना करता हूं कि मेरा अपराध माफ हो।

*हृदय पट

क्योंकि जो मनुष्य मृत्यु के समय किसी प्रकार का वैर भाव दिल में रखता है, वह निःसन्देह बुद्धि का हीना है और जो मरे के साथ शत्रुता करता है वह भी परले सिरे का कमीना है।

रावण का गाना*

बस अलविदा ऐ रघुबर अब मैं तो जा रहा हूं,
अफआल[1] जो किये थे फल उनका पा रहा हूं।
पैमाना जिन्दगी का भरपूर हो चुका है,
बहरे जहां[2] के अन्दर मैं डगमगा रहा हूं।
थी गरचे तुमसे मुझको रघुवर बड़ी अदावत,
बुग्ज औ कीना[3] अब तो दिल से मिटा रहा हूं।
अब वक्त आखिरी है तुम कान धरके सुनना,
बातें दो एक तुम को जो मैं सुना रहा हूं।
जग जीतने से बढ़कर है नफस[4] जीत लेना,
इस नफस ही के मारे मैं मारा जा रहा हूं।
जिस घर में फूट होगी वह घर तबाह होगा,
मेरी तरफ ही देखो, क्या फल मैं पा रहा हूं।
अनुचित घमण्ड करना बिल्कुल नहीं है लाजिम,

---

*यह कविता महाशय 'शंकर' जालधरी ने स्वयं रच कर भेजी है जिसके लिए मैं अपने माननीय कृपालु को धन्यवाद देता हूँ।
(ग्रन्थ कर्त्ता)

१—कर्म। २—संसार सागर। ३—द्वेष शत्रुता। ४—इन्द्रियाँ।

मखमूर हो नशे में सब कुछ गँवा रहा हूं।
राजा को राज-नीति का पास है जरूरी,
इस से गुजर के क्या क्या मैं रंज उठा रहा हूं।
अफसोस है कि 'शँकर' मेरा अमल नहीं था,
तुम इसको याद रखना जो मैं बता रहा हूं।

(रावण का एक गहरा सांस लेकर चुप हो जाना तथा सदा के लिये मृत्यु शय्या पर सो जाना, विभीषण के भ्रातृ-प्रेम का उमड़ आना और रावण के मृतक शरीर से लिपट कर आंसू बहाना)

विभीषण—हाय भाई! जिस बात के भय से मैं आपको बारम्बार मना करता था अन्त में वही आफत आई। इन धूर्त खुशामदियों की बातों में आकर क्या क्या जिल्लत न उठाई? समस्त कुल नष्ट हुआ और लंका खाक में मिलाई। विभीषण का कहना आपको जहर मालूम दिया, न केवल यही बल्कि मेरा लंका में रहना भी कहर मालूम दिया। जितना आप दूसरों को उपदेश करते थे, यदि उसमें से एक के अनुसार भी काम करते तो क्यों लंका नष्ट होती और क्यों आप मरते?

रामचन्द्र—प्यारे विभीषण! तुम्हारा जो कुछ रोना पीटना और आंसू बहाना है, यह रावण की मान मर्यादा को घटाना बल्कि उसके नाम पर धब्बा लगाना है। तुम्हारा भाई बहादुर क्षत्रियों के धर्म का पालन और रण भूमि में वीरता का प्रकाश करता हुआ स्वर्ग सिधारा

है, न कि किसी ने भागते हुये को पकड़ कर मारा है। फिर हमारा भी जो कुछ वैर अथवा शत्रुता थी, वह इनके जीवन के साथ समाप्त हो गई। अब यह जैसा तुम्हारा भाई था वैसा ही हमारा भाई है, चल कर इनका दाह संस्कार करो अब देर क्यों लगाई है ?

(रावण की मृतक देह को उठाकर शमशान भूमि में ले जाना, रावण की समस्त रानियों का आना और अपने विलाप कलाप एवं आर्तनादों से आकाश को सिर पर उठाना, अन्त में विभीषण का चिता को आग लगाना, ज्वाला की लपटों का फैल जाना, सब उपस्थितगणों का अन्तिम आँसू बहाना और अपने अपने स्थानों को वापिस आना)

सत्ताईसवां दृश्य

सीता जी की वापिसी

(रामचन्द्र जी तथा लक्ष्मण जी, सुग्रीव तथा हनुमान, अंगद, विभीषण और अन्य कर्मचारियों सहित अपने अपने स्थानों पर बैठे हुए हैं।)

हनुमान-(हाथ जोड़कर) महाराज सीता जी को लाने के लिए अब क्या विचार है ?

रामचन्द्र जी-हां अब किस बात का इन्तजार है, आप और विभीषण जी जाये और उन्हें अपने साथ ले आये।

नोट—जंग के हालात लिखने में मैंने जानबूझ कर संक्षेप से काम लिया है। (ग्रन्थ कर्त्ता)

अशोक वाटिका

(सीता अपने विचारों की उधेड़बुन कर रही हैं, कभि कुछ सोचती हैं, कभी ठन्डी ओह भर रही हैं। त्रिजटा तथा अन्य राक्षस स्त्रियां उनके चित्त को बहला रही हैं और भांति भांति की बातें सुना रही हैं)

त्रिजटा—सीता! अब तो हमारा तुम्हारा केवल क्षणिक सम्बन्ध है।

सीता—यह संबंध तो कभी का टूट जाता मगर क्या करू मेरे लिये तो मृत्यु का दरवाजा भी बन्द है।

त्रिजटा—मेरा अभिप्राय यह नहीं जो कुछ तुम कह रही हो।

सीता—निःसन्देह मैं जानती हूं कि मेरे कारण तुम भी बहुत कष्ट सह रही हो।

त्रिजटा—मैं तो यह कहती हूं कि तुझे शीघ्र तेरे पति के दर्शन प्राप्त होने वाले हैं।

सीता—(एक ठण्डी सांस भर कर) मेरे ऐसे भाग्य कहां? यो कहो कि तेरी मौत का समय निकट आने वाला है।

विकटा—(दूर से भागती हुई) सीता! तुझे बधाई, रावण मारा गया। वह देख विभीषण और हनुमान तुझे लेने के लिए आ रहे हैं।

त्रिजटा—(सीता को हृदय से लगाकर) बेटी तू अब तो अपने पति और दूसरे सम्बन्धियों से अपना दिल शाद करेगी और त्रिजठा बेचारी को काहे को याद करेगी।

अच्छा परमेश्वर तेरा सुहाग अटल रखे।

सीता–देवी, मैं तुम्हारी कृपाओं को जीवन पर्यन्त नहीं भुला सकती, स्वयं तो क्या परमेश्वर से भी उनका बदला नहीं, दिला सकती।

हनुमान–माता जी। माता जी!! आपके तप और सत के प्रताप से रामचन्द्र जी की फतह तो आगे भी पय दरपय हुई किन्तु आज रावण को भी मार लिया और उनकी पूर्णतः विजय हुई। अब आप सब दुःख भूल जाइये और श्री रामचन्द्र जी के पास चलने की तैयारी फरमाइये।

सीता–वीर हनुमान! मैं तुम को पहले ही कह चुकी हूं, कि सिवाय अपने पति के दूसरे मनुष्य के साथ कदापि पांव नहीं उठाऊंगी, यदि जाऊंगी तो अपने स्वामी के साथ जाऊंगी।

हनुमान–भला वह बस्ती के भीतर किस प्रकार आ सकते हैं।

सीता–यदि वह स्वयं नहीं आ सकते तो लक्ष्मण जी ले जा सकते हैं।

हनुमान–माना कि उनका सम्बन्ध लक्ष्मण से अधिक है और हमारे साथ कम, किन्तु इस विषय में जैसे लक्ष्मण वैसे हम।

त्रिजटा–सीता! वास्तव में हनुमान की बात माकूल है,

अब तुम्हारा हठ करना फिजूल है।

सीता—चलिये, मैं आपका कहना स्वीकार करती हूं।

(त्रिजटा के पांव पकड़कर) माता जी! आपके चरणों में नमस्कार करती हूं,

(हनुमान तथा विभीषण का सीता जी को पालकी में बैठाना तथा आप प्यादा पांव चलकर श्री रामचन्द्र जी को सेवा में आना)

सीता—(दौड़ कर रामचन्द्र जी के पांव पकड़ कर) भगवन्! मुझ अभागनी के कारण जो जो कष्ट आपने उठाये किसकी सामर्थ्य है जो उनको गिनाये। आपके चरण कमलों के दर्शन करके मैं तो बिल्कुल सौदाई सी हो रही हूं और इस समय तो यह भी ज्ञान नहीं कि जागती हूं या सो रही हूं।

रामचन्द्र जी—(तुरन्त उठाकर) प्रिय जी, यद्यपि मैं तुम्हारे वियोग में अनेक प्रकार के क्लेशों में गर्क था, परन्तु फिर भी मेरी और तुम्हारी विपत्तियों में आकाश पाताल का फर्क था, मुझे तो केवल तुम्हारा ही ध्यान था परन्तु तुमको अन्य तकलीफों के अतिरिक्त अपना धर्म बचाना भी मुहाल था।

सीता—(पसीने से तरबर होकर) हे नाथ! यदि इस दासी के सम्बन्ध में आपका ऐसा ही विचार है, तो सीता हर समय तथा हर प्रकार से अपनी परीक्षा देने को तैयार है। इतना समय लंका में रहने पर आत्मा

तो एक ओर, यदि मेरा अंग भी मलीन हुआ हो तो जो आपकी इच्छा हो वह दंड मुझे दो। हां मैं मानती हूं कि रावण कई बार मेरे सम्मुख हुआ किन्तु जहां मैं बैठी हुई थी, उसने उस जगह तक को नहीं छुआ।

समस्त ऋषि मुनि—यह आपके बिल्कुल निकम्मे विचार हैं, हम सीता जी के सतीत्व के सम्बन्ध में हर प्रकार की प्रतिज्ञा करने को तैयार हैं। प्रत्यक्ष प्रमाण यदि इन का ऐसा ही भ्रष्ट ख्याल होता तो क्या इनके शरीर का ऐसा हाल होता।

रामचन्द्र जी—आपका तर्क निस्सन्देह बड़ा बलवान है, परन्तु इनके पास अपने सतीत्व का क्या प्रमाण है, मैं किसी अवस्था में भी इनको ग्रहण नहीं कर सकता और इनके कारण लोगों के ताने व मेहने सहन नहीं कर सकता।

ऋषि मुनि—यदि आपने यही ठाना था तो इतनी सृष्टि का खून क्यों बहाना था?

रामचन्द्र जी—यदि मैं उस समय खामोश रहता तो सारा संसार मुझको कायर और बुज़दिल कहता।

सीता—[हाथ जोड़कर] प्राणनाथ! यदि आपका ही मेरे विषय में ऐसा विचार है, तो मेरे जीवित रहने पर

धिक्कार है, आप आज्ञा दीजिए सीता इसी क्षण जलने को तैयार है।

रामचन्द्र जी—हां मैं आज्ञा देता हूं, लक्ष्मण अभी चिता तैयार करो।

लक्ष्मण-(कांपता हुआ हाथ जोड़कर) भगवन्! इस समस्या पर ज़रा अच्छी तरह विचार करो।

रामचन्द्र जी-(पुनः आज्ञा कारक भाव से) जो मैं आज्ञा देता हूं स्वीकार करो।

(लक्ष्मण का चिता बनाना और चारों ओर से त्राहि त्राहि का शब्द आना, सीता की दुखित अवस्था देखकर सब उपस्थितगणों का आँसू बहाना, रामचन्द्र जी की आज्ञा से प्रथम चिता को आग लगाना, ज्वाला लपटों का फैल जाना और सीता का कांपते थर्राते चिता के पास आना और परमात्मा की प्रार्थना का एक भजन सीता का गाना)

बहुतेरा दुःख पाया जी नाथ न बिसार,
जब से जग में होश सम्भाली।
न पहना न खाया जी नाथ न बिसार॥
इक दिन भी तो सुख नहीं देखा,
ऐसा क्या लेख लिखाया जी। नाथ न बिसार०॥
मुझ निर्भागन कर्महीन ने
यों ही जन्म गँवाया जी॥ नाथ न बिसार०॥

न कुछ दोष तुम्हारा स्वामी,

कर्मों का फल पाया जी । नाथ न विसार० ॥८

(हाथ जोड़कर) हे अन्तर्यामी परमात्मा ! यद्यपि लोगों को विश्वास दिलाना मेरी शक्ति से बाहर है, तथापि आप पर मेरा गुण अवगुण ज़ाहिर है । आह प्रभो ! मेरे जीवन का यही परिणाम होना था, कि मरते समय में यों बदनाम होना था । हा देव ! अब आप ही इस पतित का उद्धार करो, मगर मेरी यह अन्तिम प्रार्थना अवश्य स्वीकार करो कि यदि मैं फिर भी कभी स्त्री के जन्म में आऊँ तो श्री रामचन्द्र जी के चरणों में जगह पाऊँ (चिता की ओर पांव बढ़ाकर) हे पतित उद्धार ! मैं बड़े हर्ष के साथ आपकी ओर...

रामचन्द्र जी–(तुरन्त हाथ पकड़कर) बस, बस, प्रियजी आपका इम्तिहान हो गया और मेरा भली भांति इतमीनान हो गया ।

सुग्रीव—मैं आपकी इस कार्रवाई को देखकर हैरान हो गया, भला अब आपको किस तरह इतमीनान हो गया !

रामचन्द्र जी–यद्यपि आप लोगों के विचार में मेरा यह काम क़ाबिले ऐतराज था, मगर इसके अन्दर भी एक पोशीदा राज़ था, आम लोगों के निकट तो यह बात नितान्त साधारण होती है, मगर उनको

मालूम नहीं कि बेहद खुशी भी बहुत बार मौत का कारण होती है। इससे मैं ने इनकी बढ़ी हुई खुशी को रंज से बदल कर इनको तो हर्ष की मृत्यु से बचा लिया और लोगों के चर्चे से अपना पीछा छुड़ा लिया।

सर्व उपस्थितगण–भगवन्! आप की बुद्धि आप ही के साथ है, हमारी वहां तक पहुँचने की क्या बिसात है!

रामचन्द्र जी—सुग्रीव जी! आप हनुमान एवं विभीषण सहित लँका में जाओ और राजतिलक की सामग्री तैयार कराओ। कल विभीषण को राजतिलक दिया जायेगा और कल ही यहां से अयोध्या को कूच किया जायेगा।

(रामचन्द्र जी का लक्ष्मण व सीता सहित प्रसन्न चित अपने स्थान की ओर जाना, सुग्रीव हनुमान तथा विभीषण का लंका में आकर राजतिलक का समान तैयार कराना)

दरबार लंका

(सर्व कर्मचारियों का अपने अपने आसनों पर बैठ जाना, लक्ष्मण जी का आना और समस्त उपस्थित समुदाय का खड़े होकर उनका अभिवादन करना। विभीषण का उनका स्वागत करके एक रत्न जड़ित कुर्सी पर बैठाना तथा स्वयं लक्ष्मण जी के इशारे से एक विशेष आसन पर बैठ जाना)

लक्ष्मण–(स्वयं खड़े होकर) उपस्थित समुदाय! यह पुनीत कार्य जो मैं अभी आपके सन्मुख पेश करूँगा मेरे पूजनीय

भ्राता श्री रामचन्द्र जी द्वारा सम्पन्न होना था, परन्तु उनका स्वयं यहां पधारना असाध्य है, क्योंकि वह चौदह वर्ष पर्यन्त वस्ती में पांव रखने से वाध्य हैं। अतएव मैं उनकी ओर से उनकी अनुपस्थिति के कारण आप सज्जनगणों से क्षमा के हेतु प्रार्थी हूं एवं मुझे जो आपने इस विराट सभा के सम्मेलन का सौभाग्य प्रदान किया है, इस मान वृद्धि तथा सहानुभूति के लिये आपका बाधित हूं। आपको विदित होगा, कि आपके भूतपूर्व शासन-कर्ता स्वर्गीय महाराज रावण के साथ न तो हमारी कोई पुरानी शत्रुता थी और न युद्ध करने की हमको आवश्यकता थी, न हमने राज्य वृद्धि के लोभ से उनके साथ युद्ध किया और न ही किसी के सहायक अथवा संरक्षक होकर रणभूमि में पाँव दिया। जो कुछ कारण था आप लोगों को भली प्रकार मालूम है अतः उसको दोहराना निष्प्रयोजन है अस्तु उन्होंने जैसा किया वैसा फल भोग लिया। मैं नहीं चाहता कि स्वर्गीय महाराजा की जीवन यात्रा पर कुछ आलोचना करूँ अथवा किसी प्रकार का दोष उनके ऊपर धरूँ क्योंकि जब वह हस्ती ही पृथ्वी से मफकूद है, तो उसके किसी कार्य पर आक्षेप करना बेसूद है। आप के वर्तमान शासक सर्वप्रिय सदाचारी धर्मात्मा महात्मा राजा विभीषण ने जिस प्रकार न्यायो-

चित साहस दिखलाया वह कभी किंचित मात्र देखने में नहीं आया। लंका तथा लंका वासियों को हानि तथा नाश से बचाने के लिए जो कुछ इन्होंने किया वह भली भांति आप लोगों पर जाहिर है, तथा उस हितैषिता के बदले जो व्यवहार इनके साथ किया गया उसका वर्णन मेरी शक्ति से बाहर है। मैं इनके समक्ष इनकी प्रशंसा करने से मुख मोड़ता हूं, तथा समयाभाव से भी इस विषय को यहीं छोड़ता हूं। तात्पर्य, इस घोर संग्राम में जिस सत्यता पूर्वक इन्होंने अपना कर्त्तव्य निभाया उसके बदले में श्री रामचन्द्र जी महाराज ने प्रतिज्ञानुसार इनके पूर्वजों का राज्य पारितोषिक दे इनको महाराज बनाया। मैं उनकी ओर से यह (मुकुट पहना कर) मुकुट इनको पहनाता हूं तथा आप लोगों का ध्यान इस बात की ओर विशेषतः आकर्षित कराता हूं, कि इनके समस्त सभासद मंत्री, कर्मचारी, छोटे बड़े, धनवान तथा भिखारी अपनी योग्यता एवं बुद्धि अनुसार प्रत्येक इस बात का यत्न करें कि यह देश फिर उसी प्रकार धन-धान्य एवं रत्न आदि से भरे। मुझे आशा है कि आप अपने महाराजा का राज्य एवं शासन सम्बन्धी सभी कार्यों में यथेष्ट हाथ बटायेंगे और इनकी आज्ञा पालन एवं अनुकरण करते हुए स्वयं भी लाभ उठायेंगे।

(लक्ष्मण जी का अपने स्थान पर बैठ जाना। चहुं ओर से विभीषण महाराज की जय की आवाज आना, राजगुरु का विभीषण के मस्तक पर राज तिलक लगाना और सर्व उपस्थितगणों का भेंट दिखाना)

विभीषण–प्रतिष्ठित महानुभावो एवं श्रोताओ! मैं रघुकुल भूषण श्री रामचन्द्र जी महाराज के अनुग्रह तथा वीर शिरोमणी श्री लक्ष्मण जी की असीम कृपा का हृदय से कृतज्ञ हूं। श्री लक्ष्मण जी के कथनानुसार यह महत् कार्य श्री रामचन्द्र जी महाराज के कर कमलों द्वारा ही सम्पन्न होने की शोभा पाता था और उस समय मेरे तथा आपके सौभाग्य का क्या ठिकाना था कि स्वयं वह पधार कर अपने शुभ मुखारविन्द से राज्यप्रबन्ध विषयक उपदेश देकर लाभान्वित करते, परन्तु वह उस विशेष कारण से जिसका वर्णन अभी श्री लक्ष्मण जी ने किया है, अपने शुभ दर्शनों से लंका वासियों की प्यास को न बुझा सके और यह मनुष्य शक्ति से परे है कि उनको अपनी प्रतिज्ञा से एक तिल भर भी हटा सके। लंका का विनाश और लंका निवासियों की भयंकर हानि का चित्र इस समय मेरे सम्मुख विद्यमान है परन्तु उसको वर्णन करने में मेरी जबान असमर्थ है। सारी बस्ती में इस समय विधवा स्त्रियों, अनाथ बालकों तथा वृद्धायु पुरुषों

का ज्यादा हिस्सा है अस्तु यह एक लम्बा किस्सा है। युद्ध के खर्चों का भी इस समय ठीक अनुमान लगाया नहीं जा सकता, इसलिए इस विषय में भी कुछ नहीं बताया जा सकता। इस महान परिवर्तन का कारण न तो मैं अपने स्वर्गीय भाई को मानता हूं और न किसी अन्य शक्ति को जानता हूं, बल्कि ईश्वर को ही इस भांति मंजूर था, न किसी दूसरे का दोष था न भाई रावण का कसूर था। इन घटनाओं को छेड़ना मानों प्याज के छिलके उधेड़ना, अथवा गड़े मुर्दे उखेड़ना, व्यर्थ का विस्तार है। मैं हर प्रकार यत्न करूंगा कि आप लोगों को फिर वही सुख शान्ति तथा पहले सी स्वतन्त्रता प्राप्त हो और मेरी हार्दिक इच्छा है कि लंका का एक मनुष्य भी न निर्धन हो, न हीन हो, ईश्वर करे यह संकट शीघ्र विलीन हो। अन्त में मैं अपने हितैषी और उपकारी श्री लक्ष्मण जी का शुद्ध अन्तःकरण से धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने अपने पवित्र चरण कमलों द्वारा इस उजड़े देश को सुशोभित किया और लंका निवासियों को अपने शुभ दर्शनों का अवसर दिया।

(उपस्थित समुदाय का फिर विभीषण महाराज की जय के शब्द लगाना, सभा विसर्जित हो जाना और लक्ष्मण जी का विभीषण सहित रामचन्द्र जी की सेवा में आना)

श्री रामचन्द्र जी का आश्रम

(रामचन्द्र जी सीता जी सहित एक आसन पर विराजमान हैं और समस्त सभासद अपने अपने स्थानों पर बैठे हैं)

रामचन्द्र जी–प्यारे विभीषण ! मेरी ओर से राजतिलक की मुबारिक बाद स्वीकार कीजिये और मुझे अब यहां से जाने की आज्ञा दीजिये ।

विभीषण–(हाथ जोड़कर) भगवन् न केवल मेरी बल्कि सब लंका निवासियों की यह हार्दिक इच्छा है कि आप कुछ समय यहां रह कर हमें आनन्द दीजिये और अपनी थकान दूर कीजिए ।

रामचन्द्र जी–मैं आपकी तथा लंका वासियों की मेहरबानी का मशकूर हूं, किन्तु अब एक क्षण भी यहां ठहरने से मजबूर हूं क्योंकि चौदह वर्ष का अर्सा करीबुल इख्तताम है, यदि पन्द्रहवें वर्ष के पहले दिन अयोध्या न पहुँचा तो भरत जी का तो काम तमाम है ।

विभीषण–(गर्दन नीची करके) मजबूर हूं, लाचार हूं, मगर इतनी मेहरबानी कीजिये कि मुझको अयोध्या साथ चलने की आज्ञा दीजिए । अगर आपका जल्दी पहुँचने का विचार है तो मेरे पास पुष्पक विमान बड़ा तेज रफ्तार है । दूसरा विमान यदि दिनों में पहुँचाये तो यह घन्टों में पहुँचा सकता है और संख्या में भी अधिक आदमियों को ले जा सकता है ।

सुग्रीव—भगवन ! मुझे भी साथ चलने को आज्ञा दीजिये ।

हनुमान—और मेरी भी प्रार्थना स्वीकार कीजिये ।

रामचन्द्र—अगर आपका यही विचार है, तो मुझे साथ ले जाने में क्या इन्कार है । विमान में जिस कदर जगह हो बैठ जाइये, मगर अब विमान जल्दी मंगाइये ।

(पुष्पक विमान का आना, रामचन्द्र जी का लक्ष्मण जी, सीताजी तथा विभीषण, सुग्रीव, हनुमान, अंगद आदि सहित बैठ जाना । उपस्थितगणों का रामचन्द्र जी की जय के नारे लगाना विमान का आहिस्ता २ जमीन से उठकर ऊपर की ओर जाना और लंका निवासियों का देखते रह जाना)

अट्ठाईसवां दृश्य

भरत मिलाप (नन्दी ग्राम)

(भरत जी भगवे वस्त्र पहने माला हाथ में लिए एक कुशा के आसन पर बैठे हैं और गुरु वशिष्ट जी पास ही खड़े हैं)

भरत का गाना (रागनी कौंसिया तीन ताल)

पल पल क्षण क्षण दिन दिन गिन गिन चौदह वर्ष विताये हैं,
जो दुःख मुझको पड़े उठाने, मैं जानूँ या ईश्वर जाने,
जाते नहीं सुनाये हैं ।। पल···
कुल दुनिया की सहकर निन्दा, जिन्दा रहा हुआ शरमिन्दा,
क्या क्या दोष लगाये हैं ।। पल···
अब तक भी यह टली न आफत, वर्ष चौदहवां हुआ समाप्त
राम न अब तक आये हैं ।। पल···
आना होता जावे ही क्यों, मुझको भेद बताते ही क्यों,
मैं ही बन भिजवाये हैं ।। पल...

गुरू जी ! आज चौदहवां वर्ष भी खत्म हो गया, किन्तु रामचन्द्र जी न पधारे, सितम हो गया। यद्यपि मैं लोगों के भारी तानों से सख्त शरमिन्दा था किन्तु श्री रामचन्द्र जी के हुक्म से आज तक जिन्दा था। अब मैं लोक निन्दा बर्दाश्त नहीं सह सकता और आज सूर्यास्त के पश्चात् एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता। अब ज्यादा देर न लगाइये और शीघ्र ही चिता तैयार कराइये।

वशिष्ट—कुछ धीरज धरो, इतनी शीघ्रता न करो, अधिक नहीं तो आज का दिन तो…

द्वारपाल—श्री अवधपति महाराज की जय हो ! एक दूत जो अपना नाम हनुमान बतलाता है, महाराज के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करना चाहता है।

भरत—हां हां शीघ्र जाओ, उस दूत को तुरन्त हमारे पास लाओ।

(हनुमान का आना और दण्डवत करना)

भरत—महाराज तुम कौन हो, कहां से आये हो और कैसा संदेशा लाये हो ?

हनुमान—महाराज, मैं भारद्वाज आश्रम से आया हूं और श्री रामचन्द्र जी महाराज के अयोध्या में पधारने का शुभ समाचार लाया हूं।

भरत—(उछलकर गद्गद् हृदय से) भाई तुमने ऐसा शुभ संदेश सुनाया मानो मुझको नवजीवन प्राप्त कराया किन्तु वह अब तक क्यों नहीं आये इतना विलम्ब कहां लगाया ?

हनुमान—आज रात्रि तो वह भारद्वाज आश्रम में गुजारेंगे और प्रातःकाल ही अयोध्या में पधारेंगे।

भरत–(हनुमान को हृदय से लगाकर) यद्यपि मैं यह कहता हुआ शर्माता हूं तथापि मैं आपको आज मुँह मांगा इनाम देना चाहता हूं।

हनुमान–जब मैंने आप जैसे सच्चे तपस्वी धर्मात्मा तथा प्रेमी भक्त का दर्शन पा लिया तो सारे विश्व का द्रव्य मेरे पास आ लिया। आपकी भ्रातृ-भक्ति की जैसी प्रशंसा सुनी थी, वैसी ही देखने में आई, सचमुच आपने अपने जीवन से बेनजीर नजीर पैदा कर दिखाई।

भरत—हे वीर! क्या मैं और क्या मेरी नजीर, यह सब श्री रामचन्द्र जी महाराज के बल और तप का प्रकाश है और भरत तो उनके चरणों का एक मामूली सा दास है॥

हनुमान–धन्य हो, धन्य हो भगवान! तुम धन्य हो! जो मनुष्य आप जैसे त्यागी धर्मात्मा के दर्शन करलें, उसका मन और आत्मा क्यों न प्रसन्न हो।

भरत–(शत्रुघ्न से) शत्रुघ्न जी! तुम अभी माताओं को यह शुभ समाचार सुनाओ, (वशिष्ठ जी से) गुरू जी आप सब नगर में उनके पधारने की मुनादी कराओ तथा समस्त कर्मचारियों को हुक्म दो कि कल प्रातःकाल ही श्री रामचन्द्र जी के स्वागत के लिए

तैयार हो जाओ। (हनुमान से) हनुमान जी आप आज रात को मेरे पास विश्राम फरमाइये और मुझे भाई रामचन्द्र जी की चौदह वर्षीय कहानी सुनाइये तथा अपना परिचय भी बताइये।

हनुमान–तेरह वर्ष का हाल तो मुझे विदित नहीं, चौदहवें वर्ष के आरम्भ में ऋष्यमूक पर्वत पर उनके दर्शन हुए थे···(सब कथा सुना कर) अस्तु किष्किन्धापति महाराजा सुग्रीव और रावण का भाई विभीषण तथा अन्य बहुत से राक्षस एवम् वानर सरदार जो अपनी बहादुरी दिलेरी में बेनजीर और लाजवाब हैं, वे सब के सब उनके हमरकाब हैं, जो आपकी भ्रातृ भक्ति की प्रशंसा सुनकर केवल आपके दर्शनों के लिए यहां तक आये हैं।

भरत–(आश्चर्य से) ताज्जुब और अफसोस है कि मुझको इन घटनाओं का इस समय से पहले लेशमात्र भी ज्ञान न हुआ।

हनुमान–कोई ऐसी भयानक सूरत न थी, इसलिए आपको कष्ट देने की कोई विशेष जरूरत न थी। रात्रि अधिक व्यतीत हो गई अब आप विश्राम कीजिये, तथा मुझको भी आज्ञा दीजिये।

भरत–मुझको तो आज निद्रा कहां। हां आप अवश्य

विश्राम कीजिये और इस कष्ट के लिए मुझे क्षमा कीजिए

दूसरा दिन

(उधर से रामचन्द्र जी का आना, इधर से भरत का सब परिवार सहित उनके स्वागत को जाना और एक दूसरे के गले लगना। दोनों ओर से प्रेमाश्रु बहाना, फिर गद्‌गद् हृदय से नगर की ओर कदम बढ़ाना। नगर वासियों का फूल बरसाना तथा रामचन्द्र जी के जयकारे लगाना! नगर की स्त्रियों का सवारी को देखने के लिये मकानोंकी छत पर चढ़ जाना और मुबारिकबादी के गीत गाना)

भरत—(दौड़कर रामचन्द्र के चरणों से लिपट कर) प्रभो! मैं परमात्मा की दया का कहां तक धन्यवाद करूँ, तथा उनकी कृपाओं को कहां-कहां याद करूँ, जिसकी दयालुता से आज इतने काल के पश्चात फिर आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ और आपके आने से सारा दुःख समाप्त हुआ।

रामचन्द्र जी—(तुरन्त उठाकर तथा हृदय से लगा कर) भाई, मेरे सौभाग्य का क्या ठिकाना है जिसका एक-एक भाई प्रत्येक गुण में यकताये जमाना* है और आप के भ्रातृ प्रेम ने तो वह नजीर पैदा कर दिखाई, जो आज तक देखने सुनने में नहीं आई।

शत्रुघ्न—(रामचन्द्र जी के पांव पकड़ कर) मेरे पूजनीय

*संसार में अद्वितीय

भ्राता ! मेरे मन में इस समय जो हर्ष है, वह मुझ से वर्णन नहीं किया जाता।

भरत—(लक्ष्मण को गले लगाकर) मेरे प्रिय भ्राता ! मुझ से आपके अहो भाग्य को सराहा नहीं जाता, जिसने चौदह वर्ष तक अपने नेक अमल से तथा श्री रामचन्द्रजी के चरण कमल से अपने जीवन को ऐसे सांचे में ढाला, जिसने रघुवंश के नाम को सारे विश्व में प्रकाशित कर डाला।

लक्ष्मण-प्यारे भाई ! आपने मेरी इतनी तारीफ फ़रमाई, यह आपकी जबरदस्ती है, यह जो कुछ हुआ और हो रहा है, सब आपके तप का प्रताप है अन्यथा इस नाचीज की क्या हस्ती है ?

राम०-(कौशल्या के पांव पकड़ कर) माता जी आपके आशीर्वाद से चौदह वर्ष पश्चात वह दिन फ़िर आया जब राम ने अपना सिर आपके पवित्र चरणों में झुकाया।

कौशल्या-(हृदय से लगाकर) बेटा ! तेरी प्रतिज्ञा पालन तथा पितृ सेवा ने संसार के चित में अपना घर लिया और तू ने अपने नाम के साथ मेरा नाम भी सँसार में सदा के लिये अमर कर दिया। (लक्ष्मण को अपनी गोद में खींचकर) मेरे लाल इधर आओ, अब तो दूर खड़े न तरसाओ। (मुख चूमकर) बेटा ! परमात्मा तुम्हारा सहायक हो, वास्तव में तुम ही सराहने लायक हो।

राम०—(सुमित्रा के पाँव पकड़ कर) माता जी ! राम आपके चरणों में सिर झुकाता है।

सुमित्रा-(गले लगा कर) बेटा, तुम्हारा मुखड़ा देखकर मेरा कलेजा मारे खुशी के मानो बाहर निकला आता है। धन्य है कि मेरी फुलवाड़ी, उसी भाँति हरी भरी अपने घर पधारी।

लक्ष्मण—(सुमित्रा के पावों में गिर कर) माता जी नमस्ते !

सुमित्रा-(हृदय से लगाकर) बेटा मुझ में इतनी ताकत कहां है कि तेरी प्रशंसा अपनी इच्छा अनुसार करूँ ? हां अपने भाग पर जितना हर्ष करूँ थोड़ा है। न जाने मैंने ऐसा कौनसा शुभ कर्म किया, जिसके बदले में ईश्वर ने मुझे ऐसा होनहार लाल दिया।

राम०-(केकई के पांव पकड़कर) माता जी ! आपकी दया से राम अपने ऋण से सुबकदोश हुआ।

केकई-(कुछ संकोच करते हुए) हां बेटा, तू तो सुबकदोश हुआ, किन्तु मेरे जिम्मे तो बड़ा दोष हुआ।

राम-अफसोस कि आपके अभी तक वही बुरे ख्यालात हैं, भला आपका क्या दोष, प्रत्येक प्राणी के कर्म उसके साथ हैं।

सीता-(बारी बारी से तीनों माताओं के चरण छू कर) माता जी ! सारे परिवार को हरा भरा देखकर आज मेरा चित गद्गद् प्रसन्न है।

तीनों माताएं–(सीता जी को गले लगाकर) जनक दुलारी तु धन्य है। तु धन्य है!! तू धन्य है!!!

रामचन्द्र–(वशिष्ठ जी के चरणों में गिर कर) गुरूजी परमात्मा का कोटानकोट धन्यवाद है, कि सर्व परिवार को जैसा छोड़कर गया था उसी भांति आबाद है [कुछ अश्रु-पूर्ण नेत्रों से] परन्तु शोक कि पिता जी...

वशिष्ट जी–बेटा इस समय इन बातों का जिक्र करना फिजूल है, जो कुछ होता है, वह ईश्वर इच्छानुकूल है।

भरत–भ्राता जी, आपके साथ जो राजा महाराजा तशरीफ लाये हैं, उनके दर्शन आपने अभी तक नहीं करवाये हैं।

रामचन्द्र जी–प्रत्येक का हसब नसब और कारहाये नुमायां का वर्णन करना तो इस वक्त दुश्वार है क्योंकि इस विषय में संक्षेप में वर्णन करने को भी बहुतसा समय दरकार है। हां इनका तुमसे परिचय कराता हूं, केवल नाम और निवास स्थान बताता हूं। [विभीषण को सामने करके] यह स्वर्गीय लंकापति रावण के छोटे भाई भक्त विभीषण हैं जो इस समय लंका के राजसिंहासन पर आसीन हैं। [सुग्रीव को सामने करके] यह बानर राजा वाली के छोटे भाई सुग्रीव हैं, किष्किन्धा इनकी राजधानी है।

(अंगद को आगे करके) यह स्वर्गवासी बाली के सुपुत्र हैं, जो इस छोटी उम्र में ही प्रत्येक का में अद्वितीय तथा लासानी हैं। (हनुमान को आगे करके) इनके विषय में क्या बताऊँ, नाम से तो आप परिचित हो ही गये गुण वर्णन करने के लिए बहुत सा समय चाहिये।

हनुमान-(मुस्कराते हुए हाथ जोड़कर) बस भगवन्! अब माफ़ भी फ़रमाइये।

भरत-(एक एक से मिलकर) महानुभावो! आपने जो अपने शुभ आगमन से इस नगरी को पवित्र किया उसके लिये आपका हार्दिक धन्यवाद करता हूं, तथा आपने जो अहसान रघुकुल पर किए हैं, जब उनको याद करता हूं तो आपके ऋण के बोझ से मेरी गर्दन झुक जाती है और एक प्रकार की लज्जा सी आती है।

सुग्रीव-हे राजऋषि! रामचन्द्र जी महाराज के शुभ मुख से आपकी अनुपम भक्ति तथा अद्वितीय आत्म बलिदान की प्रशंसा सुनकर हम लोगों के दिल में आपके दर्शनों की अत्यन्त अभिलाषा हुई, शुक्र है परमात्मा का कि आज हमारी पूर्ण आशा हुई। हमने रघुकुल पर क्या अहसान किया है, बल्कि श्री रामचन्द्र जी ने ही हम लोगों को नव जीवन प्रदान किया है। हां रघुकुल के भाग पर रश्क हमें अवश्य आता है, आप धन्य हैं और धन्य आपकी माता है।

भरत का गाना (बहरे तवील)

मेरे भाई खुली आज किस्मत मेरी
आपके जो अयोध्या में आये चरण
धन्यवाद उस दयालु पिता का करूँ,
बख्श दी भरत को राम की फिर शरण ।
आपने फर्ज अपना अदा कर दिया,
हो गया आज मेरा भी पूरा परण ।
शुक्र है सद शुक्र तेरा परमात्मा,
हो गया आज मेरा सभी दुःख हरण ।
ठीक मौके पै पहुँचे हनुमान जी,
जिस घड़ी कि मैं जलकर लगा था मरण ।
और थोड़ा सा वक्फा लगाते यदि,
तो मैं कर लेता फौरन ही अपना हनन ।
हो रहा है मुझे तो अचम्भा यही,
मैं करूँ आज किस किस का शुभआगमन ।
धन्य है तू सीता जनक नन्दनी,
धन्य हो लच्मण, धन्य हो लच्मण ।

रामचन्द्र का गाना (बहरे तवील)

भाई ईश्वर की हम पर दया हो गई,
रंजोग़म का जमाना समाप्त हुआ ।
खुशनसीबी मेरी का ठिकाना है क्या,
भरत सा भाई मुझ को प्राप्त हुआ ।

दूर आंखों से गर्चे था मेरा भरत,
दूर दिल से न तू एक साअत हुआ।
जिस घड़ी वर्ष चौदह खतम हो गये,
एक पल ठहरना भी क़यामत हुआ।
आज परिवार घरबार का देखना,
गो मुझे भी यह बाइसे राहत हुआ।
तेरा दीदार लेकिन है भाई भरत,
राम को जिन्दगी बख्श साबित हुआ।
तेरे तप की बदौलत हे भाई भरत,
नाम कुल का जहां में स्थापित हुआ।
धन्य हो, धन्य हो, धन्य हो, तुम भरत,
रघुकुल का सहायक तेरा सत्य हुआ।

वशिष्ट जी—अब यहां अधिक विलम्ब न लगाइये, ज़रा नगरी की ओर कदम बढ़ाइये। नगरवासी बड़ी उत्कण्ठा से आपकी बाट जोह रहे हैं और सभी छोटे बड़े आप के दर्शनों को व्याकुल हो रहे हैं।

अयोध्या के बाजार

नगरवासी—(फूल बरसा कर) बोलो सियापति रामचन्द्र जी की जय! लक्ष्मण यति की जय!

(रामचन्द्र जी व लक्ष्मण जी का अपने दोनों हाथ मस्तक से लगाना
नगर वासियों का गाना: (रागनी कौंसिया)

फिर अवधपुरी के भाग खुले, सिया राम लखण यहां आये हैं,

अवधपुरी की किस्मत जागी, हम सम और न कोऊ बड़ भागी
दर्शन राम दिखाये हैं।
धन्य राम धन्य इनकी माता, धन्य लषण धन्य भरत भ्राता,
जाके जग यश छाये हैं।
धन्य धन्य सीता जनक दुलारी, धन्य तेरा पिता धन्य महतारी
सुखतज कर दुःख पाये हैं।
सकल नगर के लोग लुगाई, देते तुमको राम बधाई,
चरणों में नैन बिछाये हैं। फिर अवधपुरी०

नगर की स्त्रियों का गाना (गाओ गाओ मुबारिक बधाई बहिन)

देखो देखो वह आई सवारी बहिन,
सारे नगर में हर एक घर में खिली है गोया फुलवारी बहिन।
देखो देखो वह०
सब से आगे राम हैं पीछे लक्ष्मण वीर,
उससे पीछे भरत हैं शत्रुघ्न भी तीर।
बीच बैठी जनक की दुलारी बहिन। देखो०
आज नगर में हो रहा घर घर मंगलाचार,
सकल अयोध्या सज रही बनी हुई गुलजार।
जैसे हो दुलहन सिंगारी बहिन। देखो०
सकल स्त्री अवध की देत बधाई राम
सकल जगत में यह तेरा रहे सदा ही नाम
रहे सीता सुहागन प्यारी बहिय। देखो०
जनक नन्दिनी हम तेरे चरणों पर बलिहार।

दर्शन दे जाओ हमें जनक सुता इक बार,

पूरी अभिलाषा कर दो हमारी बहिन। देखो०

(सवारी के जलूस का नगर के भिन्न २ बाजारों से निकलते हुए दरबार आम में पहुंचना, तोपों के फायर से रामचन्द्र जी की सलामी होना, सबका अपने अपने पदानुसार आसनों पर बैठना।)

राज भाट (कवित्त)

अयोध्या के भानु आज चमके हैं अयोध्या बीच,
चौदह वर्ष बाद आज यहां फिर पधारे हैं।
शत्रु का विनाश और धर्म का प्रकाश किया,
कौशल्या के लाल श्री दशरथ के दुलारे हैं।
सभा को सुशोभित किया अपने शुभागमन से,
होते चहुँ ओर से जयकारे ही जयकारे हैं।
चन्द्रमा समान राम मध्य में विराज रहे,
आस पास घूमते अनगिनत ही सितारे हैं।

बशिष्ट जी—सर्व उपस्थित गण! आज का दिन अयोध्या के इतिहास में एक अति शुभ दिन और आज की घड़ी अति उत्तम घड़ी है, जब कि रघुकुल भानु श्री रामचन्द्र जी महाराज अपनी अद्भुत शक्ति तथा भुजाबल से अपने तथा अन्य मनुष्य जाति के अनेक शत्रुओं पर विजय पाकर चौदह वर्ष पश्चात् फिर अयोध्या में पधारे हैं। श्री लक्ष्मण जी, श्री भरत जी, तथा श्री शत्रुघ्न जी की भ्रातृ-भक्ति की कहां तक प्रशंसा की जाए। यदि लक्ष्मण जी ने

श्री रामचन्द्र जी की सेवा से अपने जीवन को उच्च बनाया तो शत्रुघ्न जी ने भरत की आज्ञा पालन को अपने जीवन का आदर्श ठहराया। महारानी सीता जी ने जिस प्रकार के कष्ट सहन करते हुए अपने पतिव्रत धर्म का पालन किया उसको वर्णन करने में मैं सर्वथा असमर्थ हूं। इसके अतिरिक्त न तो इतना अवकाश ही है और न यह समय ही इन बातों की ओर जाने की मुझको आज्ञा देता है। जिस हर्ष और शुद्ध भाव से आपने अपने महाराजाधिराज का स्वागत किया है उसी प्रेम और प्रीति से उनके (राजतिलक करके) राजतिलक की रीति को सम्पन्न किया जाता है। सर्व सज्जन इनकी आयु, बल, पराक्रम और राज्यवृद्धि के लिये परमात्मा से प्रार्थना करें।

सर्व उपस्थित समुदाय—(बड़े जोर से) बोलो सीतापति रामचन्द्र जी की जय!

(समस्त सभासदों का बारी बारी से उठकर भेंट दिखाना और फिर अपने अपने स्थानों पर बैठ जाना)

रामचन्द्र जी—परमात्मा ने अपनी अपार दया से चौदह वर्ष के पश्चात् आज मुझको फिर यह दिन दिखाया कि मैं अपनी प्रिय प्रजा को जिस दशा में छोड़ गया था उसी दशा में बल्कि उससे भी बढ़कर पाया। मेरी अनुपस्थिति में मेरे भाई भरत के साथ आप लोगों ने जिस शिष्टता,

आज्ञा पालन एवं राज-भक्ति का बर्ताव किया, मुझे यह जानकर अति आनन्द हुआ कि उन्होंने भी आपका अपने पुत्रवत् आदर मान किया। न प्रजा की ओर से किसी प्रकार की छेड़खानी हुई, न राजा को प्रजा की ओर से कोई बदगुमानी हुई। दोनों एक दूसरे के जानिसार रहे, सारांश यह कि राजा और प्रजा के सम्बन्ध बड़े ही खुशगवार रहे।

परमात्मा की मेरे हाल पर बहुत ही मेहरबानी है, जहां मेरी प्रजा बे नजीर है, वहां मेरा प्रत्येक भाई भी लासानी है। किस किस की प्रशंसा करूँ, एक ओर लक्ष्मण जी की भक्ति है और दूसरी ओर भरत जी की कुर्बानी है। यदि शत्रुघ्न के भ्रातृ-भाव की ओर देखता हूं तो सब से बढ़ कर हैरानी है। हमारे कुल पुरोहित राज गुरू श्री वशिष्ट जी महाराज का भी खास तौर पर धन्यवाद है, जिनकी बुद्धि-विवेक तथा चातुर्य एवं सुप्रबन्ध पर इस राज्य की बुनियाद है। मैं अयोध्या के शासक की हैसियत से अपने मित्र किष्किन्धापति वानर राज सुग्रीव जी व लंकापति श्री विभीषण जी एवं हनुमान जी, अङ्गद जी तथा अन्य वानर सरदारों का अंतःकरण से धन्यवाद करता हूं। और उनके एक एक अहसान को हर समय याद करता हूं। सब वानर द्वीप ने अपने आमोद एवं धन-धान्य तथा प्राणों को हमारे अर्थ वलिदान किया और इस कुल पर एक न भूलने वाला अहसान किया। अन्त में परमात्मा से

प्रार्थना करता हूं कि मेरे और मेरी प्रजा के सम्बन्ध इस से भी अधिक खुशगवार रहें, और सर्वदा दोनों एक दूसरे के हितैषी एवं जांनिसार रहें।

सब उपस्थित गणों की मुबारिक बाद

(गाना बतर्ज—तोरे पुत्र हमेशा रहें शादमां)

खुशी मनाई है कीर्ति छाई है लोग लुगाई हैं सारे मगन,
भाग खुले हैं इस प्रजा के दूर हुये सब रंजो अलम।
अवधपति महाराज आपका राज रहे यह जम जम जम। बार०
राज दरबार में शहर बाजार में और घर बार में गावें शगुन,
नर और नारी प्रजा सारी करती सरको खम खम खम।
बजें नकारे आज द्वारे किड़धम, किड़धम किड़ किड़धम॥ बार०

राज भाट (कवित्त)

रघुकुल सिरताज अवधपति महाराज जाकी,
कीर्ति भी आज सकल जगत बीच छाई है।
पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक,
आकाश और पाताल जाके नाम की दुहाई है।
कुल के कुल चन्द श्री कौशल्या के नन्द,
आज देता कविराज राजतिलक की बधाई है।
राम के प्रेमियों को अमृत ही के घूँट हैं,
'यशवन्तसिंह' वर्मा ने रामायण क्या बनाई है।

॥ समाप्त ॥

आर्य संगीत महाभारत

(सरदार यशवन्तसिंह वर्मा टोहाना निवासी रचित)

रामायण के लेखक की द्वितीय चमत्कारिक रचना है जो अल्प-काल में ही एक लाख से भी अधिक बिक चुकी है इसको पढ़कर आर्यवर्त की उन्नति व भाग्य वृद्धि एवं अवनति व पदच्युति तथा आपस के लड़ाई झगड़ों का परिणाम दृष्टिगोचर हो जाता है। इच्छा-नुसार चाहे कथा करके आनन्द प्राप्त करें, चाहे ड्रामा करके लाभ उठावें इसके प्रभाव जनक गद्य और चित्ताकर्षक गाने श्रोताओं के दिलों पर विद्युत का सा प्रभाव करते हैं। मूल्य ४॥) उर्दू ४॥) गुरुमुखी ४॥) सचित्र पुस्तक का जिसमें २४ रंगविरंगे चित्र दिए गये हैं १) अधिक होगा। कपड़े की जिल्द के ॥) अधिक होंगे। डाक व्यय अलग। पंजाब सरकार द्वारा हाईस्कूल की लाईब्रेरियों के लिए स्वीकृत हो चुकी है।

राजपूत महिला पद्मिनी

(लेखक—लाला किशनचन्द जेबा)

इस ड्रामे में चित्तौड़ की महारानी पति परायणा पद्मनी के पति-व्रत धर्म की महिमा बड़े ही अद्भुत ढंग से वर्णन की है। मुसलमान बादशाह अलाउद्दीन की विषय वासना और एक हिन्दू महिला की धर्म दृढ़ता का जीता जागता चित्र देखना हो तो इस नाटक को एक बार पढ़िये। इसके पढ़ने से मर्दों के अन्दर पुरुषत्व, साहस, राष्ट्रीयता की भावनायें पैदा होती हैं और स्त्रियों को यह पुस्तक पति-व्रत की अमूल्य शिक्षा देती है। कागज छपाई अति उत्तम। मूल्य केवल १) उर्दू १) जिल्द वाली पुस्तक के।) अधिक होंगे।

संगीत हकीकतराय

(सरदार यशवन्तसिंह जी वर्मा टोहाना निवासी रचित)

सरदार यशवन्तसिंह जी वर्मा की यह तीसरी चमत्कारिक रचना है। यह कोई कल्पित या मन घड़न्त किस्सा नहीं अस्तु हिन्दू धर्म पर सच्चे शहीद हकीकतराय के धार्मिक बलिदान का मुंह बोलता चित्र है, जिसने केवल ११ वर्ष की आयु में जबकि इस आयु के बालकों में खेलने और खाने की भी पूरी पूरी सुध बुध नहीं होती अपने अद्वितीय और अतुलनीय बलिदान से हिन्दू जाति को चार चांद लगा दिए। माता-पिता की वृद्ध अवस्था, अपना जीवन, नौयोवना स्त्री और संसार का वैभव एक ओर, और हिन्दू धर्म दूसरी ओर। परन्तु यह बालक नाशवान वस्तुओं को अपने अतुलनीय धर्म पर निछावर करके अमरत्व की पदवी प्राप्त करता है। इस छोटे से लेख में पूरे २ विवरण का लिखना असम्भव है। प्रथम तो यह कथा ही चित्त को दग्ध करने वाली है, इस पर रचियता की लेखन शैली ऐसी ओजस्वी हैं कि पाषाण हृदय के भी रक्तबिन्दु नेत्रों से लुढक पड़ते हैं। निश्चय ही यदि कोई व्यक्ति इस पुस्तक को बिना अश्रुपात किये समाप्त कर दे तो मनुष्य श्रेणी में उच्च स्थान और पुरस्कार पाने योग्य है। लिखाई छपाई अति उत्तम, रंग बिरंगे चित्रों से सुसज्जित। इन खूबियों के साथ पुस्तक का मूल्य २.५० पैसे उर्दू २.५० पैसे गुरुमुखी २.५० पै०। डाक व्यय ७५ पै० जिल्द वाली पुस्तक के ३७ पैसे अधिक होंगे।

संगीत हरिश्चन्द्र

(लेखक—सरदार यशवन्तसिंह वर्मा टोहनवी)

महाराज हरिश्चन्द्र के नाम से भारतवर्ष का बच्चा बच्चा परिचित्त है, जिसने राज्य जैसी अमूल्य वस्तु को अपने प्रण को कायम रखने के लिए साधु के माँगने पर बिना संकोच के उसको सौंप दिया और अपने ऊपर बड़ी बड़ी मुसीबतें सहन की परन्तु सत्यता के से अमूल्य रत्न को नहीं छोड़ा। यह सरदार जी की लेखनी से लिखा गया है, इसलिए अधिक प्रसंसा को आवश्यकता नहीं पढ़ने से ज्ञात होगा। लिखाई छपाई कागज अति उत्तम। मूल्य केवल १ रुपया, उर्दू १ रुपया, गुरुमुखी १ रुपया डाक व्यय इसके अतिरिक्त है। जिल्द वाली पुस्तक के २५ पैसे अधिक होंगे।

संगीत ऋषि दयानन्द

(लेखक—सरदार यशवन्तसिंह वर्मा टोहानवी)

हर्ष पूर्वक यह शुभ समाचार आप तक पहुंचाया जाता है कि जिस पुस्तक के लिए आर्य जनता दीर्घ काल से प्रतीक्षा कर रही थी वह छप कर तैयार हो गई है।

ऋषि-जीवन की कथा करने के लिए वास्तव में इससे उत्तम पुस्तक आपको नहीं मिलेगी। टाइटिल बहुत ही सुन्दर और चित्ताकर्षक है मूल्य २.२५ पैसे, उर्दू १.५० पैसे डाक व्यय अलग। जिल्द वाली पुस्तक के ३७ न० पै० अधिक होंगे।

मिलने का पता—

गुप्ता एण्ड कम्पनी, मु० टोहाना, जिला हिसार।

सँगीत पृथ्वीराज

(सरदार यशवन्तसिंह जी वर्मा टोहाना निवासी रचित)

—×—

यह पुस्तक हिन्दू जाति की उन्नति का अनमोल चित्र है, घर की फूट और आपस की लड़ाई झगड़े के भयानक परिणाम का मुंह बोलता चित्र है। इस पुस्तक का अवलोकन आपको बतलायेगा कि किस तरह यह जाति उन्नति के शिखर से गिर कर अवनति के गढ़े में पहुंची। क्षत्री बहादुरों की वीरता और प्रण-प्रतीज्ञा का चित्र इस उत्तमता से दिखलाया गया है कि कथन से बाहर है। एक-एक शब्द वीर-रस और करुणा रस के सागर में डूबा हुआ है। लिखने के लिए लेखक का नाम ही काफी है जिनकी लेखनी की सारा संसार प्रशंसा करता है। अधिक प्रशंसा अपने मुंह मियां मिट्ठू वाली बात है। मंगाइये, पढ़िये, हमारी सत्यता और लेखक के परिश्रम की प्रशंसा कीजिए। कागज नफीस, लिखाई, छपाई सुन्दर होने के अतिरिक्त रंग बिरंगे चित्रों से सुसज्जित है। मूल्य ३ रुपया उर्दू ३ रुपया जिल्द वाली पुस्तक के ३७ पैसे अधिक होंगे।

संगीत बाल शहीद

गुरु गोविन्दसिंह जी के वीर पुत्रों का वर्णन जिस उत्तमता से इस पुस्तक में किया गया है वह पढ़ने और सुनने से ही सम्बन्ध रखता है। नौ और ग्यारह वर्ष की आयु के छोटे-छोटे बालक जिस निर्भयता से सूबा सरहिन्द से वार्तालाप करते हैं वह सब मनुष्यों को चकित करने वाला है। एक ओर मृत्यु मुँह खोले खड़ी है दूसरी ओर धर्म हाथ बांधे खड़ा है। एक ओर सांसारिक सुख हैं, दूसरी ओर अपने कुल की लाज और कर्त्तव्य पालन का प्रश्न है। मगर इन नन्हें वीरों को न मृत्यु का भय है न सांसारिक सुखों की इच्छा। इन सब बातों को छोड़कर अपने धर्म पर बलिदान हो जाते हैं। जो सजा इन बच्चों को दी जाती है उसको सुनकर सुनने वालों के कलेजे कांप जाते है मगर क्या मजाल कि इन वीर बालकों के माथे पर बल भी आ जाये। लेखन शैली चित्ताकर्पक। मूल्य केवल १.२५ पैसे, गुरुमुखी १.२५ पैसे, जिल्द वाली पुस्तक के २५ पैसे अधिक होंगे।

वर्मा पुष्पांजली

इस पुस्तक में सरदार जी के लिखित ऐतिहासिक, सामाजिक, वीर रस और भक्ति रस से भरे हुए भजन दिये गये हैं। इसमें जो भजन लिखे गये हैं उनमें से प्रत्येक किसी उपदेश को लिए है। इस पुस्तक के पाठ से हिन्दू जाति के नये जीवन का संचार होगा। उपदेशकों के लिए यह अनमोल पुस्तक है। पुस्तक को देखते हुए मूल्य बहुत कम रक्खा गया है अर्थात् केवल ७५ पैसे, उर्दू ५० पैसे डाक व्यय अलग।

मिलने का पता—

गुप्ता एण्ड कम्पनी, मु० टोहाना, जिला हिसार।

अमरसिंह राठौर

इस पुस्तक में राठौर अमरसिंह और शाहजहां के युद्ध का पूरा वर्णन किया गया है। अपने प्रण पर जान देने वाले राजपूत वीरों के कारनामे, उनकी स्त्रियों के उत्तम विचार मित्रों की मित्रता, यवनों के अत्याचारों के भयानक कारनामे आदि के शिक्षाप्रद प्रभावोत्पादक दृश्य देखने हों तो इस नाटक को एक बार अवश्य पढ़िये। यह पुस्तक अपनी शान में अद्वितीय है और इसकी भाषा भी सर्व साधारण के वास्ते नित्य ही जैसी रक्खी गई है। निश्चय ही इस प्रकार की पुस्तक आपकी दृष्टि से अब तक न गुजरी होगी। मूल्य १ रु० डाक व्यय अलग। जिल्द वाली पुस्तक के २५ पैसे अधिक होंगे।

हिन्दू पत महाराणा प्रतापसिंह

(लेखक—कवि भूषण महाशय राजबहादुर 'शरर' बी० ए०)

यदि आप राजस्थान के सिंह पुरुषों के सरताज महाराणा प्रतापसिंह को दिल हिलाने वाली घटनायें पढ़ना चाहते हैं, यदि हल्दी घाटी के भीषण युद्ध राजऋषी महाराणा प्रताप के अदभुत बलिदान, राजपूती जौहर और बहादुर राजसिंहों के अपने धर्म की रक्षा के लिए हंसते खेलते आग की लपटों में कूद जाने दृश्य अपनी आंखों से देखना चाहते हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये यदि आप अपने बच्चों को वीरता का उपदेश देना चाहते हैं। यदि अपनी स्त्रियों में पतिव्रत धर्म और निर्भयता पैदा करना चाहते हैं तो यह पुस्तक अवश्य उनके हाथ में दीजिये। मूल्य १.५० पैसे डाक व्यय अलग। जिल्द वाली पुस्तक के ३७ पैसे अधिक होंगे।

धार्मिक ऐतिहासिक शिक्षाप्रद नाटक ड्रामे

उत्तमोत्तम धार्मिक पुस्तकें

असली साबुन साज़ी

(लेखक—मास्टर ज्ञानीराम जी बी० ए० सोप एक्सपर्ट)

ऐसी लाभदायक, ऐसी उत्तम और ऐसी सच्ची पुस्तक दूसरी कोई नहीं छपी। इस पुस्तक में साबुन बनाने के समस्त भेद बिना किसी संकोच के खोल दिए गये हैं। कोई बात छुपाकर नहीं रक्खी। यह बात देखकर बड़े बड़े साबुन बनाने वाले कारखानादारों में हल-चल मच गई, क्योंकि उनके समस्त भेद प्रकट कर दिए गए हैं जिनको वह सहस्रों रुपए लेकर भी नहीं बतलाते थे। जिसने यह पुस्तक खरीदी वह धनवान हो गया और सैकड़ों रुपये के व्यय से बच गया। यदि आप साबुन का कारखाना खोलना चाहते हैं तो पहिले इस पुस्तक को खरीदें। इस पुस्तक में हर प्रकार के देशी साबुन बनाने के अति सुगम और नवीन योग लिखे गए हैं जिनसे आप घण्टों में हर प्रकार का अति उत्तम चिकना, सस्ता और चमकदार साबुन बना सकते हैं जैसे अमृतसरी फूल साबुन, डण्डा साबुन, एक रुपए का आठ सेर वाला साबुन, देहली का काला साबुन लाहौर का सफेद साबुन, सनलाईट जैसा, टर्किश बाथ सोप, कारबालिक सोप, गन्धक सोप, नीम सोप इत्यादि। आज ही कार्ड लिखकर पुस्तक मंगा लें। यदि पुस्तक का मूल्य सौ रुपया भी रक्खा जाता तो भी कम था परन्तु हमने बहुत ही कम अर्थात २-५० पैसे मूल्य रक्खा है। डाक व्यय ८८ न० पै० होगा।

छः रुपये में मैट्रिक पास

प्रेक्टिकल इंगलिश टीचर

आप अगर अंगरेजी नहीं जानते तो आप दुनियां से अलग पड़े रहेंगे। इसलिए आप अंगरेजी सीखये अंगरेजी सीखना बहुत ही सरल है। अंगरेजी परिवारों में जिस प्रकार बच्चे अपनी माताओं से अंगरेजी सीख लेते हैं आप भी उस ईश्वरीय देन के मुताविक केवल एक घन्टा प्रतिदिन हमारी इस पुस्तक को पढ़कर तीन मास में याद कर सकते हैं और अंगरेजी मैट्रिक की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। हिन्दी जानने वाले लड़के और लड़कियां इस पुस्तक की सहायता से केवल अंगरेजी में मैट्रिक का इम्तिहान पास कर सकते हैं। मू० ६) रुपया डाक खर्च सहित।

दी स्टूडटस ओक्सफोर्ड प्रैक्टिकल डिक्शनरी

इस डिक्शनरी में अंगरेजी शब्दों के अर्थ हिन्दी में दिए गए हैं इस कारण लड़के लड़की सबके लिए एक सी लाभदायक और सहायक सिद्ध हुई है। मूल्य ३) डाक व्यय अलग।

इंगलिस टीचर भाषा टीका

इस पुस्तक से आप घर बैठे बिना गुरु की सहायता के अंगरेजी, पढ़ाना, लिखना, बोलना सीख सकते हैं। उल्था करना अगरेजी में बात चीत करना, अंगरेजी में चिट्ठी या प्रार्थनापत्र लिखना अंगरेजी व्याकरण आदि आदि बातें ऐसी अच्छी तरह वर्णन की गई हैं जो किसी दूसरे इंगलिश टीचर में नहीं समझाई गई। छपाई अति उत्तम मूल्य डाक व्यय समेत २)।

गुप्ता एण्ड कम्पनी, मु० टोहाना, जिला हिसा